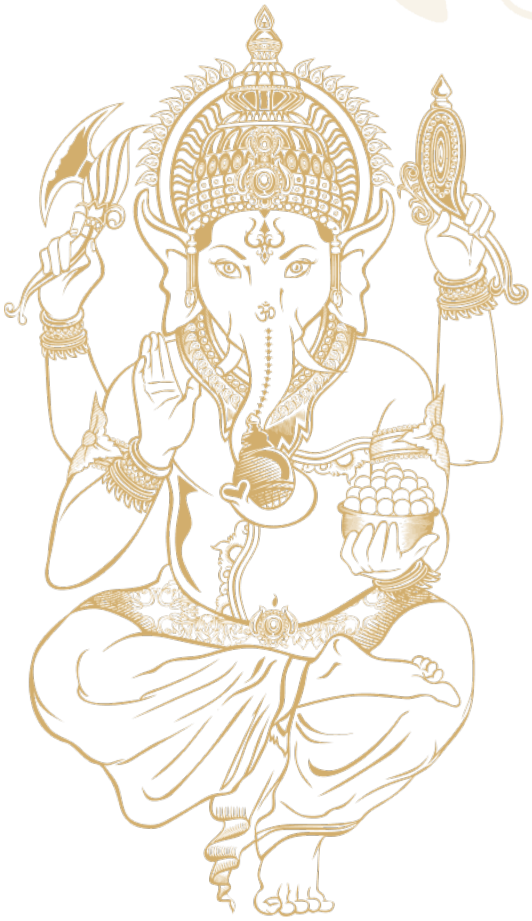

# Ashish Bharat Shah

15 Oct 1978

01:22 PM

Mumbai

**Model: Brihat-Parashar-Patrika** **Order No: 121529701**

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **15/10/1978** |
| दिन | रविवार |
| **जन्म समय** | **13:22:56 घंटे** |
| इष्ट | 17:05:15 घटी |
| **स्थान** | **Mumbai** |
| राज्य | Maharashtra |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 18:57:29 उत्तर |
| रेखांश | 72:49:55 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:38:40 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 12:44:15 घंटे |
| वेलान्तर | 00:14:07 घंटे |
| साम्पातिक काल | 14:18:15 घंटे |
| सूर्योदय | 06:32:49 घंटे |
| सूर्यास्त | 18:16:09 घंटे |
| दिनमान | 11:43:19 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | दक्षिणायन |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | शरद |
| सूर्य के अंश | 28:02:57 कन्या |
| लग्न के अंश | 01:25:43 मकर |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | मकर - शनि |
| **राशि-स्वामी** | **मीन - गुरु** |
| **नक्षत्र-चरण** | **उ०भाद्रपद - 4** |
| नक्षत्र स्वामी | शनि |
| योग | व्याघात |
| करण | विष्टि |
| गण | मनुष्य |
| योनि | गौ |
| नाड़ी | मध्य |
| वर्ण | विप्र |
| वश्य | जलचर |
| वर्ग | सिंह |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | जल |
| जन्म नामाक्षर | ञ-- |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | ताम्र - लौह |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | तुला |

# पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1900 | आश्विन | 23 |
| पंजाबी | संवत : 2035 | आश्विन | 30 |
| बंगाली | सन् : 1385 | आश्विन | 28 |
| तमिल | संवत : 2035 | पुरुटासी | 29 |
| केरल | कोल्लम : 1154 | कन्नी | 29 |
| नेपाली | संवत : 2035 | आश्विन | 29 |
| चैत्रादि | संवत : 2035 | आश्विन | शुक्ल 14 |
| कार्तिकादि | संवत : 2035 | आश्विन | शुक्ल 14 |

## पंचांग

| | |
|---|---|
| सूर्योदय कालीन तिथि | 14 |
| तिथि समाप्ति काल | 13:06:58 |
| जन्म तिथि | 15 |
| सूर्योदय कालीन नक्षत्र | उ०भाद्रपद |
| नक्षत्र समाप्ति काल | 14:12:13 घंटे |
| जन्म योग | उ०भाद्रपद |
| सूर्योदय कालीन योग | ध्रुव |
| योग समाप्ति काल | 30:32:52 घंटे |
| जन्म योग | व्याघात |
| सूर्योदय कालीन करण | वणिज |
| करण समाप्ति काल | 13:06:58 घंटे |
| जन्म करण | विष्टि |
| भयात | 55:15:12 |
| भभोग | 57:18:22 |
| भोग्य दशा काल | शनि 0 वर्ष 8 मा 3 दि |

## घात चक्र

| | |
|---|---|
| मास | फाल्गुन |
| तिथि | 5-10-15 |
| दिन | शुक्रवार |
| नक्षत्र | आश्लेषा |
| योग | वज्र |
| करण | चतुष्पाद |
| प्रहर | 4 |
| वर्ग | मृग |
| लग्न | सिंह |
| सूर्य | मिथुन |
| चन्द्र | कुम्भ |
| मंगल | कर्क |
| बुध | कुम्भ |
| गुरु | सिंह |
| शुक्र | कन्या |
| शनि | वृष |
| राहु | तुला |

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

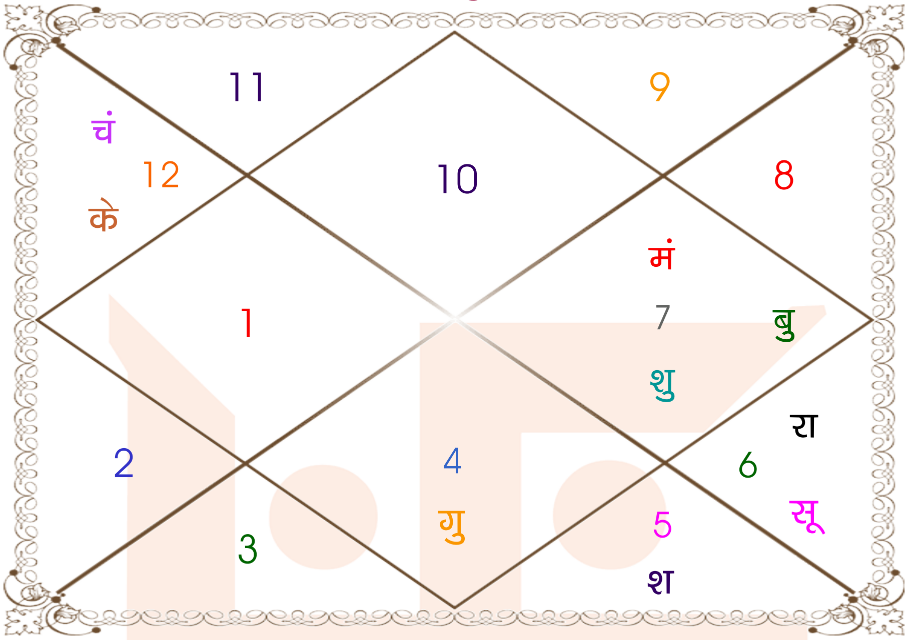


## चन्द्र कुंडली

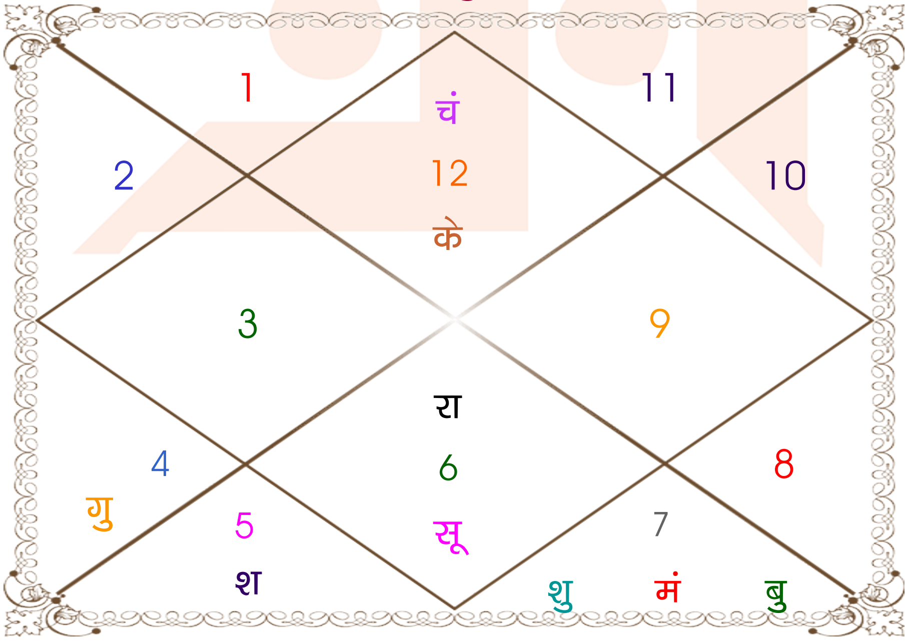

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

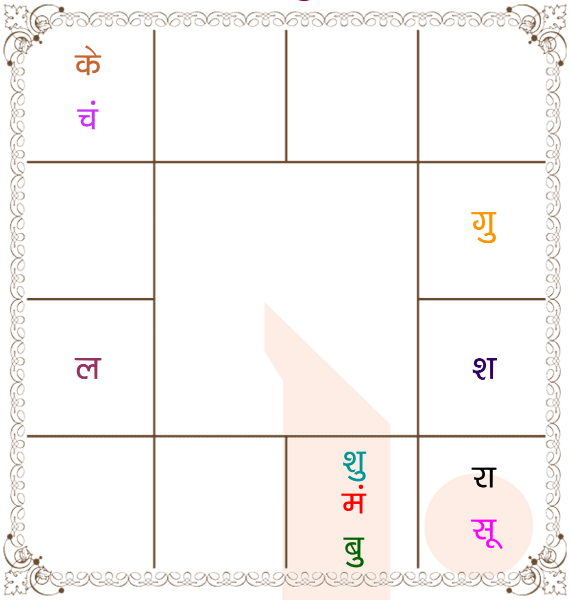


## लग्न कुंडली

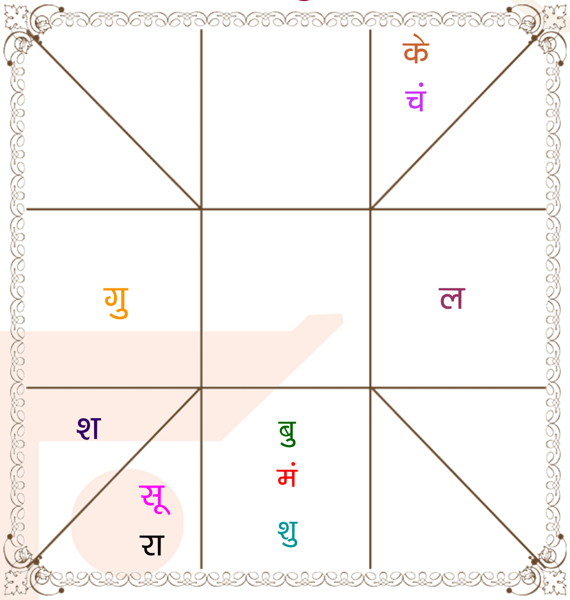


### विंशोत्तरी
**शनि 0वर्ष 8मा 3दि**

**शनि**

**15/10/1978**

**18/06/2080**

| | |
|---|---|
| शनि | 19/06/1979 |
| बुध | 18/06/1996 |
| केतु | 19/06/2003 |
| शुक्र | 19/06/2023 |
| सूर्य | 19/06/2029 |
| चन्द्र | 19/06/2039 |
| मंगल | 19/06/2046 |
| राहु | 18/06/2064 |
| गुरु | 18/06/2080 |

### योगिनी
**भद्रिका 0वर्ष 2मा 4दि**

**सिद्धा**

**19/12/2020**

**19/12/2027**

| | |
|---|---|
| सिद्धा | 30/04/2022 |
| संकटा | 19/11/2023 |
| मंगला | 29/01/2024 |
| पिंगला | 19/06/2024 |
| धान्या | 18/01/2025 |
| भ्रामरी | 29/10/2025 |
| भद्रिका | 19/10/2026 |
| उल्का | 19/12/2027 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | मक | 01:25:43 | 367:38:46 | उत्तराषाढ़ा | 2 | 21 | शनि | सूर्य | गुरु | --- |
| सूर्य | | | कन्या | 28:02:57 | 00:59:27 | चित्रा | 2 | 14 | बुध | मंगल | शनि | सम राशि |
| चंद्र | | | मीन | 16:11:31 | 13:52:22 | उ०भाद्रपद | 4 | 26 | गुरु | शनि | गुरु | सम राशि |
| मंगल | | | तुला | 23:52:58 | 00:41:56 | विशाखा | 2 | 16 | शुक्र | गुरु | शनि | सम राशि |
| बुध | | अ | तुला | 08:11:26 | 01:35:09 | स्वाति | 1 | 15 | शुक्र | राहु | राहु | मित्र राशि |
| गुरु | | | कर्क | 12:50:33 | 00:07:16 | पुष्य | 3 | 8 | चंद्र | शनि | मंगल | उच्च राशि |
| शुक्र | | | तुला | 29:05:23 | 00:06:32 | विशाखा | 3 | 16 | शुक्र | गुरु | सूर्य | स्वराशि |
| शनि | | | सिंह | 16:14:44 | 00:06:19 | पू०फाल्गुनी | 1 | 11 | सूर्य | शुक्र | चंद्र | शत्रु राशि |
| राहु | व | | कन्या | 03:07:55 | 00:01:09 | उ०फाल्गुनी | 2 | 12 | बुध | सूर्य | शनि | मूलत्रिकोण |
| केतु | व | | मीन | 03:07:55 | 00:01:09 | पू०भाद्रपद | 4 | 25 | गुरु | गुरु | राहु | मूलत्रिकोण |
| हर्ष | | | तुला | 21:37:25 | 00:03:30 | विशाखा | 1 | 16 | शुक्र | गुरु | गुरु | --- |
| नेप | | | वृश्चि | 22:36:19 | 00:01:29 | ज्येष्ठा | 2 | 18 | मंगल | बुध | चंद्र | --- |
| प्लूटो | | | कन्या | 23:14:20 | 00:02:22 | हस्त | 4 | 13 | बुध | चंद्र | सूर्य | --- |
| दशम भाव | | | तुला | 13:20:33 | -- | स्वाति | -- | 15 | शुक्र | राहु | बुध | -- |

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

**चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:33:36

## लग्न-चलित

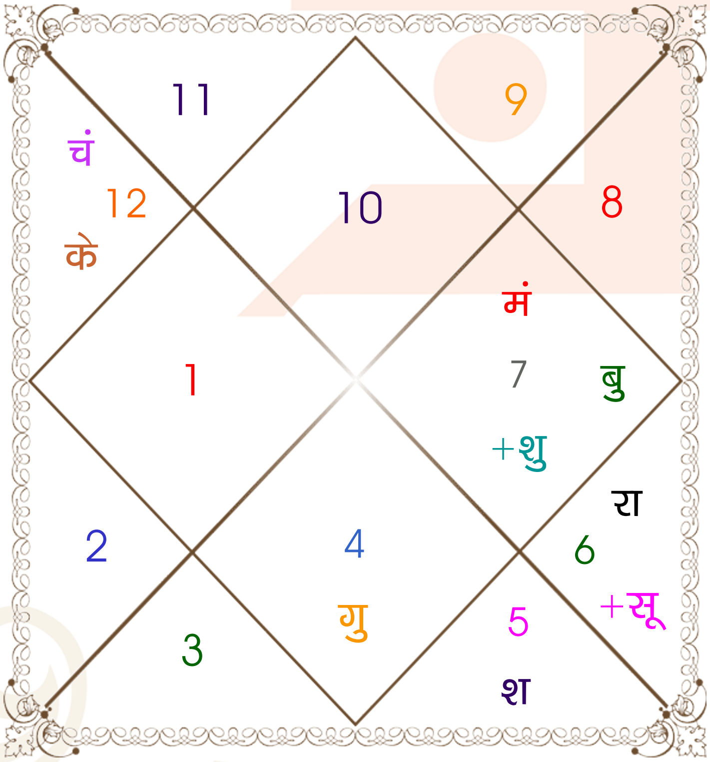


## चन्द्र कुंडली

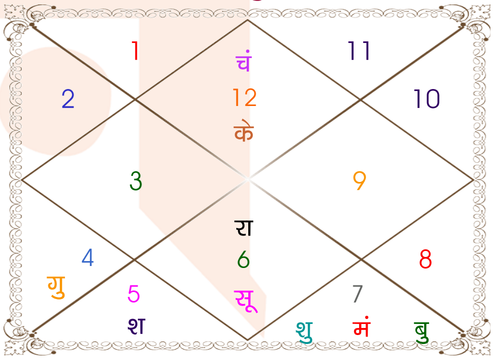


## नवमांश कुंडली

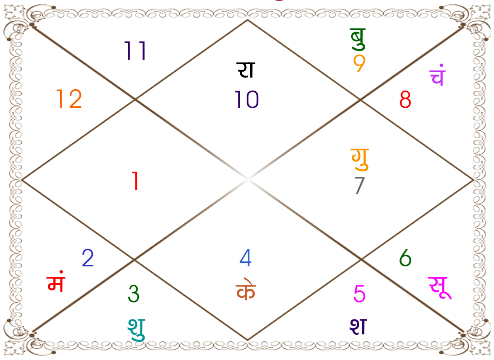

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | धनु | 18:24:52 | मकर | 01:25:43 |
| 2 | मकर | 18:24:52 | कुम्भ | 05:24:00 |
| 3 | कुम्भ | 22:23:08 | मीन | 09:22:17 |
| 4 | मीन | 26:21:25 | मेष | 13:20:33 |
| 5 | मेष | 26:21:25 | वृष | 09:22:17 |
| 6 | वृष | 22:23:08 | मिथुन | 05:24:00 |
| 7 | मिथुन | 18:24:52 | कर्क | 01:25:43 |
| 8 | कर्क | 18:24:52 | सिंह | 05:24:00 |
| 9 | सिंह | 22:23:08 | कन्या | 09:22:17 |
| 10 | कन्या | 26:21:25 | तुला | 13:20:33 |
| 11 | तुला | 26:21:25 | वृश्चिक | 09:22:17 |
| 12 | वृश्चिक | 22:23:08 | धनु | 05:24:00 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | मकर | 01:25:43 |
| 2 | कुम्भ | 06:13:05 |
| 3 | मीन | 11:40:18 |
| 4 | मेष | 13:20:33 |
| 5 | वृष | 10:28:35 |
| 6 | मिथुन | 05:23:14 |
| 7 | कर्क | 01:25:43 |
| 8 | सिंह | 06:13:05 |
| 9 | कन्या | 11:40:18 |
| 10 | तुला | 13:20:33 |
| 11 | वृश्चिक | 10:28:35 |
| 12 | धनु | 05:23:14 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु |
| पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा |
| अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद |

## चलित कुंडली

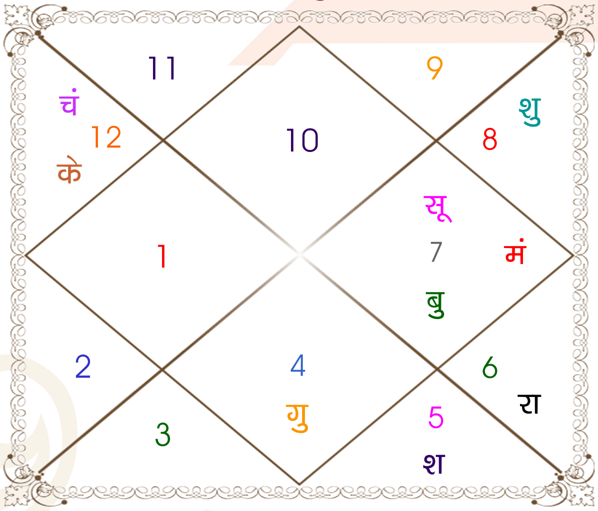


## भाव कुंडली

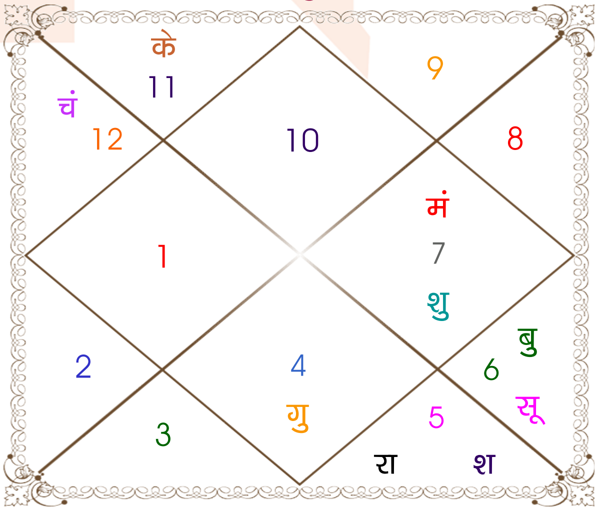

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ------ कारक ------ | | -------- अवस्था -------- | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | अमात्य | पितृ | बाल | शान्त | कौतुक | 0.80 | 86 % |
| चंद्र | पुत्र | मातृ | युवा | शक्त | शयन | 3.33 | 49 % |
| मंगल | भ्रातृ | भ्रातृ | वृद्ध | निपीदित | गमन | 1.19 | 20 % |
| बुध | कलत्र | ज्ञाति | कुमार | विकल | गमन | 0.00 | 40 % |
| गुरु | ज्ञाति | धन | युवा | दीप्त | भोजन | 20.09 | 60 % |
| शुक्र | आत्मा | कलत्र | मृत | स्वस्थ | गमन | 2.14 | 62 % |
| शनि | मातृ | आयु | युवा | खल | आगमन | 3.23 | 26 % |
| राहु | --- | ज्ञान | मृत | स्वस्थ | गमन | 0.00 | 36 % |
| केतु | --- | मोक्ष | मृत | स्वस्थ | उपवेशन | 0.00 | 36 % |
| कुल | | | | | | 30.77 | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु |
| पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा |
| अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद |

## चलित कुंडली

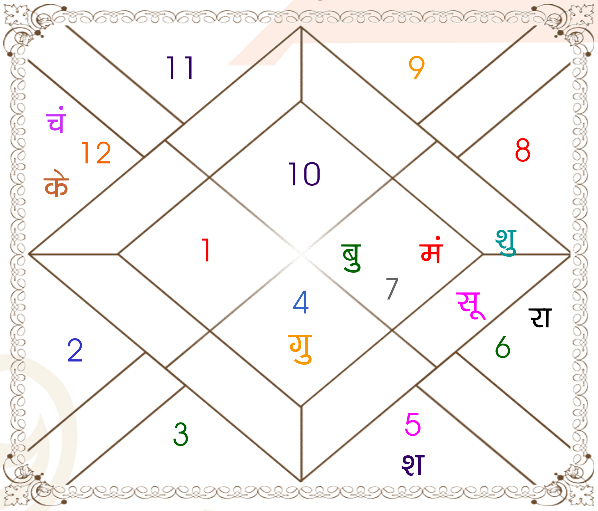


## लग्न-चलित

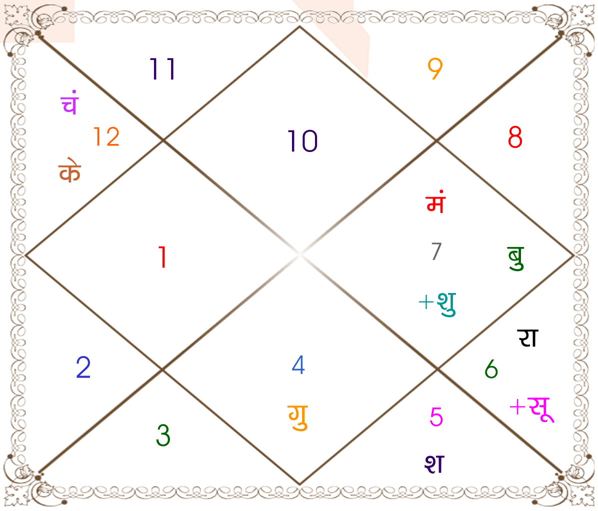


FUTUREPOINT Astro Solutions

एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

# सुदर्शन चक्र

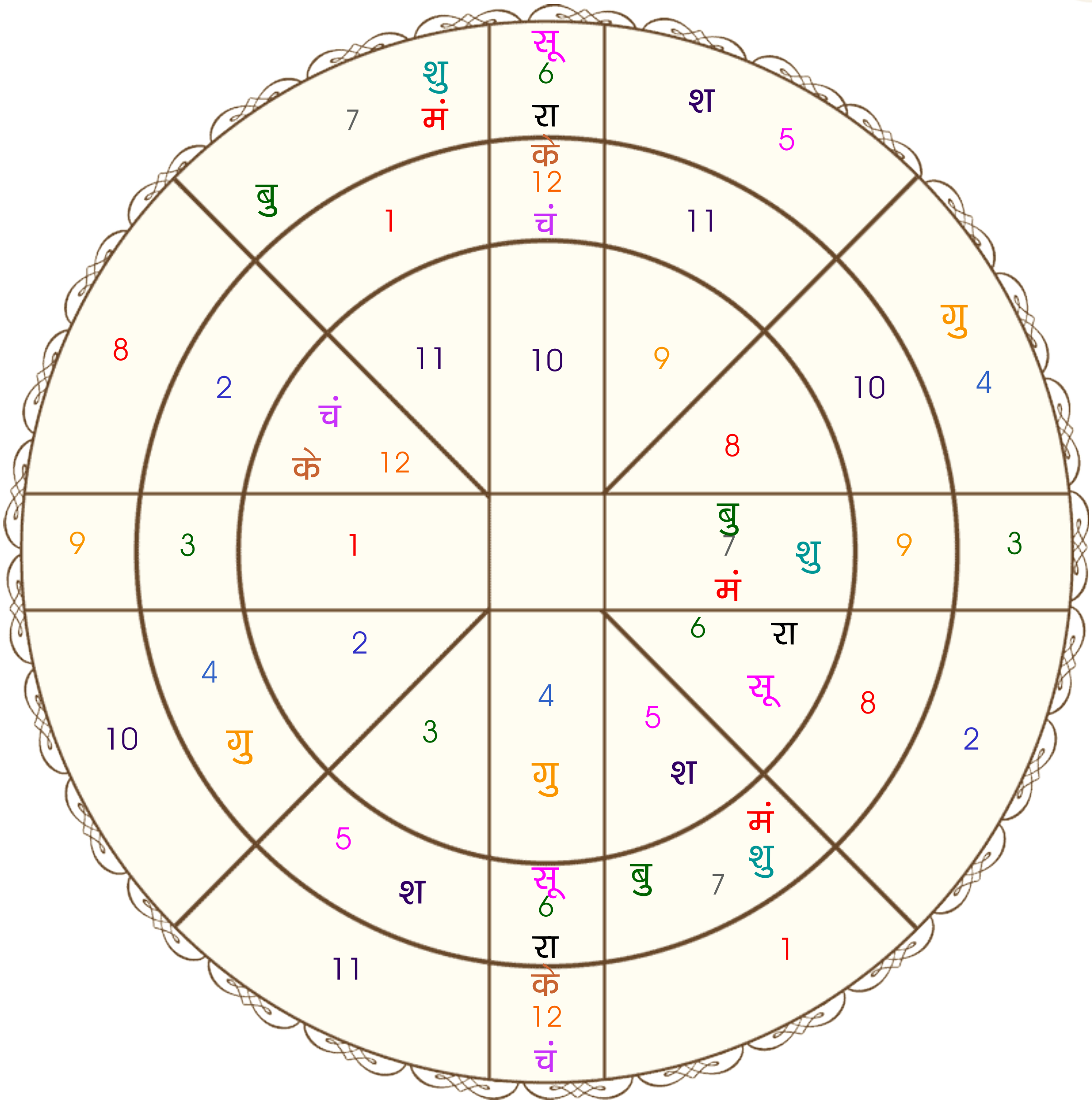


नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

# कृष्णमूर्ति पद्धति

## भोग्य दशा काल : शनि 0 वर्ष 6 मास 11 दिन

| ग्रह | | | | | | | | निरयण भाव | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रह | व | राशि | अंश | रा | न | अं. | प्र. | भाव | राशि | अंश | रा | न | अं. | प्र. |
| सूर्य | | कन्या | 28:09:04 | बुध | मंगल | शनि | शनि | 1 | मक | 01:31:50 | शनि | सूर्य | गुरु | शनि |
| चंद्र | | मीन | 16:17:38 | गुरु | शनि | गुरु | चंद्र | 2 | कुंभ | 06:19:11 | शनि | मंगल | चंद्र | बुध |
| मंगल | | तुला | 23:59:05 | शुक्र | गुरु | बुध | बुध | 3 | मीन | 11:46:24 | गुरु | शनि | चंद्र | बुध |
| बुध | | तुला | 08:17:33 | शुक्र | राहु | राहु | सूर्य | 4 | मेष | 13:26:40 | मंगल | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| गुरु | | कर्क | 12:56:39 | चंद्र | शनि | राहु | राहु | 5 | वृष | 10:34:41 | शुक्र | चंद्र | चंद्र | शनि |
| शुक्र | | तुला | 29:11:29 | शुक्र | गुरु | सूर्य | शनि | 6 | मिथु | 05:29:21 | बुध | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| शनि | | सिंह | 16:20:51 | सूर्य | शुक्र | चंद्र | मंगल | 7 | कर्क | 01:31:50 | चंद्र | गुरु | राहु | राहु |
| राहु | व | कन्या | 03:14:01 | बुध | सूर्य | शनि | शनि | 8 | सिंह | 06:19:11 | सूर्य | केतु | राहु | शनि |
| केतु | व | मीन | 03:14:01 | गुरु | गुरु | राहु | मंगल | 9 | कन्या | 11:46:24 | बुध | चंद्र | मंगल | शुक्र |
| हर्ष | | तुला | 21:43:31 | शुक्र | गुरु | गुरु | राहु | 10 | तुला | 13:26:40 | शुक्र | राहु | बुध | चंद्र |
| नेप | | वृश्चि | 22:42:25 | मंगल | बुध | चंद्र | शनि | 11 | वृश्चि | 10:34:41 | मंगल | शनि | सूर्य | गुरु |
| प्लूटो | | कन्या | 23:20:27 | बुध | मंगल | मंगल | मंगल | 12 | धनु | 05:29:21 | गुरु | केतु | मंगल | सूर्य |

**के.पी. अयनांश : 23:27:30**

**फॉरच्युना : मिथुन 19:40:24**

## लग्न कुंडली

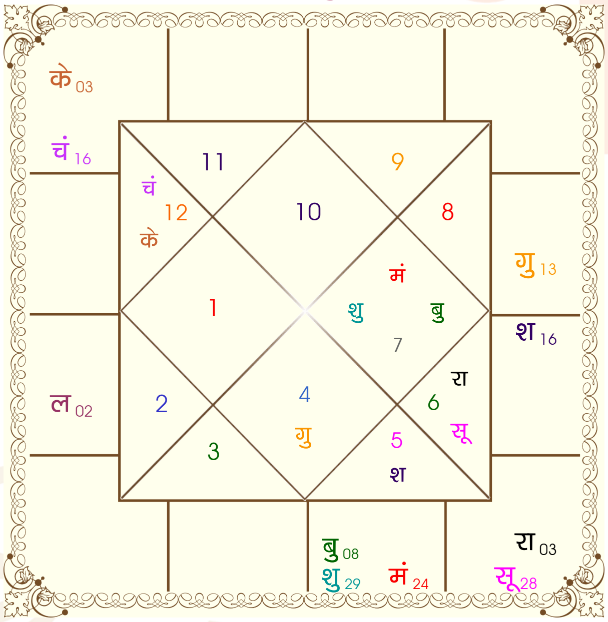


## भाव कुंडली

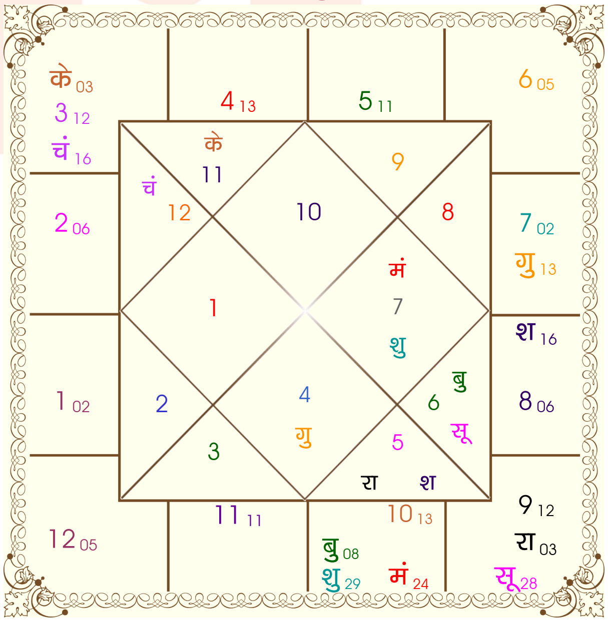

# कारकत्व एवं स्वामित्व

## भाव कारक

| भाव | ग्रह |
|---|---|
| 1 | चंद्र- गुरु- शनि- |
| 2 | चंद्र- गुरु- शनि- केतु, |
| 3 | चंद्र, मंगल- गुरु- शुक्र- केतु- |
| 4 | सूर्य- मंगल- |
| 5 | शुक्र- शनि- |
| 6 | बुध- |
| 7 | चंद्र- मंगल, गुरु, शुक्र, केतु, |
| 8 | सूर्य- चंद्र, बुध, गुरु, शनि, राहु+ |
| 9 | सूर्य, बुध, राहु, |
| 10 | सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि+ |
| 11 | सूर्य- मंगल- |
| 12 | मंगल- गुरु- शुक्र- केतु- |

## ग्रह कारकत्व

| ग्रह | भाव |
|---|---|
| सूर्य | 4- 8- 9, 10, 11- |
| चंद्र | 1- 2- 3, 7- 8, |
| मंगल | 3- 4- 7, 10, 11- 12- |
| बुध | 6- 8, 9, |
| गुरु | 1- 2- 3- 7, 8, 12- |
| शुक्र | 3- 5- 7, 10, 12- |
| शनि | 1- 2- 5- 8, 10+ |
| राहु | 8+ 9, |
| केतु | 2, 3- 7, 12- |

## स्वामित्व

| | |
|---|---|
| लग्न नक्षत्र स्वामी | सूर्य |
| लग्न राशि स्वामी | शनि |
| राशि नक्षत्र स्वामी | शनि |
| राशि स्वामी | गुरु |
| वार स्वामी | सूर्य |
| लग्न अन्तर स्वामी | गुरु |
| राशि अन्तर स्वामी | गुरु |

## कारकत्व-सारिणी

| भाव | स्थित ग्रह के नक्षत्र में | स्थित ग्रह | स्वामी के नक्षत्र में | स्वामी |
|---|---|---|---|---|
| 1 | -- | -- | चं गु | श |
| 2 | -- | के | चं गु | श |
| 3 | -- | चं | मं शु के | गु |
| 4 | -- | -- | सू | मं |
| 5 | -- | -- | श | शु |
| 6 | -- | -- | -- | बु |
| 7 | मं शु के | गु | -- | चं |
| 8 | चं बु गु | श रा | रा | सू |
| 9 | रा | सू बु | -- | बु |
| 10 | सू श | मं शु | श | शु |
| 11 | -- | -- | सू | मं |
| 12 | -- | -- | मं शु के | गु |

## ग्रह कारक सारिणी-1

| ग्रह | भावाधिपति | नक्षत्राधिपति | स्थित | भाव |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 8 | 1 | कन्या | 9 |
| चंद्र | 7 | 5,9 | मीन | 3 |
| मंगल | 4,11 | 2,6 | तुला | 10 |
| बुध | 6,9 | --- | तुला | 9 |
| गुरु | 3,12 | 7 | कर्क | 7 |
| शुक्र | 5,10 | 4 | तुला | 10 |
| शनि | 1,2 | 3,11 | सिंह | 8 |
| राहु | --- | 10 | कन्या | 8 |
| केतु | --- | 8,12 | मीन | 2 |

## ग्रह कारक सारिणी-2

| ग्रह | भावाधि भाव | नक्षत्राधि भाव | स्थित भाव | स्वामित्व | अन्तर स्वामी | स्थित भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 4,11 | 2,6 | 10 | 1,2 | 3,11 | 8 |
| चंद्र | 1,2 | 3,11 | 8 | 3,12 | 7 | 7 |
| मंगल | 3,12 | 7 | 7 | 6,9 | --- | 9 |
| बुध | --- | 10 | 8 | --- | 10 | 8 |
| गुरु | 1,2 | 3,11 | 8 | --- | 10 | 8 |
| शुक्र | 3,12 | 7 | 7 | 8 | 1 | 9 |
| शनि | 5,10 | 4 | 10 | 7 | 5,9 | 3 |
| राहु | 8 | 1 | 9 | 1,2 | 3,11 | 8 |
| केतु | 3,12 | 7 | 7 | --- | 10 | 8 |

# ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

| | सूर्य 178.05 | चंद्र 346.19 | मंगल 203.88 | बुध 188.19 | गुरु 102.84 | शुक्र 209.09 | शनि 136.25 | राहु 153.13 | केतु 333.13 | हर्ष 201.62 | नेप 232.61 | प्लूटो 173.24 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | -- | सप्त | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | -- | तृती | युति |
| 178.05 | 0.00 | 3.23 | 0.00 | 4.87 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.44 | 8.76 |
| चंद्र | सप्त | -- | -- | -- | पंच | -- | षष्ठ | सप्त | युति | -- | -- | सप्त |
| 346.19 | 3.23 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.92 | 0.00 | 1.00 | 2.02 | 2.02 | 0.00 | 0.00 | 7.40 |
| मंगल | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- | -- | -- | युति | -- | -- |
| 203.88 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.55 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 9.72 | 0.00 | 0.00 |
| बुध | युति | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | युति | अष्ट | युति |
| 188.19 | 4.87 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.63 | 0.61 | 0.05 |
| गुरु | -- | 9वां | -- | चतु | -- | 5वां | -- | -- | 9वां | -- | 5वां | -- |
| 102.84 | 0.00 | 9.39 | 0.00 | 1.04 | 0.00 | 1.30 | 0.00 | 0.00 | 5.26 | 0.00 | 5.21 | 0.00 |
| शुक्र | -- | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | पंच | युति | -- | -- |
| 209.09 | 0.00 | 0.00 | 8.55 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.47 | 7.10 | 0.00 | 0.00 |
| शनि | -- | -- | 3रा | 3रा | -- | 3रा | -- | -- | -- | 3रा | -- | -- |
| 136.25 | 0.00 | 0.00 | 6.97 | 6.65 | 0.00 | 2.24 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.46 | 0.00 | 0.00 |
| राहु | -- | सप्त | -- | -- | -- | तृती | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- |
| 153.13 | 0.00 | 2.02 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.47 | 0.00 | 0.00 | 10.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| केतु | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- |
| 333.13 | 0.00 | 2.02 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 10.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| हर्ष | -- | -- | युति | युति | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 201.62 | 0.00 | 0.00 | 9.72 | 1.63 | 0.00 | 7.10 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| नेप | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 232.61 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| प्लूटो | युति | सप्त | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | -- | तृती | -- |
| 173.24 | 8.76 | 7.40 | 0.00 | 0.05 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.96 | 0.00 |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

| संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| युति - युति | 0 | 15 | 10 | सप्त - सप्तम | 180 | 15 | 10 |
| पंच - पंचम | 120 | 6 | 3 | चतु - चतुर्थ | 90 | 6 | 3 |
| तृती - तृतीय | 60 | 6 | 3 | अष्ट - अष्टमांश | 45 | 1 | 1 |
| नवां - नवमांश | 40 | 1 | 1 | पंचा - पंचमांश | 72 | 1 | 1 |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1 | 1 | षष्ठ - षष्ठ | 150 | 1 | 1 |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

# भाव मध्य दृष्टि विचार

**दृश्य भाव**

| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 271.43 | 305.40 | 339.37 | 13.34 | 39.37 | 65.40 | 91.43 | 125.40 | 159.37 | 193.34 | 219.37 | 245.40 |
| सूर्य | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 178.05 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| चंद्र | -- | -- | युति | -- | -- | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- |
| 346.19 | 0.00 | 0.00 | 7.56 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.56 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| मंगल | -- | 4था | -- | सप्त | 8वां | 8वां | -- | -- | -- | युति | -- | -- |
| 203.88 | 0.00 | 3.57 | 0.00 | 4.50 | 0.51 | 3.57 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.50 | 0.00 | 0.00 |
| बुध | -- | पंच | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- | तृती |
| 188.19 | 0.00 | 2.23 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.58 | 0.00 | 2.23 |
| गुरु | सप्त | -- | 9वां | -- | -- | -- | युति | -- | तृती | चतु | 5वां | -- |
| 102.84 | 3.67 | 0.00 | 9.35 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.67 | 0.00 | 1.84 | 2.97 | 9.35 | 0.00 |
| शुक्र | तृती | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- |
| 209.09 | 2.45 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.74 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.74 | 0.00 |
| शनि | अष्टां | सप्त | -- | -- | 10वा | -- | -- | युति | -- | 3रा | -- | -- |
| 136.25 | 0.96 | 4.21 | 0.00 | 0.00 | 7.52 | 0.00 | 0.00 | 4.21 | 0.00 | 9.54 | 0.00 | 0.00 |
| राहु | पंच | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | नवां | -- | चतु |
| 153.13 | 2.71 | 0.00 | 7.94 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.94 | 0.95 | 0.00 | 2.49 |
| केतु | -- | -- | युति | नवां | -- | चतु | पंच | -- | -- | -- | -- | -- |
| 333.13 | 0.00 | 0.00 | 7.94 | 0.95 | 0.00 | 2.49 | 2.71 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| हर्ष | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 201.62 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 6.47 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| नेप | -- | पंचा | -- | -- | सप्त | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति |
| 232.61 | 0.00 | 0.32 | 0.00 | 0.00 | 1.84 | 2.29 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.29 |
| प्लूटो | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- | -- | -- |
| 173.24 | 0.00 | 0.00 | 1.18 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.18 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

| संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| युति - युति | 0 | 15 | 10 | सप्त - सप्तम | 180 | 15 | 10 |
| पंच - पंचम | 120 | 6 | 3 | चतु - चतुर्थ | 90 | 6 | 3 |
| तृती - तृतीय | 60 | 6 | 3 | अष्ट - अष्टमांश | 45 | 1 | 1 |
| नवां - नवमांश | 40 | 1 | 1 | पंचा - पंचमांश | 72 | 1 | 1 |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1 | 1 | षष्ठ - षष्ठ | 150 | 1 | 1 |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

# भाव दृष्टि विचार

**दृष्य भाव**

| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 271.43 | 306.22 | 341.67 | 13.34 | 40.48 | 65.39 | 91.43 | 126.22 | 161.67 | 193.34 | 220.48 | 245.39 |
| सूर्य | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 178.05 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| चंद्र | -- | -- | युति | -- | तृती | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- |
| 346.19 | 0.00 | 0.00 | 8.90 | 0.00 | 0.22 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.90 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| मंगल | -- | 4था | -- | सप्त | 8वां | 8वां | -- | -- | -- | युति | -- | -- |
| 203.88 | 0.00 | 2.75 | 0.00 | 4.50 | 1.66 | 3.58 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.50 | 0.00 | 0.00 |
| बुध | -- | पंच | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- | तृती |
| 188.19 | 0.00 | 2.61 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.58 | 0.00 | 2.23 |
| गुरु | सप्त | -- | 9वां | -- | -- | -- | युति | -- | तृती | चतु | 5वां | -- |
| 102.84 | 3.67 | 0.00 | 9.92 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.67 | 0.00 | 2.86 | 2.97 | 9.69 | 0.00 |
| शुक्र | तृती | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- |
| 209.09 | 2.45 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.69 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.69 | 0.00 |
| शनि | अष्टां | सप्त | -- | -- | 10वा | -- | -- | युति | -- | 3रा | चतु | -- |
| 136.25 | 0.96 | 4.97 | 0.00 | 0.00 | 8.23 | 0.00 | 0.00 | 4.97 | 0.00 | 9.54 | 0.18 | 0.00 |
| राहु | पंच | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | नवां | -- | चतु |
| 153.13 | 2.71 | 0.00 | 6.26 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 6.26 | 0.95 | 0.00 | 2.49 |
| केतु | -- | -- | युति | नवां | -- | चतु | पंच | -- | -- | -- | -- | -- |
| 333.13 | 0.00 | 0.00 | 6.26 | 0.95 | 0.00 | 2.49 | 2.71 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| हर्ष | -- | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 201.62 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 6.47 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| नेप | -- | -- | -- | -- | सप्त | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति |
| 232.61 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.96 | 2.30 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.30 |
| प्लूटो | -- | -- | सप्त | -- | -- | -- | -- | -- | युति | -- | -- | -- |
| 173.24 | 0.00 | 0.00 | 3.52 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.52 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

| संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| युति - युति | 0 | 15 | 10 | सप्त - सप्तम | 180 | 15 | 10 |
| पंच - पंचम | 120 | 6 | 3 | चतु - चतुर्थ | 90 | 6 | 3 |
| तृती - तृतीय | 60 | 6 | 3 | अष्ट - अष्टमांश | 45 | 1 | 1 |
| नवां - नवमांश | 40 | 1 | 1 | पंचा - पंचमांश | 72 | 1 | 1 |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1 | 1 | षष्ठ - षष्ठ | 150 | 1 | 1 |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

# षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

## सूर्य कुंडली

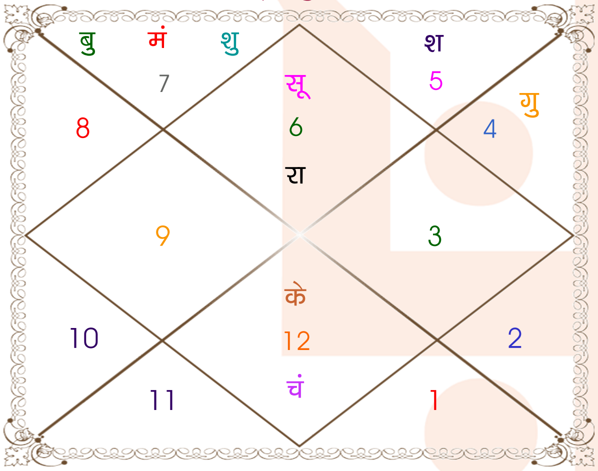


आत्मविचारः

## चन्द्र कुंडली

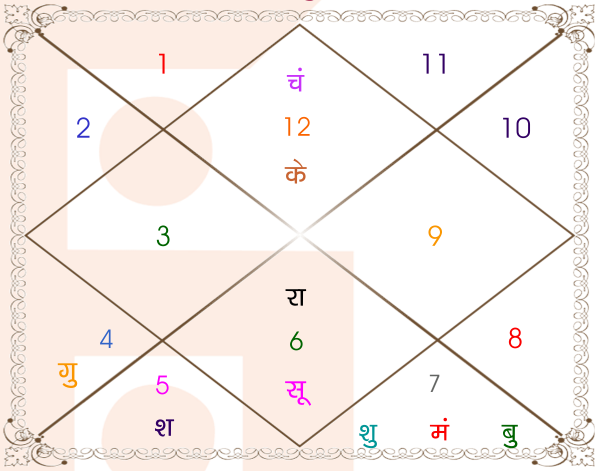


मनोबलविचारः

## लग्न कुंडली

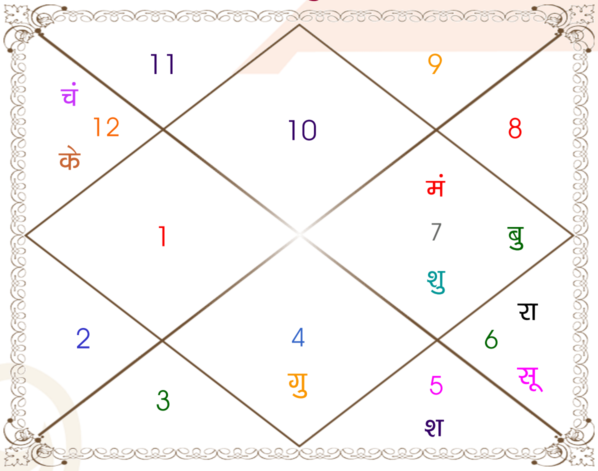


देह विचारः

## होरा कुंडली

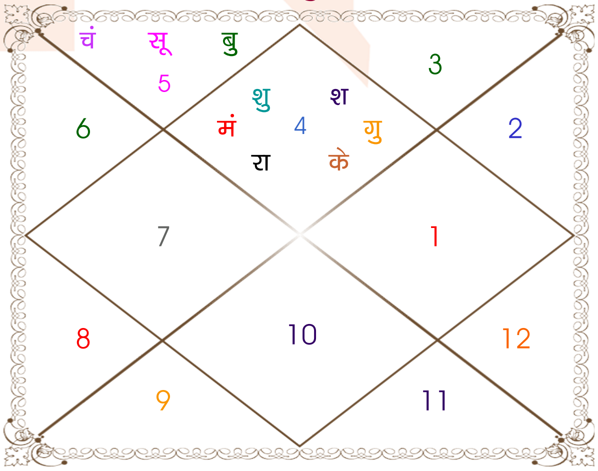


सम्पदाविचारः

# षोडशवर्ग चक्र

## द्रेष्काण कुंडली

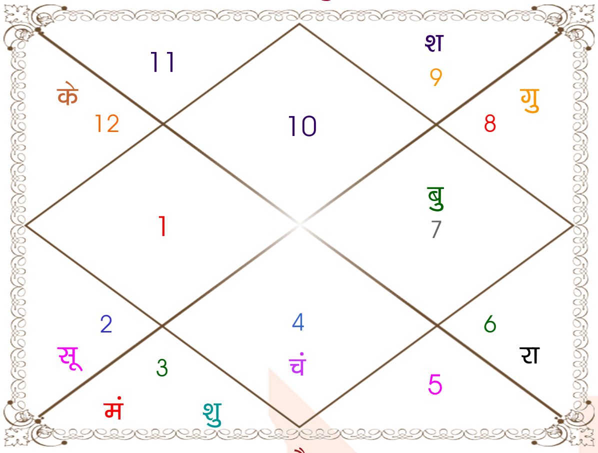


भ्रातृसौख्यम

## चतुर्थांश कुंडली

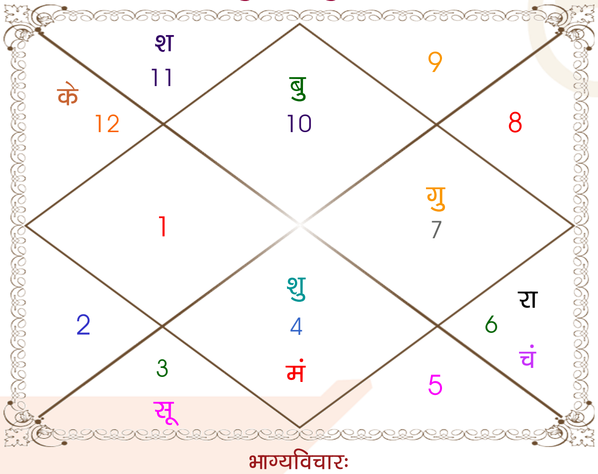


भाग्यविचारः

## पंचमांश कुंडली

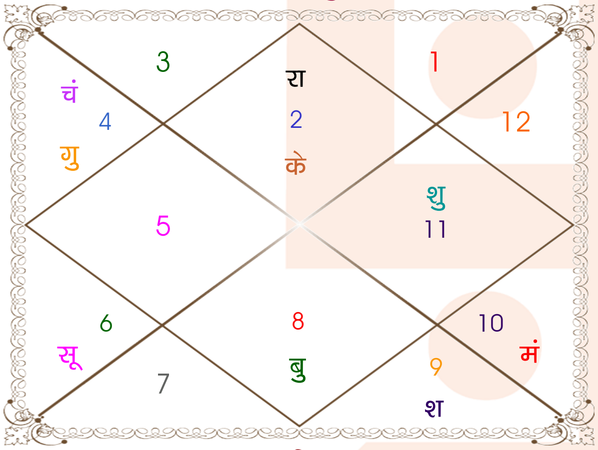


ज्ञानविचारः

## षष्ठांश कुंडली

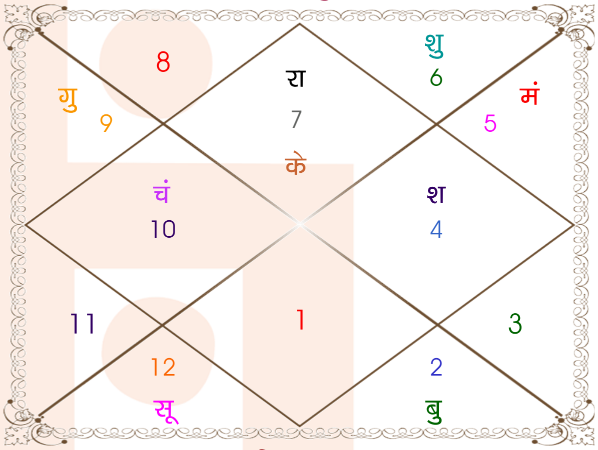


रिपुज्ञानम्

## सप्तमांश कुंडली

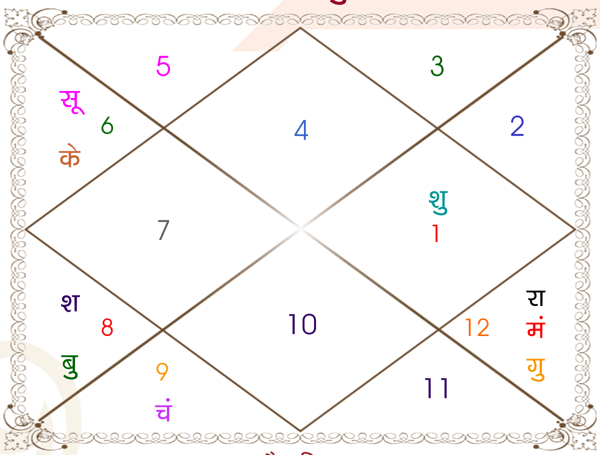


पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

## अष्टमांश कुंडली

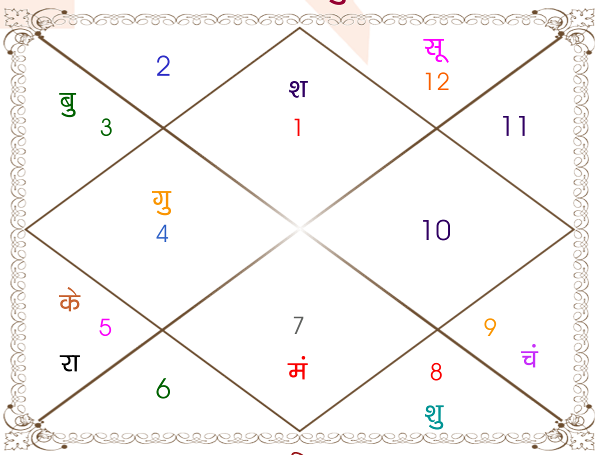


आयुविचारः

# षोडशवर्ग चक्र

## नवमांश कुंडली

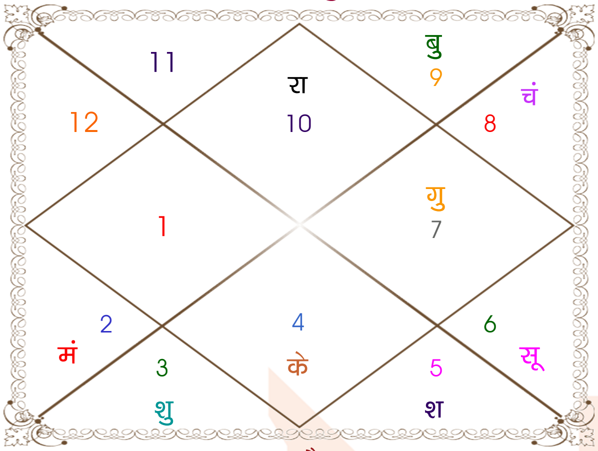


कलत्र सौख्यम

## दशमांश कुंडली

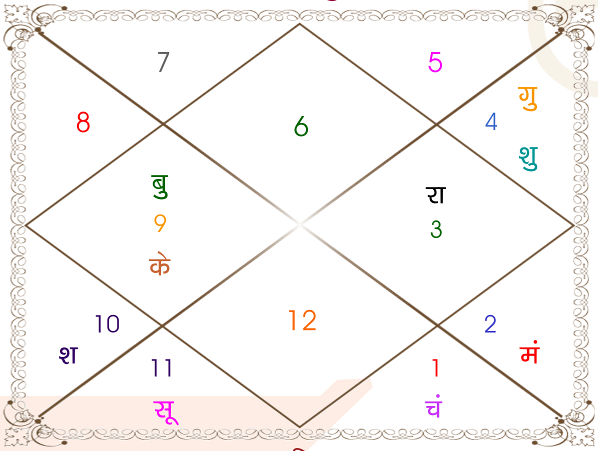


राज्यविचारः

## एकादशांश कुंडली

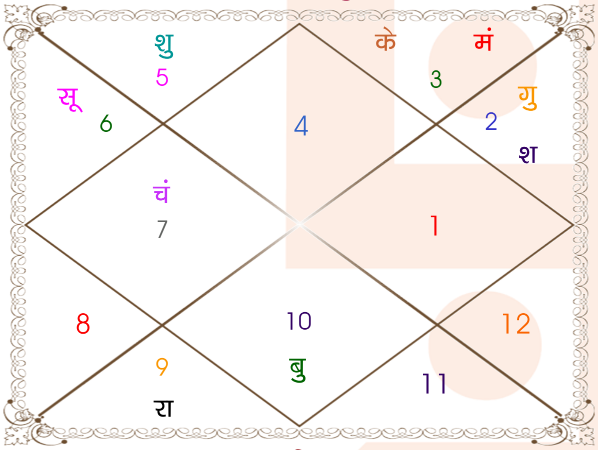


लाभविचारः

## द्वादशांश कुंडली

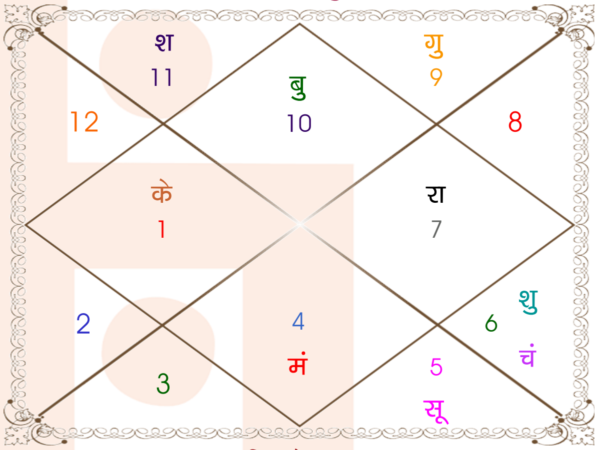


पितृसौख्यम

## षोडशांश कुंडली

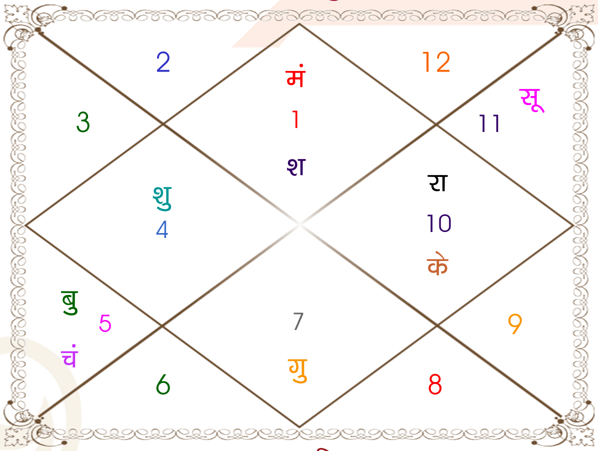


वाहनसुखविचारः

## विंशांश कुंडली

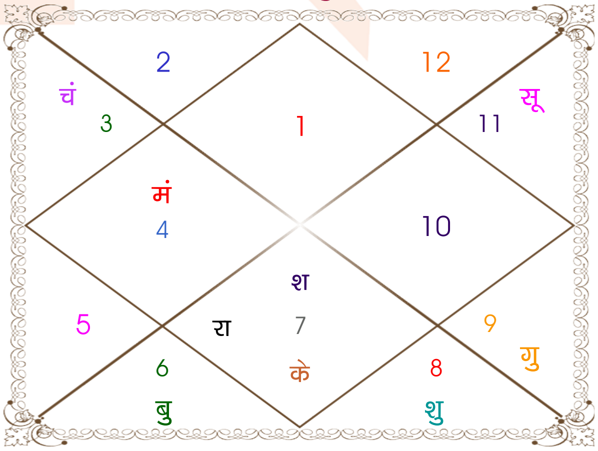


उपासनाज्ञानम्

# षोडशवर्ग चक्र

## चतुर्विंशांश कुंडली

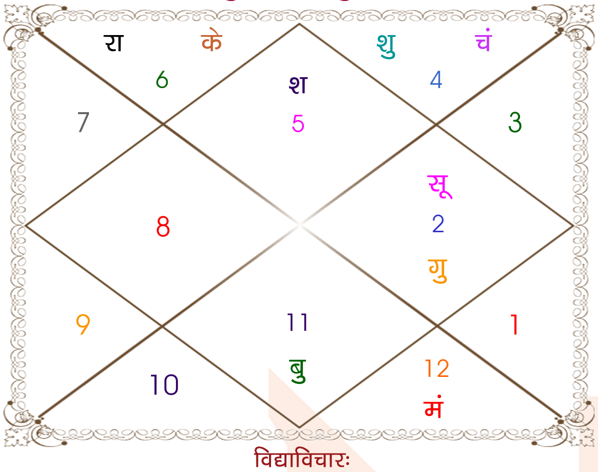


विद्याविचारः

## सप्तविंशांश कुंडली

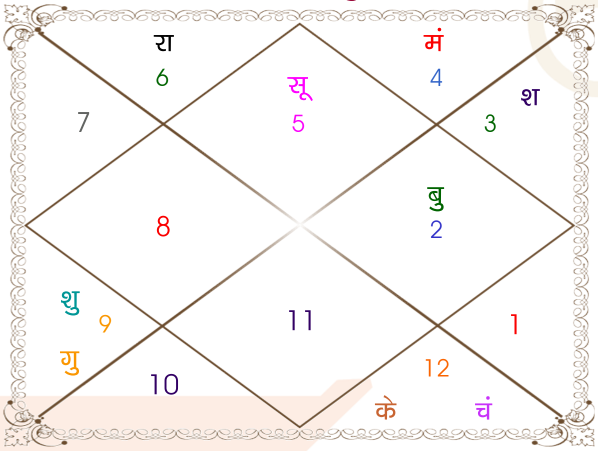


बलाबलज्ञानम्

## त्रिंशांश कुंडली

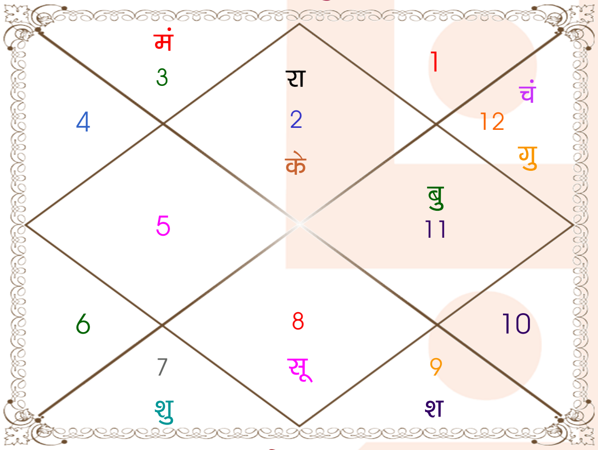


अरिष्टज्ञानम्

## खवेदांश कुंडली

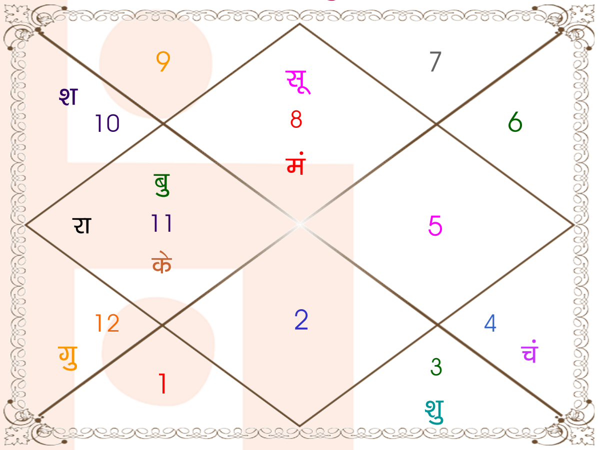


शुभाशुभज्ञानम्

## अक्षवेदांश कुंडली

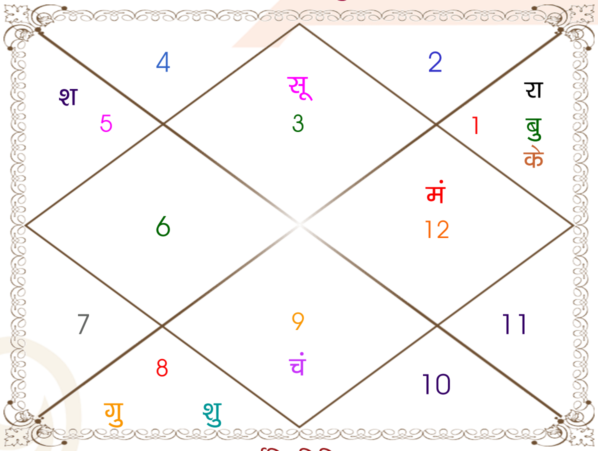


सर्वास्थितिविचारः

## षष्ट्यंश कुंडली

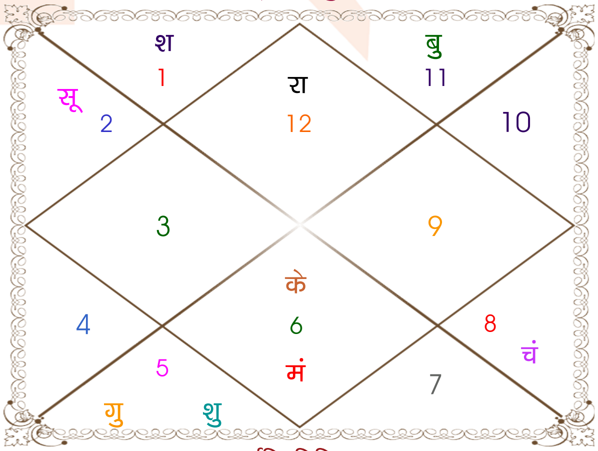


सर्वास्थितिविचारः

# षोडशवर्ग सारणियाँ

## षोडशवर्ग सारिणी

| | लग्न | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | मक | कन्या | मीन | तुला | तुला | कर्क | तुला | सिंह | कन्या | मीन |
| होरा | कर्क | सिंह | सिंह | कर्क | सिंह | कर्क | कर्क | कर्क | कर्क | कर्क |
| द्रेष्काण | मक | वृष | कर्क | मिथु | तुला | वृश्चि | मिथु | धनु | कन्या | मीन |
| चतुर्थांश | मक | मिथु | कन्या | कर्क | मक | तुला | कर्क | कुंभ | कन्या | मीन |
| सप्तमांश | कर्क | कन्या | धनु | मीन | वृश्चि | मीन | मेष | वृश्चि | मीन | कन्या |
| नवमांश | मक | कन्या | वृश्चि | वृष | धनु | तुला | मिथु | सिंह | मक | कर्क |
| दशमांश | कन्या | कुंभ | मेष | वृष | धनु | कर्क | कर्क | मक | मिथु | धनु |
| द्वादशांश | मक | सिंह | कन्या | कर्क | मक | धनु | कन्या | कुंभ | तुला | मेष |
| षोडशांश | मेष | कुंभ | सिंह | मेष | सिंह | तुला | कर्क | मेष | मक | मक |
| विंशांश | मेष | कुंभ | मिथु | कर्क | कन्या | धनु | वृश्चि | तुला | तुला | तुला |
| चतुर्विंशांश | सिंह | वृष | कर्क | मीन | कुंभ | वृष | कर्क | सिंह | कन्या | कन्या |
| सप्तविंशांश | सिंह | सिंह | मीन | कर्क | वृष | धनु | धनु | मिथु | कन्या | मीन |
| त्रिंशांश | वृष | वृश्चि | मीन | मिथु | कुंभ | मीन | तुला | धनु | वृष | वृष |
| खवेदांश | वृश्चि | वृश्चि | कर्क | वृश्चि | कुंभ | मीन | मिथु | मक | कुंभ | कुंभ |
| अक्षवेदांश | मिथु | मिथु | धनु | मीन | मेष | वृश्चि | वृश्चि | सिंह | मेष | मेष |
| षष्ट्यंश | मीन | वृष | वृश्चि | कन्या | कुंभ | सिंह | सिंह | मेष | मीन | कन्या |

## वर्ग भेद

| | षडवर्ग | सप्तवर्ग | दशवर्ग | षोडशवर्ग |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 2 पारिजात | 3 कुसुम |
| चन्द्र | 1 --- | 1 --- | 1 --- | 3 कुसुम |
| मंगल | 0 --- | 0 --- | 1 --- | 2 भेदक |
| बुध | 0 --- | 0 --- | 0 --- | 1 --- |
| गुरु | 4 चामर | 5 छत्र | 6 पारवत | 9 पूर्णचन्द |
| शुक्र | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 2 पारिजात | 2 भेदक |
| शनि | 1 --- | 1 --- | 2 पारिजात | 5 कन्दुक |
| राहु | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 3 उत्तम | 6 केरल |
| केतु | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 3 उत्तम | 5 कन्दुक |

## विंशोपक बल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| षडवर्ग | 15.15 | 10.20 | 7.10 | 12.80 | 13.10 | 13.00 | 11.75 | 15.20 | 6.75 |
| सप्तवर्ग | 15.40 | 9.55 | 8.58 | 12.30 | 13.95 | 12.13 | 11.50 | 15.13 | 6.80 |
| दशवर्ग | 13.60 | 8.65 | 8.45 | 13.73 | 14.85 | 10.90 | 11.88 | 15.15 | 7.00 |
| षोडशवर्ग | 13.60 | 8.98 | 9.30 | 13.93 | 13.95 | 11.03 | 11.65 | 15.50 | 6.73 |

# मैत्री सारिणी

## नैसर्गिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | --- | मित्र | मित्र | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | --- | सम | मित्र | सम | सम | सम | शत्रु | शत्रु |
| मंगल | मित्र | मित्र | --- | शत्रु | मित्र | सम | सम | शत्रु | मित्र |
| बुध | मित्र | शत्रु | सम | --- | सम | मित्र | सम | सम | सम |
| गुरु | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | --- | शत्रु | सम | सम | सम |
| शुक्र | शत्रु | शत्रु | सम | मित्र | सम | --- | मित्र | मित्र | मित्र |
| शनि | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | मित्र | --- | मित्र | शत्रु |
| राहु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | सम | मित्र | मित्र | --- | शत्रु |
| केतु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | --- |

## तात्कालिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | --- | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु |
| चंद्र | शत्रु | --- | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| मंगल | मित्र | शत्रु | --- | शत्रु | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु |
| बुध | मित्र | शत्रु | शत्रु | --- | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु |
| गुरु | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | --- | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु |
| शुक्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | --- | मित्र | मित्र | शत्रु |
| शनि | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | --- | मित्र | शत्रु |
| राहु | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | --- | शत्रु |
| केतु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | --- |

## पंचधा मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | --- | सम | अतिमित्र | मित्र | अतिमित्र | सम | सम | अधिशत्रु | अधिशत्रु |
| चंद्र | सम | --- | शत्रु | सम | शत्रु | शत्रु | शत्रु | अधिशत्रु | अधिशत्रु |
| मंगल | अतिमित्र | सम | --- | अधिशत्रु | अतिमित्र | शत्रु | मित्र | सम | सम |
| बुध | अतिमित्र | अधिशत्रु | शत्रु | --- | मित्र | सम | मित्र | मित्र | शत्रु |
| गुरु | अतिमित्र | सम | अतिमित्र | सम | --- | सम | मित्र | मित्र | शत्रु |
| शुक्र | सम | अधिशत्रु | शत्रु | सम | मित्र | --- | अतिमित्र | अतिमित्र | सम |
| शनि | सम | अधिशत्रु | सम | अतिमित्र | मित्र | अतिमित्र | --- | अतिमित्र | अधिशत्रु |
| राहु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | मित्र | मित्र | अतिमित्र | अतिमित्र | --- | अधिशत्रु |
| केतु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | शत्रु | शत्रु | सम | अधिशत्रु | अधिशत्रु | --- |

# षट्बल तथा भावबल सारिणी

## षट्बल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च बल | 4 | 44 | 29 | 52 | 57 | 11 | 39 |
| सप्तवर्गज बल | 135 | 60 | 49 | 86 | 135 | 103 | 84 |
| ओजयुग्मक बल | 0 | 30 | 15 | 30 | 15 | 0 | 30 |
| केन्द्र बल | 15 | 15 | 60 | 60 | 60 | 60 | 30 |
| द्रेष्काण बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 15 | 15 |
| कुल स्थान बल | 154 | 149 | 152 | 229 | 267 | 189 | 198 |
| कुल दिग्बल | 55 | 51 | 56 | 32 | 4 | 5 | 45 |
| नतोन्नत बल | 55 | 5 | 5 | 60 | 55 | 55 | 5 |
| पक्ष बल | 4 | 112 | 4 | 4 | 56 | 56 | 4 |
| त्रिभाग बल | 60 | 0 | 0 | 0 | 60 | 0 | 0 |
| अब्द बल | 15 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मास बल | 30 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| वार बल | 45 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| होरा बल | 0 | 0 | 60 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| अयन बल | 38 | 25 | 8 | 46 | 54 | 6 | 20 |
| युद्ध बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| कुल कालबल | 247 | 142 | 77 | 110 | 225 | 117 | 28 |
| कुल चेष्टाबल | 0 | 0 | 12 | 10 | 28 | 51 | 17 |
| कुल नैसर्गिक बल | 60 | 51 | 17 | 26 | 34 | 43 | 9 |
| कुल दृग्बल | 20 | -8 | 3 | 20 | 4 | 1 | 1 |
| कुल षट्बल | 535 | 385 | 318 | 426 | 563 | 406 | 298 |
| रूप षट्बल | 8.9 | 6.4 | 5.3 | 7.1 | 9.4 | 6.8 | 5.0 |
| न्यूनतम आवश्यकता | 5 | 6 | 5 | 7 | 7 | 6 | 5 |
| अनुपात | 1.8 | 1.1 | 1.1 | 1.0 | 1.4 | 1.2 | 1.0 |
| संबंधित पद | 1 | 4 | 5 | 6 | 2 | 3 | 7 |

## इष्ट फल

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इष्ट फल | 9.53 | 49.88 | 18.67 | 23.02 | 40.27 | 23.31 | 25.39 |
| कष्ट फल | 45.65 | 7.85 | 38.73 | 19.63 | 9.11 | 21.29 | 30.36 |

## भाव बल

| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भावाधिपति बल | 298 | 298 | 563 | 318 | 406 | 426 | 385 | 535 | 426 | 406 | 318 | 563 |
| भावदिग्बल | 30 | 50 | 50 | 0 | 10 | 10 | 30 | 40 | 20 | 30 | 20 | 50 |
| भावदृष्टि बल | 61 | 62 | 18 | 49 | 35 | 18 | 25 | 5 | 25 | 53 | 18 | 41 |
| कुल भाव बल | 389 | 410 | 630 | 367 | 451 | 454 | 440 | 580 | 471 | 489 | 357 | 654 |
| रूप भाव बल | 6.5 | 6.8 | 10.5 | 6.1 | 7.5 | 7.6 | 7.3 | 9.7 | 7.8 | 8.1 | 5.9 | 10.9 |
| संबंधित पद | 10 | 9 | 2 | 11 | 7 | 6 | 8 | 3 | 5 | 4 | 12 | 1 |

# षट्बल ग्राफ

## स्थान बल

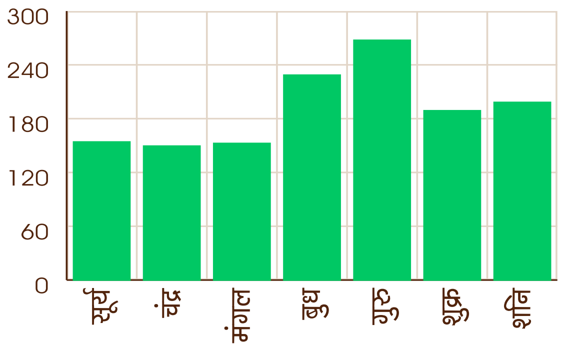


## दिग्बल

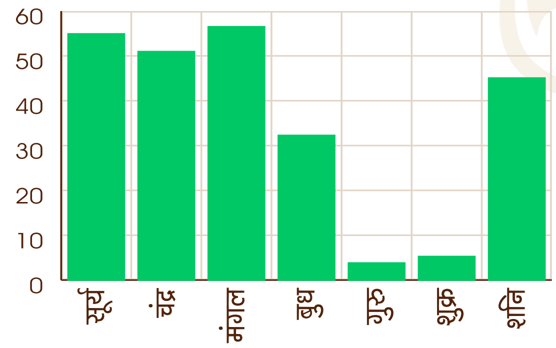


## कालबल

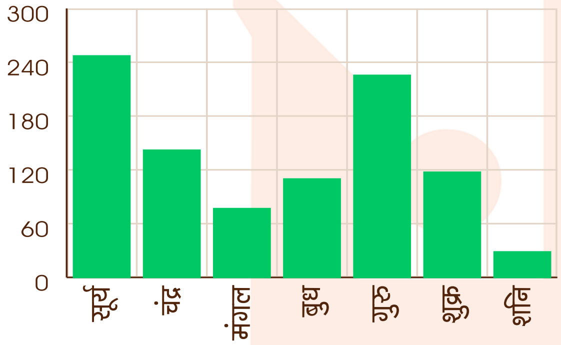


## चेष्टाबल

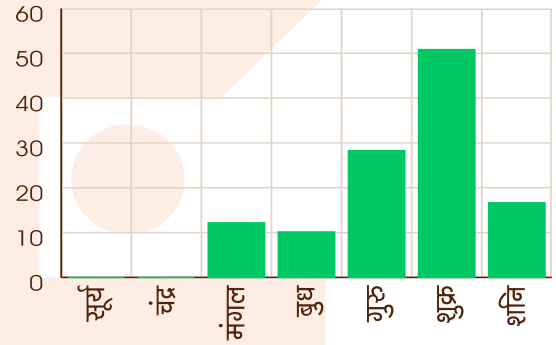


## नैसर्गिक बल

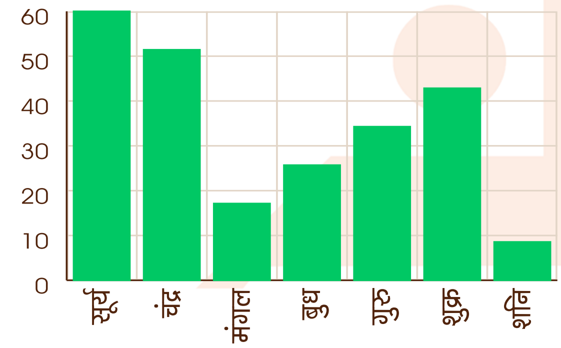


## दृग्बल

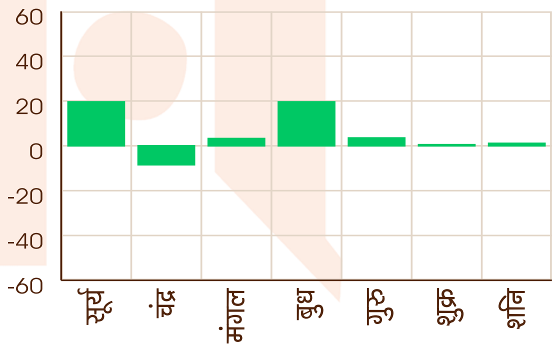


## रूप षट्बल

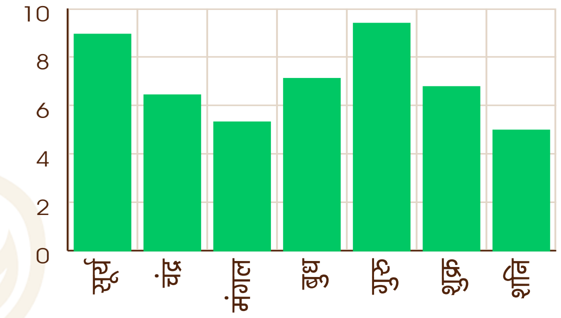


## न्यूनतम षट्बल

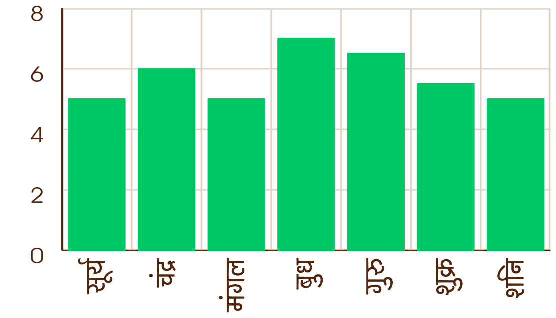

# भाव बल ग्राफ

## भावाधिपति बल

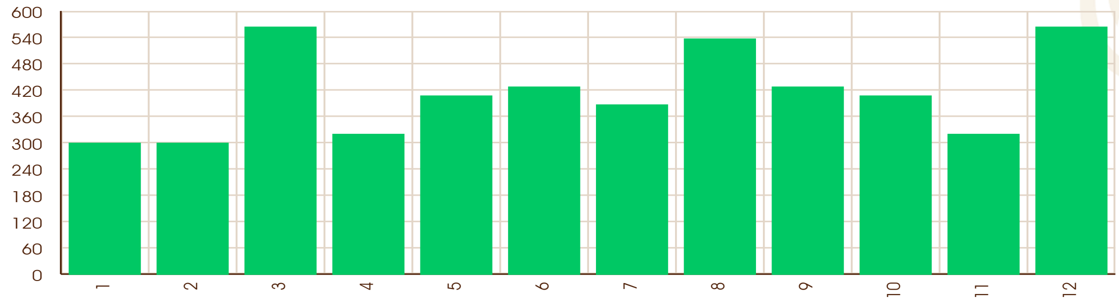


## भावदिग्बल

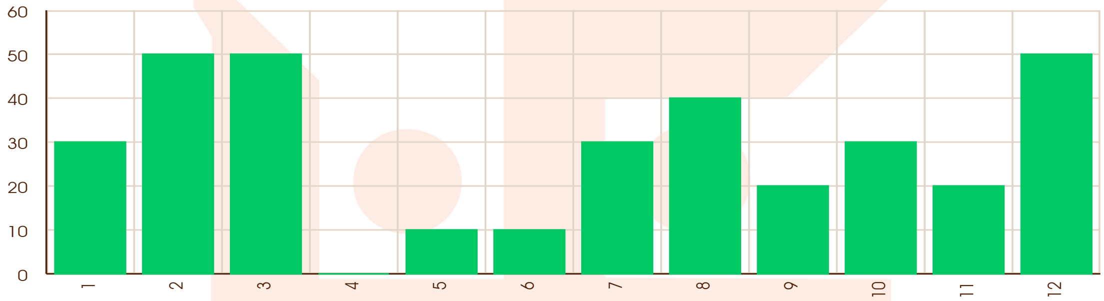


## भावदृष्टि बल

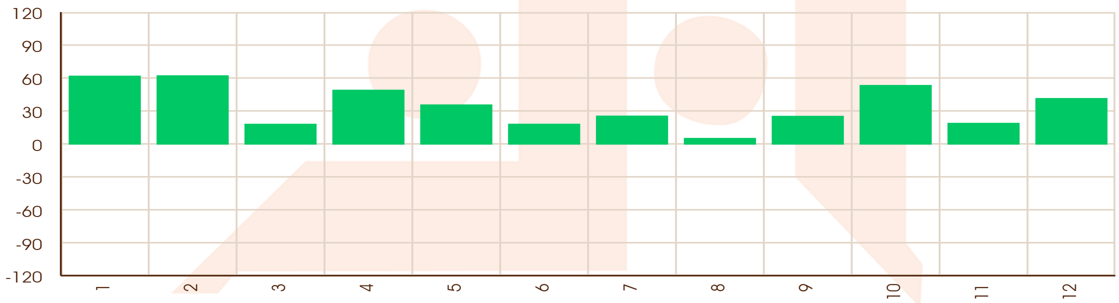


## भाव बल

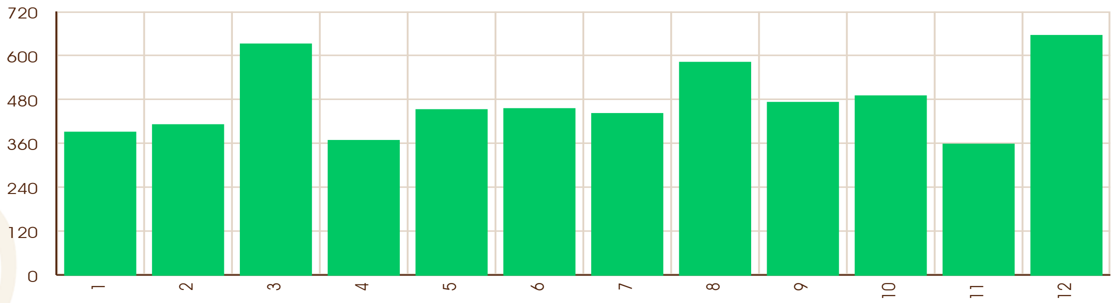

# षट्बल तथा भावबल ग्राफ

## रूप षट्बल

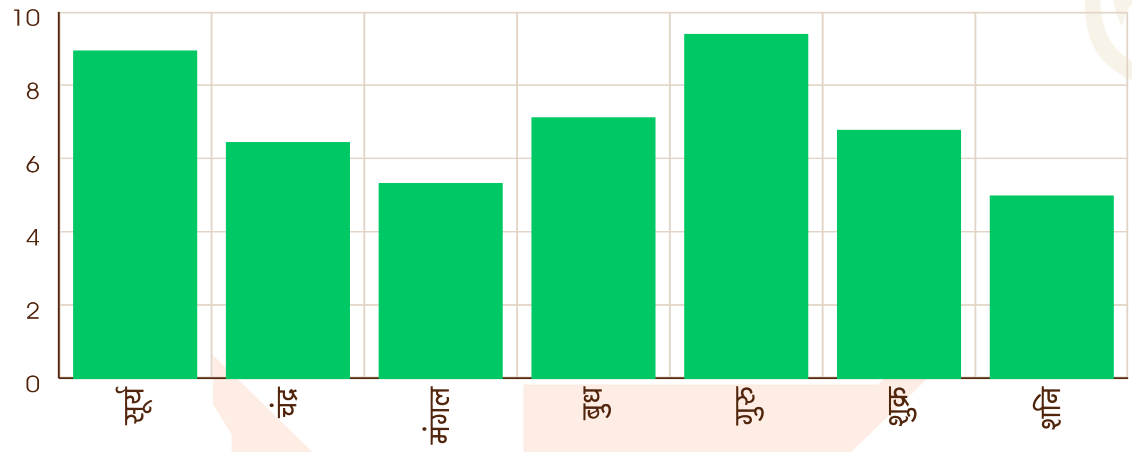


## इष्ट - कष्ट फल

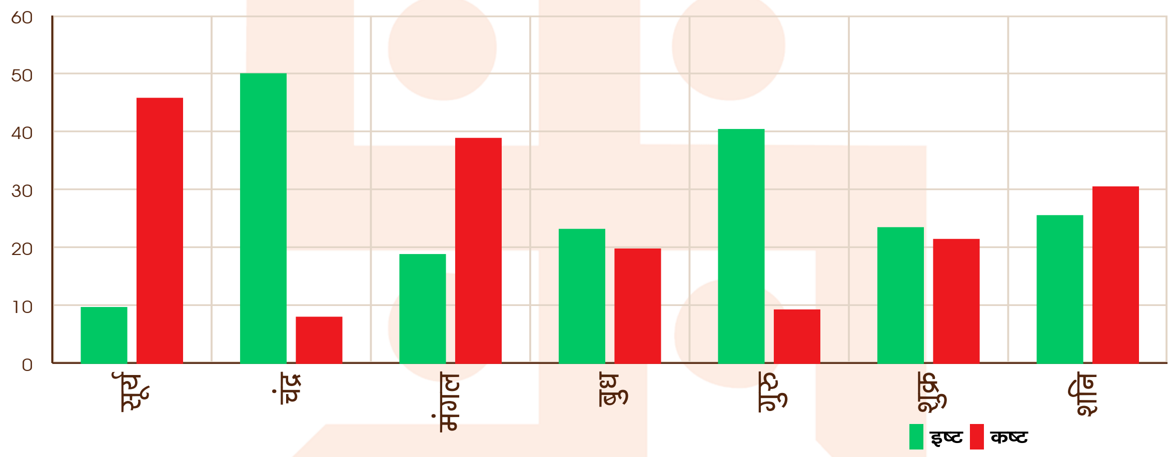


## रूप भाव बल

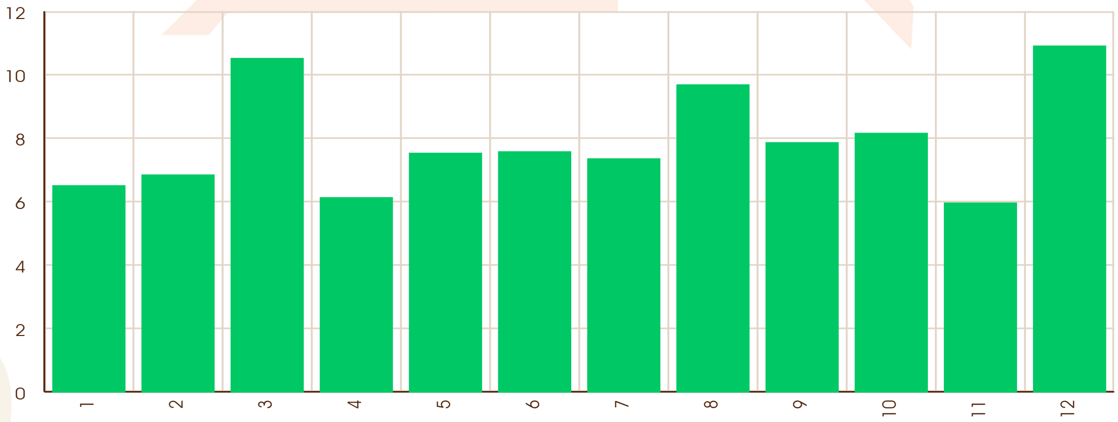

# उपग्रह एवं आरूढ़

| उपग्रह | संक्षि | राशि | अंश | उच्च | स्थिति | नक्षत्र | पद | नं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | ल | मक | 01:25:43 | -- | -- | उत्तराषाढ़ा | 2 | 21 |
| गुलिक | गु | मीन | 01:21:13 | -- | -- | पू०भाद्रपद | 4 | 25 |
| काल | का | तुला | 17:33:56 | -- | -- | स्वाति | 4 | 15 |
| मृत्यु | मृ | वृश्चि | 26:58:04 | -- | मूल | ज्येष्ठा | 4 | 18 |
| यमघंटक | यम | मक | 09:05:38 | -- | -- | उत्तराषाढ़ा | 4 | 21 |
| अर्द्धप्रहर | अर्द्ध | धनु | 17:01:43 | -- | -- | पूर्वाषाढ़ा | 2 | 20 |
| धूम | धू | कुंभ | 11:22:57 | नीच | -- | शतभिषा | 2 | 24 |
| व्यतिपात | व्य | वृष | 18:37:03 | नीच | -- | रोहिणी | 3 | 4 |
| परिवेश | परि | वृश्चि | 18:37:03 | -- | -- | ज्येष्ठा | 1 | 18 |
| इन्द्रचाप | इ | सिंह | 11:22:57 | -- | -- | मघा | 4 | 10 |
| उपकेतु | उप | सिंह | 28:02:57 | नीच | -- | उ०फाल्गुनी | 1 | 12 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राणपद | : | तुला | 08:32:57 | कारकाँश लग्न | : | मिथु | 21:48:25 |
| भाव लग्न | : | मेष | 13:57:13 | होरा लग्न | : | कर्क | 26:28:43 |
| घटी लग्न | : | मीन | 00:40:27 | वर्णद लग्न | : | मेष | 27:54:27 |

## उपग्रह कुंडली

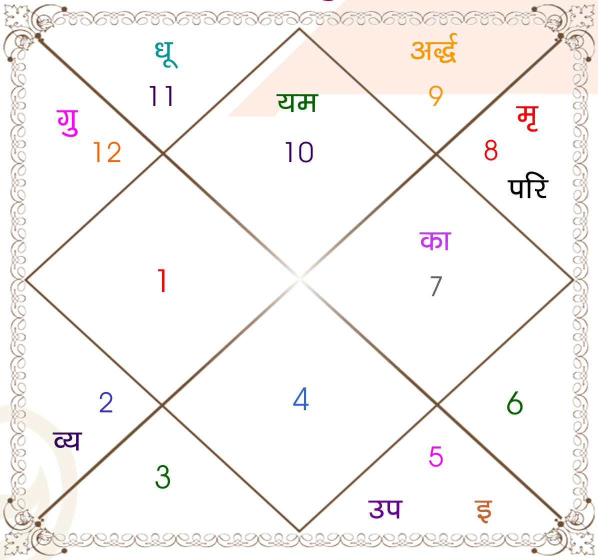


## आरूढ़ कुंडली

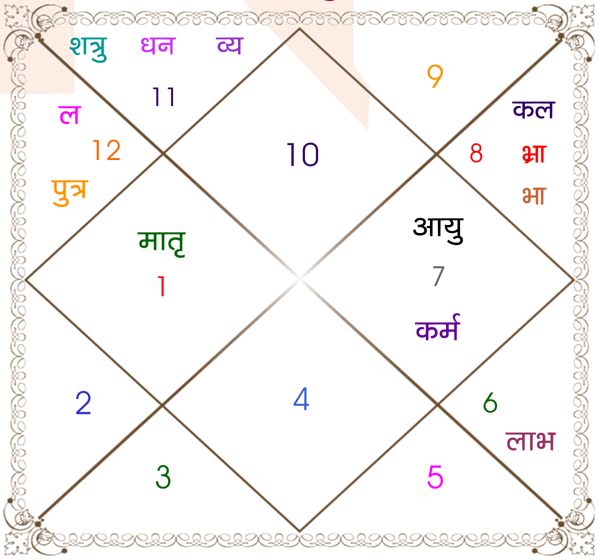

## षन्नाडी चक्र

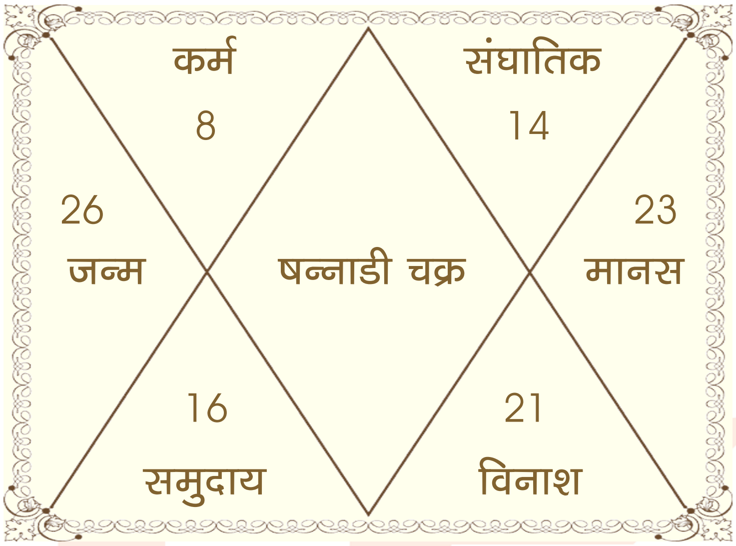


### त्रिपाप चक्र

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम चक्र | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| द्वितीय चक्र | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 |
| तृतीय चक्र | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 |
| केतु पताकी | गुरु | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | शनि | गुरु | राहु | केतु |
| केतु कुंडली | सूर्य | केतु | बुध | मंगल | केतु | गुरु | चंद्र | केतु | शुक्र | राहु | केतु | शनि |
| गुरु कुंडली | सूर्य | मंगल | केतु | चंद्र | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु |
| प्रथम चक्र | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| द्वितीय चक्र | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 |
| तृतीय चक्र | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 |
| केतु पताकी | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | शनि | गुरु | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चंद्र |
| केतु कुंडली | सूर्य | केतु | बुध | मंगल | केतु | गुरु | चंद्र | केतु | शुक्र | राहु | केतु | शनि |
| गुरु कुंडली | चंद्र | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु | चंद्र | बुध | गुरु |
| प्रथम चक्र | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 |
| द्वितीय चक्र | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 |
| तृतीय चक्र | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 |
| केतु पताकी | मंगल | बुध | शनि | गुरु | राहु | केतु | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | शनि |
| केतु कुंडली | सूर्य | केतु | बुध | मंगल | केतु | गुरु | चंद्र | केतु | शुक्र | राहु | केतु | शनि |
| गुरु कुंडली | शुक्र | शनि | राहु | सूर्य | मंगल | केतु | चंद्र | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |

# प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

### सूर्य का अष्टकवर्ग

| | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| सूर्य | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| शुक्र | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| चंद्र | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| लग्न | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| कुल | 4 | 3 | 4 | 5 | 2 | 2 | 6 | 5 | 5 | 5 | 3 | 4 | 48 |

### चंद्र का अष्टकवर्ग

| | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| गुरु | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| मंगल | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 6 |
| सूर्य | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| शुक्र | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| चंद्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| लग्न | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| कुल | 4 | 4 | 3 | 4 | 5 | 5 | 1 | 4 | 4 | 5 | 5 | 5 | 49 |

### मंगल का अष्टकवर्ग

| | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 7 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूर्य | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 5 |
| शुक्र | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| बुध | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| चंद्र | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 3 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| कुल | 2 | 4 | 2 | 4 | 3 | 4 | 3 | 5 | 4 | 2 | 5 | 1 | 39 |

### बुध का अष्टकवर्ग

| | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 8 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| चंद्र | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 7 |
| कुल | 5 | 4 | 4 | 5 | 6 | 2 | 4 | 5 | 7 | 3 | 7 | 2 | 54 |

### गुरु का अष्टकवर्ग

| | र्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| गुरु | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूर्य | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| बुध | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 8 |
| चंद्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 5 |
| लग्न | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| कुल | 8 | 4 | 4 | 6 | 6 | 2 | 6 | 4 | 3 | 5 | 4 | 4 | 56 |

### शुक्र का अष्टकवर्ग

| | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 7 |
| गुरु | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 3 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| बुध | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| चंद्र | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 9 |
| लग्न | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| कुल | 3 | 5 | 4 | 4 | 5 | 6 | 5 | 5 | 5 | 3 | 5 | 2 | 52 |

### शनि का अष्टकवर्ग

| | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| मंगल | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| सूर्य | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 6 |
| चंद्र | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| कुल | 4 | 4 | 3 | 2 | 4 | 3 | 1 | 5 | 2 | 3 | 5 | 3 | 39 |

### लग्न का अष्टकवर्ग

| | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| गुरु | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| सूर्य | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| चंद्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 5 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| कुल | 5 | 3 | 4 | 1 | 5 | 4 | 4 | 6 | 0 | 6 | 6 | 5 | 49 |

# अष्टकवर्ग सारिणी

## सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 2 | 3 | 5 | 3 | 4 | 4 | 3 | 2 | 4 | 3 | 1 | 5 | 39 |
| गुरु | 5 | 4 | 4 | 8 | 4 | 4 | 6 | 6 | 2 | 6 | 4 | 3 | 56 |
| मंगल | 3 | 5 | 4 | 2 | 5 | 1 | 2 | 4 | 2 | 4 | 3 | 4 | 39 |
| सूर्य | 5 | 5 | 5 | 3 | 4 | 4 | 3 | 4 | 5 | 2 | 2 | 6 | 48 |
| शुक्र | 5 | 5 | 5 | 3 | 5 | 2 | 3 | 5 | 4 | 4 | 5 | 6 | 52 |
| बुध | 4 | 5 | 7 | 3 | 7 | 2 | 5 | 4 | 4 | 5 | 6 | 2 | 54 |
| चंद्र | 4 | 3 | 4 | 5 | 5 | 1 | 4 | 4 | 5 | 5 | 5 | 4 | 49 |
| बिन्दु | 28 | 30 | 34 | 27 | 34 | 18 | 26 | 29 | 26 | 29 | 26 | 30 | 337 |
| रेखा | 28 | 26 | 22 | 29 | 22 | 38 | 30 | 27 | 30 | 27 | 30 | 26 | 335 |

## त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 4 | 1 | 2 | 1 | 2 | 0 | 2 | 0 | 0 | 3 | 15 |
| गुरु | 3 | 0 | 0 | 5 | 2 | 0 | 2 | 3 | 0 | 2 | 0 | 0 | 17 |
| मंगल | 1 | 4 | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 2 | 0 | 3 | 1 | 2 | 18 |
| सूर्य | 1 | 3 | 3 | 0 | 0 | 2 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 3 | 15 |
| शुक्र | 1 | 3 | 2 | 0 | 1 | 0 | 0 | 2 | 0 | 2 | 2 | 3 | 16 |
| बुध | 0 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 0 | 2 | 0 | 3 | 1 | 0 | 15 |
| चंद्र | 0 | 2 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 | 1 | 0 | 10 |
| रेखा | 6 | 15 | 13 | 8 | 12 | 3 | 5 | 10 | 4 | 14 | 5 | 11 | 106 |

## एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृशि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 3 | 1 | 2 | 1 | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 | 12 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 5 | 2 | 0 | 2 | 0 | 0 | 2 | 0 | 0 | 11 |
| मंगल | 1 | 4 | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 1 | 0 | 2 | 1 | 2 | 16 |
| सूर्य | 0 | 2 | 1 | 0 | 0 | 2 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 | 9 |
| शुक्र | 1 | 3 | 2 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 3 | 11 |
| बुध | 0 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 0 | 2 | 0 | 2 | 1 | 0 | 14 |
| चंद्र | 0 | 2 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 3 | 1 | 0 | 9 |
| रेखा | 2 | 14 | 10 | 8 | 12 | 3 | 5 | 4 | 1 | 9 | 3 | 11 | 82 |

## शोध्य पिंड

| | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि पिंड | 81 | 69 | 146 | 117 | 64 | 107 | 103 |
| ग्रह पिंड | 45 | 15 | 25 | 25 | 100 | 20 | 80 |
| शोध्य पिंड | 126 | 84 | 171 | 142 | 164 | 127 | 183 |

# अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

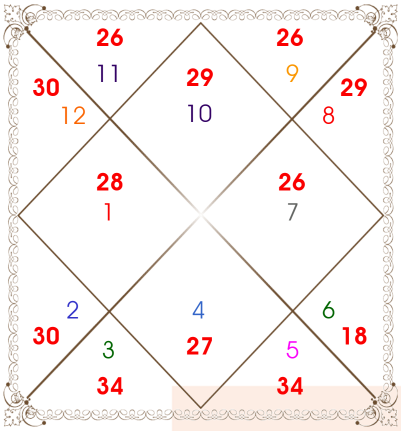


सूर्य का अष्टकवर्ग

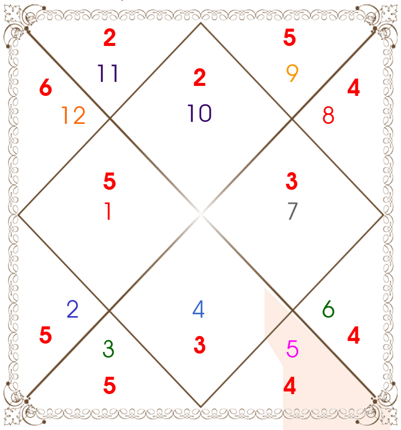


चंद्र का अष्टकवर्ग

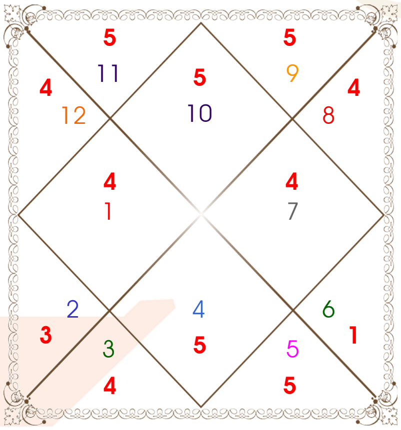


मंगल का अष्टकवर्ग

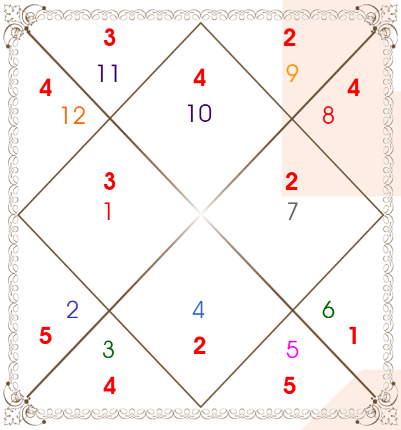


बुध का अष्टकवर्ग

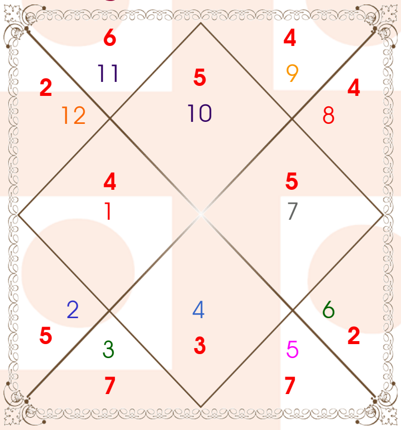


गुरु का अष्टकवर्ग

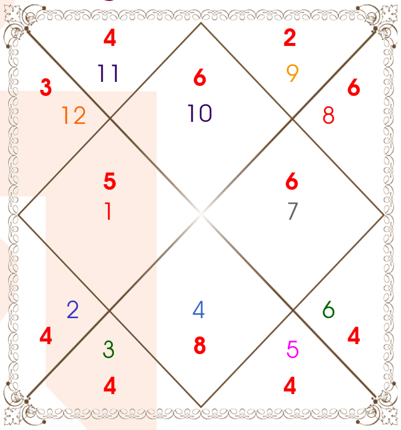


शुक्र का अष्टकवर्ग

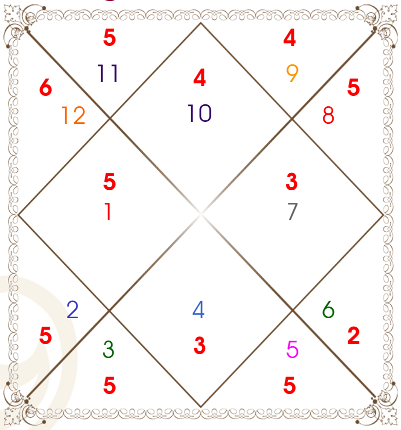


शनि का अष्टकवर्ग

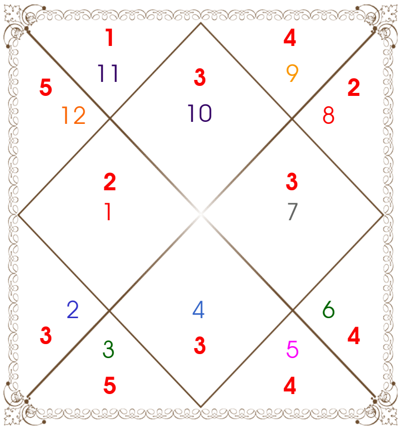


लग्न का अष्टकवर्ग

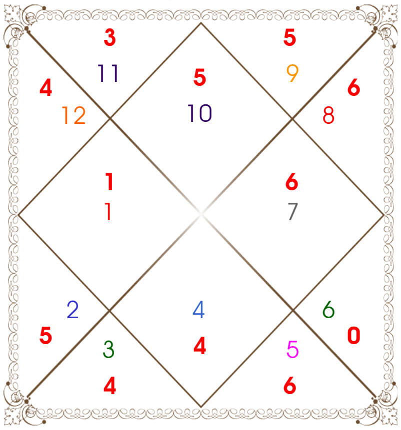

# भिन्नाष्टक ग्राफ

## सूर्य

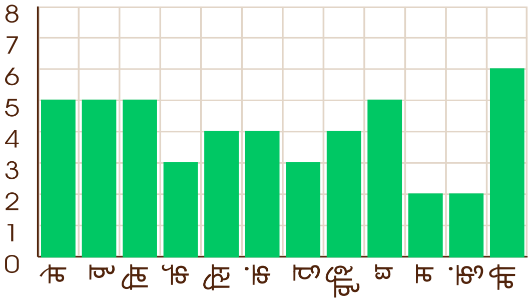

## चन्द्र

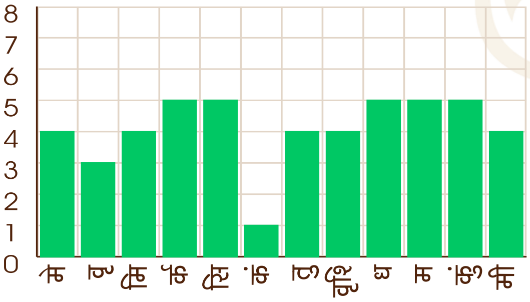

## मंगल

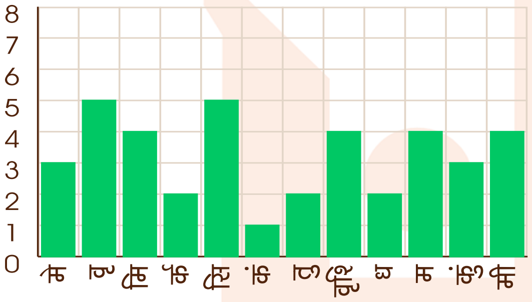

## बुध

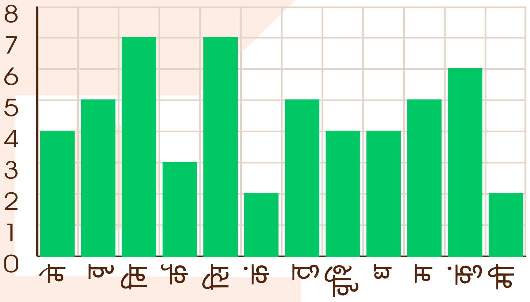

## गुरु

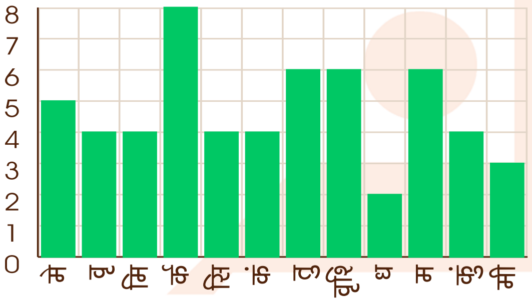

## शुक्र

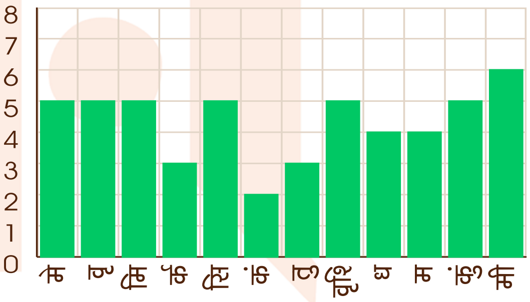

## शनि

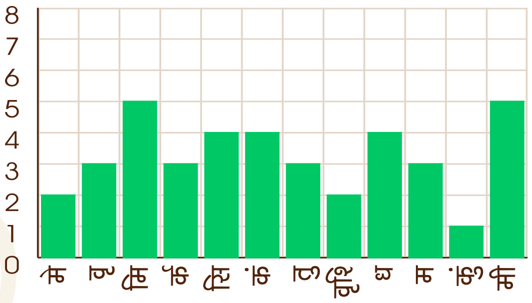

## लग्न

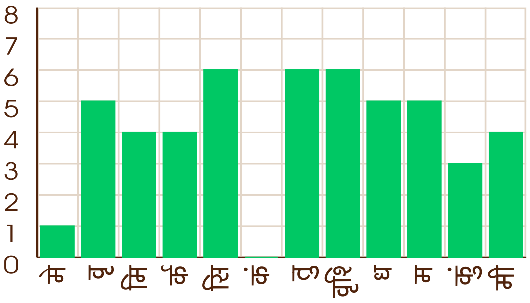

FUTUREPOINT Astro Solutions
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

# अष्टकवर्ग ग्राफ

## सर्वाष्टकवर्ग

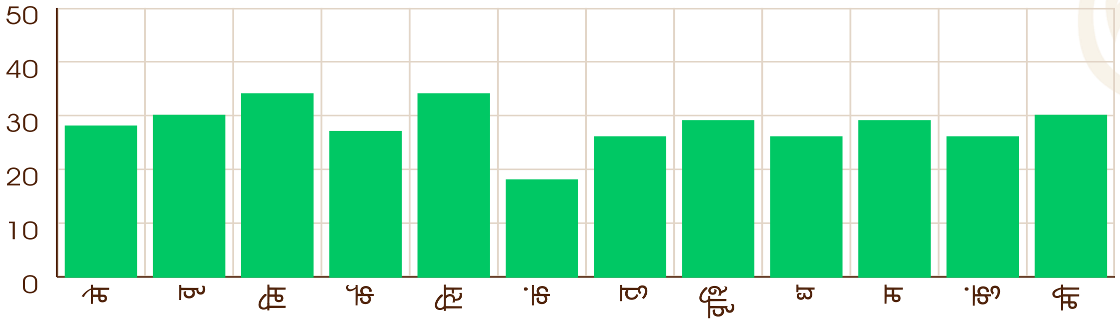


## त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

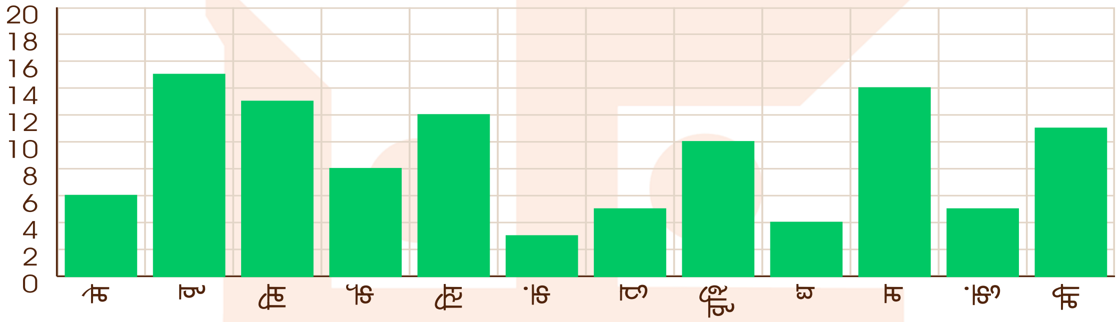


## एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

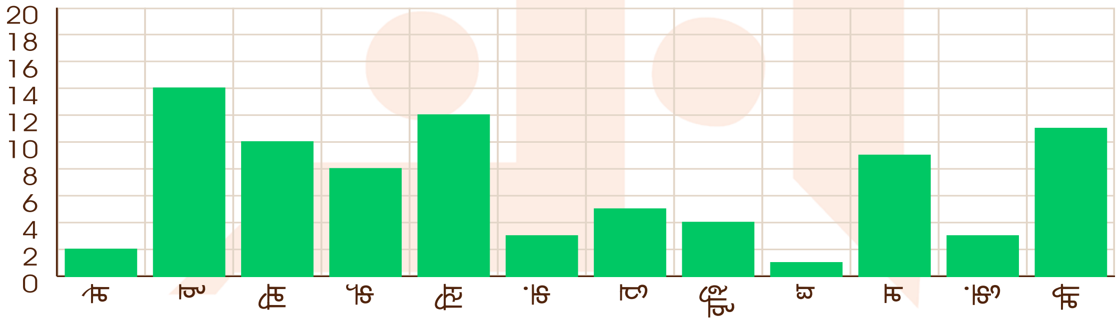


## शोध्य पिंड

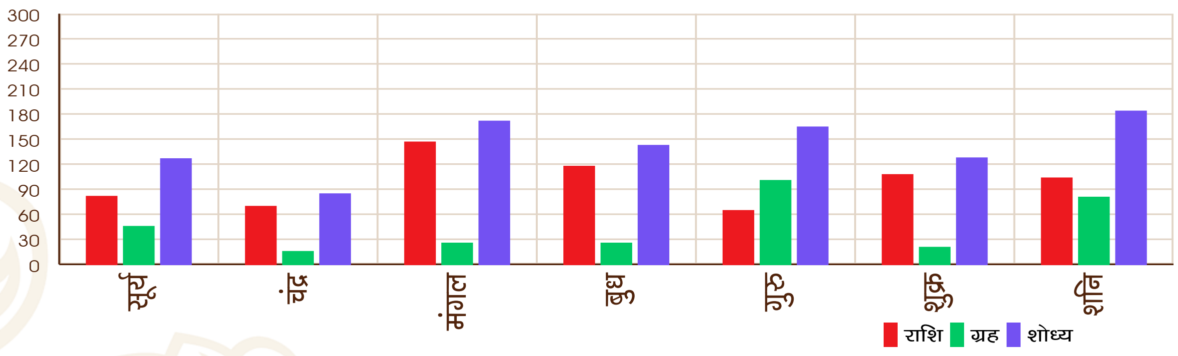

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : शनि 0 वर्ष 8 मास 3 दिन

| शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/10/1978 | | 19/06/1979 | | 18/06/1996 | | 19/06/2003 | | 19/06/2023 | |
| 19/06/1979 | | 18/06/1996 | | 19/06/2003 | | 19/06/2023 | | 19/06/2029 | |
| | 00/00/0000 | बुध | 15/11/1981 | केतु | 14/11/1996 | शुक्र | 19/10/2006 | सूर्य | 07/10/2023 |
| | 00/00/0000 | केतु | 12/11/1982 | शुक्र | 15/01/1998 | सूर्य | 19/10/2007 | चंद्र | 06/04/2024 |
| | 00/00/0000 | शुक्र | 12/09/1985 | सूर्य | 22/05/1998 | चंद्र | 19/06/2009 | मंगल | 12/08/2024 |
| | 00/00/0000 | सूर्य | 19/07/1986 | चंद्र | 22/12/1998 | मंगल | 19/08/2010 | राहु | 07/07/2025 |
| | 00/00/0000 | चंद्र | 19/12/1987 | मंगल | 20/05/1999 | राहु | 18/08/2013 | गुरु | 25/04/2026 |
| | 00/00/0000 | मंगल | 15/12/1988 | राहु | 06/06/2000 | गुरु | 18/04/2016 | शनि | 07/04/2027 |
| | 00/00/0000 | राहु | 04/07/1991 | गुरु | 13/05/2001 | शनि | 19/06/2019 | बुध | 12/02/2028 |
| | 15/10/1978 | गुरु | 09/10/1993 | शनि | 22/06/2002 | बुध | 19/04/2022 | केतु | 18/06/2028 |
| गुरु | 19/06/1979 | शनि | 18/06/1996 | बुध | 19/06/2003 | केतु | 19/06/2023 | शुक्र | 19/06/2029 |

| चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/06/2029 | | 19/06/2039 | | 19/06/2046 | | 18/06/2064 | | 18/06/2080 | |
| 19/06/2039 | | 19/06/2046 | | 18/06/2064 | | 18/06/2080 | | 15/10/2098 | |
| चंद्र | 19/04/2030 | मंगल | 15/11/2039 | राहु | 01/03/2049 | गुरु | 07/08/2066 | शनि | 22/06/2083 |
| मंगल | 18/11/2030 | राहु | 03/12/2040 | गुरु | 26/07/2051 | शनि | 17/02/2069 | बुध | 01/03/2086 |
| राहु | 19/05/2032 | गुरु | 09/11/2041 | शनि | 01/06/2054 | बुध | 26/05/2071 | केतु | 10/04/2087 |
| गुरु | 18/09/2033 | शनि | 18/12/2042 | बुध | 18/12/2056 | केतु | 01/05/2072 | शुक्र | 10/06/2090 |
| शनि | 19/04/2035 | बुध | 16/12/2043 | केतु | 05/01/2058 | शुक्र | 31/12/2074 | सूर्य | 23/05/2091 |
| बुध | 18/09/2036 | केतु | 13/05/2044 | शुक्र | 05/01/2061 | सूर्य | 19/10/2075 | चंद्र | 21/12/2092 |
| केतु | 19/04/2037 | शुक्र | 13/07/2045 | सूर्य | 30/11/2061 | चंद्र | 17/02/2077 | मंगल | 30/01/2094 |
| शुक्र | 18/12/2038 | सूर्य | 18/11/2045 | चंद्र | 01/06/2063 | मंगल | 24/01/2078 | राहु | 06/12/2096 |
| सूर्य | 19/06/2039 | चंद्र | 19/06/2046 | मंगल | 18/06/2064 | राहु | 18/06/2080 | गुरु | 15/10/2098 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 0 वर्ष 8 मा 5 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - गुरु | |
|---|---|
| 15/10/1978 | |
| 19/06/1979 | |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 15/10/1978 |
| चंद्र | 08/12/1978 |
| मंगल | 31/01/1979 |
| राहु | 19/06/1979 |

| बुध - बुध | |
|---|---|
| 19/06/1979 | |
| 15/11/1981 | |
| बुध | 22/10/1979 |
| केतु | 12/12/1979 |
| शुक्र | 07/05/1980 |
| सूर्य | 20/06/1980 |
| चंद्र | 01/09/1980 |
| मंगल | 22/10/1980 |
| राहु | 03/03/1981 |
| गुरु | 28/06/1981 |
| शनि | 15/11/1981 |

| बुध - केतु | |
|---|---|
| 15/11/1981 | |
| 12/11/1982 | |
| केतु | 06/12/1981 |
| शुक्र | 04/02/1982 |
| सूर्य | 22/02/1982 |
| चंद्र | 25/03/1982 |
| मंगल | 15/04/1982 |
| राहु | 08/06/1982 |
| गुरु | 26/07/1982 |
| शनि | 22/09/1982 |
| बुध | 12/11/1982 |

| बुध - शुक्र | |
|---|---|
| 12/11/1982 | |
| 12/09/1985 | |
| शुक्र | 03/05/1983 |
| सूर्य | 24/06/1983 |
| चंद्र | 18/09/1983 |
| मंगल | 18/11/1983 |
| राहु | 21/04/1984 |
| गुरु | 06/09/1984 |
| शनि | 17/02/1985 |
| बुध | 13/07/1985 |
| केतु | 12/09/1985 |

| बुध - सूर्य | |
|---|---|
| 12/09/1985 | |
| 19/07/1986 | |
| सूर्य | 27/09/1985 |
| चंद्र | 23/10/1985 |
| मंगल | 10/11/1985 |
| राहु | 27/12/1985 |
| गुरु | 06/02/1986 |
| शनि | 27/03/1986 |
| बुध | 10/05/1986 |
| केतु | 29/05/1986 |
| शुक्र | 19/07/1986 |

| बुध - चंद्र | |
|---|---|
| 19/07/1986 | |
| 19/12/1987 | |
| चंद्र | 31/08/1986 |
| मंगल | 01/10/1986 |
| राहु | 17/12/1986 |
| गुरु | 24/02/1987 |
| शनि | 17/05/1987 |
| बुध | 29/07/1987 |
| केतु | 29/08/1987 |
| शुक्र | 23/11/1987 |
| सूर्य | 19/12/1987 |

| बुध - मंगल | |
|---|---|
| 19/12/1987 | |
| 15/12/1988 | |
| मंगल | 09/01/1988 |
| राहु | 03/03/1988 |
| गुरु | 20/04/1988 |
| शनि | 17/06/1988 |
| बुध | 07/08/1988 |
| केतु | 28/08/1988 |
| शुक्र | 28/10/1988 |
| सूर्य | 15/11/1988 |
| चंद्र | 15/12/1988 |

| बुध - राहु | |
|---|---|
| 15/12/1988 | |
| 04/07/1991 | |
| राहु | 04/05/1989 |
| गुरु | 05/09/1989 |
| शनि | 30/01/1990 |
| बुध | 11/06/1990 |
| केतु | 05/08/1990 |
| शुक्र | 07/01/1991 |
| सूर्य | 22/02/1991 |
| चंद्र | 11/05/1991 |
| मंगल | 04/07/1991 |

| बुध - गुरु | |
|---|---|
| 04/07/1991 | |
| 09/10/1993 | |
| गुरु | 23/10/1991 |
| शनि | 02/03/1992 |
| बुध | 27/06/1992 |
| केतु | 14/08/1992 |
| शुक्र | 30/12/1992 |
| सूर्य | 10/02/1993 |
| चंद्र | 20/04/1993 |
| मंगल | 07/06/1993 |
| राहु | 09/10/1993 |

| बुध - शनि | |
|---|---|
| 09/10/1993 | |
| 18/06/1996 | |
| शनि | 14/03/1994 |
| बुध | 31/07/1994 |
| केतु | 26/09/1994 |
| शुक्र | 09/03/1995 |
| सूर्य | 28/04/1995 |
| चंद्र | 18/07/1995 |
| मंगल | 14/09/1995 |
| राहु | 08/02/1996 |
| गुरु | 18/06/1996 |

| केतु - केतु | |
|---|---|
| 18/06/1996 | |
| 14/11/1996 | |
| केतु | 27/06/1996 |
| शुक्र | 22/07/1996 |
| सूर्य | 29/07/1996 |
| चंद्र | 11/08/1996 |
| मंगल | 19/08/1996 |
| राहु | 11/09/1996 |
| गुरु | 01/10/1996 |
| शनि | 24/10/1996 |
| बुध | 14/11/1996 |

| केतु - शुक्र | |
|---|---|
| 14/11/1996 | |
| 15/01/1998 | |
| शुक्र | 25/01/1997 |
| सूर्य | 15/02/1997 |
| चंद्र | 22/03/1997 |
| मंगल | 16/04/1997 |
| राहु | 19/06/1997 |
| गुरु | 15/08/1997 |
| शनि | 21/10/1997 |
| बुध | 21/12/1997 |
| केतु | 15/01/1998 |

| केतु - सूर्य | |
|---|---|
| 15/01/1998 | |
| 22/05/1998 | |
| सूर्य | 21/01/1998 |
| चंद्र | 01/02/1998 |
| मंगल | 08/02/1998 |
| राहु | 27/02/1998 |
| गुरु | 16/03/1998 |
| शनि | 06/04/1998 |
| बुध | 24/04/1998 |
| केतु | 01/05/1998 |
| शुक्र | 22/05/1998 |

| केतु - चंद्र | |
|---|---|
| 22/05/1998 | |
| 22/12/1998 | |
| चंद्र | 09/06/1998 |
| मंगल | 22/06/1998 |
| राहु | 24/07/1998 |
| गुरु | 21/08/1998 |
| शनि | 24/09/1998 |
| बुध | 24/10/1998 |
| केतु | 05/11/1998 |
| शुक्र | 11/12/1998 |
| सूर्य | 22/12/1998 |

| केतु - मंगल | |
|---|---|
| 22/12/1998 | |
| 20/05/1999 | |
| मंगल | 30/12/1998 |
| राहु | 22/01/1999 |
| गुरु | 10/02/1999 |
| शनि | 06/03/1999 |
| बुध | 27/03/1999 |
| केतु | 05/04/1999 |
| शुक्र | 30/04/1999 |
| सूर्य | 07/05/1999 |
| चंद्र | 20/05/1999 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - राहु | | केतु - गुरु | | केतु - शनि | | केतु - बुध | | शुक्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20/05/1999 | | 06/06/2000 | | 13/05/2001 | | 22/06/2002 | | 19/06/2003 | |
| 06/06/2000 | | 13/05/2001 | | 22/06/2002 | | 19/06/2003 | | 19/10/2006 | |
| राहु | 16/07/1999 | गुरु | 22/07/2000 | शनि | 16/07/2001 | बुध | 12/08/2002 | शुक्र | 08/01/2004 |
| गुरु | 05/09/1999 | शनि | 14/09/2000 | बुध | 12/09/2001 | केतु | 02/09/2002 | सूर्य | 09/03/2004 |
| शनि | 05/11/1999 | बुध | 01/11/2000 | केतु | 05/10/2001 | शुक्र | 02/11/2002 | चंद्र | 18/06/2004 |
| बुध | 29/12/1999 | केतु | 21/11/2000 | शुक्र | 12/12/2001 | सूर्य | 20/11/2002 | मंगल | 28/08/2004 |
| केतु | 21/01/2000 | शुक्र | 17/01/2001 | सूर्य | 01/01/2002 | चंद्र | 20/12/2002 | राहु | 27/02/2005 |
| शुक्र | 25/03/2000 | सूर्य | 03/02/2001 | चंद्र | 04/02/2002 | मंगल | 10/01/2003 | गुरु | 08/08/2005 |
| सूर्य | 13/04/2000 | चंद्र | 03/03/2001 | मंगल | 27/02/2002 | राहु | 05/03/2003 | शनि | 17/02/2006 |
| चंद्र | 15/05/2000 | मंगल | 23/03/2001 | राहु | 29/04/2002 | गुरु | 23/04/2003 | बुध | 09/08/2006 |
| मंगल | 06/06/2000 | राहु | 13/05/2001 | गुरु | 22/06/2002 | शनि | 19/06/2003 | केतु | 19/10/2006 |

| शुक्र - सूर्य | | शुक्र - चंद्र | | शुक्र - मंगल | | शुक्र - राहु | | शुक्र - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/10/2006 | | 19/10/2007 | | 19/06/2009 | | 19/08/2010 | | 18/08/2013 | |
| 19/10/2007 | | 19/06/2009 | | 19/08/2010 | | 18/08/2013 | | 18/04/2016 | |
| सूर्य | 06/11/2006 | चंद्र | 09/12/2007 | मंगल | 13/07/2009 | राहु | 30/01/2011 | गुरु | 26/12/2013 |
| चंद्र | 06/12/2006 | मंगल | 13/01/2008 | राहु | 15/09/2009 | गुरु | 25/06/2011 | शनि | 30/05/2014 |
| मंगल | 28/12/2006 | राहु | 13/04/2008 | गुरु | 11/11/2009 | शनि | 16/12/2011 | बुध | 15/10/2014 |
| राहु | 20/02/2007 | गुरु | 04/07/2008 | शनि | 18/01/2010 | बुध | 19/05/2012 | केतु | 10/12/2014 |
| गुरु | 10/04/2007 | शनि | 08/10/2008 | बुध | 19/03/2010 | केतु | 22/07/2012 | शुक्र | 22/05/2015 |
| शनि | 07/06/2007 | बुध | 02/01/2009 | केतु | 13/04/2010 | शुक्र | 20/01/2013 | सूर्य | 09/07/2015 |
| बुध | 29/07/2007 | केतु | 07/02/2009 | शुक्र | 23/06/2010 | सूर्य | 16/03/2013 | चंद्र | 29/09/2015 |
| केतु | 19/08/2007 | शुक्र | 19/05/2009 | सूर्य | 14/07/2010 | चंद्र | 16/06/2013 | मंगल | 24/11/2015 |
| शुक्र | 19/10/2007 | सूर्य | 19/06/2009 | चंद्र | 19/08/2010 | मंगल | 18/08/2013 | राहु | 18/04/2016 |

| शुक्र - शनि | | शुक्र - बुध | | शुक्र - केतु | | सूर्य - सूर्य | | सूर्य - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18/04/2016 | | 19/06/2019 | | 19/04/2022 | | 19/06/2023 | | 07/10/2023 | |
| 19/06/2019 | | 19/04/2022 | | 19/06/2023 | | 07/10/2023 | | 06/04/2024 | |
| शनि | 19/10/2016 | बुध | 13/11/2019 | केतु | 14/05/2022 | सूर्य | 25/06/2023 | चंद्र | 22/10/2023 |
| बुध | 31/03/2017 | केतु | 12/01/2020 | शुक्र | 24/07/2022 | चंद्र | 04/07/2023 | मंगल | 02/11/2023 |
| केतु | 07/06/2017 | शुक्र | 03/07/2020 | सूर्य | 14/08/2022 | मंगल | 10/07/2023 | राहु | 29/11/2023 |
| शुक्र | 17/12/2017 | सूर्य | 23/08/2020 | चंद्र | 19/09/2022 | राहु | 27/07/2023 | गुरु | 23/12/2023 |
| सूर्य | 13/02/2018 | चंद्र | 18/11/2020 | मंगल | 14/10/2022 | गुरु | 10/08/2023 | शनि | 21/01/2024 |
| चंद्र | 20/05/2018 | मंगल | 17/01/2021 | राहु | 16/12/2022 | शनि | 27/08/2023 | बुध | 16/02/2024 |
| मंगल | 26/07/2018 | राहु | 21/06/2021 | गुरु | 11/02/2023 | बुध | 12/09/2023 | केतु | 27/02/2024 |
| राहु | 16/01/2019 | गुरु | 06/11/2021 | शनि | 20/04/2023 | केतु | 18/09/2023 | शुक्र | 28/03/2024 |
| गुरु | 19/06/2019 | शनि | 19/04/2022 | बुध | 19/06/2023 | शुक्र | 07/10/2023 | सूर्य | 06/04/2024 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - मंगल | | सूर्य - राहु | | सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | | सूर्य - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06/04/2024 | | 12/08/2024 | | 07/07/2025 | | 25/04/2026 | | 07/04/2027 | |
| 12/08/2024 | | 07/07/2025 | | 25/04/2026 | | 07/04/2027 | | 12/02/2028 | |
| मंगल | 14/04/2024 | राहु | 30/09/2024 | गुरु | 15/08/2025 | शनि | 19/06/2026 | बुध | 21/05/2027 |
| राहु | 03/05/2024 | गुरु | 13/11/2024 | शनि | 30/09/2025 | बुध | 07/08/2026 | केतु | 08/06/2027 |
| गुरु | 20/05/2024 | शनि | 04/01/2025 | बुध | 10/11/2025 | केतु | 27/08/2026 | शुक्र | 30/07/2027 |
| शनि | 09/06/2024 | बुध | 20/02/2025 | केतु | 28/11/2025 | शुक्र | 24/10/2026 | सूर्य | 14/08/2027 |
| बुध | 27/06/2024 | केतु | 11/03/2025 | शुक्र | 15/01/2026 | सूर्य | 11/11/2026 | चंद्र | 09/09/2027 |
| केतु | 05/07/2024 | शुक्र | 05/05/2025 | सूर्य | 30/01/2026 | चंद्र | 09/12/2026 | मंगल | 27/09/2027 |
| शुक्र | 26/07/2024 | सूर्य | 21/05/2025 | चंद्र | 23/02/2026 | मंगल | 30/12/2026 | राहु | 13/11/2027 |
| सूर्य | 01/08/2024 | चंद्र | 18/06/2025 | मंगल | 12/03/2026 | राहु | 20/02/2027 | गुरु | 24/12/2027 |
| चंद्र | 12/08/2024 | मंगल | 07/07/2025 | राहु | 25/04/2026 | गुरु | 07/04/2027 | शनि | 12/02/2028 |

| सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/02/2028 | | 18/06/2028 | | 19/06/2029 | | 19/04/2030 | | 18/11/2030 | |
| 18/06/2028 | | 19/06/2029 | | 19/04/2030 | | 18/11/2030 | | 19/05/2032 | |
| केतु | 19/02/2028 | शुक्र | 18/08/2028 | चंद्र | 14/07/2029 | मंगल | 01/05/2030 | राहु | 08/02/2031 |
| शुक्र | 11/03/2028 | सूर्य | 05/09/2028 | मंगल | 01/08/2029 | राहु | 02/06/2030 | गुरु | 22/04/2031 |
| सूर्य | 18/03/2028 | चंद्र | 06/10/2028 | राहु | 15/09/2029 | गुरु | 01/07/2030 | शनि | 18/07/2031 |
| चंद्र | 28/03/2028 | मंगल | 27/10/2028 | गुरु | 26/10/2029 | शनि | 03/08/2030 | बुध | 04/10/2031 |
| मंगल | 05/04/2028 | राहु | 21/12/2028 | शनि | 13/12/2029 | बुध | 03/09/2030 | केतु | 05/11/2031 |
| राहु | 24/04/2028 | गुरु | 08/02/2029 | बुध | 25/01/2030 | केतु | 15/09/2030 | शुक्र | 04/02/2032 |
| गुरु | 11/05/2028 | शनि | 07/04/2029 | केतु | 12/02/2030 | शुक्र | 21/10/2030 | सूर्य | 02/03/2032 |
| शनि | 31/05/2028 | बुध | 28/05/2029 | शुक्र | 04/04/2030 | सूर्य | 31/10/2030 | चंद्र | 17/04/2032 |
| बुध | 18/06/2028 | केतु | 19/06/2029 | सूर्य | 19/04/2030 | चंद्र | 18/11/2030 | मंगल | 19/05/2032 |

| चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | | चंद्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/05/2032 | | 18/09/2033 | | 19/04/2035 | | 18/09/2036 | | 19/04/2037 | |
| 18/09/2033 | | 19/04/2035 | | 18/09/2036 | | 19/04/2037 | | 18/12/2038 | |
| गुरु | 23/07/2032 | शनि | 18/12/2033 | बुध | 02/07/2035 | केतु | 30/09/2036 | शुक्र | 29/07/2037 |
| शनि | 08/10/2032 | बुध | 10/03/2034 | केतु | 01/08/2035 | शुक्र | 05/11/2036 | सूर्य | 29/08/2037 |
| बुध | 16/12/2032 | केतु | 13/04/2034 | शुक्र | 26/10/2035 | सूर्य | 15/11/2036 | चंद्र | 18/10/2037 |
| केतु | 13/01/2033 | शुक्र | 19/07/2034 | सूर्य | 21/11/2035 | चंद्र | 03/12/2036 | मंगल | 23/11/2037 |
| शुक्र | 05/04/2033 | सूर्य | 16/08/2034 | चंद्र | 03/01/2036 | मंगल | 15/12/2036 | राहु | 22/02/2038 |
| सूर्य | 29/04/2033 | चंद्र | 04/10/2034 | मंगल | 02/02/2036 | राहु | 16/01/2037 | गुरु | 14/05/2038 |
| चंद्र | 08/06/2033 | मंगल | 06/11/2034 | राहु | 20/04/2036 | गुरु | 14/02/2037 | शनि | 19/08/2038 |
| मंगल | 07/07/2033 | राहु | 01/02/2035 | गुरु | 28/06/2036 | शनि | 20/03/2037 | बुध | 13/11/2038 |
| राहु | 18/09/2033 | गुरु | 19/04/2035 | शनि | 18/09/2036 | बुध | 19/04/2037 | केतु | 18/12/2038 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

**चंद्र - सूर्य**
**18/12/2038**
**19/06/2039**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 28/12/2038 |
| चंद्र | 12/01/2039 |
| मंगल | 22/01/2039 |
| राहु | 19/02/2039 |
| गुरु | 15/03/2039 |
| शनि | 13/04/2039 |
| बुध | 09/05/2039 |
| केतु | 20/05/2039 |
| शुक्र | 19/06/2039 |

**मंगल - मंगल**
**19/06/2039**
**15/11/2039**

| | |
|---|---|
| मंगल | 28/06/2039 |
| राहु | 20/07/2039 |
| गुरु | 09/08/2039 |
| शनि | 02/09/2039 |
| बुध | 23/09/2039 |
| केतु | 01/10/2039 |
| शुक्र | 26/10/2039 |
| सूर्य | 03/11/2039 |
| चंद्र | 15/11/2039 |

**मंगल - राहु**
**15/11/2039**
**03/12/2040**

| | |
|---|---|
| राहु | 12/01/2040 |
| गुरु | 03/03/2040 |
| शनि | 03/05/2040 |
| बुध | 26/06/2040 |
| केतु | 18/07/2040 |
| शुक्र | 20/09/2040 |
| सूर्य | 09/10/2040 |
| चंद्र | 10/11/2040 |
| मंगल | 03/12/2040 |

**मंगल - गुरु**
**03/12/2040**
**09/11/2041**

| | |
|---|---|
| गुरु | 17/01/2041 |
| शनि | 12/03/2041 |
| बुध | 29/04/2041 |
| केतु | 19/05/2041 |
| शुक्र | 15/07/2041 |
| सूर्य | 01/08/2041 |
| चंद्र | 30/08/2041 |
| मंगल | 19/09/2041 |
| राहु | 09/11/2041 |

**मंगल - शनि**
**09/11/2041**
**18/12/2042**

| | |
|---|---|
| शनि | 12/01/2042 |
| बुध | 10/03/2042 |
| केतु | 03/04/2042 |
| शुक्र | 09/06/2042 |
| सूर्य | 29/06/2042 |
| चंद्र | 02/08/2042 |
| मंगल | 26/08/2042 |
| राहु | 25/10/2042 |
| गुरु | 18/12/2042 |

**मंगल - बुध**
**18/12/2042**
**16/12/2043**

| | |
|---|---|
| बुध | 08/02/2043 |
| केतु | 01/03/2043 |
| शुक्र | 30/04/2043 |
| सूर्य | 18/05/2043 |
| चंद्र | 18/06/2043 |
| मंगल | 09/07/2043 |
| राहु | 01/09/2043 |
| गुरु | 19/10/2043 |
| शनि | 16/12/2043 |

**मंगल - केतु**
**16/12/2043**
**13/05/2044**

| | |
|---|---|
| केतु | 24/12/2043 |
| शुक्र | 18/01/2044 |
| सूर्य | 26/01/2044 |
| चंद्र | 07/02/2044 |
| मंगल | 16/02/2044 |
| राहु | 09/03/2044 |
| गुरु | 29/03/2044 |
| शनि | 22/04/2044 |
| बुध | 13/05/2044 |

**मंगल - शुक्र**
**13/05/2044**
**13/07/2045**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 23/07/2044 |
| सूर्य | 13/08/2044 |
| चंद्र | 18/09/2044 |
| मंगल | 13/10/2044 |
| राहु | 15/12/2044 |
| गुरु | 10/02/2045 |
| शनि | 19/04/2045 |
| बुध | 18/06/2045 |
| केतु | 13/07/2045 |

**मंगल - सूर्य**
**13/07/2045**
**18/11/2045**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 19/07/2045 |
| चंद्र | 30/07/2045 |
| मंगल | 06/08/2045 |
| राहु | 26/08/2045 |
| गुरु | 12/09/2045 |
| शनि | 02/10/2045 |
| बुध | 20/10/2045 |
| केतु | 27/10/2045 |
| शुक्र | 18/11/2045 |

**मंगल - चंद्र**
**18/11/2045**
**19/06/2046**

| | |
|---|---|
| चंद्र | 06/12/2045 |
| मंगल | 18/12/2045 |
| राहु | 19/01/2046 |
| गुरु | 16/02/2046 |
| शनि | 22/03/2046 |
| बुध | 21/04/2046 |
| केतु | 04/05/2046 |
| शुक्र | 08/06/2046 |
| सूर्य | 19/06/2046 |

**राहु - राहु**
**19/06/2046**
**01/03/2049**

| | |
|---|---|
| राहु | 14/11/2046 |
| गुरु | 25/03/2047 |
| शनि | 28/08/2047 |
| बुध | 15/01/2048 |
| केतु | 13/03/2048 |
| शुक्र | 24/08/2048 |
| सूर्य | 12/10/2048 |
| चंद्र | 02/01/2049 |
| मंगल | 01/03/2049 |

**राहु - गुरु**
**01/03/2049**
**26/07/2051**

| | |
|---|---|
| गुरु | 26/06/2049 |
| शनि | 12/11/2049 |
| बुध | 16/03/2050 |
| केतु | 06/05/2050 |
| शुक्र | 29/09/2050 |
| सूर्य | 12/11/2050 |
| चंद्र | 24/01/2051 |
| मंगल | 16/03/2051 |
| राहु | 26/07/2051 |

**राहु - शनि**
**26/07/2051**
**01/06/2054**

| | |
|---|---|
| शनि | 06/01/2052 |
| बुध | 02/06/2052 |
| केतु | 02/08/2052 |
| शुक्र | 22/01/2053 |
| सूर्य | 15/03/2053 |
| चंद्र | 10/06/2053 |
| मंगल | 10/08/2053 |
| राहु | 13/01/2054 |
| गुरु | 01/06/2054 |

**राहु - बुध**
**01/06/2054**
**18/12/2056**

| | |
|---|---|
| बुध | 11/10/2054 |
| केतु | 04/12/2054 |
| शुक्र | 08/05/2055 |
| सूर्य | 24/06/2055 |
| चंद्र | 09/09/2055 |
| मंगल | 03/11/2055 |
| राहु | 21/03/2056 |
| गुरु | 23/07/2056 |
| शनि | 18/12/2056 |

**राहु - केतु**
**18/12/2056**
**05/01/2058**

| | |
|---|---|
| केतु | 09/01/2057 |
| शुक्र | 14/03/2057 |
| सूर्य | 02/04/2057 |
| चंद्र | 04/05/2057 |
| मंगल | 27/05/2057 |
| राहु | 23/07/2057 |
| गुरु | 12/09/2057 |
| शनि | 12/11/2057 |
| बुध | 05/01/2058 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| राहु - शुक्र | | राहु - सूर्य | | राहु - चंद्र | | राहु - मंगल | | गुरु - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **05/01/2058** | | **05/01/2061** | | **30/11/2061** | | **01/06/2063** | | **18/06/2064** | |
| **05/01/2061** | | **30/11/2061** | | **01/06/2063** | | **18/06/2064** | | **07/08/2066** | |
| शुक्र | 07/07/2058 | सूर्य | 22/01/2061 | चंद्र | 15/01/2062 | मंगल | 23/06/2063 | गुरु | 30/09/2064 |
| सूर्य | 31/08/2058 | चंद्र | 18/02/2061 | मंगल | 16/02/2062 | राहु | 20/08/2063 | शनि | 01/02/2065 |
| चंद्र | 30/11/2058 | मंगल | 09/03/2061 | राहु | 09/05/2062 | गुरु | 10/10/2063 | बुध | 22/05/2065 |
| मंगल | 02/02/2059 | राहु | 28/04/2061 | गुरु | 21/07/2062 | शनि | 10/12/2063 | केतु | 06/07/2065 |
| राहु | 16/07/2059 | गुरु | 10/06/2061 | शनि | 16/10/2062 | बुध | 02/02/2064 | शुक्र | 13/11/2065 |
| गुरु | 10/12/2059 | शनि | 01/08/2061 | बुध | 01/01/2063 | केतु | 24/02/2064 | सूर्य | 22/12/2065 |
| शनि | 31/05/2060 | बुध | 17/09/2061 | केतु | 02/02/2063 | शुक्र | 28/04/2064 | चंद्र | 25/02/2066 |
| बुध | 02/11/2060 | केतु | 06/10/2061 | शुक्र | 04/05/2063 | सूर्य | 17/05/2064 | मंगल | 12/04/2066 |
| केतु | 05/01/2061 | शुक्र | 30/11/2061 | सूर्य | 01/06/2063 | चंद्र | 18/06/2064 | राहु | 07/08/2066 |

| गुरु - शनि | | गुरु - बुध | | गुरु - केतु | | गुरु - शुक्र | | गुरु - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **07/08/2066** | | **17/02/2069** | | **26/05/2071** | | **01/05/2072** | | **31/12/2074** | |
| **17/02/2069** | | **26/05/2071** | | **01/05/2072** | | **31/12/2074** | | **19/10/2075** | |
| शनि | 31/12/2066 | बुध | 14/06/2069 | केतु | 15/06/2071 | शुक्र | 10/10/2072 | सूर्य | 14/01/2075 |
| बुध | 11/05/2067 | केतु | 01/08/2069 | शुक्र | 10/08/2071 | सूर्य | 28/11/2072 | चंद्र | 08/02/2075 |
| केतु | 04/07/2067 | शुक्र | 17/12/2069 | सूर्य | 27/08/2071 | चंद्र | 17/02/2073 | मंगल | 25/02/2075 |
| शुक्र | 05/12/2067 | सूर्य | 28/01/2070 | चंद्र | 25/09/2071 | मंगल | 15/04/2073 | राहु | 09/04/2075 |
| सूर्य | 21/01/2068 | चंद्र | 07/04/2070 | मंगल | 15/10/2071 | राहु | 08/09/2073 | गुरु | 18/05/2075 |
| चंद्र | 07/04/2068 | मंगल | 25/05/2070 | राहु | 05/12/2071 | गुरु | 16/01/2074 | शनि | 04/07/2075 |
| मंगल | 31/05/2068 | राहु | 26/09/2070 | गुरु | 19/01/2072 | शनि | 19/06/2074 | बुध | 14/08/2075 |
| राहु | 16/10/2068 | गुरु | 15/01/2071 | शनि | 13/03/2072 | बुध | 04/11/2074 | केतु | 31/08/2075 |
| गुरु | 17/02/2069 | शनि | 26/05/2071 | बुध | 01/05/2072 | केतु | 31/12/2074 | शुक्र | 19/10/2075 |

| गुरु - चंद्र | | गुरु - मंगल | | गुरु - राहु | | शनि - शनि | | शनि - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **19/10/2075** | | **17/02/2077** | | **24/01/2078** | | **18/06/2080** | | **22/06/2083** | |
| **17/02/2077** | | **24/01/2078** | | **18/06/2080** | | **22/06/2083** | | **01/03/2086** | |
| चंद्र | 28/11/2075 | मंगल | 09/03/2077 | राहु | 04/06/2078 | शनि | 09/12/2080 | बुध | 08/11/2083 |
| मंगल | 27/12/2075 | राहु | 29/04/2077 | गुरु | 29/09/2078 | बुध | 14/05/2081 | केतु | 05/01/2084 |
| राहु | 09/03/2076 | गुरु | 13/06/2077 | शनि | 15/02/2079 | केतु | 17/07/2081 | शुक्र | 17/06/2084 |
| गुरु | 13/05/2076 | शनि | 06/08/2077 | बुध | 19/06/2079 | शुक्र | 16/01/2082 | सूर्य | 05/08/2084 |
| शनि | 29/07/2076 | बुध | 24/09/2077 | केतु | 09/08/2079 | सूर्य | 12/03/2082 | चंद्र | 26/10/2084 |
| बुध | 06/10/2076 | केतु | 13/10/2077 | शुक्र | 02/01/2080 | चंद्र | 12/06/2082 | मंगल | 22/12/2084 |
| केतु | 03/11/2076 | शुक्र | 09/12/2077 | सूर्य | 15/02/2080 | मंगल | 15/08/2082 | राहु | 19/05/2085 |
| शुक्र | 23/01/2077 | सूर्य | 26/12/2077 | चंद्र | 28/04/2080 | राहु | 27/01/2083 | गुरु | 27/09/2085 |
| सूर्य | 17/02/2077 | चंद्र | 24/01/2078 | मंगल | 18/06/2080 | गुरु | 22/06/2083 | शनि | 01/03/2086 |

# विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| सूर्य - गुरु - मंगल | |
|---|---|
| 23/02/2026 16:18 | |
| 12/03/2026 17:22 | |
| मंगल | 24/02/2026 16:09 |
| राहु | 27/02/2026 05:31 |
| गुरु | 01/03/2026 12:04 |
| शनि | 04/03/2026 04:50 |
| बुध | 06/03/2026 14:47 |
| केतु | 07/03/2026 14:39 |
| शुक्र | 10/03/2026 10:50 |
| सूर्य | 11/03/2026 07:17 |
| चंद्र | 12/03/2026 17:22 |

| सूर्य - गुरु - राहु | |
|---|---|
| 12/03/2026 17:22 | |
| 25/04/2026 13:18 | |
| राहु | 19/03/2026 07:10 |
| गुरु | 25/03/2026 03:25 |
| शनि | 01/04/2026 01:58 |
| बुध | 07/04/2026 07:00 |
| केतु | 09/04/2026 20:21 |
| शुक्र | 17/04/2026 03:40 |
| सूर्य | 19/04/2026 08:16 |
| चंद्र | 22/04/2026 23:56 |
| मंगल | 25/04/2026 13:18 |

| सूर्य - शनि - शनि | |
|---|---|
| 25/04/2026 13:18 | |
| 19/06/2026 11:51 | |
| शनि | 04/05/2026 06:04 |
| बुध | 12/05/2026 00:52 |
| केतु | 15/05/2026 05:46 |
| शुक्र | 24/05/2026 09:32 |
| सूर्य | 27/05/2026 03:28 |
| चंद्र | 31/05/2026 17:20 |
| मंगल | 03/06/2026 22:15 |
| राहु | 12/06/2026 04:02 |
| गुरु | 19/06/2026 11:51 |

| सूर्य - शनि - बुध | |
|---|---|
| 19/06/2026 11:51 | |
| 07/08/2026 15:36 | |
| बुध | 26/06/2026 10:59 |
| केतु | 29/06/2026 07:48 |
| शुक्र | 07/07/2026 12:25 |
| सूर्य | 09/07/2026 23:25 |
| चंद्र | 14/07/2026 01:43 |
| मंगल | 16/07/2026 22:33 |
| राहु | 24/07/2026 07:30 |
| गुरु | 30/07/2026 20:48 |
| शनि | 07/08/2026 15:36 |

| सूर्य - शनि - केतु | |
|---|---|
| 07/08/2026 15:36 | |
| 27/08/2026 21:23 | |
| केतु | 08/08/2026 19:56 |
| शुक्र | 12/08/2026 04:54 |
| सूर्य | 13/08/2026 05:12 |
| चंद्र | 14/08/2026 21:40 |
| मंगल | 16/08/2026 02:01 |
| राहु | 19/08/2026 02:53 |
| गुरु | 21/08/2026 19:39 |
| शनि | 25/08/2026 00:34 |
| बुध | 27/08/2026 21:23 |

| सूर्य - शनि - शुक्र | |
|---|---|
| 27/08/2026 21:23 | |
| 24/10/2026 17:20 | |
| शुक्र | 06/09/2026 12:43 |
| सूर्य | 09/09/2026 10:06 |
| चंद्र | 14/09/2026 05:46 |
| मंगल | 17/09/2026 14:44 |
| राहु | 26/09/2026 06:56 |
| गुरु | 03/10/2026 23:59 |
| शनि | 13/10/2026 03:45 |
| बुध | 21/10/2026 08:22 |
| केतु | 24/10/2026 17:20 |

| सूर्य - शनि - सूर्य | |
|---|---|
| 24/10/2026 17:20 | |
| 11/11/2026 01:43 | |
| सूर्य | 25/10/2026 14:09 |
| चंद्र | 27/10/2026 00:51 |
| मंगल | 28/10/2026 01:09 |
| राहु | 30/10/2026 15:36 |
| गुरु | 01/11/2026 23:07 |
| शनि | 04/11/2026 17:03 |
| बुध | 07/11/2026 04:02 |
| केतु | 08/11/2026 04:19 |
| शुक्र | 11/11/2026 01:43 |

| सूर्य - शनि - चंद्र | |
|---|---|
| 11/11/2026 01:43 | |
| 09/12/2026 23:42 | |
| चंद्र | 13/11/2026 11:33 |
| मंगल | 15/11/2026 04:02 |
| राहु | 19/11/2026 12:08 |
| गुरु | 23/11/2026 08:40 |
| शनि | 27/11/2026 22:32 |
| बुध | 02/12/2026 00:51 |
| केतु | 03/12/2026 17:20 |
| शुक्र | 08/12/2026 13:00 |
| सूर्य | 09/12/2026 23:42 |

| सूर्य - शनि - मंगल | |
|---|---|
| 09/12/2026 23:42 | |
| 30/12/2026 05:29 | |
| मंगल | 11/12/2026 04:02 |
| राहु | 14/12/2026 04:54 |
| गुरु | 16/12/2026 21:40 |
| शनि | 20/12/2026 02:35 |
| बुध | 22/12/2026 23:24 |
| केतु | 24/12/2026 03:45 |
| शुक्र | 27/12/2026 12:42 |
| सूर्य | 28/12/2026 13:00 |
| चंद्र | 30/12/2026 05:29 |

| सूर्य - शनि - राहु | |
|---|---|
| 30/12/2026 05:29 | |
| 20/02/2027 06:38 | |
| राहु | 07/01/2027 00:51 |
| गुरु | 13/01/2027 23:24 |
| शनि | 22/01/2027 05:11 |
| बुध | 29/01/2027 14:09 |
| केतु | 01/02/2027 15:01 |
| शुक्र | 10/02/2027 07:13 |
| सूर्य | 12/02/2027 21:40 |
| चंद्र | 17/02/2027 05:46 |
| मंगल | 20/02/2027 06:38 |

| सूर्य - शनि - गुरु | |
|---|---|
| 20/02/2027 06:38 | |
| 07/04/2027 13:00 | |
| गुरु | 26/02/2027 10:41 |
| शनि | 05/03/2027 18:29 |
| बुध | 12/03/2027 07:47 |
| केतु | 15/03/2027 00:34 |
| शुक्र | 22/03/2027 17:37 |
| सूर्य | 25/03/2027 01:08 |
| चंद्र | 28/03/2027 21:40 |
| मंगल | 31/03/2027 14:26 |
| राहु | 07/04/2027 13:00 |

| सूर्य - बुध - बुध | |
|---|---|
| 07/04/2027 13:00 | |
| 21/05/2027 12:34 | |
| बुध | 13/04/2027 18:32 |
| केतु | 16/04/2027 08:06 |
| शुक्र | 23/04/2027 16:02 |
| सूर्य | 25/04/2027 20:49 |
| चंद्र | 29/04/2027 12:47 |
| मंगल | 02/05/2027 02:21 |
| राहु | 08/05/2027 16:41 |
| गुरु | 14/05/2027 13:26 |
| शनि | 21/05/2027 12:34 |

# विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| सूर्य - बुध - केतु | |
|---|---|
| 21/05/2027 12:34 | 08/06/2027 15:13 |
| केतु | 22/05/2027 13:55 |
| शुक्र | 25/05/2027 14:22 |
| सूर्य | 26/05/2027 12:06 |
| चंद्र | 28/05/2027 00:19 |
| मंगल | 29/05/2027 01:40 |
| राहु | 31/05/2027 18:52 |
| गुरु | 03/06/2027 04:49 |
| शनि | 06/06/2027 01:38 |
| बुध | 08/06/2027 15:13 |

| सूर्य - बुध - शुक्र | |
|---|---|
| 08/06/2027 15:13 | 30/07/2027 09:04 |
| शुक्र | 17/06/2027 06:11 |
| सूर्य | 19/06/2027 20:17 |
| चंद्र | 24/06/2027 03:46 |
| मंगल | 27/06/2027 04:13 |
| राहु | 04/07/2027 22:29 |
| गुरु | 11/07/2027 20:04 |
| शनि | 20/07/2027 00:42 |
| बुध | 27/07/2027 08:37 |
| केतु | 30/07/2027 09:04 |

| सूर्य - बुध - सूर्य | |
|---|---|
| 30/07/2027 09:04 | 14/08/2027 21:37 |
| सूर्य | 31/07/2027 03:41 |
| चंद्र | 01/08/2027 10:44 |
| मंगल | 02/08/2027 08:28 |
| राहु | 04/08/2027 16:21 |
| गुरु | 06/08/2027 18:02 |
| शनि | 09/08/2027 05:01 |
| बुध | 11/08/2027 09:48 |
| केतु | 12/08/2027 07:32 |
| शुक्र | 14/08/2027 21:37 |

| सूर्य - बुध - चंद्र | |
|---|---|
| 14/08/2027 21:37 | 09/09/2027 18:33 |
| चंद्र | 17/08/2027 01:22 |
| मंगल | 18/08/2027 13:35 |
| राहु | 22/08/2027 10:43 |
| गुरु | 25/08/2027 21:31 |
| शनि | 29/08/2027 23:49 |
| बुध | 02/09/2027 15:47 |
| केतु | 04/09/2027 04:01 |
| शुक्र | 08/09/2027 11:30 |
| सूर्य | 09/09/2027 18:33 |

| सूर्य - बुध - मंगल | |
|---|---|
| 09/09/2027 18:33 | 27/09/2027 21:11 |
| मंगल | 10/09/2027 19:54 |
| राहु | 13/09/2027 13:06 |
| गुरु | 15/09/2027 23:03 |
| शनि | 18/09/2027 19:52 |
| बुध | 21/09/2027 09:26 |
| केतु | 22/09/2027 10:48 |
| शुक्र | 25/09/2027 11:14 |
| सूर्य | 26/09/2027 08:58 |
| चंद्र | 27/09/2027 21:11 |

| सूर्य - बुध - राहु | |
|---|---|
| 27/09/2027 21:11 | 13/11/2027 10:51 |
| राहु | 04/10/2027 20:50 |
| गुरु | 11/10/2027 01:52 |
| शनि | 18/10/2027 10:50 |
| बुध | 25/10/2027 01:10 |
| केतु | 27/10/2027 18:22 |
| शुक्र | 04/11/2027 12:38 |
| सूर्य | 06/11/2027 20:31 |
| चंद्र | 10/11/2027 17:39 |
| मंगल | 13/11/2027 10:51 |

| सूर्य - बुध - गुरु | |
|---|---|
| 13/11/2027 10:51 | 24/12/2027 20:20 |
| गुरु | 18/11/2027 23:19 |
| शनि | 25/11/2027 12:37 |
| बुध | 01/12/2027 09:22 |
| केतु | 03/12/2027 19:19 |
| शुक्र | 10/12/2027 16:54 |
| सूर्य | 12/12/2027 18:34 |
| चंद्र | 16/12/2027 05:22 |
| मंगल | 18/12/2027 15:19 |
| राहु | 24/12/2027 20:20 |

| सूर्य - बुध - शनि | |
|---|---|
| 24/12/2027 20:20 | 12/02/2028 00:06 |
| शनि | 01/01/2028 15:08 |
| बुध | 08/01/2028 14:16 |
| केतु | 11/01/2028 11:05 |
| शुक्र | 19/01/2028 15:42 |
| सूर्य | 22/01/2028 02:42 |
| चंद्र | 26/01/2028 05:01 |
| मंगल | 29/01/2028 01:50 |
| राहु | 05/02/2028 10:48 |
| गुरु | 12/02/2028 00:06 |

| सूर्य - केतु - केतु | |
|---|---|
| 12/02/2028 00:06 | 19/02/2028 11:04 |
| केतु | 12/02/2028 10:32 |
| शुक्र | 13/02/2028 16:22 |
| सूर्य | 14/02/2028 01:19 |
| चंद्र | 14/02/2028 16:13 |
| मंगल | 15/02/2028 02:40 |
| राहु | 16/02/2028 05:31 |
| गुरु | 17/02/2028 05:22 |
| शनि | 18/02/2028 09:43 |
| बुध | 19/02/2028 11:04 |

| सूर्य - केतु - शुक्र | |
|---|---|
| 19/02/2028 11:04 | 11/03/2028 18:25 |
| शुक्र | 23/02/2028 00:17 |
| सूर्य | 24/02/2028 01:51 |
| चंद्र | 25/02/2028 20:28 |
| मंगल | 27/02/2028 02:18 |
| राहु | 01/03/2028 07:00 |
| गुरु | 04/03/2028 03:11 |
| शनि | 07/03/2028 12:09 |
| बुध | 10/03/2028 12:35 |
| केतु | 11/03/2028 18:25 |

| सूर्य - केतु - सूर्य | |
|---|---|
| 11/03/2028 18:25 | 18/03/2028 03:49 |
| सूर्य | 12/03/2028 02:05 |
| चंद्र | 12/03/2028 14:52 |
| मंगल | 12/03/2028 23:49 |
| राहु | 13/03/2028 22:50 |
| गुरु | 14/03/2028 19:17 |
| शनि | 15/03/2028 19:34 |
| बुध | 16/03/2028 17:18 |
| केतु | 17/03/2028 02:15 |
| शुक्र | 18/03/2028 03:49 |

| सूर्य - केतु - चंद्र | |
|---|---|
| 18/03/2028 03:49 | 28/03/2028 19:30 |
| चंद्र | 19/03/2028 01:08 |
| मंगल | 19/03/2028 16:02 |
| राहु | 21/03/2028 06:24 |
| गुरु | 22/03/2028 16:29 |
| शनि | 24/03/2028 08:58 |
| बुध | 25/03/2028 21:11 |
| केतु | 26/03/2028 12:06 |
| शुक्र | 28/03/2028 06:43 |
| सूर्य | 28/03/2028 19:30 |

# विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| सूर्य - केतु - मंगल | |
|---|---|
| 28/03/2028 19:30 | |
| 05/04/2028 06:28 | |
| मंगल | 29/03/2028 05:56 |
| राहु | 30/03/2028 08:47 |
| गुरु | 31/03/2028 08:39 |
| शनि | 01/04/2028 12:59 |
| बुध | 02/04/2028 14:20 |
| केतु | 03/04/2028 00:47 |
| शुक्र | 04/04/2028 06:36 |
| सूर्य | 04/04/2028 15:33 |
| चंद्र | 05/04/2028 06:28 |

| सूर्य - केतु - राहु | |
|---|---|
| 05/04/2028 06:28 | |
| 24/04/2028 10:41 | |
| राहु | 08/04/2028 03:30 |
| गुरु | 10/04/2028 16:52 |
| शनि | 13/04/2028 17:44 |
| बुध | 16/04/2028 10:56 |
| केतु | 17/04/2028 13:46 |
| शुक्र | 20/04/2028 18:28 |
| सूर्य | 21/04/2028 17:29 |
| चंद्र | 23/04/2028 07:50 |
| मंगल | 24/04/2028 10:41 |

| सूर्य - केतु - गुरु | |
|---|---|
| 24/04/2028 10:41 | |
| 11/05/2028 11:46 | |
| गुरु | 26/04/2028 17:14 |
| शनि | 29/04/2028 10:00 |
| बुध | 01/05/2028 19:57 |
| केतु | 02/05/2028 19:49 |
| शुक्र | 05/05/2028 16:00 |
| सूर्य | 06/05/2028 12:27 |
| चंद्र | 07/05/2028 22:32 |
| मंगल | 08/05/2028 22:24 |
| राहु | 11/05/2028 11:46 |

| सूर्य - केतु - शनि | |
|---|---|
| 11/05/2028 11:46 | |
| 31/05/2028 17:33 | |
| शनि | 14/05/2028 16:41 |
| बुध | 17/05/2028 13:30 |
| केतु | 18/05/2028 17:50 |
| शुक्र | 22/05/2028 02:48 |
| सूर्य | 23/05/2028 03:05 |
| चंद्र | 24/05/2028 19:34 |
| मंगल | 25/05/2028 23:54 |
| राहु | 29/05/2028 00:46 |
| गुरु | 31/05/2028 17:33 |

| सूर्य - केतु - बुध | |
|---|---|
| 31/05/2028 17:33 | |
| 18/06/2028 20:12 | |
| बुध | 03/06/2028 07:07 |
| केतु | 04/06/2028 08:28 |
| शुक्र | 07/06/2028 08:55 |
| सूर्य | 08/06/2028 06:39 |
| चंद्र | 09/06/2028 18:52 |
| मंगल | 10/06/2028 20:13 |
| राहु | 13/06/2028 13:25 |
| गुरु | 15/06/2028 23:22 |
| शनि | 18/06/2028 20:12 |

| सूर्य - शुक्र - शुक्र | |
|---|---|
| 18/06/2028 20:12 | |
| 18/08/2028 17:12 | |
| शुक्र | 28/06/2028 23:42 |
| सूर्य | 02/07/2028 00:45 |
| चंद्र | 07/07/2028 02:30 |
| मंगल | 10/07/2028 15:43 |
| राहु | 19/07/2028 18:52 |
| गुरु | 27/07/2028 21:40 |
| शनि | 06/08/2028 13:00 |
| बुध | 15/08/2028 03:58 |
| केतु | 18/08/2028 17:12 |

| सूर्य - शुक्र - सूर्य | |
|---|---|
| 18/08/2028 17:12 | |
| 05/09/2028 23:30 | |
| सूर्य | 19/08/2028 15:06 |
| चंद्र | 21/08/2028 03:38 |
| मंगल | 22/08/2028 05:12 |
| राहु | 24/08/2028 22:57 |
| गुरु | 27/08/2028 09:23 |
| शनि | 30/08/2028 06:47 |
| बुध | 01/09/2028 20:53 |
| केतु | 02/09/2028 22:27 |
| शुक्र | 05/09/2028 23:30 |

| सूर्य - शुक्र - चंद्र | |
|---|---|
| 05/09/2028 23:30 | |
| 06/10/2028 10:00 | |
| चंद्र | 08/09/2028 12:22 |
| मंगल | 10/09/2028 06:59 |
| राहु | 14/09/2028 20:33 |
| गुरु | 18/09/2028 21:57 |
| शनि | 23/09/2028 17:37 |
| बुध | 28/09/2028 01:06 |
| केतु | 29/09/2028 19:43 |
| शुक्र | 04/10/2028 21:28 |
| सूर्य | 06/10/2028 10:00 |

| सूर्य - शुक्र - मंगल | |
|---|---|
| 06/10/2028 10:00 | |
| 27/10/2028 17:21 | |
| मंगल | 07/10/2028 15:49 |
| राहु | 10/10/2028 20:31 |
| गुरु | 13/10/2028 16:42 |
| शनि | 17/10/2028 01:40 |
| बुध | 20/10/2028 02:07 |
| केतु | 21/10/2028 07:56 |
| शुक्र | 24/10/2028 21:10 |
| सूर्य | 25/10/2028 22:44 |
| चंद्र | 27/10/2028 17:21 |

| सूर्य - शुक्र - राहु | |
|---|---|
| 27/10/2028 17:21 | |
| 21/12/2028 12:15 | |
| राहु | 04/11/2028 22:35 |
| गुरु | 12/11/2028 05:54 |
| शनि | 20/11/2028 22:05 |
| बुध | 28/11/2028 16:22 |
| केतु | 01/12/2028 21:04 |
| शुक्र | 11/12/2028 00:13 |
| सूर्य | 13/12/2028 17:58 |
| चंद्र | 18/12/2028 07:32 |
| मंगल | 21/12/2028 12:15 |

| सूर्य - शुक्र - गुरु | |
|---|---|
| 21/12/2028 12:15 | |
| 08/02/2029 05:03 | |
| गुरु | 28/12/2028 00:05 |
| शनि | 04/01/2029 17:09 |
| बुध | 11/01/2029 14:43 |
| केतु | 14/01/2029 10:54 |
| शुक्र | 22/01/2029 13:42 |
| सूर्य | 25/01/2029 00:09 |
| चंद्र | 29/01/2029 01:33 |
| मंगल | 31/01/2029 21:43 |
| राहु | 08/02/2029 05:03 |

| सूर्य - शुक्र - शनि | |
|---|---|
| 08/02/2029 05:03 | |
| 07/04/2029 01:00 | |
| शनि | 17/02/2029 08:48 |
| बुध | 25/02/2029 13:26 |
| केतु | 28/02/2029 22:23 |
| शुक्र | 10/03/2029 13:43 |
| सूर्य | 13/03/2029 11:07 |
| चंद्र | 18/03/2029 06:47 |
| मंगल | 21/03/2029 15:44 |
| राहु | 30/03/2029 07:56 |
| गुरु | 07/04/2029 01:00 |

# विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| सूर्य - शुक्र - बुध | |
|---|---|
| 07/04/2029 01:00 | |
| 28/05/2029 18:51 | |
| बुध | 14/04/2029 08:55 |
| केतु | 17/04/2029 09:22 |
| शुक्र | 26/04/2029 00:20 |
| सूर्य | 28/04/2029 14:26 |
| चंद्र | 02/05/2029 21:55 |
| मंगल | 05/05/2029 22:22 |
| राहु | 13/05/2029 16:38 |
| गुरु | 20/05/2029 14:13 |
| शनि | 28/05/2029 18:51 |

| सूर्य - शुक्र - केतु | |
|---|---|
| 28/05/2029 18:51 | |
| 19/06/2029 02:12 | |
| केतु | 30/05/2029 00:40 |
| शुक्र | 02/06/2029 13:54 |
| सूर्य | 03/06/2029 15:28 |
| चंद्र | 05/06/2029 10:05 |
| मंगल | 06/06/2029 15:54 |
| राहु | 09/06/2029 20:36 |
| गुरु | 12/06/2029 16:47 |
| शनि | 16/06/2029 01:45 |
| बुध | 19/06/2029 02:12 |

| चंद्र - चंद्र - चंद्र | |
|---|---|
| 19/06/2029 02:12 | |
| 14/07/2029 10:57 | |
| चंद्र | 21/06/2029 04:55 |
| मंगल | 22/06/2029 16:26 |
| राहु | 26/06/2029 11:45 |
| गुरु | 29/06/2029 20:55 |
| शनि | 03/07/2029 21:18 |
| बुध | 07/07/2029 11:32 |
| केतु | 08/07/2029 23:03 |
| शुक्र | 13/07/2029 04:30 |
| सूर्य | 14/07/2029 10:57 |

| चंद्र - चंद्र - मंगल | |
|---|---|
| 14/07/2029 10:57 | |
| 01/08/2029 05:04 | |
| मंगल | 15/07/2029 11:48 |
| राहु | 18/07/2029 03:43 |
| गुरु | 20/07/2029 12:32 |
| शनि | 23/07/2029 08:00 |
| बुध | 25/07/2029 20:22 |
| केतु | 26/07/2029 21:14 |
| शुक्र | 29/07/2029 20:15 |
| सूर्य | 30/07/2029 17:33 |
| चंद्र | 01/08/2029 05:04 |

| चंद्र - चंद्र - राहु | |
|---|---|
| 01/08/2029 05:04 | |
| 15/09/2029 20:49 | |
| राहु | 08/08/2029 01:26 |
| गुरु | 14/08/2029 03:32 |
| शनि | 21/08/2029 09:01 |
| बुध | 27/08/2029 20:15 |
| केतु | 30/08/2029 12:10 |
| शुक्र | 07/09/2029 02:48 |
| सूर्य | 09/09/2029 09:35 |
| चंद्र | 13/09/2029 04:54 |
| मंगल | 15/09/2029 20:49 |

| चंद्र - चंद्र - गुरु | |
|---|---|
| 15/09/2029 20:49 | |
| 26/10/2029 10:49 | |
| गुरु | 21/09/2029 06:41 |
| शनि | 27/09/2029 16:54 |
| बुध | 03/10/2029 10:53 |
| केतु | 05/10/2029 19:42 |
| शुक्र | 12/10/2029 14:02 |
| सूर्य | 14/10/2029 14:44 |
| चंद्र | 17/10/2029 23:54 |
| मंगल | 20/10/2029 08:43 |
| राहु | 26/10/2029 10:49 |

| चंद्र - चंद्र - शनि | |
|---|---|
| 26/10/2029 10:49 | |
| 13/12/2029 15:27 | |
| शनि | 03/11/2029 01:57 |
| बुध | 09/11/2029 21:48 |
| केतु | 12/11/2029 17:16 |
| शुक्र | 20/11/2029 18:03 |
| सूर्य | 23/11/2029 03:53 |
| चंद्र | 27/11/2029 04:16 |
| मंगल | 29/11/2029 23:44 |
| राहु | 07/12/2029 05:14 |
| गुरु | 13/12/2029 15:27 |

| चंद्र - चंद्र - बुध | |
|---|---|
| 13/12/2029 15:27 | |
| 25/01/2030 18:19 | |
| बुध | 19/12/2029 18:03 |
| केतु | 22/12/2029 06:25 |
| शुक्र | 29/12/2029 10:54 |
| सूर्य | 31/12/2029 14:38 |
| चंद्र | 04/01/2030 04:53 |
| मंगल | 06/01/2030 17:15 |
| राहु | 13/01/2030 04:29 |
| गुरु | 18/01/2030 22:28 |
| शनि | 25/01/2030 18:19 |

| चंद्र - चंद्र - केतु | |
|---|---|
| 25/01/2030 18:19 | |
| 12/02/2030 12:27 | |
| केतु | 26/01/2030 19:10 |
| शुक्र | 29/01/2030 18:12 |
| सूर्य | 30/01/2030 15:30 |
| चंद्र | 01/02/2030 03:01 |
| मंगल | 02/02/2030 03:52 |
| राहु | 04/02/2030 19:47 |
| गुरु | 07/02/2030 04:36 |
| शनि | 10/02/2030 00:04 |
| बुध | 12/02/2030 12:27 |

| चंद्र - चंद्र - शुक्र | |
|---|---|
| 12/02/2030 12:27 | |
| 04/04/2030 05:57 | |
| शुक्र | 20/02/2030 23:22 |
| सूर्य | 23/02/2030 12:14 |
| चंद्र | 27/02/2030 17:42 |
| मंगल | 02/03/2030 16:43 |
| राहु | 10/03/2030 07:20 |
| गुरु | 17/03/2030 01:40 |
| शनि | 25/03/2030 02:27 |
| बुध | 01/04/2030 06:55 |
| केतु | 04/04/2030 05:57 |

| चंद्र - चंद्र - सूर्य | |
|---|---|
| 04/04/2030 05:57 | |
| 19/04/2030 11:12 | |
| सूर्य | 05/04/2030 00:12 |
| चंद्र | 06/04/2030 06:39 |
| मंगल | 07/04/2030 03:57 |
| राहु | 09/04/2030 10:44 |
| गुरु | 11/04/2030 11:26 |
| शनि | 13/04/2030 21:16 |
| बुध | 16/04/2030 01:01 |
| केतु | 16/04/2030 22:19 |
| शुक्र | 19/04/2030 11:12 |

| चंद्र - मंगल - मंगल | |
|---|---|
| 19/04/2030 11:12 | |
| 01/05/2030 21:29 | |
| मंगल | 20/04/2030 04:36 |
| राहु | 22/04/2030 01:20 |
| गुरु | 23/04/2030 17:06 |
| शनि | 25/04/2030 16:20 |
| बुध | 27/04/2030 10:36 |
| केतु | 28/04/2030 04:00 |
| शुक्र | 30/04/2030 05:43 |
| सूर्य | 30/04/2030 20:37 |
| चंद्र | 01/05/2030 21:29 |

# विंशोत्तरी दशा - प्राण

| सूर्य - गुरु - मंगल - शुक्र | |
|---|---|
| 07/03/2026 14:39 | |
| 10/03/2026 10:50 | |
| शुक्र | 08/03/2026 02:01 |
| सूर्य | 08/03/2026 05:25 |
| चंद्र | 08/03/2026 11:06 |
| मंगल | 08/03/2026 15:05 |
| राहु | 09/03/2026 01:18 |
| गुरु | 09/03/2026 10:24 |
| शनि | 09/03/2026 21:12 |
| बुध | 10/03/2026 06:51 |
| केतु | 10/03/2026 10:50 |

| सूर्य - गुरु - मंगल - सूर्य | |
|---|---|
| 10/03/2026 10:50 | |
| 11/03/2026 07:17 | |
| सूर्य | 10/03/2026 11:51 |
| चंद्र | 10/03/2026 13:33 |
| मंगल | 10/03/2026 14:45 |
| राहु | 10/03/2026 17:49 |
| गुरु | 10/03/2026 20:33 |
| शनि | 10/03/2026 23:47 |
| बुध | 11/03/2026 02:41 |
| केतु | 11/03/2026 03:52 |
| शुक्र | 11/03/2026 07:17 |

| सूर्य - गुरु - मंगल - चंद्र | |
|---|---|
| 11/03/2026 07:17 | |
| 12/03/2026 17:22 | |
| चंद्र | 11/03/2026 10:07 |
| मंगल | 11/03/2026 12:07 |
| राहु | 11/03/2026 17:14 |
| गुरु | 11/03/2026 21:46 |
| शनि | 12/03/2026 03:10 |
| बुध | 12/03/2026 08:00 |
| केतु | 12/03/2026 09:59 |
| शुक्र | 12/03/2026 15:40 |
| सूर्य | 12/03/2026 17:22 |

| सूर्य - गुरु - राहु - राहु | |
|---|---|
| 12/03/2026 17:22 | |
| 19/03/2026 07:10 | |
| राहु | 13/03/2026 17:02 |
| गुरु | 14/03/2026 14:05 |
| शनि | 15/03/2026 15:04 |
| बुध | 16/03/2026 13:25 |
| केतु | 16/03/2026 22:37 |
| शुक्र | 18/03/2026 00:55 |
| सूर्य | 18/03/2026 08:48 |
| चंद्र | 18/03/2026 21:57 |
| मंगल | 19/03/2026 07:10 |

| सूर्य - गुरु - राहु - गुरु | |
|---|---|
| 19/03/2026 07:10 | |
| 25/03/2026 03:25 | |
| गुरु | 20/03/2026 01:52 |
| शनि | 21/03/2026 00:04 |
| बुध | 21/03/2026 19:56 |
| केतु | 22/03/2026 04:07 |
| शुक्र | 23/03/2026 03:30 |
| सूर्य | 23/03/2026 10:31 |
| चंद्र | 23/03/2026 22:12 |
| मंगल | 24/03/2026 06:23 |
| राहु | 25/03/2026 03:25 |

| सूर्य - गुरु - राहु - शनि | |
|---|---|
| 25/03/2026 03:25 | |
| 01/04/2026 01:58 | |
| शनि | 26/03/2026 05:47 |
| बुध | 27/03/2026 05:23 |
| केतु | 27/03/2026 15:06 |
| शुक्र | 28/03/2026 18:51 |
| सूर्य | 29/03/2026 03:11 |
| चंद्र | 29/03/2026 17:04 |
| मंगल | 30/03/2026 02:47 |
| राहु | 31/03/2026 03:46 |
| गुरु | 01/04/2026 01:58 |

| सूर्य - गुरु - राहु - बुध | |
|---|---|
| 01/04/2026 01:58 | |
| 07/04/2026 07:00 | |
| बुध | 01/04/2026 23:05 |
| केतु | 02/04/2026 07:47 |
| शुक्र | 03/04/2026 08:37 |
| सूर्य | 03/04/2026 16:04 |
| चंद्र | 04/04/2026 04:29 |
| मंगल | 04/04/2026 13:10 |
| राहु | 05/04/2026 11:32 |
| गुरु | 06/04/2026 07:24 |
| शनि | 07/04/2026 07:00 |

| सूर्य - गुरु - राहु - केतु | |
|---|---|
| 07/04/2026 07:00 | |
| 09/04/2026 20:21 | |
| केतु | 07/04/2026 10:34 |
| शुक्र | 07/04/2026 20:48 |
| सूर्य | 07/04/2026 23:52 |
| चंद्र | 08/04/2026 04:59 |
| मंगल | 08/04/2026 08:34 |
| राहु | 08/04/2026 17:46 |
| गुरु | 09/04/2026 01:57 |
| शनि | 09/04/2026 11:40 |
| बुध | 09/04/2026 20:21 |

| सूर्य - गुरु - राहु - शुक्र | |
|---|---|
| 09/04/2026 20:21 | |
| 17/04/2026 03:40 | |
| शुक्र | 11/04/2026 01:34 |
| सूर्य | 11/04/2026 10:20 |
| चंद्र | 12/04/2026 00:57 |
| मंगल | 12/04/2026 11:11 |
| राहु | 13/04/2026 13:29 |
| गुरु | 14/04/2026 12:51 |
| शनि | 15/04/2026 16:37 |
| बुध | 16/04/2026 17:27 |
| केतु | 17/04/2026 03:40 |

| सूर्य - गुरु - राहु - सूर्य | |
|---|---|
| 17/04/2026 03:40 | |
| 19/04/2026 08:16 | |
| सूर्य | 17/04/2026 06:18 |
| चंद्र | 17/04/2026 10:41 |
| मंगल | 17/04/2026 13:45 |
| राहु | 17/04/2026 21:39 |
| गुरु | 18/04/2026 04:39 |
| शनि | 18/04/2026 12:59 |
| बुध | 18/04/2026 20:26 |
| केतु | 18/04/2026 23:30 |
| शुक्र | 19/04/2026 08:16 |

| सूर्य - गुरु - राहु - चंद्र | |
|---|---|
| 19/04/2026 08:16 | |
| 22/04/2026 23:56 | |
| चंद्र | 19/04/2026 15:35 |
| मंगल | 19/04/2026 20:41 |
| राहु | 20/04/2026 09:50 |
| गुरु | 20/04/2026 21:32 |
| शनि | 21/04/2026 11:24 |
| बुध | 21/04/2026 23:49 |
| केतु | 22/04/2026 04:56 |
| शुक्र | 22/04/2026 19:33 |
| सूर्य | 22/04/2026 23:56 |

| सूर्य - गुरु - राहु - मंगल | |
|---|---|
| 22/04/2026 23:56 | |
| 25/04/2026 13:18 | |
| मंगल | 23/04/2026 03:31 |
| राहु | 23/04/2026 12:43 |
| गुरु | 23/04/2026 20:54 |
| शनि | 24/04/2026 06:37 |
| बुध | 24/04/2026 15:18 |
| केतु | 24/04/2026 18:53 |
| शुक्र | 25/04/2026 05:07 |
| सूर्य | 25/04/2026 08:11 |
| चंद्र | 25/04/2026 13:18 |

# विंशोत्तरी दशा - प्राण

**सूर्य - शनि - शनि - शनि**
**25/04/2026 13:18**
**04/05/2026 06:04**

| | |
|---|---|
| शनि | 26/04/2026 22:21 |
| बुध | 28/04/2026 03:55 |
| केतु | 28/04/2026 16:06 |
| शुक्र | 30/04/2026 02:54 |
| सूर्य | 30/04/2026 13:20 |
| चंद्र | 01/05/2026 06:44 |
| मंगल | 01/05/2026 18:55 |
| राहु | 03/05/2026 02:14 |
| गुरु | 04/05/2026 06:04 |

**सूर्य - शनि - शनि - बुध**
**04/05/2026 06:04**
**12/05/2026 00:52**

| | |
|---|---|
| बुध | 05/05/2026 08:32 |
| केतु | 05/05/2026 19:25 |
| शुक्र | 07/05/2026 02:33 |
| सूर्य | 07/05/2026 11:54 |
| चंद्र | 08/05/2026 03:28 |
| मंगल | 08/05/2026 14:21 |
| राहु | 09/05/2026 18:23 |
| गुरु | 10/05/2026 19:17 |
| शनि | 12/05/2026 00:52 |

**सूर्य - शनि - शनि - केतु**
**12/05/2026 00:52**
**15/05/2026 05:46**

| | |
|---|---|
| केतु | 12/05/2026 05:21 |
| शुक्र | 12/05/2026 18:10 |
| सूर्य | 12/05/2026 22:01 |
| चंद्र | 13/05/2026 04:25 |
| मंगल | 13/05/2026 08:54 |
| राहु | 13/05/2026 20:27 |
| गुरु | 14/05/2026 06:42 |
| शनि | 14/05/2026 18:53 |
| बुध | 15/05/2026 05:46 |

**सूर्य - शनि - शनि - शुक्र**
**15/05/2026 05:46**
**24/05/2026 09:32**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 16/05/2026 18:24 |
| सूर्य | 17/05/2026 05:23 |
| चंद्र | 17/05/2026 23:42 |
| मंगल | 18/05/2026 12:31 |
| राहु | 19/05/2026 21:29 |
| गुरु | 21/05/2026 02:47 |
| शनि | 22/05/2026 13:35 |
| बुध | 23/05/2026 20:43 |
| केतु | 24/05/2026 09:32 |

**सूर्य - शनि - शनि - सूर्य**
**24/05/2026 09:32**
**27/05/2026 03:28**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 24/05/2026 12:50 |
| चंद्र | 24/05/2026 18:19 |
| मंगल | 24/05/2026 22:10 |
| राहु | 25/05/2026 08:03 |
| गुरु | 25/05/2026 16:51 |
| शनि | 26/05/2026 03:17 |
| बुध | 26/05/2026 12:38 |
| केतु | 26/05/2026 16:28 |
| शुक्र | 27/05/2026 03:28 |

**सूर्य - शनि - शनि - चंद्र**
**27/05/2026 03:28**
**31/05/2026 17:20**

| | |
|---|---|
| चंद्र | 27/05/2026 12:37 |
| मंगल | 27/05/2026 19:02 |
| राहु | 28/05/2026 11:31 |
| गुरु | 29/05/2026 02:10 |
| शनि | 29/05/2026 19:33 |
| बुध | 30/05/2026 11:07 |
| केतु | 30/05/2026 17:32 |
| शुक्र | 31/05/2026 11:51 |
| सूर्य | 31/05/2026 17:20 |

**सूर्य - शनि - शनि - मंगल**
**31/05/2026 17:20**
**03/06/2026 22:15**

| | |
|---|---|
| मंगल | 31/05/2026 21:50 |
| राहु | 01/06/2026 09:22 |
| गुरु | 01/06/2026 19:37 |
| शनि | 02/06/2026 07:48 |
| बुध | 02/06/2026 18:42 |
| केतु | 02/06/2026 23:11 |
| शुक्र | 03/06/2026 12:00 |
| सूर्य | 03/06/2026 15:51 |
| चंद्र | 03/06/2026 22:15 |

**सूर्य - शनि - शनि - राहु**
**03/06/2026 22:15**
**12/06/2026 04:02**

| | |
|---|---|
| राहु | 05/06/2026 03:55 |
| गुरु | 06/06/2026 06:18 |
| शनि | 07/06/2026 13:37 |
| बुध | 08/06/2026 17:38 |
| केतु | 09/06/2026 05:10 |
| शुक्र | 10/06/2026 14:08 |
| सूर्य | 11/06/2026 00:01 |
| चंद्र | 11/06/2026 16:30 |
| मंगल | 12/06/2026 04:02 |

**सूर्य - शनि - शनि - गुरु**
**12/06/2026 04:02**
**19/06/2026 11:51**

| | |
|---|---|
| गुरु | 13/06/2026 03:29 |
| शनि | 14/06/2026 07:19 |
| बुध | 15/06/2026 08:13 |
| केतु | 15/06/2026 18:29 |
| शुक्र | 16/06/2026 23:47 |
| सूर्य | 17/06/2026 08:34 |
| चंद्र | 17/06/2026 23:13 |
| मंगल | 18/06/2026 09:28 |
| राहु | 19/06/2026 11:51 |

**सूर्य - शनि - बुध - बुध**
**19/06/2026 11:51**
**26/06/2026 10:59**

| | |
|---|---|
| बुध | 20/06/2026 11:31 |
| केतु | 20/06/2026 21:16 |
| शुक्र | 22/06/2026 01:08 |
| सूर्य | 22/06/2026 09:29 |
| चंद्र | 22/06/2026 23:25 |
| मंगल | 23/06/2026 09:10 |
| राहु | 24/06/2026 10:14 |
| गुरु | 25/06/2026 08:31 |
| शनि | 26/06/2026 10:59 |

**सूर्य - शनि - बुध - केतु**
**26/06/2026 10:59**
**29/06/2026 07:48**

| | |
|---|---|
| केतु | 26/06/2026 15:00 |
| शुक्र | 27/06/2026 02:28 |
| सूर्य | 27/06/2026 05:54 |
| चंद्र | 27/06/2026 11:38 |
| मंगल | 27/06/2026 15:39 |
| राहु | 28/06/2026 01:59 |
| गुरु | 28/06/2026 11:09 |
| शनि | 28/06/2026 22:03 |
| बुध | 29/06/2026 07:48 |

**सूर्य - शनि - बुध - शुक्र**
**29/06/2026 07:48**
**07/07/2026 12:25**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 30/06/2026 16:34 |
| सूर्य | 01/07/2026 02:24 |
| चंद्र | 01/07/2026 18:47 |
| मंगल | 02/07/2026 06:15 |
| राहु | 03/07/2026 11:45 |
| गुरु | 04/07/2026 13:58 |
| शनि | 05/07/2026 21:06 |
| बुध | 07/07/2026 00:57 |
| केतु | 07/07/2026 12:25 |

# षोडशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : गुरु 0 वर्ष 5 मास 16 दिन

| गुरु 13 वर्ष | शनि 14 वर्ष | केतु 15 वर्ष | चंद्र 16 वर्ष | बुध 17 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **15/10/1978** | **02/04/1979** | **02/04/1993** | **01/04/2008** | **01/04/2024** |
| **02/04/1979** | **02/04/1993** | **01/04/2008** | **01/04/2024** | **02/04/2041** |
| 00/00/0000 | शनि 09/12/1980 | केतु 11/03/1995 | चंद्र 16/06/2010 | बुध 28/09/2026 |
| 00/00/0000 | केतु 01/10/1982 | चंद्र 05/04/1997 | बुध 20/10/2012 | शुक्र 19/05/2029 |
| 00/00/0000 | चंद्र 06/09/1984 | बुध 17/06/1999 | शुक्र 15/04/2015 | सूर्य 29/12/2030 |
| 00/00/0000 | बुध 25/09/1986 | शुक्र 14/10/2001 | सूर्य 20/10/2016 | मंगल01/10/2032 |
| 00/00/0000 | शुक्र 27/11/1988 | सूर्य 17/03/2003 | मंगल16/06/2018 | गुरु 28/08/2034 |
| 00/00/0000 | सूर्य 27/03/1990 | मंगल04/10/2004 | गुरु 01/04/2020 | शनि 15/09/2036 |
| 15/10/1978 | मंगल07/09/1991 | गुरु 10/06/2006 | शनि 08/03/2022 | केतु 27/11/2038 |
| मंगल02/04/1979 | गुरु 02/04/1993 | शनि 01/04/2008 | केतु 01/04/2024 | चंद्र 02/04/2041 |

| शुक्र 18 वर्ष | सूर्य 11 वर्ष | मंगल 12 वर्ष | गुरु 13 वर्ष |
|---|---|---|---|
| **02/04/2041** | **02/04/2059** | **02/04/2070** | **02/04/2082** |
| **02/04/2059** | **02/04/2070** | **02/04/2082** | **15/10/2094** |
| शुक्र 17/01/2044 | सूर्य 17/04/2060 | मंगल29/06/2071 | गुरु 16/09/2083 |
| सूर्य 01/10/2045 | मंगल07/06/2061 | गुरु 01/11/2072 | शनि 11/04/2085 |
| मंगल12/08/2047 | गुरु 31/08/2062 | शनि 14/04/2074 | केतु 16/12/2086 |
| गुरु 18/08/2049 | शनि 29/12/2063 | केतु 02/11/2075 | चंद्र 01/10/2088 |
| शनि 21/10/2051 | केतु 31/05/2065 | चंद्र 29/06/2077 | बुध 28/08/2090 |
| केतु 17/02/2054 | चंद्र 07/12/2066 | बुध 02/04/2079 | शुक्र 03/09/2092 |
| चंद्र 12/08/2056 | बुध 17/07/2068 | शुक्र 10/02/2081 | सूर्य 27/11/2093 |
| बुध 02/04/2059 | शुक्र 02/04/2070 | सूर्य 02/04/2082 | मंगल15/10/2094 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| गुरु - मंगल | | शनि - शनि | | शनि - केतु | | शनि - चंद्र | | शनि - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/10/1978 | | 02/04/1979 | | 09/12/1980 | | 01/10/1982 | | 06/09/1984 | |
| 02/04/1979 | | 09/12/1980 | | 01/10/1982 | | 06/09/1984 | | 25/09/1986 | |
| | 00/00/0000 | शनि | 16/06/1979 | केतु | 05/03/1981 | चंद्र | 07/01/1983 | बुध | 25/12/1984 |
| | 00/00/0000 | केतु | 03/09/1979 | चंद्र | 04/06/1981 | बुध | 20/04/1983 | शुक्र | 20/04/1985 |
| | 00/00/0000 | चंद्र | 27/11/1979 | बुध | 09/09/1981 | शुक्र | 08/08/1983 | सूर्य | 30/06/1985 |
| | 00/00/0000 | बुध | 26/02/1980 | शुक्र | 20/12/1981 | सूर्य | 13/10/1983 | मंगल | 15/09/1985 |
| | 15/10/1978 | शुक्र | 01/06/1980 | सूर्य | 21/02/1982 | मंगल | 25/12/1983 | गुरु | 08/12/1985 |
| बुध | 30/11/1978 | सूर्य | 29/07/1980 | मंगल | 01/05/1982 | गुरु | 13/03/1984 | शनि | 09/03/1986 |
| शुक्र | 15/02/1979 | मंगल | 01/10/1980 | गुरु | 14/07/1982 | शनि | 07/06/1984 | केतु | 14/06/1986 |
| सूर्य | 02/04/1979 | गुरु | 09/12/1980 | शनि | 01/10/1982 | केतु | 06/09/1984 | चंद्र | 25/09/1986 |

| शनि - शुक्र | | शनि - सूर्य | | शनि - मंगल | | शनि - गुरु | | केतु - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25/09/1986 | | 27/11/1988 | | 27/03/1990 | | 07/09/1991 | | 02/04/1993 | |
| 27/11/1988 | | 27/03/1990 | | 07/09/1991 | | 02/04/1993 | | 11/03/1995 | |
| शुक्र | 26/01/1987 | सूर्य | 12/01/1989 | मंगल | 20/05/1990 | गुरु | 10/11/1991 | केतु | 02/07/1993 |
| सूर्य | 12/04/1987 | मंगल | 03/03/1989 | गुरु | 19/07/1990 | शनि | 18/01/1992 | चंद्र | 08/10/1993 |
| मंगल | 03/07/1987 | गुरु | 26/04/1989 | शनि | 20/09/1990 | केतु | 01/04/1992 | बुध | 20/01/1994 |
| गुरु | 30/09/1987 | शनि | 24/06/1989 | केतु | 28/11/1990 | चंद्र | 19/06/1992 | शुक्र | 10/05/1994 |
| शनि | 03/01/1988 | केतु | 25/08/1989 | चंद्र | 09/02/1991 | बुध | 11/09/1992 | सूर्य | 16/07/1994 |
| केतु | 15/04/1988 | चंद्र | 31/10/1989 | बुध | 27/04/1991 | शुक्र | 09/12/1992 | मंगल | 27/09/1994 |
| चंद्र | 02/08/1988 | बुध | 10/01/1990 | शुक्र | 18/07/1991 | सूर्य | 01/02/1993 | गुरु | 16/12/1994 |
| बुध | 27/11/1988 | शुक्र | 27/03/1990 | सूर्य | 07/09/1991 | मंगल | 02/04/1993 | शनि | 11/03/1995 |

| केतु - चंद्र | | केतु - बुध | | केतु - शुक्र | | केतु - सूर्य | | केतु - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11/03/1995 | | 05/04/1997 | | 17/06/1999 | | 14/10/2001 | | 17/03/2003 | |
| 05/04/1997 | | 17/06/1999 | | 14/10/2001 | | 17/03/2003 | | 04/10/2004 | |
| चंद्र | 23/06/1995 | बुध | 31/07/1997 | शुक्र | 27/10/1999 | सूर्य | 02/12/2001 | मंगल | 15/05/2003 |
| बुध | 12/10/1995 | शुक्र | 03/12/1997 | सूर्य | 15/01/2000 | मंगल | 25/01/2002 | गुरु | 17/07/2003 |
| शुक्र | 06/02/1996 | सूर्य | 17/02/1998 | मंगल | 12/04/2000 | गुरु | 24/03/2002 | शनि | 24/09/2003 |
| सूर्य | 18/04/1996 | मंगल | 11/05/1998 | गुरु | 16/07/2000 | शनि | 26/05/2002 | केतु | 06/12/2003 |
| मंगल | 05/07/1996 | गुरु | 09/08/1998 | शनि | 27/10/2000 | केतु | 01/08/2002 | चंद्र | 22/02/2004 |
| गुरु | 28/09/1996 | शनि | 14/11/1998 | केतु | 14/02/2001 | चंद्र | 12/10/2002 | बुध | 15/05/2004 |
| शनि | 28/12/1996 | केतु | 26/02/1999 | चंद्र | 11/06/2001 | बुध | 27/12/2002 | शुक्र | 11/08/2004 |
| केतु | 05/04/1997 | चंद्र | 17/06/1999 | बुध | 14/10/2001 | शुक्र | 17/03/2003 | सूर्य | 04/10/2004 |

# षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - गुरु | | केतु - शनि | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - बुध | | चंद्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 04/10/2004 | | 10/06/2006 | | 01/04/2008 | | 16/06/2010 | | 20/10/2012 | |
| 10/06/2006 | | 01/04/2008 | | 16/06/2010 | | 20/10/2012 | | 15/04/2015 | |
| गुरु | 12/12/2004 | शनि | 29/08/2006 | चंद्र | 22/07/2008 | बुध | 20/10/2010 | शुक्र | 10/03/2013 |
| शनि | 24/02/2005 | केतु | 22/11/2006 | बुध | 17/11/2008 | शुक्र | 02/03/2011 | सूर्य | 04/06/2013 |
| केतु | 14/05/2005 | चंद्र | 22/02/2007 | शुक्र | 22/03/2009 | सूर्य | 22/05/2011 | मंगल | 05/09/2013 |
| चंद्र | 07/08/2005 | बुध | 30/05/2007 | सूर्य | 06/06/2009 | मंगल | 19/08/2011 | गुरु | 16/12/2013 |
| बुध | 05/11/2005 | शुक्र | 09/09/2007 | मंगल | 29/08/2009 | गुरु | 23/11/2011 | शनि | 04/04/2014 |
| शुक्र | 08/02/2006 | सूर्य | 11/11/2007 | गुरु | 27/11/2009 | शनि | 05/03/2012 | केतु | 31/07/2014 |
| सूर्य | 08/04/2006 | मंगल | 18/01/2008 | शनि | 04/03/2010 | केतु | 24/06/2012 | चंद्र | 03/12/2014 |
| मंगल | 10/06/2006 | गुरु | 01/04/2008 | केतु | 16/06/2010 | चंद्र | 20/10/2012 | बुध | 15/04/2015 |

| चंद्र - सूर्य | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/04/2015 | | 20/10/2016 | | 16/06/2018 | | 01/04/2020 | | 08/03/2022 | |
| 20/10/2016 | | 16/06/2018 | | 01/04/2020 | | 08/03/2022 | | 01/04/2024 | |
| सूर्य | 06/06/2015 | मंगल | 21/12/2016 | गुरु | 29/08/2018 | शनि | 25/06/2020 | केतु | 13/06/2022 |
| मंगल | 03/08/2015 | गुरु | 27/02/2017 | शनि | 16/11/2018 | केतु | 25/09/2020 | चंद्र | 26/09/2022 |
| गुरु | 04/10/2015 | शनि | 11/05/2017 | केतु | 09/02/2019 | चंद्र | 31/12/2020 | बुध | 14/01/2023 |
| शनि | 10/12/2015 | केतु | 28/07/2017 | चंद्र | 10/05/2019 | बुध | 13/04/2021 | शुक्र | 12/05/2023 |
| केतु | 19/02/2016 | चंद्र | 20/10/2017 | बुध | 14/08/2019 | शुक्र | 01/08/2021 | सूर्य | 22/07/2023 |
| चंद्र | 06/05/2016 | बुध | 16/01/2018 | शुक्र | 23/11/2019 | सूर्य | 07/10/2021 | मंगल | 08/10/2023 |
| बुध | 26/07/2016 | शुक्र | 20/04/2018 | सूर्य | 25/01/2020 | मंगल | 19/12/2021 | गुरु | 01/01/2024 |
| शुक्र | 20/10/2016 | सूर्य | 16/06/2018 | मंगल | 01/04/2020 | गुरु | 08/03/2022 | शनि | 01/04/2024 |

| बुध - बुध | | बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | | बुध - मंगल | | बुध - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/04/2024 | | 28/09/2026 | | 19/05/2029 | | 29/12/2030 | | 01/10/2032 | |
| 28/09/2026 | | 19/05/2029 | | 29/12/2030 | | 01/10/2032 | | 28/08/2034 | |
| बुध | 13/08/2024 | शुक्र | 25/02/2027 | सूर्य | 14/07/2029 | मंगल | 05/03/2031 | गुरु | 18/12/2032 |
| शुक्र | 01/01/2025 | सूर्य | 27/05/2027 | मंगल | 13/09/2029 | गुरु | 16/05/2031 | शनि | 12/03/2033 |
| सूर्य | 28/03/2025 | मंगल | 04/09/2027 | गुरु | 18/11/2029 | शनि | 02/08/2031 | केतु | 10/06/2033 |
| मंगल | 30/06/2025 | गुरु | 21/12/2027 | शनि | 28/01/2030 | केतु | 24/10/2031 | चंद्र | 14/09/2033 |
| गुरु | 10/10/2025 | शनि | 15/04/2028 | केतु | 14/04/2030 | चंद्र | 20/01/2032 | बुध | 25/12/2033 |
| शनि | 28/01/2026 | केतु | 18/08/2028 | चंद्र | 04/07/2030 | बुध | 23/04/2032 | शुक्र | 12/04/2034 |
| केतु | 26/05/2026 | चंद्र | 29/12/2028 | बुध | 28/09/2030 | शुक्र | 01/08/2032 | सूर्य | 17/06/2034 |
| चंद्र | 28/09/2026 | बुध | 19/05/2029 | शुक्र | 29/12/2030 | सूर्य | 01/10/2032 | मंगल | 28/08/2034 |

# षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| बुध - शनि | | बुध - केतु | | बुध - चंद्र | | शुक्र - शुक्र | | शुक्र - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28/08/2034 | | 15/09/2036 | | 27/11/2038 | | 02/04/2041 | | 17/01/2044 | |
| 15/09/2036 | | 27/11/2038 | | 02/04/2041 | | 17/01/2044 | | 01/10/2045 | |
| शनि | 26/11/2034 | केतु | 28/12/2036 | चंद्र | 25/03/2039 | शुक्र | 07/09/2041 | सूर्य | 16/03/2044 |
| केतु | 03/03/2035 | चंद्र | 18/04/2037 | बुध | 29/07/2039 | सूर्य | 13/12/2041 | मंगल | 19/05/2044 |
| चंद्र | 15/06/2035 | बुध | 13/08/2037 | शुक्र | 09/12/2039 | मंगल | 28/03/2042 | गुरु | 28/07/2044 |
| बुध | 02/10/2035 | शुक्र | 16/12/2037 | सूर्य | 28/02/2040 | गुरु | 20/07/2042 | शनि | 11/10/2044 |
| शुक्र | 27/01/2036 | सूर्य | 02/03/2038 | मंगल | 26/05/2040 | शनि | 21/11/2042 | केतु | 31/12/2044 |
| सूर्य | 07/04/2036 | मंगल | 24/05/2038 | गुरु | 30/08/2040 | केतु | 02/04/2043 | चंद्र | 27/03/2045 |
| मंगल | 23/06/2036 | गुरु | 22/08/2038 | शनि | 12/12/2040 | चंद्र | 20/08/2043 | बुध | 26/06/2045 |
| गुरु | 15/09/2036 | शनि | 27/11/2038 | केतु | 02/04/2041 | बुध | 17/01/2044 | शुक्र | 01/10/2045 |

| शुक्र - मंगल | | शुक्र - गुरु | | शुक्र - शनि | | शुक्र - केतु | | शुक्र - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/10/2045 | | 12/08/2047 | | 18/08/2049 | | 21/10/2051 | | 17/02/2054 | |
| 12/08/2047 | | 18/08/2049 | | 21/10/2051 | | 17/02/2054 | | 12/08/2056 | |
| मंगल | 11/12/2045 | गुरु | 03/11/2047 | शनि | 22/11/2049 | केतु | 08/02/2052 | चंद्र | 22/06/2054 |
| गुरु | 25/02/2046 | शनि | 31/01/2048 | केतु | 04/03/2050 | चंद्र | 04/06/2052 | बुध | 02/11/2054 |
| शनि | 18/05/2046 | केतु | 05/05/2048 | चंद्र | 22/06/2050 | बुध | 06/10/2052 | शुक्र | 22/03/2055 |
| केतु | 14/08/2046 | चंद्र | 15/08/2048 | बुध | 16/10/2050 | शुक्र | 15/02/2053 | सूर्य | 16/06/2055 |
| चंद्र | 16/11/2046 | बुध | 01/12/2048 | शुक्र | 16/02/2051 | सूर्य | 07/05/2053 | मंगल | 18/09/2055 |
| बुध | 23/02/2047 | शुक्र | 25/03/2049 | सूर्य | 03/05/2051 | मंगल | 03/08/2053 | गुरु | 29/12/2055 |
| शुक्र | 09/06/2047 | सूर्य | 03/06/2049 | मंगल | 24/07/2051 | गुरु | 06/11/2053 | शनि | 16/04/2056 |
| सूर्य | 12/08/2047 | मंगल | 18/08/2049 | गुरु | 21/10/2051 | शनि | 17/02/2054 | केतु | 12/08/2056 |

| शुक्र - बुध | | सूर्य - सूर्य | | सूर्य - मंगल | | सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/08/2056 | | 02/04/2059 | | 17/04/2060 | | 07/06/2061 | | 31/08/2062 | |
| 02/04/2059 | | 17/04/2060 | | 07/06/2061 | | 31/08/2062 | | 29/12/2063 | |
| बुध | 31/12/2056 | सूर्य | 08/05/2059 | मंगल | 30/05/2060 | गुरु | 27/07/2061 | शनि | 28/10/2062 |
| शुक्र | 29/05/2057 | मंगल | 17/06/2059 | गुरु | 16/07/2060 | शनि | 20/09/2061 | केतु | 30/12/2062 |
| सूर्य | 29/08/2057 | गुरु | 29/07/2059 | शनि | 04/09/2060 | केतु | 17/11/2061 | चंद्र | 07/03/2063 |
| मंगल | 06/12/2057 | शनि | 13/09/2059 | केतु | 28/10/2060 | चंद्र | 18/01/2062 | बुध | 17/05/2063 |
| गुरु | 24/03/2058 | केतु | 02/11/2059 | चंद्र | 24/12/2060 | बुध | 25/03/2062 | शुक्र | 31/07/2063 |
| शनि | 19/07/2058 | चंद्र | 24/12/2059 | बुध | 23/02/2061 | शुक्र | 03/06/2062 | सूर्य | 15/09/2063 |
| केतु | 20/11/2058 | बुध | 18/02/2060 | शुक्र | 28/04/2061 | सूर्य | 15/07/2062 | मंगल | 05/11/2063 |
| चंद्र | 02/04/2059 | शुक्र | 17/04/2060 | सूर्य | 07/06/2061 | मंगल | 31/08/2062 | गुरु | 29/12/2063 |

# षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - केतु | | सूर्य - चंद्र | | सूर्य - बुध | | सूर्य - शुक्र | | मंगल - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29/12/2063 | | 31/05/2065 | | 07/12/2066 | | 17/07/2068 | | 02/04/2070 | |
| 31/05/2065 | | 07/12/2066 | | 17/07/2068 | | 02/04/2070 | | 29/06/2071 | |
| केतु | 05/03/2064 | चंद्र | 16/08/2065 | बुध | 03/03/2067 | शुक्र | 22/10/2068 | मंगल | 19/05/2070 |
| चंद्र | 16/05/2064 | बुध | 05/11/2065 | शुक्र | 02/06/2067 | सूर्य | 20/12/2068 | गुरु | 09/07/2070 |
| बुध | 31/07/2064 | शुक्र | 30/01/2066 | सूर्य | 28/07/2067 | मंगल | 23/02/2069 | शनि | 01/09/2070 |
| शुक्र | 19/10/2064 | सूर्य | 24/03/2066 | मंगल | 27/09/2067 | गुरु | 04/05/2069 | केतु | 30/10/2070 |
| सूर्य | 08/12/2064 | मंगल | 20/05/2066 | गुरु | 02/12/2067 | शनि | 18/07/2069 | चंद्र | 31/12/2070 |
| मंगल | 30/01/2065 | गुरु | 21/07/2066 | शनि | 11/02/2068 | केतु | 06/10/2069 | बुध | 08/03/2071 |
| गुरु | 30/03/2065 | शनि | 26/09/2066 | केतु | 27/04/2068 | चंद्र | 31/12/2069 | शुक्र | 17/05/2071 |
| शनि | 31/05/2065 | केतु | 07/12/2066 | चंद्र | 17/07/2068 | बुध | 02/04/2070 | सूर्य | 29/06/2071 |

| मंगल - गुरु | | मंगल - शनि | | मंगल - केतु | | मंगल - चंद्र | | मंगल - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29/06/2071 | | 01/11/2072 | | 14/04/2074 | | 02/11/2075 | | 29/06/2077 | |
| 01/11/2072 | | 14/04/2074 | | 02/11/2075 | | 29/06/2077 | | 02/04/2079 | |
| गुरु | 23/08/2071 | शनि | 04/01/2073 | केतु | 27/06/2074 | चंद्र | 25/01/2076 | बुध | 01/10/2077 |
| शनि | 22/10/2071 | केतु | 14/03/2073 | चंद्र | 13/09/2074 | बुध | 22/04/2076 | शुक्र | 09/01/2078 |
| केतु | 24/12/2071 | चंद्र | 26/05/2073 | बुध | 05/12/2074 | शुक्र | 25/07/2076 | सूर्य | 10/03/2078 |
| चंद्र | 01/03/2072 | बुध | 11/08/2073 | शुक्र | 03/03/2075 | सूर्य | 20/09/2076 | मंगल | 16/05/2078 |
| बुध | 12/05/2072 | शुक्र | 01/11/2073 | सूर्य | 26/04/2075 | मंगल | 22/11/2076 | गुरु | 27/07/2078 |
| शुक्र | 27/07/2072 | सूर्य | 21/12/2073 | मंगल | 23/06/2075 | गुरु | 29/01/2077 | शनि | 12/10/2078 |
| सूर्य | 12/09/2072 | मंगल | 14/02/2074 | गुरु | 26/08/2075 | शनि | 12/04/2077 | केतु | 03/01/2079 |
| मंगल | 01/11/2072 | गुरु | 14/04/2074 | शनि | 02/11/2075 | केतु | 29/06/2077 | चंद्र | 02/04/2079 |

| मंगल - शुक्र | | मंगल - सूर्य | | गुरु - गुरु | | गुरु - शनि | | गुरु - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 02/04/2079 | | 10/02/2081 | | 02/04/2082 | | 16/09/2083 | | 11/04/2085 | |
| 10/02/2081 | | 02/04/2082 | | 16/09/2083 | | 11/04/2085 | | 16/12/2086 | |
| शुक्र | 17/07/2079 | सूर्य | 22/03/2081 | गुरु | 31/05/2082 | शनि | 24/11/2083 | केतु | 29/06/2085 |
| सूर्य | 19/09/2079 | मंगल | 04/05/2081 | शनि | 04/08/2082 | केतु | 06/02/2084 | चंद्र | 22/09/2085 |
| मंगल | 28/11/2079 | गुरु | 19/06/2081 | केतु | 11/10/2082 | चंद्र | 25/04/2084 | बुध | 21/12/2085 |
| गुरु | 13/02/2080 | शनि | 08/08/2081 | चंद्र | 24/12/2082 | बुध | 18/07/2084 | शुक्र | 26/03/2086 |
| शनि | 05/05/2080 | केतु | 01/10/2081 | बुध | 12/03/2083 | शुक्र | 15/10/2084 | सूर्य | 24/05/2086 |
| केतु | 01/08/2080 | चंद्र | 27/11/2081 | शुक्र | 02/06/2083 | सूर्य | 09/12/2084 | मंगल | 26/07/2086 |
| चंद्र | 03/11/2080 | बुध | 27/01/2082 | सूर्य | 23/07/2083 | मंगल | 06/02/2085 | गुरु | 03/10/2086 |
| बुध | 10/02/2081 | शुक्र | 02/04/2082 | मंगल | 16/09/2083 | गुरु | 11/04/2085 | शनि | 16/12/2086 |

# त्रिभगी दशा

## भोग्य दशा काल : शनि 0 वर्ष 5 मास 12 दिन

| शनि 13 वर्ष | बुध 11 वर्ष | केतु 5 वर्ष | शुक्र 13 वर्ष | सूर्य 4 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **15/10/1978** | **29/03/1979** | **28/07/1990** | **29/03/1995** | **28/07/2008** |
| **29/03/1979** | **28/07/1990** | **29/03/1995** | **28/07/2008** | **28/07/2012** |
| 00/00/0000 | बुध 04/11/1980 | केतु 05/11/1990 | शुक्र 17/06/1997 | सूर्य 09/10/2008 |
| 00/00/0000 | केतु 04/07/1981 | शुक्र 16/08/1991 | सूर्य 16/02/1998 | चंद्र 08/02/2009 |
| 00/00/0000 | शुक्र 25/05/1983 | सूर्य 09/11/1991 | चंद्र 29/03/1999 | मंगल 04/05/2009 |
| 00/00/0000 | सूर्य 18/12/1983 | चंद्र 30/03/1992 | मंगल 07/01/2000 | राहु 09/12/2009 |
| 00/00/0000 | चंद्र 26/11/1984 | मंगल 07/07/1992 | राहु 06/01/2002 | गुरु 22/06/2010 |
| 00/00/0000 | मंगल 26/07/1985 | राहु 20/03/1993 | गुरु 18/10/2003 | शनि 08/02/2011 |
| 00/00/0000 | राहु 08/04/1987 | गुरु 02/11/1993 | शनि 27/11/2005 | बुध 03/09/2011 |
| 15/10/1978 | गुरु 11/10/1988 | शनि 30/07/1994 | बुध 18/10/2007 | केतु 27/11/2011 |
| गुरु 29/03/1979 | शनि 28/07/1990 | बुध 29/03/1995 | केतु 28/07/2008 | शुक्र 28/07/2012 |

| चंद्र 7 वर्ष | मंगल 5 वर्ष | राहु 12 वर्ष | गुरु 11 वर्ष | शनि 13 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **28/07/2012** | **29/03/2019** | **27/11/2023** | **27/11/2035** | **28/07/2046** |
| **29/03/2019** | **27/11/2023** | **27/11/2035** | **28/07/2046** | **15/10/2058** |
| चंद्र 16/02/2013 | मंगल 06/07/2019 | राहु 15/09/2025 | गुरु 30/04/2037 | शनि 30/07/2048 |
| मंगल 08/07/2013 | राहु 18/03/2020 | गुरु 22/04/2027 | शनि 07/01/2039 | बुध 16/05/2050 |
| राहु 08/07/2014 | गुरु 31/10/2020 | शनि 16/03/2029 | बुध 12/07/2040 | केतु 10/02/2051 |
| गुरु 29/05/2015 | शनि 28/07/2021 | बुध 27/11/2030 | केतु 24/02/2041 | शुक्र 22/03/2053 |
| शनि 17/06/2016 | बुध 26/03/2022 | केतु 10/08/2031 | शुक्र 05/12/2042 | सूर्य 08/11/2053 |
| बुध 28/05/2017 | केतु 04/07/2022 | शुक्र 09/08/2033 | सूर्य 18/06/2043 | चंद्र 29/11/2054 |
| केतु 17/10/2017 | शुक्र 14/04/2023 | सूर्य 16/03/2034 | चंद्र 08/05/2044 | मंगल 26/08/2055 |
| शुक्र 27/11/2018 | सूर्य 08/07/2023 | चंद्र 17/03/2035 | मंगल 21/12/2044 | राहु 20/07/2057 |
| सूर्य 29/03/2019 | चंद्र 27/11/2023 | मंगल 27/11/2035 | राहु 28/07/2046 | गुरु 15/10/2058 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - गुरु | | बुध - बुध | | बुध - केतु | | बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/10/1978 | | 29/03/1979 | | 04/11/1980 | | 04/07/1981 | | 25/05/1983 | |
| 29/03/1979 | | 04/11/1980 | | 04/07/1981 | | 25/05/1983 | | 18/12/1983 | |
| | 00/00/0000 | बुध | 20/06/1979 | केतु | 18/11/1980 | शुक्र | 27/10/1981 | सूर्य | 04/06/1983 |
| | 00/00/0000 | केतु | 24/07/1979 | शुक्र | 29/12/1980 | सूर्य | 30/11/1981 | चंद्र | 21/06/1983 |
| | 00/00/0000 | शुक्र | 30/10/1979 | सूर्य | 10/01/1981 | चंद्र | 27/01/1982 | मंगल | 03/07/1983 |
| | 00/00/0000 | सूर्य | 28/11/1979 | चंद्र | 30/01/1981 | मंगल | 08/03/1982 | राहु | 03/08/1983 |
| | 00/00/0000 | चंद्र | 16/01/1980 | मंगल | 13/02/1981 | राहु | 19/06/1982 | गुरु | 31/08/1983 |
| | 15/10/1978 | मंगल | 19/02/1980 | राहु | 21/03/1981 | गुरु | 19/09/1982 | शनि | 03/10/1983 |
| चंद्र | 20/11/1978 | राहु | 17/05/1980 | गुरु | 22/04/1981 | शनि | 07/01/1983 | बुध | 01/11/1983 |
| मंगल | 26/12/1978 | गुरु | 03/08/1980 | शनि | 30/05/1981 | बुध | 14/04/1983 | केतु | 13/11/1983 |
| राहु | 29/03/1979 | शनि | 04/11/1980 | बुध | 04/07/1981 | केतु | 25/05/1983 | शुक्र | 18/12/1983 |

| बुध - चंद्र | | बुध - मंगल | | बुध - राहु | | बुध - गुरु | | बुध - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18/12/1983 | | 26/11/1984 | | 26/07/1985 | | 08/04/1987 | | 11/10/1988 | |
| 26/11/1984 | | 26/07/1985 | | 08/04/1987 | | 11/10/1988 | | 28/07/1990 | |
| चंद्र | 15/01/1984 | मंगल | 11/12/1984 | राहु | 27/10/1985 | गुरु | 20/06/1987 | शनि | 23/01/1989 |
| मंगल | 04/02/1984 | राहु | 16/01/1985 | गुरु | 18/01/1986 | शनि | 16/09/1987 | बुध | 25/04/1989 |
| राहु | 27/03/1984 | गुरु | 17/02/1985 | शनि | 26/04/1986 | बुध | 03/12/1987 | केतु | 03/06/1989 |
| गुरु | 12/05/1984 | शनि | 27/03/1985 | बुध | 23/07/1986 | केतु | 04/01/1988 | शुक्र | 20/09/1989 |
| शनि | 06/07/1984 | बुध | 30/04/1985 | केतु | 28/08/1986 | शुक्र | 05/04/1988 | सूर्य | 23/10/1989 |
| बुध | 24/08/1984 | केतु | 15/05/1985 | शुक्र | 10/12/1986 | सूर्य | 03/05/1988 | चंद्र | 16/12/1989 |
| केतु | 13/09/1984 | शुक्र | 24/06/1985 | सूर्य | 10/01/1987 | चंद्र | 18/06/1988 | मंगल | 24/01/1990 |
| शुक्र | 09/11/1984 | सूर्य | 06/07/1985 | चंद्र | 03/03/1987 | मंगल | 20/07/1988 | राहु | 02/05/1990 |
| सूर्य | 26/11/1984 | चंद्र | 26/07/1985 | मंगल | 08/04/1987 | राहु | 11/10/1988 | गुरु | 28/07/1990 |

| केतु - केतु | | केतु - शुक्र | | केतु - सूर्य | | केतु - चंद्र | | केतु - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28/07/1990 | | 05/11/1990 | | 16/08/1991 | | 09/11/1991 | | 30/03/1992 | |
| 05/11/1990 | | 16/08/1991 | | 09/11/1991 | | 30/03/1992 | | 07/07/1992 | |
| केतु | 03/08/1990 | शुक्र | 22/12/1990 | सूर्य | 20/08/1991 | चंद्र | 21/11/1991 | मंगल | 05/04/1992 |
| शुक्र | 20/08/1990 | सूर्य | 05/01/1991 | चंद्र | 27/08/1991 | मंगल | 29/11/1991 | राहु | 20/04/1992 |
| सूर्य | 25/08/1990 | चंद्र | 29/01/1991 | मंगल | 01/09/1991 | राहु | 20/12/1991 | गुरु | 03/05/1992 |
| चंद्र | 02/09/1990 | मंगल | 14/02/1991 | राहु | 14/09/1991 | गुरु | 08/01/1992 | शनि | 19/05/1992 |
| मंगल | 08/09/1990 | राहु | 29/03/1991 | गुरु | 25/09/1991 | शनि | 31/01/1992 | बुध | 02/06/1992 |
| राहु | 23/09/1990 | गुरु | 06/05/1991 | शनि | 09/10/1991 | बुध | 20/02/1992 | केतु | 08/06/1992 |
| गुरु | 06/10/1990 | शनि | 20/06/1991 | बुध | 21/10/1991 | केतु | 28/02/1992 | शुक्र | 24/06/1992 |
| शनि | 22/10/1990 | बुध | 30/07/1991 | केतु | 26/10/1991 | शुक्र | 23/03/1992 | सूर्य | 29/06/1992 |
| बुध | 05/11/1990 | केतु | 16/08/1991 | शुक्र | 09/11/1991 | सूर्य | 30/03/1992 | चंद्र | 07/07/1992 |

# त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - राहु | | केतु - गुरु | | केतु - शनि | | केतु - बुध | | शुक्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **07/07/1992** | | **20/03/1993** | | **02/11/1993** | | **30/07/1994** | | **29/03/1995** | |
| **20/03/1993** | | **02/11/1993** | | **30/07/1994** | | **29/03/1995** | | **17/06/1997** | |
| राहु | 15/08/1992 | गुरु | 19/04/1993 | शनि | 15/12/1993 | बुध | 02/09/1994 | शुक्र | 11/08/1995 |
| गुरु | 18/09/1992 | शनि | 25/05/1993 | बुध | 22/01/1994 | केतु | 17/09/1994 | सूर्य | 21/09/1995 |
| शनि | 28/10/1992 | बुध | 27/06/1993 | केतु | 07/02/1994 | शुक्र | 27/10/1994 | चंद्र | 27/11/1995 |
| बुध | 04/12/1992 | केतु | 10/07/1993 | शुक्र | 24/03/1994 | सूर्य | 08/11/1994 | मंगल | 14/01/1996 |
| केतु | 19/12/1992 | शुक्र | 17/08/1993 | सूर्य | 07/04/1994 | चंद्र | 28/11/1994 | राहु | 14/05/1996 |
| शुक्र | 30/01/1993 | सूर्य | 28/08/1993 | चंद्र | 29/04/1994 | मंगल | 12/12/1994 | गुरु | 31/08/1996 |
| सूर्य | 12/02/1993 | चंद्र | 16/09/1993 | मंगल | 15/05/1994 | राहु | 17/01/1995 | शनि | 06/01/1997 |
| चंद्र | 05/03/1993 | मंगल | 29/09/1993 | राहु | 24/06/1994 | गुरु | 19/02/1995 | बुध | 01/05/1997 |
| मंगल | 20/03/1993 | राहु | 02/11/1993 | गुरु | 30/07/1994 | शनि | 29/03/1995 | केतु | 17/06/1997 |

| शुक्र - सूर्य | | शुक्र - चंद्र | | शुक्र - मंगल | | शुक्र - राहु | | शुक्र - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **17/06/1997** | | **16/02/1998** | | **29/03/1999** | | **07/01/2000** | | **06/01/2002** | |
| **16/02/1998** | | **29/03/1999** | | **07/01/2000** | | **06/01/2002** | | **18/10/2003** | |
| सूर्य | 30/06/1997 | चंद्र | 22/03/1998 | मंगल | 14/04/1999 | राहु | 25/04/2000 | गुरु | 03/04/2002 |
| चंद्र | 20/07/1997 | मंगल | 14/04/1998 | राहु | 27/05/1999 | गुरु | 01/08/2000 | शनि | 15/07/2002 |
| मंगल | 03/08/1997 | राहु | 14/06/1998 | गुरु | 04/07/1999 | शनि | 24/11/2000 | बुध | 15/10/2002 |
| राहु | 09/09/1997 | गुरु | 07/08/1998 | शनि | 18/08/1999 | बुध | 08/03/2001 | केतु | 22/11/2002 |
| गुरु | 11/10/1997 | शनि | 11/10/1998 | बुध | 27/09/1999 | केतु | 20/04/2001 | शुक्र | 10/03/2003 |
| शनि | 19/11/1997 | बुध | 07/12/1998 | केतु | 14/10/1999 | शुक्र | 19/08/2001 | सूर्य | 11/04/2003 |
| बुध | 23/12/1997 | केतु | 31/12/1998 | शुक्र | 30/11/1999 | सूर्य | 25/09/2001 | चंद्र | 04/06/2003 |
| केतु | 06/01/1998 | शुक्र | 08/03/1999 | सूर्य | 14/12/1999 | चंद्र | 25/11/2001 | मंगल | 12/07/2003 |
| शुक्र | 16/02/1998 | सूर्य | 29/03/1999 | चंद्र | 07/01/2000 | मंगल | 06/01/2002 | राहु | 18/10/2003 |

| शुक्र - शनि | | शुक्र - बुध | | शुक्र - केतु | | सूर्य - सूर्य | | सूर्य - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **18/10/2003** | | **27/11/2005** | | **18/10/2007** | | **28/07/2008** | | **09/10/2008** | |
| **27/11/2005** | | **18/10/2007** | | **28/07/2008** | | **09/10/2008** | | **08/02/2009** | |
| शनि | 17/02/2004 | बुध | 04/03/2006 | केतु | 03/11/2007 | सूर्य | 31/07/2008 | चंद्र | 19/10/2008 |
| बुध | 05/06/2004 | केतु | 14/04/2006 | शुक्र | 21/12/2007 | चंद्र | 06/08/2008 | मंगल | 26/10/2008 |
| केतु | 20/07/2004 | शुक्र | 07/08/2006 | सूर्य | 04/01/2008 | मंगल | 11/08/2008 | राहु | 13/11/2008 |
| शुक्र | 25/11/2004 | सूर्य | 10/09/2006 | चंद्र | 27/01/2008 | राहु | 22/08/2008 | गुरु | 30/11/2008 |
| सूर्य | 03/01/2005 | चंद्र | 07/11/2006 | मंगल | 13/02/2008 | गुरु | 31/08/2008 | शनि | 19/12/2008 |
| चंद्र | 08/03/2005 | मंगल | 17/12/2006 | राहु | 27/03/2008 | शनि | 12/09/2008 | बुध | 05/01/2009 |
| मंगल | 22/04/2005 | राहु | 30/03/2007 | गुरु | 04/05/2008 | बुध | 22/09/2008 | केतु | 12/01/2009 |
| राहु | 16/08/2005 | गुरु | 30/06/2007 | शनि | 18/06/2008 | केतु | 27/09/2008 | शुक्र | 01/02/2009 |
| गुरु | 27/11/2005 | शनि | 18/10/2007 | बुध | 28/07/2008 | शुक्र | 09/10/2008 | सूर्य | 08/02/2009 |

# त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - मंगल | | सूर्य - राहु | | सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | | सूर्य - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 08/02/2009 | | 04/05/2009 | | 09/12/2009 | | 22/06/2010 | | 08/02/2011 | |
| 04/05/2009 | | 09/12/2009 | | 22/06/2010 | | 08/02/2011 | | 03/09/2011 | |
| मंगल | 13/02/2009 | राहु | 06/06/2009 | गुरु | 04/01/2010 | शनि | 28/07/2010 | बुध | 09/03/2011 |
| राहु | 25/02/2009 | गुरु | 05/07/2009 | शनि | 04/02/2010 | बुध | 30/08/2010 | केतु | 21/03/2011 |
| गुरु | 09/03/2009 | शनि | 09/08/2009 | बुध | 03/03/2010 | केतु | 13/09/2010 | शुक्र | 25/04/2011 |
| शनि | 22/03/2009 | बुध | 09/09/2009 | केतु | 15/03/2010 | शुक्र | 21/10/2010 | सूर्य | 05/05/2011 |
| बुध | 03/04/2009 | केतु | 21/09/2009 | शुक्र | 16/04/2010 | सूर्य | 02/11/2010 | चंद्र | 23/05/2011 |
| केतु | 08/04/2009 | शुक्र | 28/10/2009 | सूर्य | 26/04/2010 | चंद्र | 21/11/2010 | मंगल | 04/06/2011 |
| शुक्र | 22/04/2009 | सूर्य | 08/11/2009 | चंद्र | 12/05/2010 | मंगल | 05/12/2010 | राहु | 05/07/2011 |
| सूर्य | 27/04/2009 | चंद्र | 26/11/2009 | मंगल | 24/05/2010 | राहु | 08/01/2011 | गुरु | 01/08/2011 |
| चंद्र | 04/05/2009 | मंगल | 09/12/2009 | राहु | 22/06/2010 | गुरु | 08/02/2011 | शनि | 03/09/2011 |

| सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 03/09/2011 | | 27/11/2011 | | 28/07/2012 | | 16/02/2013 | | 08/07/2013 | |
| 27/11/2011 | | 28/07/2012 | | 16/02/2013 | | 08/07/2013 | | 08/07/2014 | |
| केतु | 08/09/2011 | शुक्र | 07/01/2012 | चंद्र | 14/08/2012 | मंगल | 24/02/2013 | राहु | 31/08/2013 |
| शुक्र | 22/09/2011 | सूर्य | 19/01/2012 | मंगल | 25/08/2012 | राहु | 17/03/2013 | गुरु | 19/10/2013 |
| सूर्य | 26/09/2011 | चंद्र | 08/02/2012 | राहु | 25/09/2012 | गुरु | 05/04/2013 | शनि | 16/12/2013 |
| चंद्र | 04/10/2011 | मंगल | 23/02/2012 | गुरु | 22/10/2012 | शनि | 28/04/2013 | बुध | 06/02/2014 |
| मंगल | 09/10/2011 | राहु | 30/03/2012 | शनि | 23/11/2012 | बुध | 18/05/2013 | केतु | 27/02/2014 |
| राहु | 21/10/2011 | गुरु | 01/05/2012 | बुध | 22/12/2012 | केतु | 26/05/2013 | शुक्र | 29/04/2014 |
| गुरु | 02/11/2011 | शनि | 09/06/2012 | केतु | 03/01/2013 | शुक्र | 19/06/2013 | सूर्य | 17/05/2014 |
| शनि | 15/11/2011 | बुध | 14/07/2012 | शुक्र | 06/02/2013 | सूर्य | 26/06/2013 | चंद्र | 17/06/2014 |
| बुध | 27/11/2011 | केतु | 28/07/2012 | सूर्य | 16/02/2013 | चंद्र | 08/07/2013 | मंगल | 08/07/2014 |

| चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | | चंद्र - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 08/07/2014 | | 29/05/2015 | | 17/06/2016 | | 28/05/2017 | | 17/10/2017 | |
| 29/05/2015 | | 17/06/2016 | | 28/05/2017 | | 17/10/2017 | | 27/11/2018 | |
| गुरु | 20/08/2014 | शनि | 29/07/2015 | बुध | 05/08/2016 | केतु | 05/06/2017 | शुक्र | 24/12/2017 |
| शनि | 11/10/2014 | बुध | 21/09/2015 | केतु | 25/08/2016 | शुक्र | 29/06/2017 | सूर्य | 13/01/2018 |
| बुध | 26/11/2014 | केतु | 14/10/2015 | शुक्र | 22/10/2016 | सूर्य | 06/07/2017 | चंद्र | 16/02/2018 |
| केतु | 15/12/2014 | शुक्र | 17/12/2015 | सूर्य | 08/11/2016 | चंद्र | 18/07/2017 | मंगल | 12/03/2018 |
| शुक्र | 07/02/2015 | सूर्य | 05/01/2016 | चंद्र | 07/12/2016 | मंगल | 26/07/2017 | राहु | 11/05/2018 |
| सूर्य | 23/02/2015 | चंद्र | 06/02/2016 | मंगल | 27/12/2016 | राहु | 17/08/2017 | गुरु | 05/07/2018 |
| चंद्र | 22/03/2015 | मंगल | 29/02/2016 | राहु | 17/02/2017 | गुरु | 05/09/2017 | शनि | 07/09/2018 |
| मंगल | 10/04/2015 | राहु | 27/04/2016 | गुरु | 04/04/2017 | शनि | 27/09/2017 | बुध | 03/11/2018 |
| राहु | 29/05/2015 | गुरु | 17/06/2016 | शनि | 28/05/2017 | बुध | 17/10/2017 | केतु | 27/11/2018 |

# त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - सूर्य | |
|---|---|
| 27/11/2018 | 29/03/2019 |
| सूर्य | 03/12/2018 |
| चंद्र | 13/12/2018 |
| मंगल | 20/12/2018 |
| राहु | 08/01/2019 |
| गुरु | 24/01/2019 |
| शनि | 12/02/2019 |
| बुध | 01/03/2019 |
| केतु | 08/03/2019 |
| शुक्र | 29/03/2019 |

| मंगल - मंगल | |
|---|---|
| 29/03/2019 | 06/07/2019 |
| मंगल | 04/04/2019 |
| राहु | 18/04/2019 |
| गुरु | 02/05/2019 |
| शनि | 17/05/2019 |
| बुध | 01/06/2019 |
| केतु | 06/06/2019 |
| शुक्र | 23/06/2019 |
| सूर्य | 28/06/2019 |
| चंद्र | 06/07/2019 |

| मंगल - राहु | |
|---|---|
| 06/07/2019 | 18/03/2020 |
| राहु | 14/08/2019 |
| गुरु | 17/09/2019 |
| शनि | 27/10/2019 |
| बुध | 02/12/2019 |
| केतु | 17/12/2019 |
| शुक्र | 29/01/2020 |
| सूर्य | 11/02/2020 |
| चंद्र | 03/03/2020 |
| मंगल | 18/03/2020 |

| मंगल - गुरु | |
|---|---|
| 18/03/2020 | 31/10/2020 |
| गुरु | 17/04/2020 |
| शनि | 23/05/2020 |
| बुध | 24/06/2020 |
| केतु | 08/07/2020 |
| शुक्र | 14/08/2020 |
| सूर्य | 26/08/2020 |
| चंद्र | 14/09/2020 |
| मंगल | 27/09/2020 |
| राहु | 31/10/2020 |

| मंगल - शनि | |
|---|---|
| 31/10/2020 | 28/07/2021 |
| शनि | 13/12/2020 |
| बुध | 20/01/2021 |
| केतु | 05/02/2021 |
| शुक्र | 22/03/2021 |
| सूर्य | 04/04/2021 |
| चंद्र | 27/04/2021 |
| मंगल | 13/05/2021 |
| राहु | 22/06/2021 |
| गुरु | 28/07/2021 |

| मंगल - बुध | |
|---|---|
| 28/07/2021 | 26/03/2022 |
| बुध | 31/08/2021 |
| केतु | 14/09/2021 |
| शुक्र | 25/10/2021 |
| सूर्य | 06/11/2021 |
| चंद्र | 26/11/2021 |
| मंगल | 10/12/2021 |
| राहु | 15/01/2022 |
| गुरु | 16/02/2022 |
| शनि | 26/03/2022 |

| मंगल - केतु | |
|---|---|
| 26/03/2022 | 04/07/2022 |
| केतु | 01/04/2022 |
| शुक्र | 18/04/2022 |
| सूर्य | 23/04/2022 |
| चंद्र | 01/05/2022 |
| मंगल | 07/05/2022 |
| राहु | 22/05/2022 |
| गुरु | 04/06/2022 |
| शनि | 20/06/2022 |
| बुध | 04/07/2022 |

| मंगल - शुक्र | |
|---|---|
| 04/07/2022 | 14/04/2023 |
| शुक्र | 20/08/2022 |
| सूर्य | 03/09/2022 |
| चंद्र | 27/09/2022 |
| मंगल | 14/10/2022 |
| राहु | 25/11/2022 |
| गुरु | 02/01/2023 |
| शनि | 16/02/2023 |
| बुध | 28/03/2023 |
| केतु | 14/04/2023 |

| मंगल - सूर्य | |
|---|---|
| 14/04/2023 | 08/07/2023 |
| सूर्य | 18/04/2023 |
| चंद्र | 25/04/2023 |
| मंगल | 30/04/2023 |
| राहु | 13/05/2023 |
| गुरु | 24/05/2023 |
| शनि | 07/06/2023 |
| बुध | 19/06/2023 |
| केतु | 24/06/2023 |
| शुक्र | 08/07/2023 |

| मंगल - चंद्र | |
|---|---|
| 08/07/2023 | 27/11/2023 |
| चंद्र | 20/07/2023 |
| मंगल | 28/07/2023 |
| राहु | 19/08/2023 |
| गुरु | 07/09/2023 |
| शनि | 29/09/2023 |
| बुध | 19/10/2023 |
| केतु | 27/10/2023 |
| शुक्र | 20/11/2023 |
| सूर्य | 27/11/2023 |

| राहु - राहु | |
|---|---|
| 27/11/2023 | 15/09/2025 |
| राहु | 05/03/2024 |
| गुरु | 01/06/2024 |
| शनि | 13/09/2024 |
| बुध | 15/12/2024 |
| केतु | 22/01/2025 |
| शुक्र | 12/05/2025 |
| सूर्य | 14/06/2025 |
| चंद्र | 07/08/2025 |
| मंगल | 15/09/2025 |

| राहु - गुरु | |
|---|---|
| 15/09/2025 | 22/04/2027 |
| गुरु | 02/12/2025 |
| शनि | 04/03/2026 |
| बुध | 26/05/2026 |
| केतु | 29/06/2026 |
| शुक्र | 04/10/2026 |
| सूर्य | 03/11/2026 |
| चंद्र | 21/12/2026 |
| मंगल | 24/01/2027 |
| राहु | 22/04/2027 |

| राहु - शनि | |
|---|---|
| 22/04/2027 | 16/03/2029 |
| शनि | 10/08/2027 |
| बुध | 16/11/2027 |
| केतु | 27/12/2027 |
| शुक्र | 20/04/2028 |
| सूर्य | 25/05/2028 |
| चंद्र | 22/07/2028 |
| मंगल | 31/08/2028 |
| राहु | 14/12/2028 |
| गुरु | 16/03/2029 |

| राहु - बुध | |
|---|---|
| 16/03/2029 | 27/11/2030 |
| बुध | 12/06/2029 |
| केतु | 18/07/2029 |
| शुक्र | 30/10/2029 |
| सूर्य | 30/11/2029 |
| चंद्र | 21/01/2030 |
| मंगल | 26/02/2030 |
| राहु | 30/05/2030 |
| गुरु | 21/08/2030 |
| शनि | 27/11/2030 |

| राहु - केतु | |
|---|---|
| 27/11/2030 | 10/08/2031 |
| केतु | 12/12/2030 |
| शुक्र | 24/01/2031 |
| सूर्य | 05/02/2031 |
| चंद्र | 27/02/2031 |
| मंगल | 14/03/2031 |
| राहु | 21/04/2031 |
| गुरु | 25/05/2031 |
| शनि | 04/07/2031 |
| बुध | 10/08/2031 |

# त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

**राहु - शुक्र**
**10/08/2031 – 09/08/2033**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 09/12/2031 |
| सूर्य | 15/01/2032 |
| चंद्र | 16/03/2032 |
| मंगल | 27/04/2032 |
| राहु | 15/08/2032 |
| गुरु | 20/11/2032 |
| शनि | 16/03/2033 |
| बुध | 28/06/2033 |
| केतु | 09/08/2033 |

**राहु - सूर्य**
**09/08/2033 – 16/03/2034**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 20/08/2033 |
| चंद्र | 07/09/2033 |
| मंगल | 20/09/2033 |
| राहु | 23/10/2033 |
| गुरु | 21/11/2033 |
| शनि | 26/12/2033 |
| बुध | 26/01/2034 |
| केतु | 08/02/2034 |
| शुक्र | 16/03/2034 |

**राहु - चंद्र**
**16/03/2034 – 17/03/2035**

| | |
|---|---|
| चंद्र | 16/04/2034 |
| मंगल | 07/05/2034 |
| राहु | 01/07/2034 |
| गुरु | 19/08/2034 |
| शनि | 15/10/2034 |
| बुध | 06/12/2034 |
| केतु | 27/12/2034 |
| शुक्र | 26/02/2035 |
| सूर्य | 17/03/2035 |

**राहु - मंगल**
**17/03/2035 – 27/11/2035**

| | |
|---|---|
| मंगल | 31/03/2035 |
| राहु | 09/05/2035 |
| गुरु | 12/06/2035 |
| शनि | 22/07/2035 |
| बुध | 28/08/2035 |
| केतु | 12/09/2035 |
| शुक्र | 24/10/2035 |
| सूर्य | 06/11/2035 |
| चंद्र | 27/11/2035 |

**गुरु - गुरु**
**27/11/2035 – 30/04/2037**

| | |
|---|---|
| गुरु | 05/02/2036 |
| शनि | 27/04/2036 |
| बुध | 09/07/2036 |
| केतु | 09/08/2036 |
| शुक्र | 03/11/2036 |
| सूर्य | 29/11/2036 |
| चंद्र | 11/01/2037 |
| मंगल | 11/02/2037 |
| राहु | 30/04/2037 |

**गुरु - शनि**
**30/04/2037 – 07/01/2039**

| | |
|---|---|
| शनि | 05/08/2037 |
| बुध | 01/11/2037 |
| केतु | 07/12/2037 |
| शुक्र | 20/03/2038 |
| सूर्य | 19/04/2038 |
| चंद्र | 10/06/2038 |
| मंगल | 16/07/2038 |
| राहु | 16/10/2038 |
| गुरु | 07/01/2039 |

**गुरु - बुध**
**07/01/2039 – 12/07/2040**

| | |
|---|---|
| बुध | 26/03/2039 |
| केतु | 27/04/2039 |
| शुक्र | 28/07/2039 |
| सूर्य | 25/08/2039 |
| चंद्र | 10/10/2039 |
| मंगल | 11/11/2039 |
| राहु | 02/02/2040 |
| गुरु | 15/04/2040 |
| शनि | 12/07/2040 |

**गुरु - केतु**
**12/07/2040 – 24/02/2041**

| | |
|---|---|
| केतु | 25/07/2040 |
| शुक्र | 01/09/2040 |
| सूर्य | 12/09/2040 |
| चंद्र | 01/10/2040 |
| मंगल | 14/10/2040 |
| राहु | 17/11/2040 |
| गुरु | 18/12/2040 |
| शनि | 23/01/2041 |
| बुध | 24/02/2041 |

**गुरु - शुक्र**
**24/02/2041 – 05/12/2042**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 12/06/2041 |
| सूर्य | 14/07/2041 |
| चंद्र | 07/09/2041 |
| मंगल | 14/10/2041 |
| राहु | 20/01/2042 |
| गुरु | 16/04/2042 |
| शनि | 28/07/2042 |
| बुध | 28/10/2042 |
| केतु | 05/12/2042 |

**गुरु - सूर्य**
**05/12/2042 – 18/06/2043**

| | |
|---|---|
| सूर्य | 15/12/2042 |
| चंद्र | 31/12/2042 |
| मंगल | 11/01/2043 |
| राहु | 10/02/2043 |
| गुरु | 08/03/2043 |
| शनि | 07/04/2043 |
| बुध | 05/05/2043 |
| केतु | 16/05/2043 |
| शुक्र | 18/06/2043 |

**गुरु - चंद्र**
**18/06/2043 – 08/05/2044**

| | |
|---|---|
| चंद्र | 15/07/2043 |
| मंगल | 03/08/2043 |
| राहु | 21/09/2043 |
| गुरु | 03/11/2043 |
| शनि | 24/12/2043 |
| बुध | 08/02/2044 |
| केतु | 27/02/2044 |
| शुक्र | 21/04/2044 |
| सूर्य | 08/05/2044 |

**गुरु - मंगल**
**08/05/2044 – 21/12/2044**

| | |
|---|---|
| मंगल | 21/05/2044 |
| राहु | 24/06/2044 |
| गुरु | 24/07/2044 |
| शनि | 29/08/2044 |
| बुध | 30/09/2044 |
| केतु | 14/10/2044 |
| शुक्र | 21/11/2044 |
| सूर्य | 02/12/2044 |
| चंद्र | 21/12/2044 |

**गुरु - राहु**
**21/12/2044 – 28/07/2046**

| | |
|---|---|
| राहु | 19/03/2045 |
| गुरु | 04/06/2045 |
| शनि | 05/09/2045 |
| बुध | 27/11/2045 |
| केतु | 31/12/2045 |
| शुक्र | 07/04/2046 |
| सूर्य | 06/05/2046 |
| चंद्र | 24/06/2046 |
| मंगल | 28/07/2046 |

**शनि - शनि**
**28/07/2046 – 30/07/2048**

| | |
|---|---|
| शनि | 21/11/2046 |
| बुध | 05/03/2047 |
| केतु | 17/04/2047 |
| शुक्र | 17/08/2047 |
| सूर्य | 22/09/2047 |
| चंद्र | 22/11/2047 |
| मंगल | 04/01/2048 |
| राहु | 23/04/2048 |
| गुरु | 30/07/2048 |

**शनि - बुध**
**30/07/2048 – 16/05/2050**

| | |
|---|---|
| बुध | 31/10/2048 |
| केतु | 08/12/2048 |
| शुक्र | 27/03/2049 |
| सूर्य | 29/04/2049 |
| चंद्र | 22/06/2049 |
| मंगल | 31/07/2049 |
| राहु | 06/11/2049 |
| गुरु | 01/02/2050 |
| शनि | 16/05/2050 |

# अष्टोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : शुक्र 15 वर्ष 11 मास 7 दिन

| शुक्र 21 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 15 वर्ष | | मंगल 8 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/10/1978 | | 22/09/1994 | | 22/09/2000 | | 22/09/2015 | | 22/09/2023 | |
| 22/09/1994 | | 22/09/2000 | | 22/09/2015 | | 22/09/2023 | | 22/09/2040 | |
| | 15/10/1978 | सूर्य | 22/01/1995 | चंद्र | 22/10/2002 | मंगल | 26/04/2016 | बुध | 27/05/2026 |
| सूर्य | 22/12/1978 | चंद्र | 22/11/1995 | मंगल | 02/12/2003 | बुध | 30/07/2017 | शनि | 23/12/2027 |
| चंद्र | 22/11/1981 | मंगल | 02/05/1996 | बुध | 13/04/2006 | शनि | 26/04/2018 | गुरु | 19/12/2030 |
| मंगल | 13/06/1983 | बुध | 12/04/1997 | शनि | 02/09/2007 | गुरु | 22/09/2019 | राहु | 08/11/2032 |
| बुध | 02/10/1986 | शनि | 01/11/1997 | गुरु | 23/04/2010 | राहु | 12/08/2020 | शुक्र | 28/02/2036 |
| शनि | 11/09/1988 | गुरु | 22/11/1998 | राहु | 23/12/2011 | शुक्र | 03/03/2022 | सूर्य | 07/02/2037 |
| गुरु | 23/05/1992 | राहु | 23/07/1999 | शुक्र | 22/11/2014 | सूर्य | 12/08/2022 | चंद्र | 20/06/2039 |
| राहु | 22/09/1994 | शुक्र | 22/09/2000 | सूर्य | 22/09/2015 | चंद्र | 22/09/2023 | मंगल | 22/09/2040 |

| शनि 10 वर्ष | | गुरु 19 वर्ष | | राहु 12 वर्ष | | शुक्र 21 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22/09/2040 | | 22/09/2050 | | 22/09/2069 | | 22/09/2081 | |
| 22/09/2050 | | 22/09/2069 | | 22/09/2081 | | 00/00/0000 | |
| शनि | 26/08/2041 | गुरु | 25/01/2054 | राहु | 22/01/2071 | शुक्र | 22/10/2085 |
| गुरु | 30/05/2043 | राहु | 06/03/2056 | शुक्र | 23/05/2073 | सूर्य | 15/10/2086 |
| राहु | 09/07/2044 | शुक्र | 15/11/2059 | सूर्य | 22/01/2074 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 19/06/2046 | सूर्य | 05/12/2060 | चंद्र | 22/09/2075 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 08/01/2047 | चंद्र | 27/07/2063 | मंगल | 12/08/2076 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 30/05/2048 | मंगल | 22/12/2064 | बुध | 03/07/2078 | | 00/00/0000 |
| मंगल | 24/02/2049 | बुध | 19/12/2067 | शनि | 13/08/2079 | | 00/00/0000 |
| बुध | 22/09/2050 | शनि | 22/09/2069 | गुरु | 22/09/2081 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शुक्र - सूर्य | शुक्र - चंद्र | शुक्र - मंगल | शुक्र - बुध | शुक्र - शनि |
|---|---|---|---|---|
| **15/10/1978** | **22/12/1978** | **22/11/1981** | **13/06/1983** | **02/10/1986** |
| **22/12/1978** | **22/11/1981** | **13/06/1983** | **02/10/1986** | **11/09/1988** |
| 00/00/0000 | चंद्र 19/05/1979 | मंगल 03/01/1982 | बुध 20/12/1983 | शनि 07/12/1986 |
| 00/00/0000 | मंगल 06/08/1979 | बुध 02/04/1982 | शनि 10/04/1984 | गुरु 11/04/1987 |
| 00/00/0000 | बुध 21/01/1980 | शनि 25/05/1982 | गुरु 08/11/1984 | राहु 29/06/1987 |
| 00/00/0000 | शनि 29/04/1980 | गुरु 02/09/1982 | राहु 22/03/1985 | शुक्र 14/11/1987 |
| 00/00/0000 | गुरु 02/11/1980 | राहु 04/11/1982 | शुक्र 12/11/1985 | सूर्य 23/12/1987 |
| 00/00/0000 | राहु 28/02/1981 | शुक्र 22/02/1983 | सूर्य 18/01/1986 | चंद्र 31/03/1988 |
| 15/10/1978 | शुक्र 23/09/1981 | सूर्य 26/03/1983 | चंद्र 05/07/1986 | मंगल 23/05/1988 |
| शुक्र 22/12/1978 | सूर्य 22/11/1981 | चंद्र 13/06/1983 | मंगल 02/10/1986 | बुध 11/09/1988 |

| शुक्र - गुरु | शुक्र - राहु | सूर्य - सूर्य | सूर्य - चंद्र | सूर्य - मंगल |
|---|---|---|---|---|
| **11/09/1988** | **23/05/1992** | **22/09/1994** | **22/01/1995** | **22/11/1995** |
| **23/05/1992** | **22/09/1994** | **22/01/1995** | **22/11/1995** | **02/05/1996** |
| गुरु 07/05/1989 | राहु 25/08/1992 | सूर्य 29/09/1994 | चंद्र 05/03/1995 | मंगल 04/12/1995 |
| राहु 04/10/1989 | शुक्र 07/02/1993 | चंद्र 16/10/1994 | मंगल 28/03/1995 | बुध 30/12/1995 |
| शुक्र 23/06/1990 | सूर्य 27/03/1993 | मंगल 25/10/1994 | बुध 14/05/1995 | शनि 14/01/1996 |
| सूर्य 06/09/1990 | चंद्र 23/07/1993 | बुध 13/11/1994 | शनि 12/06/1995 | गुरु 11/02/1996 |
| चंद्र 12/03/1991 | मंगल 24/09/1993 | शनि 24/11/1994 | गुरु 04/08/1995 | राहु 29/02/1996 |
| मंगल 20/06/1991 | बुध 05/02/1994 | गुरु 16/12/1994 | राहु 07/09/1995 | शुक्र 01/04/1996 |
| बुध 19/01/1992 | शनि 25/04/1994 | राहु 29/12/1994 | शुक्र 05/11/1995 | सूर्य 10/04/1996 |
| शनि 23/05/1992 | गुरु 22/09/1994 | शुक्र 22/01/1995 | सूर्य 22/11/1995 | चंद्र 02/05/1996 |

| सूर्य - बुध | सूर्य - शनि | सूर्य - गुरु | सूर्य - राहु | सूर्य - शुक्र |
|---|---|---|---|---|
| **02/05/1996** | **12/04/1997** | **01/11/1997** | **22/11/1998** | **23/07/1999** |
| **12/04/1997** | **01/11/1997** | **22/11/1998** | **23/07/1999** | **22/09/2000** |
| बुध 26/06/1996 | शनि 01/05/1997 | गुरु 08/01/1998 | राहु 19/12/1998 | शुक्र 14/10/1999 |
| शनि 28/07/1996 | गुरु 06/06/1997 | राहु 20/02/1998 | शुक्र 04/02/1999 | सूर्य 07/11/1999 |
| गुरु 26/09/1996 | राहु 28/06/1997 | शुक्र 06/05/1998 | सूर्य 18/02/1999 | चंद्र 05/01/2000 |
| राहु 04/11/1996 | शुक्र 07/08/1997 | सूर्य 27/05/1998 | चंद्र 24/03/1999 | मंगल 06/02/2000 |
| शुक्र 10/01/1997 | सूर्य 18/08/1997 | चंद्र 20/07/1998 | मंगल 11/04/1999 | बुध 13/04/2000 |
| सूर्य 29/01/1997 | चंद्र 15/09/1997 | मंगल 17/08/1998 | बुध 19/05/1999 | शनि 22/05/2000 |
| चंद्र 18/03/1997 | मंगल 30/09/1997 | बुध 17/10/1998 | शनि 11/06/1999 | गुरु 05/08/2000 |
| मंगल 12/04/1997 | बुध 01/11/1997 | शनि 22/11/1998 | गुरु 23/07/1999 | राहु 22/09/2000 |

# अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | | चंद्र - बुध | | चंद्र - शनि | | चंद्र - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **22/09/2000** | | **22/10/2002** | | **02/12/2003** | | **13/04/2006** | | **02/09/2007** | |
| **22/10/2002** | | **02/12/2003** | | **13/04/2006** | | **02/09/2007** | | **23/04/2010** | |
| चंद्र | 05/01/2001 | मंगल | 22/11/2002 | बुध | 16/04/2004 | शनि | 30/05/2006 | गुरु | 19/02/2008 |
| मंगल | 03/03/2001 | बुध | 24/01/2003 | शनि | 05/07/2004 | गुरु | 27/08/2006 | राहु | 05/06/2008 |
| बुध | 30/06/2001 | शनि | 03/03/2003 | गुरु | 04/12/2004 | राहु | 22/10/2006 | शुक्र | 09/12/2008 |
| शनि | 09/09/2001 | गुरु | 13/05/2003 | राहु | 09/03/2005 | शुक्र | 29/01/2007 | सूर्य | 01/02/2009 |
| गुरु | 21/01/2002 | राहु | 27/06/2003 | शुक्र | 24/08/2005 | सूर्य | 26/02/2007 | चंद्र | 14/06/2009 |
| राहु | 15/04/2002 | शुक्र | 14/09/2003 | सूर्य | 11/10/2005 | चंद्र | 08/05/2007 | मंगल | 25/08/2009 |
| शुक्र | 10/09/2002 | सूर्य | 07/10/2003 | चंद्र | 08/02/2006 | मंगल | 14/06/2007 | बुध | 24/01/2010 |
| सूर्य | 22/10/2002 | चंद्र | 02/12/2003 | मंगल | 13/04/2006 | बुध | 02/09/2007 | शनि | 23/04/2010 |

| चंद्र - राहु | | चंद्र - शुक्र | | चंद्र - सूर्य | | मंगल - मंगल | | मंगल - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **23/04/2010** | | **23/12/2011** | | **22/11/2014** | | **22/09/2015** | | **26/04/2016** | |
| **23/12/2011** | | **22/11/2014** | | **22/09/2015** | | **26/04/2016** | | **30/07/2017** | |
| राहु | 29/06/2010 | शुक्र | 17/07/2012 | सूर्य | 09/12/2014 | मंगल | 08/10/2015 | बुध | 07/07/2016 |
| शुक्र | 26/10/2010 | सूर्य | 14/09/2012 | चंद्र | 20/01/2015 | बुध | 11/11/2015 | शनि | 19/08/2016 |
| सूर्य | 29/11/2010 | चंद्र | 09/02/2013 | मंगल | 12/02/2015 | शनि | 01/12/2015 | गुरु | 08/11/2016 |
| चंद्र | 21/02/2011 | मंगल | 29/04/2013 | बुध | 01/04/2015 | गुरु | 08/01/2016 | राहु | 29/12/2016 |
| मंगल | 07/04/2011 | बुध | 13/10/2013 | शनि | 29/04/2015 | राहु | 02/02/2016 | शुक्र | 28/03/2017 |
| बुध | 12/07/2011 | शनि | 20/01/2014 | गुरु | 21/06/2015 | शुक्र | 15/03/2016 | सूर्य | 23/04/2017 |
| शनि | 06/09/2011 | गुरु | 27/07/2014 | राहु | 25/07/2015 | सूर्य | 27/03/2016 | चंद्र | 26/06/2017 |
| गुरु | 23/12/2011 | राहु | 22/11/2014 | शुक्र | 22/09/2015 | चंद्र | 26/04/2016 | मंगल | 30/07/2017 |

| मंगल - शनि | | मंगल - गुरु | | मंगल - राहु | | मंगल - शुक्र | | मंगल - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **30/07/2017** | | **26/04/2018** | | **22/09/2019** | | **12/08/2020** | | **03/03/2022** | |
| **26/04/2018** | | **22/09/2019** | | **12/08/2020** | | **03/03/2022** | | **12/08/2022** | |
| शनि | 24/08/2017 | गुरु | 26/07/2018 | राहु | 28/10/2019 | शुक्र | 30/11/2020 | सूर्य | 12/03/2022 |
| गुरु | 10/10/2017 | राहु | 21/09/2018 | शुक्र | 30/12/2019 | सूर्य | 01/01/2021 | चंद्र | 04/04/2022 |
| राहु | 09/11/2017 | शुक्र | 30/12/2018 | सूर्य | 17/01/2020 | चंद्र | 21/03/2021 | मंगल | 16/04/2022 |
| शुक्र | 01/01/2018 | सूर्य | 27/01/2019 | चंद्र | 03/03/2020 | मंगल | 02/05/2021 | बुध | 11/05/2022 |
| सूर्य | 16/01/2018 | चंद्र | 09/04/2019 | मंगल | 27/03/2020 | बुध | 30/07/2021 | शनि | 26/05/2022 |
| चंद्र | 23/02/2018 | मंगल | 17/05/2019 | बुध | 17/05/2020 | शनि | 21/09/2021 | गुरु | 24/06/2022 |
| मंगल | 15/03/2018 | बुध | 06/08/2019 | शनि | 16/06/2020 | गुरु | 30/12/2021 | राहु | 12/07/2022 |
| बुध | 26/04/2018 | शनि | 22/09/2019 | गुरु | 12/08/2020 | राहु | 03/03/2022 | शुक्र | 12/08/2022 |

# अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| मंगल - चंद्र | | बुध - बुध | | बुध - शनि | | बुध - गुरु | | बुध - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/08/2022 | | 22/09/2023 | | 27/05/2026 | | 23/12/2027 | | 19/12/2030 | |
| 22/09/2023 | | 27/05/2026 | | 23/12/2027 | | 19/12/2030 | | 08/11/2032 | |
| चंद्र | 08/10/2022 | बुध | 23/02/2024 | शनि | 19/07/2026 | गुरु | 02/07/2028 | राहु | 06/03/2031 |
| मंगल | 07/11/2022 | शनि | 24/05/2024 | गुरु | 28/10/2026 | राहु | 31/10/2028 | शुक्र | 18/07/2031 |
| बुध | 10/01/2023 | गुरु | 12/11/2024 | राहु | 31/12/2026 | शुक्र | 01/06/2029 | सूर्य | 25/08/2031 |
| शनि | 16/02/2023 | राहु | 28/02/2025 | शुक्र | 22/04/2027 | सूर्य | 31/07/2029 | चंद्र | 29/11/2031 |
| गुरु | 29/04/2023 | शुक्र | 06/09/2025 | सूर्य | 24/05/2027 | चंद्र | 30/12/2029 | मंगल | 19/01/2032 |
| राहु | 13/06/2023 | सूर्य | 30/10/2025 | चंद्र | 11/08/2027 | मंगल | 21/03/2030 | बुध | 07/05/2032 |
| शुक्र | 31/08/2023 | चंद्र | 15/03/2026 | मंगल | 23/09/2027 | बुध | 09/09/2030 | शनि | 09/07/2032 |
| सूर्य | 22/09/2023 | मंगल | 27/05/2026 | बुध | 23/12/2027 | शनि | 19/12/2030 | गुरु | 08/11/2032 |

| बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | | बुध - चंद्र | | बुध - मंगल | | शनि - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 08/11/2032 | | 28/02/2036 | | 07/02/2037 | | 20/06/2039 | | 22/09/2040 | |
| 28/02/2036 | | 07/02/2037 | | 20/06/2039 | | 22/09/2040 | | 26/08/2041 | |
| शुक्र | 01/07/2033 | सूर्य | 18/03/2036 | चंद्र | 07/06/2037 | मंगल | 24/07/2039 | शनि | 23/10/2040 |
| सूर्य | 06/09/2033 | चंद्र | 05/05/2036 | मंगल | 10/08/2037 | बुध | 04/10/2039 | गुरु | 21/12/2040 |
| चंद्र | 20/02/2034 | मंगल | 31/05/2036 | बुध | 24/12/2037 | शनि | 16/11/2039 | राहु | 28/01/2041 |
| मंगल | 21/05/2034 | बुध | 24/07/2036 | शनि | 13/03/2038 | गुरु | 05/02/2040 | शुक्र | 04/04/2041 |
| बुध | 27/11/2034 | शनि | 25/08/2036 | गुरु | 12/08/2038 | राहु | 27/03/2040 | सूर्य | 22/04/2041 |
| शनि | 19/03/2035 | गुरु | 25/10/2036 | राहु | 16/11/2038 | शुक्र | 24/06/2040 | चंद्र | 08/06/2041 |
| गुरु | 17/10/2035 | राहु | 02/12/2036 | शुक्र | 03/05/2039 | सूर्य | 20/07/2040 | मंगल | 03/07/2041 |
| राहु | 28/02/2036 | शुक्र | 07/02/2037 | सूर्य | 20/06/2039 | चंद्र | 22/09/2040 | बुध | 26/08/2041 |

| शनि - गुरु | | शनि - राहु | | शनि - शुक्र | | शनि - सूर्य | | शनि - चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26/08/2041 | | 30/05/2043 | | 09/07/2044 | | 19/06/2046 | | 08/01/2047 | |
| 30/05/2043 | | 09/07/2044 | | 19/06/2046 | | 08/01/2047 | | 30/05/2048 | |
| गुरु | 17/12/2041 | राहु | 14/07/2043 | शुक्र | 24/11/2044 | सूर्य | 01/07/2046 | चंद्र | 20/03/2047 |
| राहु | 26/02/2042 | शुक्र | 01/10/2043 | सूर्य | 03/01/2045 | चंद्र | 29/07/2046 | मंगल | 26/04/2047 |
| शुक्र | 01/07/2042 | सूर्य | 24/10/2043 | चंद्र | 11/04/2045 | मंगल | 13/08/2046 | बुध | 15/07/2047 |
| सूर्य | 06/08/2042 | चंद्र | 19/12/2043 | मंगल | 03/06/2045 | बुध | 14/09/2046 | शनि | 31/08/2047 |
| चंद्र | 03/11/2042 | मंगल | 18/01/2044 | बुध | 23/09/2045 | शनि | 03/10/2046 | गुरु | 28/11/2047 |
| मंगल | 21/12/2042 | बुध | 22/03/2044 | शनि | 27/11/2045 | गुरु | 07/11/2046 | राहु | 24/01/2048 |
| बुध | 01/04/2043 | शनि | 29/04/2044 | गुरु | 01/04/2046 | राहु | 30/11/2046 | शुक्र | 01/05/2048 |
| शनि | 30/05/2043 | गुरु | 09/07/2044 | राहु | 19/06/2046 | शुक्र | 08/01/2047 | सूर्य | 30/05/2048 |

# अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

### शनि - मंगल
30/05/2048
24/02/2049

| | |
|---|---|
| मंगल | 19/06/2048 |
| बुध | 31/07/2048 |
| शनि | 25/08/2048 |
| गुरु | 12/10/2048 |
| राहु | 11/11/2048 |
| शुक्र | 02/01/2049 |
| सूर्य | 17/01/2049 |
| चंद्र | 24/02/2049 |

### शनि - बुध
24/02/2049
22/09/2050

| | |
|---|---|
| बुध | 26/05/2049 |
| शनि | 18/07/2049 |
| गुरु | 27/10/2049 |
| राहु | 30/12/2049 |
| शुक्र | 21/04/2050 |
| सूर्य | 23/05/2050 |
| चंद्र | 10/08/2050 |
| मंगल | 22/09/2050 |

### गुरु - गुरु
22/09/2050
25/01/2054

| | |
|---|---|
| गुरु | 25/04/2051 |
| राहु | 07/09/2051 |
| शुक्र | 02/05/2052 |
| सूर्य | 09/07/2052 |
| चंद्र | 25/12/2052 |
| मंगल | 26/03/2053 |
| बुध | 04/10/2053 |
| शनि | 25/01/2054 |

### गुरु - राहु
25/01/2054
06/03/2056

| | |
|---|---|
| राहु | 21/04/2054 |
| शुक्र | 17/09/2054 |
| सूर्य | 30/10/2054 |
| चंद्र | 14/02/2055 |
| मंगल | 13/04/2055 |
| बुध | 12/08/2055 |
| शनि | 22/10/2055 |
| गुरु | 06/03/2056 |

### गुरु - शुक्र
06/03/2056
15/11/2059

| | |
|---|---|
| शुक्र | 23/11/2056 |
| सूर्य | 06/02/2057 |
| चंद्र | 13/08/2057 |
| मंगल | 21/11/2057 |
| बुध | 21/06/2058 |
| शनि | 24/10/2058 |
| गुरु | 18/06/2059 |
| राहु | 15/11/2059 |

### गुरु - सूर्य
15/11/2059
05/12/2060

| | |
|---|---|
| सूर्य | 07/12/2059 |
| चंद्र | 29/01/2060 |
| मंगल | 27/02/2060 |
| बुध | 28/04/2060 |
| शनि | 02/06/2060 |
| गुरु | 09/08/2060 |
| राहु | 21/09/2060 |
| शुक्र | 05/12/2060 |

### गुरु - चंद्र
05/12/2060
27/07/2063

| | |
|---|---|
| चंद्र | 18/04/2061 |
| मंगल | 28/06/2061 |
| बुध | 27/11/2061 |
| शनि | 24/02/2062 |
| गुरु | 13/08/2062 |
| राहु | 28/11/2062 |
| शुक्र | 03/06/2063 |
| सूर्य | 27/07/2063 |

### गुरु - मंगल
27/07/2063
22/12/2064

| | |
|---|---|
| मंगल | 03/09/2063 |
| बुध | 23/11/2063 |
| शनि | 09/01/2064 |
| गुरु | 09/04/2064 |
| राहु | 05/06/2064 |
| शुक्र | 13/09/2064 |
| सूर्य | 11/10/2064 |
| चंद्र | 22/12/2064 |

### गुरु - बुध
22/12/2064
19/12/2067

| | |
|---|---|
| बुध | 12/06/2065 |
| शनि | 21/09/2065 |
| गुरु | 01/04/2066 |
| राहु | 31/07/2066 |
| शुक्र | 01/03/2067 |
| सूर्य | 01/05/2067 |
| चंद्र | 29/09/2067 |
| मंगल | 19/12/2067 |

### गुरु - शनि
19/12/2067
22/09/2069

| | |
|---|---|
| शनि | 17/02/2068 |
| गुरु | 09/06/2068 |
| राहु | 19/08/2068 |
| शुक्र | 22/12/2068 |
| सूर्य | 27/01/2069 |
| चंद्र | 26/04/2069 |
| मंगल | 13/06/2069 |
| बुध | 22/09/2069 |

### राहु - राहु
22/09/2069
22/01/2071

| | |
|---|---|
| राहु | 15/11/2069 |
| शुक्र | 18/02/2070 |
| सूर्य | 17/03/2070 |
| चंद्र | 23/05/2070 |
| मंगल | 28/06/2070 |
| बुध | 13/09/2070 |
| शनि | 28/10/2070 |
| गुरु | 22/01/2071 |

### राहु - शुक्र
22/01/2071
23/05/2073

| | |
|---|---|
| शुक्र | 06/07/2071 |
| सूर्य | 23/08/2071 |
| चंद्र | 19/12/2071 |
| मंगल | 20/02/2072 |
| बुध | 03/07/2072 |
| शनि | 20/09/2072 |
| गुरु | 17/02/2073 |
| राहु | 23/05/2073 |

### राहु - सूर्य
23/05/2073
22/01/2074

| | |
|---|---|
| सूर्य | 06/06/2073 |
| चंद्र | 09/07/2073 |
| मंगल | 27/07/2073 |
| बुध | 04/09/2073 |
| शनि | 26/09/2073 |
| गुरु | 08/11/2073 |
| राहु | 05/12/2073 |
| शुक्र | 22/01/2074 |

### राहु - चंद्र
22/01/2074
22/09/2075

| | |
|---|---|
| चंद्र | 16/04/2074 |
| मंगल | 31/05/2074 |
| बुध | 04/09/2074 |
| शनि | 30/10/2074 |
| गुरु | 14/02/2075 |
| राहु | 23/04/2075 |
| शुक्र | 19/08/2075 |
| सूर्य | 22/09/2075 |

### राहु - मंगल
22/09/2075
12/08/2076

| | |
|---|---|
| मंगल | 16/10/2075 |
| बुध | 06/12/2075 |
| शनि | 05/01/2076 |
| गुरु | 03/03/2076 |
| राहु | 08/04/2076 |
| शुक्र | 10/06/2076 |
| सूर्य | 28/06/2076 |
| चंद्र | 12/08/2076 |

# योगिनी दशा

## भोग्य दशा काल : भद्रिका 0 वर्ष 2 मास 4 दिन

| भद्रिका 5 वर्ष | उल्का 6 वर्ष | सिद्धा 7 वर्ष | संकटा 8 वर्ष | मंगला 1 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **15/10/1978** | **19/12/1978** | **19/12/1984** | **19/12/1991** | **19/12/1999** |
| **19/12/1978** | **19/12/1984** | **19/12/1991** | **19/12/1999** | **19/12/2000** |
| 00/00/0000 | उल्क 19/12/1979 | सिद्ध 30/04/1986 | संक 29/09/1993 | मंग 29/12/1999 |
| 00/00/0000 | सिद्ध 17/02/1981 | संक 19/11/1987 | मंग 19/12/1993 | पिंग 19/01/2000 |
| 00/00/0000 | संक 19/06/1982 | मंग 29/01/1988 | पिंग 30/05/1994 | धांय 18/02/2000 |
| 00/00/0000 | मंग 19/08/1982 | पिंग 19/06/1988 | धांय 29/01/1995 | भ्राम 30/03/2000 |
| 00/00/0000 | पिंग 19/12/1982 | धांय 18/01/1989 | भ्राम 19/12/1995 | भद्रि 20/05/2000 |
| 00/00/0000 | धांय 20/06/1983 | भ्राम 29/10/1989 | भद्रि 28/01/1997 | उल्क 19/07/2000 |
| 15/10/1978 | भ्राम 18/02/1984 | भद्रि 19/10/1990 | उल्क 30/05/1998 | सिद्ध 28/09/2000 |
| भ्राम 19/12/1978 | भद्रि 19/12/1984 | उल्क 19/12/1991 | सिद्ध 19/12/1999 | संक 19/12/2000 |

| पिंगला 2 वर्ष | धान्या 3 वर्ष | भ्रामरी 4 वर्ष | भद्रिका 5 वर्ष | उल्का 6 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **19/12/2000** | **19/12/2002** | **19/12/2005** | **19/12/2009** | **19/12/2014** |
| **19/12/2002** | **19/12/2005** | **19/12/2009** | **19/12/2014** | **19/12/2020** |
| पिंग 28/01/2001 | धांय 20/03/2003 | भ्राम 30/05/2006 | भद्रि 29/08/2010 | उल्क 19/12/2015 |
| धांय 30/03/2001 | भ्राम 20/07/2003 | भद्रि 19/12/2006 | उल्क 30/06/2011 | सिद्ध 17/02/2017 |
| भ्राम 19/06/2001 | भद्रि 19/12/2003 | उल्क 20/08/2007 | सिद्ध 19/06/2012 | संक 19/06/2018 |
| भद्रि 29/09/2001 | उल्क 19/06/2004 | सिद्ध 30/05/2008 | संक 30/07/2013 | मंग 19/08/2018 |
| उल्क 28/01/2002 | सिद्ध 18/01/2005 | संक 19/04/2009 | मंग 19/09/2013 | पिंग 19/12/2018 |
| सिद्ध 19/06/2002 | संक 19/09/2005 | मंग 30/05/2009 | पिंग 29/12/2013 | धांय 20/06/2019 |
| संक 29/11/2002 | मंग 19/10/2005 | पिंग 19/08/2009 | धांय 30/05/2014 | भ्राम 18/02/2020 |
| मंग 19/12/2002 | पिंग 19/12/2005 | धांय 19/12/2009 | भ्राम 19/12/2014 | भद्रि 19/12/2020 |

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगला | : चन्द्र | पिंगला | : सूर्य | धान्या | : गुरु | भ्रामरी | : मंगल |
| भद्रिका | : बुध | उल्का | : शनि | सिद्धा | : शुक्र | संकटा | : राहु/केतु |

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# योगिनी दशा

| सिद्धा 7 वर्ष | संकटा 8 वर्ष | मंगला 1 वर्ष | पिंगला 2 वर्ष | धान्या 3 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **19/12/2020** | **19/12/2027** | **19/12/2035** | **19/12/2036** | **19/12/2038** |
| **19/12/2027** | **19/12/2035** | **19/12/2036** | **19/12/2038** | **19/12/2041** |
| सिद्ध 30/04/2022 | संक 29/09/2029 | मंग 29/12/2035 | पिंग 28/01/2037 | धांय 20/03/2039 |
| संक 19/11/2023 | मंग 19/12/2029 | पिंग 19/01/2036 | धांय 30/03/2037 | भ्राम 20/07/2039 |
| मंग 29/01/2024 | पिंग 30/05/2030 | धांय 18/02/2036 | भ्राम 19/06/2037 | भद्रि 19/12/2039 |
| पिंग 19/06/2024 | धांय 29/01/2031 | भ्राम 30/03/2036 | भद्रि 29/09/2037 | उल्क 19/06/2040 |
| धांय 18/01/2025 | भ्राम 19/12/2031 | भद्रि 20/05/2036 | उल्क 28/01/2038 | सिद्ध 18/01/2041 |
| भ्राम 29/10/2025 | भद्रि 28/01/2033 | उल्क 19/07/2036 | सिद्ध 19/06/2038 | संक 19/09/2041 |
| भद्रि 19/10/2026 | उल्क 30/05/2034 | सिद्ध 28/09/2036 | संक 29/11/2038 | मंग 19/10/2041 |
| उल्क 19/12/2027 | सिद्ध 19/12/2035 | संक 19/12/2036 | मंग 19/12/2038 | पिंग 19/12/2041 |

| भ्रामरी 4 वर्ष | भद्रिका 5 वर्ष | उल्का 6 वर्ष | सिद्धा 7 वर्ष | संकटा 8 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **19/12/2041** | **19/12/2045** | **19/12/2050** | **19/12/2056** | **19/12/2063** |
| **19/12/2045** | **19/12/2050** | **19/12/2056** | **19/12/2063** | **19/12/2071** |
| भ्राम 30/05/2042 | भद्रि 29/08/2046 | उल्क 19/12/2051 | सिद्ध 30/04/2058 | संक 29/09/2065 |
| भद्रि 19/12/2042 | उल्क 30/06/2047 | सिद्ध 17/02/2053 | संक 19/11/2059 | मंग 19/12/2065 |
| उल्क 20/08/2043 | सिद्ध 19/06/2048 | संक 19/06/2054 | मंग 29/01/2060 | पिंग 30/05/2066 |
| सिद्ध 30/05/2044 | संक 30/07/2049 | मंग 19/08/2054 | पिंग 19/06/2060 | धांय 29/01/2067 |
| संक 19/04/2045 | मंग 19/09/2049 | पिंग 19/12/2054 | धांय 18/01/2061 | भ्राम 19/12/2067 |
| मंग 30/05/2045 | पिंग 29/12/2049 | धांय 20/06/2055 | भ्राम 29/10/2061 | भद्रि 28/01/2069 |
| पिंग 19/08/2045 | धांय 30/05/2050 | भ्राम 18/02/2056 | भद्रि 19/10/2062 | उल्क 30/05/2070 |
| धांय 19/12/2045 | भ्राम 19/12/2050 | भद्रि 19/12/2056 | उल्क 19/12/2063 | सिद्ध 19/12/2071 |

| मंगला 1 वर्ष | पिंगला 2 वर्ष | धान्या 3 वर्ष | भ्रामरी 4 वर्ष | भद्रिका 5 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **19/12/2071** | **19/12/2072** | **19/12/2074** | **19/12/2077** | **19/12/2081** |
| **19/12/2072** | **19/12/2074** | **19/12/2077** | **19/12/2081** | **15/10/2086** |
| मंग 29/12/2071 | पिंग 28/01/2073 | धांय 20/03/2075 | भ्राम 30/05/2078 | भद्रि 29/08/2082 |
| पिंग 19/01/2072 | धांय 30/03/2073 | भ्राम 20/07/2075 | भद्रि 19/12/2078 | उल्क 30/06/2083 |
| धांय 18/02/2072 | भ्राम 19/06/2073 | भद्रि 19/12/2075 | उल्क 20/08/2079 | सिद्ध 19/06/2084 |
| भ्राम 30/03/2072 | भद्रि 29/09/2073 | उल्क 19/06/2076 | सिद्ध 30/05/2080 | संक 30/07/2085 |
| भद्रि 20/05/2072 | उल्क 28/01/2074 | सिद्ध 18/01/2077 | संक 19/04/2081 | मंग 19/09/2085 |
| उल्क 19/07/2072 | सिद्ध 19/06/2074 | संक 19/09/2077 | मंग 30/05/2081 | पिंग 29/12/2085 |
| सिद्ध 28/09/2072 | संक 29/11/2074 | मंग 19/10/2077 | पिंग 19/08/2081 | धांय 30/05/2086 |
| संक 19/12/2072 | मंग 19/12/2074 | पिंग 19/12/2077 | धांय 19/12/2081 | भ्राम 15/10/2086 |

# योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

| सिद्ध - भद्रि | | सिद्ध - उल्क | | संक - संक | | संक - मंग | | संक - पिंग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29/10/2025 | | 19/10/2026 | | 19/12/2027 | | 29/09/2029 | | 19/12/2029 | |
| 19/10/2026 | | 19/12/2027 | | 29/09/2029 | | 19/12/2029 | | 30/05/2030 | |
| भद्रि | 17/12/2025 | उल्क | 29/12/2026 | संक | 12/05/2028 | मंग | 01/10/2029 | पिंग | 28/12/2029 |
| उल्क | 15/02/2026 | सिद्ध | 22/03/2027 | मंग | 30/05/2028 | पिंग | 05/10/2029 | धांय | 10/01/2030 |
| सिद्ध | 25/04/2026 | संक | 25/06/2027 | पिंग | 05/07/2028 | धांय | 12/10/2029 | भ्राम | 28/01/2030 |
| संक | 13/07/2026 | मंग | 07/07/2027 | धांय | 28/08/2028 | भ्राम | 21/10/2029 | भद्रि | 20/02/2030 |
| मंग | 22/07/2026 | पिंग | 30/07/2027 | भ्राम | 08/11/2028 | भद्रि | 01/11/2029 | उल्क | 19/03/2030 |
| पिंग | 11/08/2026 | धांय | 04/09/2027 | भद्रि | 06/02/2029 | उल्क | 15/11/2029 | सिद्ध | 20/04/2030 |
| धांय | 10/09/2026 | भ्राम | 21/10/2027 | उल्क | 25/05/2029 | सिद्ध | 01/12/2029 | संक | 26/05/2030 |
| भ्राम | 19/10/2026 | भद्रि | 19/12/2027 | सिद्ध | 29/09/2029 | संक | 19/12/2029 | मंग | 30/05/2030 |

| संक - धांय | | संक - भ्राम | | संक - भद्रि | | संक - उल्क | | संक - सिद्ध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30/05/2030 | | 29/01/2031 | | 19/12/2031 | | 28/01/2033 | | 30/05/2034 | |
| 29/01/2031 | | 19/12/2031 | | 28/01/2033 | | 30/05/2034 | | 19/12/2035 | |
| धांय | 19/06/2030 | भ्राम | 06/03/2031 | भद्रि | 14/02/2032 | उल्क | 19/04/2033 | सिद्ध | 18/09/2034 |
| भ्राम | 16/07/2030 | भद्रि | 20/04/2031 | उल्क | 21/04/2032 | सिद्ध | 23/07/2033 | संक | 22/01/2035 |
| भद्रि | 19/08/2030 | उल्क | 13/06/2031 | सिद्ध | 09/07/2032 | संक | 08/11/2033 | मंग | 07/02/2035 |
| उल्क | 29/09/2030 | सिद्ध | 15/08/2031 | संक | 07/10/2032 | मंग | 22/11/2033 | पिंग | 10/03/2035 |
| सिद्ध | 15/11/2030 | संक | 26/10/2031 | मंग | 19/10/2032 | पिंग | 19/12/2033 | धांय | 27/04/2035 |
| संक | 08/01/2031 | मंग | 04/11/2031 | पिंग | 10/11/2032 | धांय | 28/01/2034 | भ्राम | 29/06/2035 |
| मंग | 15/01/2031 | पिंग | 22/11/2031 | धांय | 14/12/2032 | भ्राम | 24/03/2034 | भद्रि | 16/09/2035 |
| पिंग | 29/01/2031 | धांय | 19/12/2031 | भ्राम | 28/01/2033 | भद्रि | 30/05/2034 | उल्क | 19/12/2035 |

| मंग - मंग | | मंग - पिंग | | मंग - धांय | | मंग - भ्राम | | मंग - भद्रि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/12/2035 | | 29/12/2035 | | 19/01/2036 | | 18/02/2036 | | 30/03/2036 | |
| 29/12/2035 | | 19/01/2036 | | 18/02/2036 | | 30/03/2036 | | 20/05/2036 | |
| मंग | 20/12/2035 | पिंग | 31/12/2035 | धांय | 21/01/2036 | भ्राम | 23/02/2036 | भद्रि | 06/04/2036 |
| पिंग | 20/12/2035 | धांय | 01/01/2036 | भ्राम | 25/01/2036 | भद्रि | 28/02/2036 | उल्क | 14/04/2036 |
| धांय | 21/12/2035 | भ्राम | 04/01/2036 | भद्रि | 29/01/2036 | उल्क | 06/03/2036 | सिद्ध | 24/04/2036 |
| भ्राम | 22/12/2035 | भद्रि | 06/01/2036 | उल्क | 03/02/2036 | सिद्ध | 14/03/2036 | संक | 05/05/2036 |
| भद्रि | 24/12/2035 | उल्क | 10/01/2036 | सिद्ध | 09/02/2036 | संक | 23/03/2036 | मंग | 07/05/2036 |
| उल्क | 25/12/2035 | सिद्ध | 14/01/2036 | संक | 16/02/2036 | मंग | 24/03/2036 | पिंग | 10/05/2036 |
| सिद्ध | 27/12/2035 | संक | 18/01/2036 | मंग | 17/02/2036 | पिंग | 26/03/2036 | धांय | 14/05/2036 |
| संक | 29/12/2035 | मंग | 19/01/2036 | पिंग | 18/02/2036 | धांय | 30/03/2036 | भ्राम | 20/05/2036 |

# योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

| मंग - उल्क | | मंग - सिद्ध | | मंग - संक | | पिंग - पिंग | | पिंग - धांय | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **20/05/2036** | | **19/07/2036** | | **28/09/2036** | | **19/12/2036** | | **28/01/2037** | |
| **19/07/2036** | | **28/09/2036** | | **19/12/2036** | | **28/01/2037** | | **30/03/2037** | |
| उल्क | 30/05/2036 | सिद्ध | 02/08/2036 | संक | 16/10/2036 | पिंग | 21/12/2036 | धांय | 02/02/2037 |
| सिद्ध | 10/06/2036 | संक | 18/08/2036 | मंग | 19/10/2036 | धांय | 24/12/2036 | भ्राम | 09/02/2037 |
| संक | 24/06/2036 | मंग | 20/08/2036 | पिंग | 23/10/2036 | भ्राम | 29/12/2036 | भद्रि | 17/02/2037 |
| मंग | 26/06/2036 | पिंग | 24/08/2036 | धांय | 30/10/2036 | भद्रि | 03/01/2037 | उल्क | 28/02/2037 |
| पिंग | 29/06/2036 | धांय | 30/08/2036 | भ्राम | 08/11/2036 | उल्क | 10/01/2037 | सिद्ध | 11/03/2037 |
| धांय | 04/07/2036 | भ्राम | 07/09/2036 | भद्रि | 19/11/2036 | सिद्ध | 18/01/2037 | संक | 25/03/2037 |
| भ्राम | 11/07/2036 | भद्रि | 17/09/2036 | उल्क | 03/12/2036 | संक | 27/01/2037 | मंग | 27/03/2037 |
| भद्रि | 19/07/2036 | उल्क | 28/09/2036 | सिद्ध | 19/12/2036 | मंग | 28/01/2037 | पिंग | 30/03/2037 |

| पिंग - भ्राम | | पिंग - भद्रि | | पिंग - उल्क | | पिंग - सिद्ध | | पिंग - संक | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **30/03/2037** | | **19/06/2037** | | **29/09/2037** | | **28/01/2038** | | **19/06/2038** | |
| **19/06/2037** | | **29/09/2037** | | **28/01/2038** | | **19/06/2038** | | **29/11/2038** | |
| भ्राम | 08/04/2037 | भद्रि | 03/07/2037 | उल्क | 19/10/2037 | सिद्ध | 25/02/2038 | संक | 26/07/2038 |
| भद्रि | 19/04/2037 | उल्क | 20/07/2037 | सिद्ध | 12/11/2037 | संक | 29/03/2038 | मंग | 30/07/2038 |
| उल्क | 03/05/2037 | सिद्ध | 09/08/2037 | संक | 09/12/2037 | मंग | 02/04/2038 | पिंग | 08/08/2038 |
| सिद्ध | 19/05/2037 | संक | 31/08/2037 | मंग | 12/12/2037 | पिंग | 09/04/2038 | धांय | 22/08/2038 |
| संक | 06/06/2037 | मंग | 03/09/2037 | पिंग | 19/12/2037 | धांय | 21/04/2038 | भ्राम | 09/09/2038 |
| मंग | 08/06/2037 | पिंग | 09/09/2037 | धांय | 29/12/2037 | भ्राम | 07/05/2038 | भद्रि | 01/10/2038 |
| पिंग | 12/06/2037 | धांय | 17/09/2037 | भ्राम | 11/01/2038 | भद्रि | 27/05/2038 | उल्क | 28/10/2038 |
| धांय | 19/06/2037 | भ्राम | 29/09/2037 | भद्रि | 28/01/2038 | उल्क | 19/06/2038 | सिद्ध | 29/11/2038 |

| पिंग - मंग | | धांय - धांय | | धांय - भ्राम | | धांय - भद्रि | | धांय - उल्क | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **29/11/2038** | | **19/12/2038** | | **20/03/2039** | | **20/07/2039** | | **19/12/2039** | |
| **19/12/2038** | | **20/03/2039** | | **20/07/2039** | | **19/12/2039** | | **19/06/2040** | |
| मंग | 29/11/2038 | धांय | 27/12/2038 | भ्राम | 03/04/2039 | भद्रि | 10/08/2039 | उल्क | 19/01/2040 |
| पिंग | 30/11/2038 | भ्राम | 06/01/2039 | भद्रि | 20/04/2039 | उल्क | 05/09/2039 | सिद्ध | 23/02/2040 |
| धांय | 02/12/2038 | भद्रि | 19/01/2039 | उल्क | 10/05/2039 | सिद्ध | 04/10/2039 | संक | 04/04/2040 |
| भ्राम | 04/12/2038 | उल्क | 03/02/2039 | सिद्ध | 03/06/2039 | संक | 07/11/2039 | मंग | 09/04/2040 |
| भद्रि | 07/12/2038 | सिद्ध | 20/02/2039 | संक | 30/06/2039 | मंग | 11/11/2039 | पिंग | 19/04/2040 |
| उल्क | 11/12/2038 | संक | 13/03/2039 | मंग | 03/07/2039 | पिंग | 20/11/2039 | धांय | 04/05/2040 |
| सिद्ध | 15/12/2038 | मंग | 15/03/2039 | पिंग | 10/07/2039 | धांय | 02/12/2039 | भ्राम | 25/05/2040 |
| संक | 19/12/2038 | पिंग | 20/03/2039 | धांय | 20/07/2039 | भ्राम | 19/12/2039 | भद्रि | 19/06/2040 |

# कालचक्र दशा

**भोग्य दशा काल : मकर 2 वर्ष 2 मास 28 दिन**
**कुल दशाकाल : 86 वर्ष**
**तिथि : उ०भाद्रपद - 4 सव्य**
**देह : कर्क    जीव : मीन**

| मकर 4 वर्ष | | धनु 10 वर्ष | | कर्क 21 वर्ष | | सिंह 5 वर्ष | | मिथुन 9 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/10/1978 | | 12/01/1981 | | 13/01/1991 | | 13/01/2012 | | 12/01/2017 | |
| 12/01/1981 | | 13/01/1991 | | 13/01/2012 | | 12/01/2017 | | 12/01/2026 | |
| | 00/00/0000 | धनु | 13/03/1982 | कर्क | 29/02/1996 | सिंह | 28/04/2012 | मिथु | 22/12/2017 |
| | 00/00/0000 | कर्क | 21/08/1984 | सिंह | 20/05/1997 | मिथु | 05/11/2012 | वृष | 26/08/2019 |
| | 15/10/1978 | सिंह | 21/03/1985 | मिथु | 31/07/1999 | वृष | 11/10/2013 | मेष | 19/05/2020 |
| सिंह | 23/11/1978 | मिथु | 07/04/1986 | वृष | 27/06/2003 | मेष | 09/03/2014 | मीन | 06/06/2021 |
| मिथु | 25/04/1979 | वृष | 16/02/1988 | मेष | 13/03/2005 | मीन | 07/10/2014 | कुंभ | 05/11/2021 |
| वृष | 21/01/1980 | मेष | 09/12/1988 | मीन | 22/08/2007 | कुंभ | 31/12/2014 | मक | 07/04/2022 |
| मेष | 19/05/1980 | मीन | 07/02/1990 | कुंभ | 12/08/2008 | मक | 26/03/2015 | धनु | 25/04/2023 |
| मीन | 05/11/1980 | कुंभ | 27/07/1990 | मक | 04/08/2009 | धनु | 24/10/2015 | कर्क | 05/07/2025 |
| कुंभ | 12/01/1981 | मक | 13/01/1991 | धनु | 13/01/2012 | कर्क | 12/01/2017 | सिंह | 12/01/2026 |

| वृष 16 वर्ष | | मेष 7 वर्ष | | मीन 10 वर्ष | | कुम्भ 4 वर्ष | | मकर 4 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/01/2026 | | 12/01/2042 | | 12/01/2049 | | 13/01/2059 | | 13/01/2063 | |
| 12/01/2042 | | 12/01/2049 | | 13/01/2059 | | 13/01/2063 | | 00/00/0000 | |
| वृष | 04/01/2029 | मेष | 09/08/2042 | मीन | 13/03/2050 | कुंभ | 22/03/2059 | मक | 22/03/2063 |
| मेष | 24/04/2030 | मीन | 02/06/2043 | कुंभ | 30/08/2050 | मक | 29/05/2059 | धनु | 08/09/2063 |
| मीन | 04/03/2032 | कुंभ | 29/09/2043 | मक | 16/02/2051 | धनु | 14/11/2059 | कर्क | 29/08/2064 |
| कुंभ | 01/12/2032 | मक | 26/01/2044 | धनु | 15/04/2052 | कर्क | 05/11/2060 | सिंह | 15/10/2064 |
| मक | 30/08/2033 | धनु | 18/11/2044 | कर्क | 24/09/2054 | सिंह | 29/01/2061 | | 00/00/0000 |
| धनु | 10/07/2035 | कर्क | 04/08/2046 | सिंह | 25/04/2055 | मिथु | 01/07/2061 | | 00/00/0000 |
| कर्क | 06/06/2039 | सिंह | 31/12/2046 | मिथु | 11/05/2056 | वृष | 30/03/2062 | | 00/00/0000 |
| सिंह | 11/05/2040 | मिथु | 24/09/2047 | वृष | 21/03/2058 | मेष | 27/07/2062 | | 00/00/0000 |
| मिथु | 12/01/2042 | वृष | 12/01/2049 | मेष | 13/01/2059 | मीन | 13/01/2063 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

# कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

| वृष - वृष | | वृष - मेष | | वृष - मीन | | वृष - कुंभ | | वृष - मक | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/01/2026 | | 04/01/2029 | | 24/04/2030 | | 04/03/2032 | | 01/12/2032 | |
| 04/01/2029 | | 24/04/2030 | | 04/03/2032 | | 01/12/2032 | | 30/08/2033 | |
| वृष | 03/08/2026 | मेष | 11/02/2029 | मीन | 12/07/2030 | कुंभ | 17/03/2032 | मक | 13/12/2032 |
| मेष | 30/10/2026 | मीन | 08/04/2029 | कुंभ | 13/08/2030 | मक | 29/03/2032 | धनु | 14/01/2033 |
| मीन | 06/03/2027 | कुंभ | 30/04/2029 | मक | 14/09/2030 | धनु | 30/04/2032 | कर्क | 21/03/2033 |
| कुंभ | 25/04/2027 | मक | 22/05/2029 | धनु | 02/12/2030 | कर्क | 05/07/2032 | सिंह | 06/04/2033 |
| मक | 15/06/2027 | धनु | 16/07/2029 | कर्क | 17/05/2031 | सिंह | 21/07/2032 | मिथु | 05/05/2033 |
| धनु | 19/10/2027 | कर्क | 09/11/2029 | सिंह | 25/06/2031 | मिथु | 18/08/2032 | वृष | 24/06/2033 |
| कर्क | 11/07/2028 | सिंह | 07/12/2029 | मिथु | 04/09/2031 | वृष | 08/10/2032 | मेष | 16/07/2033 |
| सिंह | 12/09/2028 | मिथु | 26/01/2030 | वृष | 09/01/2032 | मेष | 30/10/2032 | मीन | 17/08/2033 |
| मिथु | 04/01/2029 | वृष | 24/04/2030 | मेष | 04/03/2032 | मीन | 01/12/2032 | कुंभ | 30/08/2033 |

| वृष - धनु | | वृष - कर्क | | वृष - सिंह | | वृष - मिथु | | मेष - मेष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30/08/2033 | | 10/07/2035 | | 06/06/2039 | | 11/05/2040 | | 12/01/2042 | |
| 10/07/2035 | | 06/06/2039 | | 11/05/2040 | | 12/01/2042 | | 09/08/2042 | |
| धनु | 17/11/2033 | कर्क | 23/06/2036 | सिंह | 26/06/2039 | मिथु | 14/07/2040 | मेष | 29/01/2042 |
| कर्क | 01/05/2034 | सिंह | 13/09/2036 | मिथु | 31/07/2039 | वृष | 05/11/2040 | मीन | 23/02/2042 |
| सिंह | 10/06/2034 | मिथु | 10/02/2037 | वृष | 03/10/2039 | मेष | 24/12/2040 | कुंभ | 04/03/2042 |
| मिथु | 20/08/2034 | वृष | 02/11/2037 | मेष | 30/10/2039 | मीन | 06/03/2041 | मक | 14/03/2042 |
| वृष | 25/12/2034 | मेष | 26/02/2038 | मीन | 09/12/2039 | कुंभ | 03/04/2041 | धनु | 07/04/2042 |
| मेष | 18/02/2035 | मीन | 11/08/2038 | कुंभ | 25/12/2039 | मक | 01/05/2041 | कर्क | 28/05/2042 |
| मीन | 08/05/2035 | कुंभ | 17/10/2038 | मक | 09/01/2040 | धनु | 12/07/2041 | सिंह | 09/06/2042 |
| कुंभ | 08/06/2035 | मक | 22/12/2038 | धनु | 18/02/2040 | कर्क | 08/12/2041 | मिथु | 01/07/2042 |
| मक | 10/07/2035 | धनु | 06/06/2039 | कर्क | 11/05/2040 | सिंह | 12/01/2042 | वृष | 09/08/2042 |

| मेष - मीन | | मेष - कुंभ | | मेष - मक | | मेष - धनु | | मेष - कर्क | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 09/08/2042 | | 02/06/2043 | | 29/09/2043 | | 26/01/2044 | | 18/11/2044 | |
| 02/06/2043 | | 29/09/2043 | | 26/01/2044 | | 18/11/2044 | | 04/08/2046 | |
| मीन | 12/09/2042 | कुंभ | 07/06/2043 | मक | 04/10/2043 | धनु | 29/02/2044 | कर्क | 19/04/2045 |
| कुंभ | 26/09/2042 | मक | 13/06/2043 | धनु | 18/10/2043 | कर्क | 12/05/2044 | सिंह | 26/05/2045 |
| मक | 10/10/2042 | धनु | 27/06/2043 | कर्क | 16/11/2043 | सिंह | 29/05/2044 | मिथु | 30/07/2045 |
| धनु | 13/11/2042 | कर्क | 26/07/2043 | सिंह | 23/11/2043 | मिथु | 29/06/2044 | वृष | 23/11/2045 |
| कर्क | 25/01/2043 | सिंह | 02/08/2043 | मिथु | 05/12/2043 | वृष | 24/08/2044 | मेष | 13/01/2046 |
| सिंह | 11/02/2043 | मिथु | 14/08/2043 | वृष | 28/12/2043 | मेष | 17/09/2044 | मीन | 27/03/2046 |
| मिथु | 14/03/2043 | वृष | 05/09/2043 | मेष | 06/01/2044 | मीन | 21/10/2044 | कुंभ | 25/04/2046 |
| वृष | 09/05/2043 | मेष | 15/09/2043 | मीन | 20/01/2044 | कुंभ | 04/11/2044 | मक | 24/05/2046 |
| मेष | 02/06/2043 | मीन | 29/09/2043 | कुंभ | 26/01/2044 | मक | 18/11/2044 | धनु | 04/08/2046 |

# कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

**मेष - सिंह**
**04/08/2046**
**31/12/2046**

| | |
|---|---|
| सिंह | 13/08/2046 |
| मिथु | 28/08/2046 |
| वृष | 25/09/2046 |
| मेष | 07/10/2046 |
| मीन | 25/10/2046 |
| कुंभ | 31/10/2046 |
| मक | 07/11/2046 |
| धनु | 25/11/2046 |
| कर्क | 31/12/2046 |

**मेष - मिथु**
**31/12/2046**
**24/09/2047**

| | |
|---|---|
| मिथु | 28/01/2047 |
| वृष | 19/03/2047 |
| मेष | 09/04/2047 |
| मीन | 11/05/2047 |
| कुंभ | 23/05/2047 |
| मक | 04/06/2047 |
| धनु | 06/07/2047 |
| कर्क | 09/09/2047 |
| सिंह | 24/09/2047 |

**मेष - वृष**
**24/09/2047**
**12/01/2049**

| | |
|---|---|
| वृष | 22/12/2047 |
| मेष | 30/01/2048 |
| मीन | 25/03/2048 |
| कुंभ | 16/04/2048 |
| मक | 08/05/2048 |
| धनु | 03/07/2048 |
| कर्क | 27/10/2048 |
| सिंह | 23/11/2048 |
| मिथु | 12/01/2049 |

**मीन - मीन**
**12/01/2049**
**13/03/2050**

| | |
|---|---|
| मीन | 03/03/2049 |
| कुंभ | 22/03/2049 |
| मक | 11/04/2049 |
| धनु | 30/05/2049 |
| कर्क | 11/09/2049 |
| सिंह | 06/10/2049 |
| मिथु | 19/11/2049 |
| वृष | 06/02/2050 |
| मेष | 13/03/2050 |

**मीन - कुंभ**
**13/03/2050**
**30/08/2050**

| | |
|---|---|
| कुंभ | 21/03/2050 |
| मक | 29/03/2050 |
| धनु | 17/04/2050 |
| कर्क | 29/05/2050 |
| सिंह | 08/06/2050 |
| मिथु | 26/06/2050 |
| वृष | 27/07/2050 |
| मेष | 10/08/2050 |
| मीन | 30/08/2050 |

**मीन - मक**
**30/08/2050**
**16/02/2051**

| | |
|---|---|
| मक | 07/09/2050 |
| धनु | 26/09/2050 |
| कर्क | 07/11/2050 |
| सिंह | 17/11/2050 |
| मिथु | 05/12/2050 |
| वृष | 05/01/2051 |
| मेष | 19/01/2051 |
| मीन | 08/02/2051 |
| कुंभ | 16/02/2051 |

**मीन - धनु**
**16/02/2051**
**15/04/2052**

| | |
|---|---|
| धनु | 06/04/2051 |
| कर्क | 19/07/2051 |
| सिंह | 12/08/2051 |
| मिथु | 26/09/2051 |
| वृष | 14/12/2051 |
| मेष | 17/01/2052 |
| मीन | 07/03/2052 |
| कुंभ | 27/03/2052 |
| मक | 15/04/2052 |

**मीन - कर्क**
**15/04/2052**
**24/09/2054**

| | |
|---|---|
| कर्क | 19/11/2052 |
| सिंह | 10/01/2053 |
| मिथु | 13/04/2053 |
| वृष | 26/09/2053 |
| मेष | 08/12/2053 |
| मीन | 22/03/2054 |
| कुंभ | 02/05/2054 |
| मक | 13/06/2054 |
| धनु | 24/09/2054 |

**मीन - सिंह**
**24/09/2054**
**25/04/2055**

| | |
|---|---|
| सिंह | 07/10/2054 |
| मिथु | 29/10/2054 |
| वृष | 07/12/2054 |
| मेष | 25/12/2054 |
| मीन | 18/01/2055 |
| कुंभ | 28/01/2055 |
| मक | 07/02/2055 |
| धनु | 04/03/2055 |
| कर्क | 25/04/2055 |

**मीन - मिथु**
**25/04/2055**
**11/05/2056**

| | |
|---|---|
| मिथु | 04/06/2055 |
| वृष | 14/08/2055 |
| मेष | 14/09/2055 |
| मीन | 28/10/2055 |
| कुंभ | 15/11/2055 |
| मक | 03/12/2055 |
| धनु | 16/01/2056 |
| कर्क | 19/04/2056 |
| सिंह | 11/05/2056 |

**मीन - वृष**
**11/05/2056**
**21/03/2058**

| | |
|---|---|
| वृष | 14/09/2056 |
| मेष | 09/11/2056 |
| मीन | 27/01/2057 |
| कुंभ | 27/02/2057 |
| मक | 31/03/2057 |
| धनु | 18/06/2057 |
| कर्क | 01/12/2057 |
| सिंह | 09/01/2058 |
| मिथु | 21/03/2058 |

**मीन - मेष**
**21/03/2058**
**13/01/2059**

| | |
|---|---|
| मेष | 15/04/2058 |
| मीन | 19/05/2058 |
| कुंभ | 02/06/2058 |
| मक | 16/06/2058 |
| धनु | 20/07/2058 |
| कर्क | 01/10/2058 |
| सिंह | 18/10/2058 |
| मिथु | 18/11/2058 |
| वृष | 13/01/2059 |

**कुंभ - कुंभ**
**13/01/2059**
**22/03/2059**

| | |
|---|---|
| कुंभ | 16/01/2059 |
| मक | 19/01/2059 |
| धनु | 27/01/2059 |
| कर्क | 12/02/2059 |
| सिंह | 16/02/2059 |
| मिथु | 24/02/2059 |
| वृष | 08/03/2059 |
| मेष | 14/03/2059 |
| मीन | 22/03/2059 |

**कुंभ - मक**
**22/03/2059**
**29/05/2059**

| | |
|---|---|
| मक | 25/03/2059 |
| धनु | 02/04/2059 |
| कर्क | 18/04/2059 |
| सिंह | 22/04/2059 |
| मिथु | 29/04/2059 |
| वृष | 12/05/2059 |
| मेष | 18/05/2059 |
| मीन | 25/05/2059 |
| कुंभ | 29/05/2059 |

**कुंभ - धनु**
**29/05/2059**
**14/11/2059**

| | |
|---|---|
| धनु | 17/06/2059 |
| कर्क | 29/07/2059 |
| सिंह | 08/08/2059 |
| मिथु | 25/08/2059 |
| वृष | 26/09/2059 |
| मेष | 10/10/2059 |
| मीन | 30/10/2059 |
| कुंभ | 07/11/2059 |
| मक | 14/11/2059 |

# चर दशा

## भोग्य दशा काल : मकर 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

| मकर 5 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/1978 | 15/10/1983 |
| धनु | 16/03/1979 |
| वृश्चि | 15/08/1979 |
| तुला | 15/01/1980 |
| कन्या | 15/06/1980 |
| सिंह | 14/11/1980 |
| कर्क | 15/04/1981 |
| मिथु | 14/09/1981 |
| वृष | 14/02/1982 |
| मेष | 16/07/1982 |
| मीन | 15/12/1982 |
| कुंभ | 16/05/1983 |
| मक | 15/10/1983 |

| धनु 7 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/1983 | 15/10/1990 |
| वृश्चि | 15/05/1984 |
| तुला | 14/12/1984 |
| कन्या | 15/07/1985 |
| सिंह | 14/02/1986 |
| कर्क | 15/09/1986 |
| मिथु | 16/04/1987 |
| वृष | 15/11/1987 |
| मेष | 15/06/1988 |
| मीन | 14/01/1989 |
| कुंभ | 15/08/1989 |
| मक | 16/03/1990 |
| धनु | 15/10/1990 |

| वृश्चिक 11 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/1990 | 15/10/2001 |
| तुला | 15/09/1991 |
| कन्या | 15/08/1992 |
| सिंह | 15/07/1993 |
| कर्क | 15/06/1994 |
| मिथु | 16/05/1995 |
| वृष | 15/04/1996 |
| मेष | 16/03/1997 |
| मीन | 14/02/1998 |
| कुंभ | 14/01/1999 |
| मक | 15/12/1999 |
| धनु | 14/11/2000 |
| वृश्चि | 15/10/2001 |

| तुला 12 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2001 | 15/10/2013 |
| वृश्चि | 15/10/2002 |
| धनु | 15/10/2003 |
| मक | 15/10/2004 |
| कुंभ | 15/10/2005 |
| मीन | 15/10/2006 |
| मेष | 15/10/2007 |
| वृष | 15/10/2008 |
| मिथु | 15/10/2009 |
| कर्क | 15/10/2010 |
| सिंह | 15/10/2011 |
| कन्या | 15/10/2012 |
| तुला | 15/10/2013 |

| कन्या 11 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2013 | 15/10/2024 |
| तुला | 15/09/2014 |
| वृश्चि | 15/08/2015 |
| धनु | 15/07/2016 |
| मक | 15/06/2017 |
| कुंभ | 16/05/2018 |
| मीन | 16/04/2019 |
| मेष | 15/03/2020 |
| वृष | 13/02/2021 |
| मिथु | 14/01/2022 |
| कर्क | 15/12/2022 |
| सिंह | 15/11/2023 |
| कन्या | 15/10/2024 |

| सिंह 11 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2024 | 15/10/2035 |
| कन्या | 14/09/2025 |
| तुला | 15/08/2026 |
| वृश्चि | 16/07/2027 |
| धनु | 15/06/2028 |
| मक | 16/05/2029 |
| कुंभ | 15/04/2030 |
| मीन | 16/03/2031 |
| मेष | 14/02/2032 |
| वृष | 14/01/2033 |
| मिथु | 15/12/2033 |
| कर्क | 14/11/2034 |
| सिंह | 15/10/2035 |

| कर्क 4 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2035 | 15/10/2039 |
| मिथु | 14/02/2036 |
| वृष | 15/06/2036 |
| मेष | 15/10/2036 |
| मीन | 13/02/2037 |
| कुंभ | 15/06/2037 |
| मक | 15/10/2037 |
| धनु | 14/02/2038 |
| वृश्चि | 15/06/2038 |
| तुला | 15/10/2038 |
| कन्या | 14/02/2039 |
| सिंह | 16/06/2039 |
| कर्क | 15/10/2039 |

| मिथुन 4 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2039 | 15/10/2043 |
| वृष | 14/02/2040 |
| मेष | 15/06/2040 |
| मीन | 15/10/2040 |
| कुंभ | 13/02/2041 |
| मक | 15/06/2041 |
| धनु | 15/10/2041 |
| वृश्चि | 14/02/2042 |
| तुला | 15/06/2042 |
| कन्या | 15/10/2042 |
| सिंह | 14/02/2043 |
| कर्क | 16/06/2043 |
| मिथु | 15/10/2043 |

| वृष 5 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2043 | 15/10/2048 |
| मेष | 15/03/2044 |
| मीन | 15/08/2044 |
| कुंभ | 14/01/2045 |
| मक | 15/06/2045 |
| धनु | 14/11/2045 |
| वृश्चि | 15/04/2046 |
| तुला | 15/09/2046 |
| कन्या | 14/02/2047 |
| सिंह | 16/07/2047 |
| कर्क | 15/12/2047 |
| मिथु | 15/05/2048 |
| वृष | 15/10/2048 |

| मेष 6 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2048 | 15/10/2054 |
| वृष | 15/04/2049 |
| मिथु | 15/10/2049 |
| कर्क | 15/04/2050 |
| सिंह | 15/10/2050 |
| कन्या | 16/04/2051 |
| तुला | 15/10/2051 |
| वृश्चि | 15/04/2052 |
| धनु | 15/10/2052 |
| मक | 15/04/2053 |
| कुंभ | 15/10/2053 |
| मीन | 15/04/2054 |
| मेष | 15/10/2054 |

| मीन 8 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2054 | 15/10/2062 |
| मेष | 16/06/2055 |
| वृष | 14/02/2056 |
| मिथु | 15/10/2056 |
| कर्क | 15/06/2057 |
| सिंह | 14/02/2058 |
| कन्या | 15/10/2058 |
| तुला | 16/06/2059 |
| वृश्चि | 14/02/2060 |
| धनु | 15/10/2060 |
| मक | 15/06/2061 |
| कुंभ | 14/02/2062 |
| मीन | 15/10/2062 |

| कुम्भ 5 वर्ष | |
|---|---|
| 15/10/2062 | 15/10/2067 |
| मीन | 16/03/2063 |
| मेष | 15/08/2063 |
| वृष | 15/01/2064 |
| मिथु | 15/06/2064 |
| कर्क | 14/11/2064 |
| सिंह | 15/04/2065 |
| कन्या | 14/09/2065 |
| तुला | 14/02/2066 |
| वृश्चि | 16/07/2066 |
| धनु | 15/12/2066 |
| मक | 16/05/2067 |
| कुंभ | 15/10/2067 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

# चर दशा - प्रत्यन्तर

| सिंह - तुला | |
|---|---|
| 14/09/2025 | |
| 15/08/2026 | |
| वृश्चि | 12/10/2025 |
| धनु | 09/11/2025 |
| मक | 07/12/2025 |
| कुंभ | 04/01/2026 |
| मीन | 01/02/2026 |
| मेष | 01/03/2026 |
| वृष | 29/03/2026 |
| मिथु | 26/04/2026 |
| कर्क | 23/05/2026 |
| सिंह | 20/06/2026 |
| कन्या | 18/07/2026 |
| तुला | 15/08/2026 |

| सिंह - वृश्चि | |
|---|---|
| 15/08/2026 | |
| 16/07/2027 | |
| तुला | 12/09/2026 |
| कन्या | 10/10/2026 |
| सिंह | 07/11/2026 |
| कर्क | 05/12/2026 |
| मिथु | 02/01/2027 |
| वृष | 30/01/2027 |
| मेष | 26/02/2027 |
| मीन | 26/03/2027 |
| कुंभ | 23/04/2027 |
| मक | 21/05/2027 |
| धनु | 18/06/2027 |
| वृश्चि | 16/07/2027 |

| सिंह - धनु | |
|---|---|
| 16/07/2027 | |
| 15/06/2028 | |
| वृश्चि | 13/08/2027 |
| तुला | 10/09/2027 |
| कन्या | 08/10/2027 |
| सिंह | 05/11/2027 |
| कर्क | 03/12/2027 |
| मिथु | 30/12/2027 |
| वृष | 27/01/2028 |
| मेष | 24/02/2028 |
| मीन | 23/03/2028 |
| कुंभ | 20/04/2028 |
| मक | 18/05/2028 |
| धनु | 15/06/2028 |

| सिंह - मक | |
|---|---|
| 15/06/2028 | |
| 16/05/2029 | |
| धनु | 13/07/2028 |
| वृश्चि | 10/08/2028 |
| तुला | 07/09/2028 |
| कन्या | 04/10/2028 |
| सिंह | 01/11/2028 |
| कर्क | 29/11/2028 |
| मिथु | 27/12/2028 |
| वृष | 24/01/2029 |
| मेष | 21/02/2029 |
| मीन | 21/03/2029 |
| कुंभ | 18/04/2029 |
| मक | 16/05/2029 |

| सिंह - कुंभ | |
|---|---|
| 16/05/2029 | |
| 15/04/2030 | |
| मीन | 13/06/2029 |
| मेष | 10/07/2029 |
| वृष | 07/08/2029 |
| मिथु | 04/09/2029 |
| कर्क | 02/10/2029 |
| सिंह | 30/10/2029 |
| कन्या | 27/11/2029 |
| तुला | 25/12/2029 |
| वृश्चि | 22/01/2030 |
| धनु | 19/02/2030 |
| मक | 19/03/2030 |
| कुंभ | 15/04/2030 |

| सिंह - मीन | |
|---|---|
| 15/04/2030 | |
| 16/03/2031 | |
| मेष | 13/05/2030 |
| वृष | 10/06/2030 |
| मिथु | 08/07/2030 |
| कर्क | 05/08/2030 |
| सिंह | 02/09/2030 |
| कन्या | 30/09/2030 |
| तुला | 28/10/2030 |
| वृश्चि | 25/11/2030 |
| धनु | 23/12/2030 |
| मक | 19/01/2031 |
| कुंभ | 16/02/2031 |
| मीन | 16/03/2031 |

| सिंह - मेष | |
|---|---|
| 16/03/2031 | |
| 14/02/2032 | |
| वृष | 13/04/2031 |
| मिथु | 11/05/2031 |
| कर्क | 08/06/2031 |
| सिंह | 06/07/2031 |
| कन्या | 03/08/2031 |
| तुला | 31/08/2031 |
| वृश्चि | 28/09/2031 |
| धनु | 25/10/2031 |
| मक | 22/11/2031 |
| कुंभ | 20/12/2031 |
| मीन | 17/01/2032 |
| मेष | 14/02/2032 |

| सिंह - वृष | |
|---|---|
| 14/02/2032 | |
| 14/01/2033 | |
| मेष | 13/03/2032 |
| मीन | 10/04/2032 |
| कुंभ | 08/05/2032 |
| मक | 05/06/2032 |
| धनु | 03/07/2032 |
| वृश्चि | 30/07/2032 |
| तुला | 27/08/2032 |
| कन्या | 24/09/2032 |
| सिंह | 22/10/2032 |
| कर्क | 19/11/2032 |
| मिथु | 17/12/2032 |
| वृष | 14/01/2033 |

| सिंह - मिथु | |
|---|---|
| 14/01/2033 | |
| 15/12/2033 | |
| वृष | 11/02/2033 |
| मेष | 11/03/2033 |
| मीन | 08/04/2033 |
| कुंभ | 05/05/2033 |
| मक | 02/06/2033 |
| धनु | 30/06/2033 |
| वृश्चि | 28/07/2033 |
| तुला | 25/08/2033 |
| कन्या | 22/09/2033 |
| सिंह | 20/10/2033 |
| कर्क | 17/11/2033 |
| मिथु | 15/12/2033 |

| सिंह - कर्क | |
|---|---|
| 15/12/2033 | |
| 14/11/2034 | |
| मिथु | 12/01/2034 |
| वृष | 08/02/2034 |
| मेष | 08/03/2034 |
| मीन | 05/04/2034 |
| कुंभ | 03/05/2034 |
| मक | 31/05/2034 |
| धनु | 28/06/2034 |
| वृश्चि | 26/07/2034 |
| तुला | 23/08/2034 |
| कन्या | 20/09/2034 |
| सिंह | 18/10/2034 |
| कर्क | 14/11/2034 |

| सिंह - सिंह | |
|---|---|
| 14/11/2034 | |
| 15/10/2035 | |
| कन्या | 12/12/2034 |
| तुला | 09/01/2035 |
| वृश्चि | 06/02/2035 |
| धनु | 06/03/2035 |
| मक | 03/04/2035 |
| कुंभ | 01/05/2035 |
| मीन | 29/05/2035 |
| मेष | 26/06/2035 |
| वृष | 24/07/2035 |
| मिथु | 21/08/2035 |
| कर्क | 17/09/2035 |
| सिंह | 15/10/2035 |

| कर्क - मिथु | |
|---|---|
| 15/10/2035 | |
| 14/02/2036 | |
| वृष | 25/10/2035 |
| मेष | 05/11/2035 |
| मीन | 15/11/2035 |
| कुंभ | 25/11/2035 |
| मक | 05/12/2035 |
| धनु | 15/12/2035 |
| वृश्चि | 25/12/2035 |
| तुला | 04/01/2036 |
| कन्या | 15/01/2036 |
| सिंह | 25/01/2036 |
| कर्क | 04/02/2036 |
| मिथु | 14/02/2036 |

| कर्क - वृष | |
|---|---|
| 14/02/2036 | |
| 15/06/2036 | |
| मेष | 24/02/2036 |
| मीन | 05/03/2036 |
| कुंभ | 15/03/2036 |
| मक | 26/03/2036 |
| धनु | 05/04/2036 |
| वृश्चि | 15/04/2036 |
| तुला | 25/04/2036 |
| कन्या | 05/05/2036 |
| सिंह | 15/05/2036 |
| कर्क | 26/05/2036 |
| मिथु | 05/06/2036 |
| वृष | 15/06/2036 |

| कर्क - मेष | |
|---|---|
| 15/06/2036 | |
| 15/10/2036 | |
| वृष | 25/06/2036 |
| मिथु | 05/07/2036 |
| कर्क | 15/07/2036 |
| सिंह | 25/07/2036 |
| कन्या | 05/08/2036 |
| तुला | 15/08/2036 |
| वृश्चि | 25/08/2036 |
| धनु | 04/09/2036 |
| मक | 14/09/2036 |
| कुंभ | 24/09/2036 |
| मीन | 04/10/2036 |
| मेष | 15/10/2036 |

| कर्क - मीन | |
|---|---|
| 15/10/2036 | |
| 13/02/2037 | |
| मेष | 25/10/2036 |
| वृष | 04/11/2036 |
| मिथु | 14/11/2036 |
| कर्क | 24/11/2036 |
| सिंह | 04/12/2036 |
| कन्या | 14/12/2036 |
| तुला | 25/12/2036 |
| वृश्चि | 04/01/2037 |
| धनु | 14/01/2037 |
| मक | 24/01/2037 |
| कुंभ | 03/02/2037 |
| मीन | 13/02/2037 |

# चर दशा - प्रत्यन्तर

**कर्क - कुंभ**
**13/02/2037**
**15/06/2037**

| | |
|---|---|
| मीन | 23/02/2037 |
| मेष | 06/03/2037 |
| वृष | 16/03/2037 |
| मिथु | 26/03/2037 |
| कर्क | 05/04/2037 |
| सिंह | 15/04/2037 |
| कन्या | 25/04/2037 |
| तुला | 05/05/2037 |
| वृश्चि | 16/05/2037 |
| धनु | 26/05/2037 |
| मक | 05/06/2037 |
| कुंभ | 15/06/2037 |

**कर्क - मक**
**15/06/2037**
**15/10/2037**

| | |
|---|---|
| धनु | 25/06/2037 |
| वृश्चि | 05/07/2037 |
| तुला | 15/07/2037 |
| कन्या | 26/07/2037 |
| सिंह | 05/08/2037 |
| कर्क | 15/08/2037 |
| मिथु | 25/08/2037 |
| वृष | 04/09/2037 |
| मेष | 14/09/2037 |
| मीन | 25/09/2037 |
| कुंभ | 05/10/2037 |
| मक | 15/10/2037 |

**कर्क - धनु**
**15/10/2037**
**14/02/2038**

| | |
|---|---|
| वृश्चि | 25/10/2037 |
| तुला | 04/11/2037 |
| कन्या | 14/11/2037 |
| सिंह | 24/11/2037 |
| कर्क | 05/12/2037 |
| मिथु | 15/12/2037 |
| वृष | 25/12/2037 |
| मेष | 04/01/2038 |
| मीन | 14/01/2038 |
| कुंभ | 24/01/2038 |
| मक | 03/02/2038 |
| धनु | 14/02/2038 |

**कर्क - वृश्चि**
**14/02/2038**
**15/06/2038**

| | |
|---|---|
| तुला | 24/02/2038 |
| कन्या | 06/03/2038 |
| सिंह | 16/03/2038 |
| कर्क | 26/03/2038 |
| मिथु | 05/04/2038 |
| वृष | 15/04/2038 |
| मेष | 26/04/2038 |
| मीन | 06/05/2038 |
| कुंभ | 16/05/2038 |
| मक | 26/05/2038 |
| धनु | 05/06/2038 |
| वृश्चि | 15/06/2038 |

**कर्क - तुला**
**15/06/2038**
**15/10/2038**

| | |
|---|---|
| वृश्चि | 25/06/2038 |
| धनु | 06/07/2038 |
| मक | 16/07/2038 |
| कुंभ | 26/07/2038 |
| मीन | 05/08/2038 |
| मेष | 15/08/2038 |
| वृष | 25/08/2038 |
| मिथु | 04/09/2038 |
| कर्क | 15/09/2038 |
| सिंह | 25/09/2038 |
| कन्या | 05/10/2038 |
| तुला | 15/10/2038 |

**कर्क - कन्या**
**15/10/2038**
**14/02/2039**

| | |
|---|---|
| तुला | 25/10/2038 |
| वृश्चि | 04/11/2038 |
| धनु | 14/11/2038 |
| मक | 25/11/2038 |
| कुंभ | 05/12/2038 |
| मीन | 15/12/2038 |
| मेष | 25/12/2038 |
| वृष | 04/01/2039 |
| मिथु | 14/01/2039 |
| कर्क | 25/01/2039 |
| सिंह | 04/02/2039 |
| कन्या | 14/02/2039 |

**कर्क - सिंह**
**14/02/2039**
**16/06/2039**

| | |
|---|---|
| कन्या | 24/02/2039 |
| तुला | 06/03/2039 |
| वृश्चि | 16/03/2039 |
| धनु | 26/03/2039 |
| मक | 06/04/2039 |
| कुंभ | 16/04/2039 |
| मीन | 26/04/2039 |
| मेष | 06/05/2039 |
| वृष | 16/05/2039 |
| मिथु | 26/05/2039 |
| कर्क | 05/06/2039 |
| सिंह | 16/06/2039 |

**कर्क - कर्क**
**16/06/2039**
**15/10/2039**

| | |
|---|---|
| मिथु | 26/06/2039 |
| वृष | 06/07/2039 |
| मेष | 16/07/2039 |
| मीन | 26/07/2039 |
| कुंभ | 05/08/2039 |
| मक | 15/08/2039 |
| धनु | 26/08/2039 |
| वृश्चि | 05/09/2039 |
| तुला | 15/09/2039 |
| कन्या | 25/09/2039 |
| सिंह | 05/10/2039 |
| कर्क | 15/10/2039 |

**मिथु - वृष**
**15/10/2039**
**14/02/2040**

| | |
|---|---|
| मेष | 25/10/2039 |
| मीन | 05/11/2039 |
| कुंभ | 15/11/2039 |
| मक | 25/11/2039 |
| धनु | 05/12/2039 |
| वृश्चि | 15/12/2039 |
| तुला | 25/12/2039 |
| कन्या | 04/01/2040 |
| सिंह | 15/01/2040 |
| कर्क | 25/01/2040 |
| मिथु | 04/02/2040 |
| वृष | 14/02/2040 |

**मिथु - मेष**
**14/02/2040**
**15/06/2040**

| | |
|---|---|
| वृष | 24/02/2040 |
| मिथु | 05/03/2040 |
| कर्क | 15/03/2040 |
| सिंह | 26/03/2040 |
| कन्या | 05/04/2040 |
| तुला | 15/04/2040 |
| वृश्चि | 25/04/2040 |
| धनु | 05/05/2040 |
| मक | 15/05/2040 |
| कुंभ | 26/05/2040 |
| मीन | 05/06/2040 |
| मेष | 15/06/2040 |

**मिथु - मीन**
**15/06/2040**
**15/10/2040**

| | |
|---|---|
| मेष | 25/06/2040 |
| वृष | 05/07/2040 |
| मिथु | 15/07/2040 |
| कर्क | 25/07/2040 |
| सिंह | 05/08/2040 |
| कन्या | 15/08/2040 |
| तुला | 25/08/2040 |
| वृश्चि | 04/09/2040 |
| धनु | 14/09/2040 |
| मक | 24/09/2040 |
| कुंभ | 04/10/2040 |
| मीन | 15/10/2040 |

**मिथु - कुंभ**
**15/10/2040**
**13/02/2041**

| | |
|---|---|
| मीन | 25/10/2040 |
| मेष | 04/11/2040 |
| वृष | 14/11/2040 |
| मिथु | 24/11/2040 |
| कर्क | 04/12/2040 |
| सिंह | 14/12/2040 |
| कन्या | 25/12/2040 |
| तुला | 04/01/2041 |
| वृश्चि | 14/01/2041 |
| धनु | 24/01/2041 |
| मक | 03/02/2041 |
| कुंभ | 13/02/2041 |

**मिथु - मक**
**13/02/2041**
**15/06/2041**

| | |
|---|---|
| धनु | 23/02/2041 |
| वृश्चि | 06/03/2041 |
| तुला | 16/03/2041 |
| कन्या | 26/03/2041 |
| सिंह | 05/04/2041 |
| कर्क | 15/04/2041 |
| मिथु | 25/04/2041 |
| वृष | 05/05/2041 |
| मेष | 16/05/2041 |
| मीन | 26/05/2041 |
| कुंभ | 05/06/2041 |
| मक | 15/06/2041 |

**मिथु - धनु**
**15/06/2041**
**15/10/2041**

| | |
|---|---|
| वृश्चि | 25/06/2041 |
| तुला | 05/07/2041 |
| कन्या | 15/07/2041 |
| सिंह | 26/07/2041 |
| कर्क | 05/08/2041 |
| मिथु | 15/08/2041 |
| वृष | 25/08/2041 |
| मेष | 04/09/2041 |
| मीन | 14/09/2041 |
| कुंभ | 25/09/2041 |
| मक | 05/10/2041 |
| धनु | 15/10/2041 |

**मिथु - वृश्चि**
**15/10/2041**
**14/02/2042**

| | |
|---|---|
| तुला | 25/10/2041 |
| कन्या | 04/11/2041 |
| सिंह | 14/11/2041 |
| कर्क | 24/11/2041 |
| मिथु | 05/12/2041 |
| वृष | 15/12/2041 |
| मेष | 25/12/2041 |
| मीन | 04/01/2042 |
| कुंभ | 14/01/2042 |
| मक | 24/01/2042 |
| धनु | 03/02/2042 |
| वृश्चि | 14/02/2042 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 6 |
| भाग्यांक | 5 |
| मित्र अंक | 3, 4, 6, 9, 5 |
| शत्रु अंक | 1, 7, 8 |
| शुभ वर्ष | 24,33,42,51,60 |
| शुभ दिन | शुक्र, शनि, बुध |
| शुभ ग्रह | शुक्र, शनि, बुध |
| मित्र राशि | वृश्चिक, धनु |
| मित्र लग्न | मेष, कन्या, वृश्चिक |
| अनुकूल देवता | जगदम्बा |
| शुभ रत्न | नीलम |
| शुभ उपरत्न | जमुनिया, बिलौर |
| भाग्य रत्न | पन्ना |
| शुभ धातु | लौह |
| शुभ रंग | काला |
| शुभ दिशा | पश्चिम |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न | उड़द |
| दान द्रव्य | तेल |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| हीरा | शुक्र | 100% | व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख |
| गोमेद | राहु | 80% | भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति |
| पन्ना | बुध | 78% | व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| मूंगा | मंगल | 66% | व्यावसायिक उन्नति, सुख, धनार्जन |
| नीलम | शनि | 62% | दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन |
| लहसुनिया | केतु | 57% | पराक्रम, दम्पति |
| मोती | चंद्र | 41% | पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट |
| माणिक्य | सूर्य | 19% | नेष्ट भाग्य, दुर्घटना |
| पुखराज | गुरु | 12% | दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि |

रत्न की शुभता

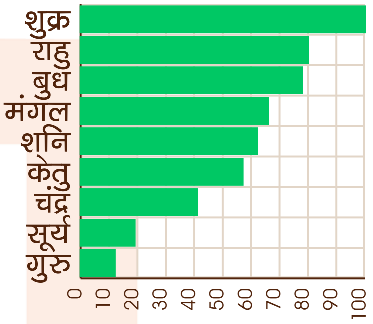


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 19/06/1979 | 0% | 16% | 53% | 84% | 12% | 100% | 75% | 86% | 38% |
| बुध | 18/06/1996 | 31% | 16% | 66% | 91% | 12% | 100% | 62% | 80% | 57% |
| केतु | 19/06/2003 | 0% | 16% | 72% | 78% | 12% | 100% | 50% | 68% | 69% |
| शुक्र | 19/06/2023 | 0% | 16% | 66% | 84% | 12% | 100% | 69% | 86% | 63% |
| सूर्य | 19/06/2029 | 44% | 52% | 72% | 78% | 25% | 92% | 50% | 68% | 38% |
| चंद्र | 19/06/2039 | 31% | 58% | 66% | 84% | 12% | 100% | 62% | 68% | 38% |
| मंगल | 19/06/2046 | 31% | 52% | 78% | 66% | 25% | 100% | 62% | 68% | 63% |
| राहु | 18/06/2064 | 0% | 16% | 53% | 78% | 12% | 100% | 69% | 93% | 38% |
| गुरु | 18/06/2080 | 31% | 52% | 72% | 66% | 38% | 92% | 62% | 80% | 57% |

# विस्तृत रत्न विचार

**औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।**
**भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।**

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

## आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए हीरा, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, नीलम एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न

किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

## हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते है। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

## गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते है। विद्वान और

पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

## पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपतिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते है। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते है। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

## मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यर्त पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते है। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपति के स्वामी बन सकते है। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते है। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में

आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

## नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढ़शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते है। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्जवल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

## लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न आपको बल और पराक्रम में आगे रखेगा। कम दूरी की यात्राएं आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपको धैर्यवान बना रहा है। रत्न प्रभाव से आप ईश्वरपरायण होकर अध्यात्मवादी भी बन सकते है। लहसुनिया रत्न आपको विवादों से दूरी देगा। केतु रत्न आपको भाईयों से संबन्ध मधुर बनायेगा। केतु ग्रह को मंगल के समान कहा गया है। इसलिए इस रत्न को धारण करने से मंगल ग्रह की शुभता में भी बढ़ोतरी होगी।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु सप्तम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और

सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

## मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते है। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है. आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। सप्तमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करने पर आपके जीवन की मुख्य क्रियाएं वैवाहिक जीवन के इर्द-गिर्द केन्द्रित हो सकती है। जीवन साथी के प्रति विशेष अनुग्रह के कारण आप अपने अन्य दायित्वों के निर्वाह में चूक सकते है। रत्न की शुभता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपका ग्रहस्थ सुख आंशिक रूप से कष्टपूर्ण हो सकता है। मोती रत्न आपको साझेदारी व्यापार में अनियमितता दे सकता है। मोती रत्न आपकी प्रसन्नता, सदबुद्धि तथा यश सम्मान में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी विदेश यात्राओं में बाधक का कार्य कर सकता है। आप भ्रमणशील हो सकते है। साथ ही यह रत्न धन-धान्य में भी कमी कर सकता है।

## माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके महत्वपूर्ण कार्यो की बाधाएं धीरे धीरे बढ़ सकती है। आपकी यात्राएं विलम्बित हो सकती है। रत्न प्रभाव से

परिवार से आपका लगाव कुछ कम हो सकता है। पिता से संबंध अधिक मधुर नहीं होंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व योग्यता का ह्रास कर सकता है। माणिक्य रत्न आपको संतान पक्ष कि ओर से कुछ चिंतित रख सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी विदेश यात्राएं असफल हो सकती है। धर्म, कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यो में आपकी सहभागिता कम हो सकती है। यह रत्न आपको पहले से अधिक कठोर कर सकता है। रत्न प्रभाव से अहंकार और अतिस्वाभिमान भाव पर नियंत्रण लगाने की स्थिति बन सकती है।

आपकी मकर लग्न की कुंड़ली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्त्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

## पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको सरकारी कामों, कचहरी के कामों, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला इत्यादि के कामों में कार्य करने पर परेशानियां दे सकता है. यह रत्न आपको विपरीत लिंग से विमुख कर सकता है। ग्रहस्थ जीवन विषयों में आपकी रुचि कम हो सकती है। आप अपने जीवनसाथी के प्रति अनिष्ठावान हो सकते है। परन्तु फिर भी दांपत्य जीवन को अनुकूल समय न दे पाने के कारण आपके वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। पुखराज रत्न आपको धार्मिक क्रियाकलापों में अधिक संलग्न रख सकता है। व्यवसायिक क्षेत्रों में आप अपनी पूरी योग्यता से कार्य नहीं कर पाएगें।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते है। कार्यो को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते है।

## दशानुसार रत्न विचार

## सूर्य
## (19/06/2023 - 19/06/2029)

सूर्य की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, गोमेद, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## चन्द्र
## (19/06/2029 - 19/06/2039)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मूंगा, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## मंगल
## (19/06/2039 - 19/06/2046)

मंगल की दशा में आपका हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पन्ना, लहसुनिया, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## राहु
## (19/06/2046 - 18/06/2064)

राहु की दशा में आपका हीरा, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों

में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती, पुखराज व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## गुरु
## (18/06/2064 - 18/06/2080)

गुरु की दशा में आपका हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, नीलम, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

# दशा ग्राफ

शनि - 19/06/1979

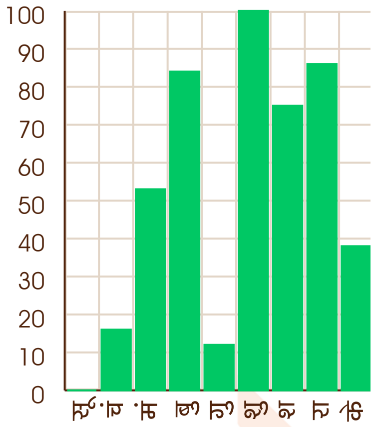

बुध - 18/06/1996

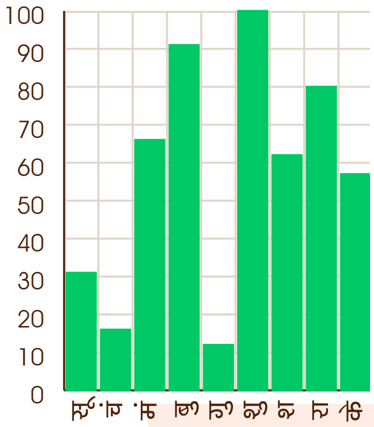

केतु - 19/06/2003

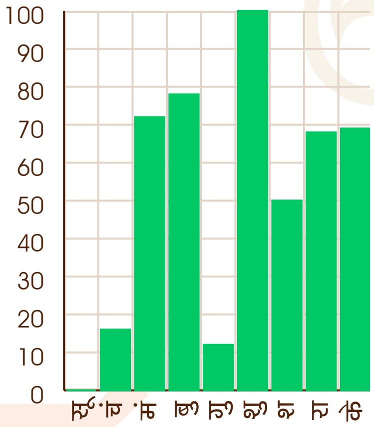

शुक्र - 19/06/2023

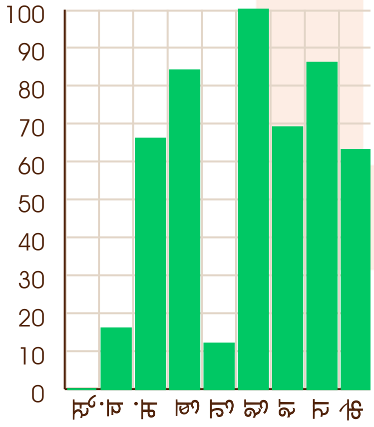

सूर्य - 19/06/2029

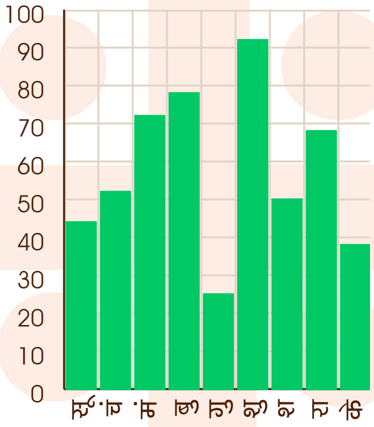

चन्द्र - 19/06/2039

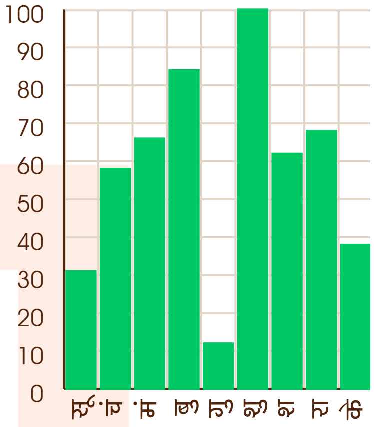

मंगल - 19/06/2046

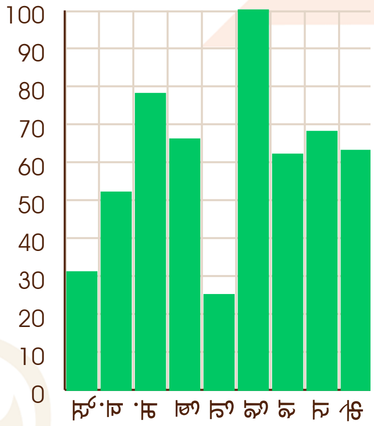

राहु - 18/06/2064

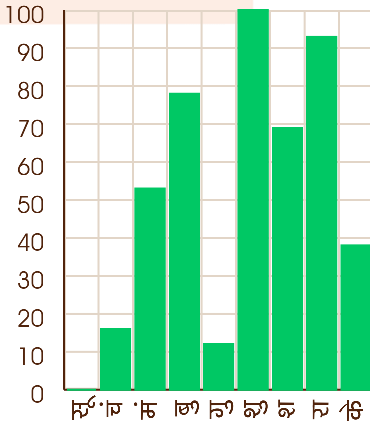

गुरु - 18/06/2080

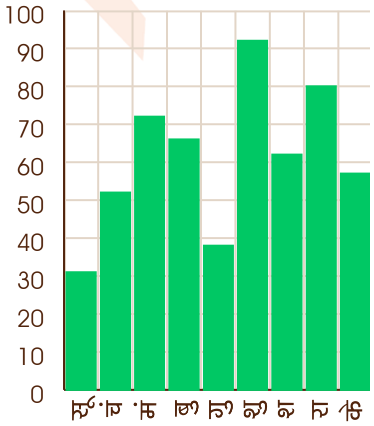

# शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल़, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

# रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरुप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

## आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यो में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृति रखते है। साथ ही आप हंसमुख है। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता हैं। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते है। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते है। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते है। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता हैं। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ट भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता हैं। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता हैं। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्टेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 06/10/1982-21/12/1984 | 01/06/1985-17/09/1985 | ------------------------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 05/03/1993-15/10/1993 | 10/11/1993-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | ------------------------- | ------------------------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 23/07/2002-08/01/2003 | 07/04/2003-06/09/2004 | 13/01/2005-26/05/2005 |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 15/11/2011-16/05/2012 | 04/08/2012-02/11/2014 | ------------------------- |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ------------------------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 31/05/2032-13/07/2034 | ------------------------- | ------------------------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 | 26/09/2041-11/12/2043 | 23/06/2044-30/08/2044 |
| साढेसाती प्रथम ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ------------------------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ------------------------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ------------------------- | ------------------------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 11/07/2061-13/02/2062 | 07/03/2062-24/08/2063 | 06/02/2064-09/05/2064 |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | व्यावसायिक उन्नति |
| साढेसाती प्रथम ढैया | शुभ | धन |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | पराक्रम |
| साढेसाती तृतीय ढैया | अशुभ | सुख हानि |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | शत्रु व रोग |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

************************************

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताऐं भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुंचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व-बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगे जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगे एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगे। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगे।

आपकी व्यवसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगे एवं आवश्यकतानुसार वक्त-वे-वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यो को बखूबी निभायेंगे तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत-मस्तक होंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 5 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 5 का स्वामी बुध है। मूलांक 6 और भाग्यांक 5 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। आप चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला के द्वारा अपना रोजगार-व्यापार चलाने में निपुण रहेंगे। आपको कला के क्षेत्र में अच्छी उपलब्धि प्राप्त होगी तथा आप इनके माध्यम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। स्वभाव से आप एक कोमल हृदय के व्यक्ति होंगे तथा समाज में आप शीघ्र घुलने-मिलने की कला में निपुण रहेंगे। धन संग्रह की ओर आपका रुझान कम तथा भौतिक सुख-साधनों की

वस्तुओं को जोड़ने में अधिक रहेगा एवं इन पर आपके संग्रहित धन का एक बड़ा भाग व्यय हो जाया करेगा, हालांकि आपको जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख-साधन उचित मात्रा में उपलब्ध होंगे। आपकी सामाजिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी एवं आप अपने क्रिया-कलापों के द्वारा समाज में उच्च स्तर का मान-सम्मान तथा सुख-सुविधाएं प्राप्त करेंगे। आपकी जान-पहचान का क्षेत्र काफी विस्तृत रहेगा एवं संगठन, समूह, समाज में एक लोकप्रिय व्यक्ति के रूप में आप अपनी पहचान स्थापित करेंगे।

आपका भाग्योदय 23 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 32 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 41 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 5 की मित्रता भी 3 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 3, 5, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, मई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 5 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं

घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

# अंक ज्योतिष उपाय विचार

## अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

## अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

## शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

## अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

## मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

## प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

## अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

## वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

## शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

## स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीयर्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

## व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

## व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

## अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

## अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

## ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

## ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

## ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

## वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

## वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

## दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

## यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध ( केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन ) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

# लग्न फल

आप एक विशिष्ट प्रकार की सुविधा से युक्त श्रेणी में ज्योतिषीय आकृति से वर्गोत्तम फलदायी परिस्थिति में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लिए हैं। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मकर लग्न, मकर नवमांश एवं मकर का द्रेष्काण साथ-साथ उदित था, जो एक विलक्षणता आपको प्रदान किया है। तथा यह सुनिश्चित करता है कि आप दीर्घायु, धनी, सुखद, आरामदायक विलासिता पूर्ण जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जीवन की मंजिल तैयार है कि आप आत्म विश्वास के साथ कठिन श्रम संपादन कर के अपने कार्य की सफलता एवं लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्ण निष्ठा से कर्त्तव्य पथ पर सफलता प्राप्त करेंगे एवं आप अपना कार्य संपन्न करने के लिए समर्थ हैं। आपमें यह गुण विद्य मान है कि आप बैल की आखों के समान पैनी दृष्टि रखते हैं। अतएव आपके कार्य कर्म में कोई कठिन समस्या उत्पन्न नहीं होगी। जिससे कि आप अद्योगति को प्राप्त हों, लेकिन आपको सरलता पूर्वक कार्य संपादन करने के लिए विचार करना चाहिए।

परंतु आपको सरलतापूर्वक कोई भी अनुचित रूप से कार्य-कलाप के संबंध में चिंताजनक स्थिति उत्पन्न न कर सके। चिंता करने से किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता है। क्या यह बिंदु चिंता उत्पन्न कराने वाला है।

आप यदि एक बार सम्पत्ति अर्जन हेतु कार्यारंभ कर दें तो निश्चित रूप से कार्य को संपूर्ण कर देंगे। आप मितव्ययी हैं। आप अतिरिक्त व्यय नहीं करेंगे। आप विनयशील है तथा किसी के साथ सुकोमल भाव से युक्त होते हैं। आप किसी के साथ धोखा-धड़ी नहीं करते और नहीं अपनी धन संपत्ति से किसी से किसी को भी वंचित करते हैं। आपके सहयोगी आपके प्रगति के पथ को अवरुद्ध करने के लिए समर्थ हैं। आप में यह सामर्थ्य है कि आप सर्तक रह कर, अपनी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आप अपनी कार्य योजना को कार्यान्वित करने को महत्व देते हैं एवं सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहते हैं।

आप स्पष्ट कार्य व्यवसाय करने में विश्वास रखते हैं तथा विश्वसनीयता पूर्वक कार्य का संपादन करते हैं। आप धर्म के प्रति अपनी अभिरूचि का प्रदर्शन करना चाहते हैं एवं धर्म और दर्शन के पथ पर चलकर कुछ भी धन दान सेवी संस्था को प्रदान करेंगे।

मकर राशीय प्रभावानुसार आपका विवाह बिलम्ब से होगा। परंतु एक बार वैवाहिक योग बन गया तो वे अपनी परिवार को पूर्ण प्यार प्रदान करते हैं। यद्यपि बाहर से देखने पर इनकी भावुकता का अनुमान नहीं होता। ये खास कर अंतर्मुखी होते हैं। ये अपने घर के वातावरण को शांतिपूर्ण रखना चाहते हैं। ये अपने परिवार को उच्च शिखर पर देखना चाहते हैं तथा अपने परिवार की प्रतिष्ठा को ऊंची लहरों की भांति परिष्कृत करना चाहते हैं।

आप कभी भी ऊंची छलांग लगाने का प्रयास नहीं करेंगे, क्योंकि आप शारीरिक रूप से कभी भी क्षतिग्रस्त हो सकते है। ऐसा आभास आपकी जन्म पत्रिका से मिलता है। आपके लिए प्रतिदिन नियमित व्यायाम करने की आदत डालने से आपका जीवन सुरक्षित

रहेंगा। आप नियमित रूप से अपने पाचन क्रिया के लिए सतर्क रहें।

सर्व प्रथम आप अच्छी प्रकार सर्विस करके चमक सकते हो इसके पश्चात् व्यवसाय के संबंध में सोचना उत्तम होगा। आपके लिए व्यवसायों में कपड़ा सिलाई का कार्य, दर्जीगिरी, शैक्षणिक कार्य, लेखन, गायन, पर्श्व गायक, अभियांत्रिकी वास्तुकला का कार्य, बिक्रेता का कार्य खासकर, वैज्ञानिक यंत्रादि के कार्य अथवा कृषि फार्म का कार्य अथवा भूमि एवं खनिज उत्पादन का कार्य व्यवसाय अनुकूल एवं लाभजनक प्रमाणित होगा।

आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली निर्देशित पंक्ति है, जिसका व्यवहार भली प्रकार कर के आप प्रसन्नतम रह सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल एवं भाग्यशाली दिन बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन व्यवहारणीय है, परंतु सोमवार, गुरुवार एवं रविवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल चिंताकारक एवं व्ययकारक है।

आपके लिए अंकों में अंक 6, 8 एवं 9 अंक अनुकूल, भाग्यवर्द्धक एवं सफलतादायक है। जबकि अंक 3 आपके लिए पूर्णतः प्रतिकूल है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग लाल, काला, नीला एवं सफेद रंग है। परंतु क्रीम रंग एवं रंग पीला सर्वथा त्यागनीय है।

# ग्रह फल

## सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

## चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

## मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यो में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

## शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

## राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

## केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

# स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शो पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

# धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

# पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

# शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

# प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगे। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रूचि रखेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगे तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में वृष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि -कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता-पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृति के होने के कारण यदा-कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता-पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते है लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगे तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगे।

# रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

# परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा बृहस्पति भी उच्च राशि में सप्तम भाव में ही स्थित है । सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है तथा शुभ ग्रह बृहस्पति के प्रभाव से वह शिक्षित प्रभावशाली सांसारिक कार्यो में दक्ष तथा कर्तव्य परायण होता है ।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा चंचलता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। वह एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यो को निपुणता से सम्पन्न करेंगी। उच्चस्थ बृहस्पति के प्रभाव से वह शिक्षित होंगी तथा उच्च कोटि के साहित्य के अध्ययन में तत्पर रहेंगी। कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी एवं परिवार तथा समाज के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अन्य अंग भी पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे सौन्दर्य में प्रबल आकर्षण होगा तथा व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह समय समय पर आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त साहित्य संगीत एवं कला में भी उनकी रूचि होगी एवं उन पर अपना काफी समय व्यतीत करेंगी।

सप्तम भाव में उच्चस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपका विवाह परिवार के श्रेष्ठ या संबंधियों में किसी प्रभावशाली व्यक्ति के माध्यम से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं आकर्षण का भाव होगा। आप दोनों शिक्षित होंगे अतः जीवन के सिद्धांतों एवं मूल्यों में भी समानता होगी जिससे संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त कोई भी कार्य आपसी सलाह एवं सहमति से ही सम्पन्न करेंगे जिससे एक दूसरे पर विश्वास भी बना रहेगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रभावशाली परिवार में होगा तथा सामाजिक रूप से भी प्रतिष्ठित होंगे। सास ससुर से आपके अच्छे संबंध रहेंगे तथा जीवन में उनसे नैतिक सहयोग तथा स्नेह प्राप्त होता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा एवं श्रद्धा का भाव रहेगा एवं सुख दुख में पितृवत उनकी सेवा करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगी जिससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी। अपनी आयु से अधिक आयु के व्यक्ति से साझेदारी की जाए तो उसमें वांछित उपलब्धियां प्राप्त होंगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

# आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

# प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

# व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व एवं बुध पृथ्वीतत्व ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक क्रिया प्रधान भी होगा। साथ ही स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। आपको स्वतंत्रकार्य या व्यवसाय करना अधिक रूचिकर होगा तथा इससे आप अपने परिश्रम का पूर्ण फल अर्जित करने में समर्थ होंगे।

दशमभाव में तुलाराशिस्थ बुध के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिक, लेखक, कवि, ज्यौतिषी, चित्रकार, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक विक्रेता या तेल निर्माण कार्य, सम्पादन, संशोधक, वकील, न्यायविभाग, दूत कार्य, टेलीफोन आपरेटर, कम्प्यूटर का कार्य, शुभ एवं अनुकूल रहेगा उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में कार्य करने से आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी तथा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली का कार्य, पुस्तक विक्रय या प्रकाशन, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, इलेक्ट्रोनिक्स उपकरणों के क्रय विक्रय के कार्यो से इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही ज्यौतिष एवं वकील का स्वतंत्र कार्य भी कर सकते है। अतः व्यापार में आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य प्रारंभ करना चाहिए जिससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर भी अग्रसर होंगे।

दशमभाव में बुध के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपका प्रभाव होगा तथा दूर दूर तक प्रसिद्धि होगी इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक या शैक्षणिक संस्था अथवा क्लब आदि के भी सम्मानीय सदस्य हो सकते है। इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही अपने उत्तम कार्यकलापों से वे अन्य जनों के मध्य आदरणीय माने जाएंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का समुचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सम्मान में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे एवं पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगे। आप लोगों के आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के शुभ कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे जिससे जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

# लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

# विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि गो तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ज" अक्षर से होगा यथा- जगदीश, जगमोहन आदि।

आप अपने कुल या परिवार के लोगों के मध्य श्रेष्ठ माने जाएंगे तथा सभी कौटुम्बिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे एवं सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। आपके इन कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे एवं आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप धनैश्वर्य से युक्त रहकर एक धनाढ्य पुरूष के रूप में समाज में जाने जाएंगे तथा जीवन में इस धन का सुखपूर्वक उपभोग भी कर सकेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा तथा इसका प्रदर्शन भी आप समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी।

**कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।**
**यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मो को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप में सर्वदा सत्वगुणों की प्रधानता रहेगी तथा जीवन में आप पूर्ण रूपेण इनका अनुपालन करने के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार समाज तथा परिवार में अपनी इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। धन का आपके पास सामन्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके एक विद्वान के रूप में भी आपका मान सम्मान होता रहेगा।

**चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।**
**जातक परिजातः**

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने प्रभावपूर्ण वक्तव्यों से सभी लोगों को प्रभावित करने में सफल रहेंगे। आप अधिकांश रूप से सुखसंसाधनों से सम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप विशाल परिवार के स्वामी होंगे तथा जीवन में पुत्र पौत्रादि का सुख प्राप्त करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। शत्रुवर्ग को नष्ट करने में आप सक्षम होंगे तथा वे भी आपसे नित्य पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने की

उनमें शक्ति का सर्वथा अभाव रहेगा। इसके साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी एवं इसका नियमानुसार पालन करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

**वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

समाज में आप अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से गौरव अर्जित करेंगे एवं एक गौरवशाली पुरूष के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। धर्म के विषय में आप पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान के योग्य समझे जाएंगे। आपमें साहस के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए आप तत्पर रहेंगे अतः आपके साहस तथा शौर्य भाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

**गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।**
**उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।**
**मानसागरी**

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा ललाट विस्तृत होगा। आपकी आखें भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। साथ ही नासिका भी उन्नत होगी। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर, सुडौल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर पतली होगी। शिल्प शास्त्र या चित्रकारी के प्रति आपके मन में स्वाभाविक आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल हो सकेंगी। संगीत के प्रति भी आपका रूझान रहेगा एवं इसका भी आप नियमित रूप से अभ्यास करते रहेंगे। आपके शत्रु आपसे सर्वदा पराजित एवं भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में प्रायः

असमर्थ ही रहेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे तथा विविध शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इसका आचरण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। स्त्रीवर्ग में भी आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके महिलावर्ग से मधुर एवं मैत्री पूर्ण संबंध भी रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होंगी जिसे सुनकर श्रोता तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे एवं प्रसन्न भी रहेंगे। आप अपने जीवन में नाना प्रकार के सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में क्रोध की अल्पता रहेगी तथा राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। इसके साथ ही खान से निकाले गए पदार्थो से आप जीवन में वांछित लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। लेकिन स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे एवं अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। समाज में आपके सभी से मधुर संबंध रहेंगे एवं स्वभाव से भी आप अच्छे होंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि की सैर करने में आप अत्यन्त ही इच्छुक रहेंगे तथा इससे आपको पूर्ण मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता की प्रवृति भी आप में रहेगी तथा यथाशक्ति इसका अनुपालन भी करते रहेंगे।

**शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारूदेहो।**
**गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।**
**ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।**
**यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।**
**सारावली**

आप समुद्र या जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो तथा मोती, शंखादि रत्नों से युक्त रहेंगे एवं इनमें आपको विशेष लाभ भी होता रहेगा। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी के धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी एवं इसका आप आनन्दपूर्वक उपभोग भी करेंगे। इसके साथ ही नारी वस्त्रों के प्रति भी आपके मन में प्रबल अनुराग या आसक्ति भी रहेगी। साथ ही आपका शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

**जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।**
**समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।**
**अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।**
**द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।**
**बृहज्जातकम्**

आपकी जल पीने की इच्छा दिन में कई बार होगी तथा आप इसका उपभोग भी करेंगी। आप एक बुद्धिमती तथा गुणवती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे एवं सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे एवं कृतज्ञता के भाव से पूर्णरूपेण युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार मानेंगे एवं हृदय से उनके प्रति आभार भी प्रकट करेंगे। इस के साथ ही आपका भाग्य भी प्रबल रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाया करेंगे।

**अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।**
**विद्वान्कृतज्ञो ऽमिभवत्यऽमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऽन्त्यराशौ।।**
**फलदीपिका**

आप एक संयमी पुरूष होंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक चतुर तथा बुद्धिमान पुरूष भी होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति भी आप की हार्दिक इच्छा रहेगी एवं इससे आप अत्यन्त ही आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

**शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।**
**विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।**
**जातकाभरणम्**

आप आजीविकार्जन संबंधी कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे तथा यदा कदा लाभ स्त्रोतों में व्यवधान उत्पन्न होने के कारण आर्थिक संकट से भी व्याकुलता का अहसास करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय होगी एवं इसके द्वारा आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। साथ ही पिता के द्वारा भी आपको धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जिससा आप जीवन में उपभोग करेंगे। आप में साहस का भाव भी पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आपमें सन्तोष के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा जो कुछ भी आपके पास उपलब्ध हो उसमें सन्तुष्टि प्राप्त करके उसी में प्रसन्न रहेंगे इससे आप मानसिक चिन्ता से सुरक्षित रहेंगे।

**जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोऽप्रशस्तः।**
**उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो ऽध्यः।।**
**अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।**
**पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।**
**तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।**
**जातकदीपिका**

आपका स्वभाव गम्भीर होगा तथा शौर्य गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक मान सम्मान करेंगे। आप में कृपणता की प्रवृति भी रहेगी जिससे यदा कदा अन्य लोगों को परेशानी होगी अतः वे आपसे असन्तुष्ट होंगे। आप अपने परिवार या अन्य कुल में सर्वप्रिय रहेंगे तथा सभी जनों से स्नेह तथा आदर प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में आप की प्रवृति रहेगी अतः इन कार्यों को आप नित्य करते रहेंगे एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप तीव्रगति से चलने वाले रहेंगे। शनैः शनैः चलना आपको अच्छा नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेगा। साथ ही बन्धुवर्ग के आप प्रिय रहेंगे।

**गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।**
**कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।**

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप एक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उत्तम गुणों से भी सुशोभित रहेंगे। इसके साथ ही समाज में अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण मधुर संबंध भी रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी देवता तथा ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा एवं इसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करेंगे। आप दया एवं करूणा के भाव से भी सर्वदा युक्त रहेंगे एवं दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना का पालन करते रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण बलवान होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में भी दक्षता प्राप्त करेंगे इससे आपको समाज में मान प्रतिष्ठा भी अर्जित होगी। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की अनुभूति होगी।

समाज में आप सदैव माननीय रहेंगे तथा विपुल धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुण तथा प्रख्यात रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे तथा आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में पैदा होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के मध्य अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं अपने समस्त कार्यों को उत्साह से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। आप में वाक्चातुर्य की प्रधानता रहेगी तथा अपनी तार्किक बातों से सभी जनों को आप आनन्दित करेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगेे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह

अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, पीत वस्त्र, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

**ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।**
**मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।**

# लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

## स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

## मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

## पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

## कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

## पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन,  बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

## स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

## निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्‌ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

## आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्‌ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

## ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

# लाल किताब ग्रह फल

## सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप भाग्यवान होंगे। आपको उत्तम वाहन सुख मिलेगा। बड़े परिवार से युक्त रहेंगे। आप परोपकारी होंगे। आप अपनी सात पुश्तों को तारने वाले होंगे। आप अपने खानदान के लिए पूरा जीवन न्यौछावर कर देंगे। 22वें वर्ष में आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। माता-पिता की कृपा से राजदरबार में इज्जत मिलेगी। तीर्थ यात्रा करने से आपके जीवन पर अच्छा असर पड़ेगा। आपके परंपरागत काम या सरकारी ठेकेदारी के धंधे से लाभ होगा। आपको माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी बचपन में परवरिश खानदानी ढंग तथा सुख साधन से होगी। आप खानदान के लिए त्याग करेंगे और आप परोपकारी होंगे। आप पोते-पड़पोते के जन्म की खुशियां देखेंगे। पैसे की तंगी नहीं रहेगी। आप दूसरों की बीमारी दूर करने में मदद करेंगे। आपके पिता को सरकार पक्ष से लाभ होगा। बहुत बड़े परिवार को पालने का जिम्मा आप पर हो सकता है। धार्मिक कार्यों से तरक्की और कीर्ति मिलेगी। स्वपराक्रम से अपनी किस्मत का सितारा चमकायेंगे। सरकारी विभाग में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा, राजा या राजा तुल्य जीवन होगा, नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

यदि आपकी रसोई में उल्टे या बहुत समय से पुराने खाली बर्तन पड़े रहे, मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, भाई-बहन से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से स्वभाव अति उग्र या अति नम्र स्वभाव रहने से सर्वस्व खोना पड़ सकता है। गिफ्ट/मुफ्त का माल या दान खाने से हर तरफ हानि होगी, यात्रा में कष्ट होगा, बहन-भाई द्वारा विरोध और किस्मत का बुरा असर शुरु हो जायेगा। कई बार आपको नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है और जिसके साथ आप संबंध रखेंगे उसी की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त या दान के माल से दूर रहें।
2. बहुत नर्म या बहुत गर्म स्वभाव न रखें।

उपाय :

1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल में प्रवाहित करें।

## चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि न होगी। आप मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण

रहेंगे। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगे। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव के होंगे। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना के मालिक होंगे। गृहस्थी, धन-दौलत के भंडारी होंगे। आपके परिवार में मर्दों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में स्त्रियों में इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पत्नी से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगे। आपके पिता को कम और माता को अधिक सुख मिलेगा। माता या पिता में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगे। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्या दान करें।
2. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।
3. लड़के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
4. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।

## मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी

होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

## बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी के प्रिय रहेंगे। आप व्यवहार कुशल, ठीक से जीवन निर्वाह करने वाले होंगे। आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगे। आप लेखक-संपादक, अनेक विद्याओं के जानने वाले हो सकते हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाले होंगे। आप पूरा धन कमाने वाले हैं। आप अव्वल दर्जे के खुशामदी होंगे। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ सिद्ध करेंगे। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगे। आप शरारती और मतलब परस्त होंगे। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगे। आप मीठी-मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगे। व्यापार करने से घर के लोगों को भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव के है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका अच्छा जीवन बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम अपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब-पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप

दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगे। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चौड़े पत्तों का वृक्ष, तुलसी-मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :
1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

## गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति सातवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से अधिक उम्र में या विवाह के बाद देर से संतान सुख प्राप्त होगा। पुत्र प्राप्ति के बाद पिछले कष्ट दूर हो जाएंगे। आप पूर्ण सुखी हो जाएंगे। पत्नी नौकरी करेगी उसकी कमाई से धन में वृद्धि होती रहेगी। आप स्वस्थ एवं पत्नी से सुखी रहेंगे। आप पिता से अलग होकर, साझेदारी का व्यवसाय चलाएंगे। संतान का भी सामान्य सुख ही मिलेगा। आप 40 वर्ष की उम्र तक ऐय्याशी करेंगे। ससुराल से मिली चीजों में बरकत होगी। आप धार्मिक कामों में हमेशा रुचि रखेंगे। आप ज्योतिष विद्या के जानकार और माहिर होंगे और ज्योतिष के द्वारा धन की प्राप्ति भी होगी। आपको दलाली या व्यापार के कामों से लाभ होगा। आपके धन से दूर के रिश्तेदार लोग सुख पायेंगे परंतु आपके जीवन में आराम नही मिलेगा। आपको लोहे, मशीनरी, काली चीजों का व्यापार, मकान बनाने की चीजें (लोहा, ईट, पत्थर सीमेंट, लकड़ी आदि) का व्यापार शुभ फल देगा। आप जीवन में अपनी जवानी में खूब ऐशो-आराम करेंगे। पिता और ससुर से लाभ और सुख मिलेगा।

यदि आपके घर के मंदिर में मूर्तियां होंगी (तस्वीरों का वहम नहीं), चांदी आदि धातु की मूर्तियों वाले सिक्के होंगे या धार्मिक ग्रंथ बंद पड़े होंगे, रत्तियां (जिससे पहले समय में सुनार सोना आदि तोलते थे) पड़ी होंगी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप भाई से दुःखी रहेंगे। घूमने-फिरने वाले साधू की संगति से भाग्य मंदा हो जाएगा। आपको आमदनी होने के बावजूद आप पर कर्ज का बोझ भी पड़ेगा। आपके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आयेंगे। पत्नी के अतिरिक्त दूसरी औरत से हानि होगी। पिता का सुख कम मिलेगा। आप संगति के प्रभाव से चोर या डाकू भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घूमने-फिरने वाले पीले वस्त्र धारी साधू से दूर रहें।
2. घर में तुलसी, घंटी, ठाकुर न रखें।

उपाय :
1. सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आपके ससुराल वाले आपको कुछ न कुछ देते रहेंगे तो इससे दोनों परिवारों का कल्याण होगा।

## शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आप लोभी, शक्की दस्तकारी के कामों में रुचि लेंगे। आप शक्ति संपन्न होंगे। आप कामुक होंगे। आप कामवासना के अधीन रहेंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आप बाग-बगीचों के मालिक होंगे। आप अपने जीवन में दुर्घटना के शिकार नहीं होंगे। आपको अच्छा धन प्राप्त होगा। बुढ़ापा आराम से बीतेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी जवानी प्रेम संबंधों में उलझी रहेगी। आपकी चालाकी, शैतानी और होशियारी की अधिकता से अधिक लाभ, आंशिक क्षति भी हो सकती है। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। पत्नी के साथ रहते आपके साथ कभी भी कोई हादसा नहीं होगा।

यदि आपने शराब, बीयर आदि पीना और मांस खाना शुरु किया, मछली का शिकार किया, स्त्री पर अधिक विश्वास किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको पत्नी से दब कर रहना होगा। पराई स्त्री से संबंध रहने से संतान को दुःख पहुंचेगा। संतान सुख के लिए जीवन में बाधा आ सकती है। विवाह के 13 वर्ष बाद पत्नी बीमार हो सकती है या पत्नी अस्वस्थ रहेगी जिसके कारण आपको दुःख भी झेलने पड़ सकते हैं। आपको पेशाब की बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. शराब-मछली का सेवन न करें।
2. आघिक मिजाज न बनें।

उपाय :
1. कपिला गाय का दान करें।
2. पत्नी शरीर पर दूध-दही मल कर स्नान करें।

## शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगे। आप मनमौजी होंगे। आर्थिक हालत सामान्य रहेगी।

भागीदारी के काम से लाभ अधिक होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं तो आपको सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगें, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठे रहने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुईं, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता का सुख कम ही प्राप्त हो सकता है। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। शराब-मांस, अंडे का सेवन-भोजन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर होने की आशंका है। आपके अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर मकान बना लेंगे तो असमय मौत को बुलावा हो सकता है। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :
1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

## राहु

आपकी जन्मकुंडली के नौंवे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धर्म-कर्म पर कम विश्वास करेंगे। यदा-कदा नास्तिक जैसा व्यवहार करेंगे। आपकी मान-प्रतिष्ठा को धक्का लग सकता है। भाई-बहन के साथ अच्छा संबंध रखना शुभ और लाभकारी है। धर्म-कर्महीन होने से भाग्य संतान का अभाव रह सकता है। शनि की चीजों के व्यवसाय से लाभ होगा। संतान से अच्छा संबंध बनाए रखने से आपको लाभ होगा। संतान और धन में बरकत होगी। जादू-मंत्र जानने में रुचि रहेगी। पागलों के डाक्टर या सरसाम रोग की महारथ आपको हासिल होगी।

यदि आपने धर्म विरुद्ध कार्य किये, डाक्टर होकर लालच किया, परिवार से अलग रहना शुरु किया, आपके मकान के पास जोहड़ हुआ या मकान का गंदा पानी मुख्य द्वार की

दहलीज के नीचे से निकलता रहा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से अदालती झगड़े और संतान कष्ट की आशंका है। बुजुर्गों की सेहत पर गलत असर पड़ सकता है। आपकी पत्नी का गर्भपात भी हो सकता है। आपके ससुर, पिता और दादा आपकी वजह से तबाह हो सकते हैं। भाई-बंधु तंग करते रहेंगे। आप पागलों का इलाज कर सकते हैं। आप साधू-फकीर के साथ रह कर फिजूल खर्ची करेंगे। आप यदि बड़े लोगों से झगड़ा करें तो स्वास्थ्य और संतान पर अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। आपका ससुराल में साथ रहना या ज्यादा संबंध रखना हानिकारक है। आपको तीर्थ यात्रा करने में बाधा उत्पन्न होगी। कैद या बंधन में नहीं रह सकते फरार हो सकते हैं। आप दान करना भी पसंद नही करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. साधू-फकीर का साथ न रखें।
2. परस्त्री से संबंध कायम न करें।

उपाय :
1. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकावें।

## केतु

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप दूसरों का हिस्सा मांगने वाले होंगे, आपको यात्रा से लाभ होगा। नेकी को याद रखना और बदी को भूल जाना आपकी आदत होगी। आपके भाग्य में तबदीली आएगी। आपको पुत्र संतान का सुख होगा। आपका पुत्र भाग्यशाली हो सकता है। आपकी संतान अच्छी और आज्ञाकारी होगी। आप आस्तिक होंगे, दूसरों की सहायता करते रहेंगे। आपके जीवन का 24वां वर्ष उत्तम फलदायी होगा। आपको दूसरे की सलाह लेने से बुरा असर हो सकता है।

यदि आपने ताया-चाचा से झगड़ा किया, साले के साथ कारोबार किया, भाई के साथ झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से पेशाब या गुप्तांग में रोग होगा। संतान नालायक होगी या संतान से दुःखी रहेंगे। आवारा घूमेंगे, भाइयों से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करेंगे। भाई आपके शत्रु न बन जाएं, इस चिंता से दुःखी रहेंगे। आपके सगे संबंधी आपके दुःख के कारण हो सकते हैं। आप मरते दम तक चिंतित रहेंगे। आपका धन दीवानी मुकद्दमों में खर्च हो सकता है। साली से विवाद और पत्नी से मनमुटाव के कारण जुदाई हो सकती है। रीढ़ की हड्डी में रोग पैदा हो सकता है। जिस्म या हड्डी में दर्द या चोट की आशंका है। 24वां वर्ष संतान के लिए कष्ट कारक एवं भाग्य के लिए सुस्त रहेगा। आपको रक्तदोष या शरीर में फोड़े-फुंसी की शिकायत रह सकती है। ससुराल और भाई का हाल अच्छा नहीं रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आवारा न घूमें।
2. भाई से दूरी हानिकारक है।

उपाय :

1. कानों में ननतियां पहनें।
2. शरीर पर सोना पहनें।

# लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

# शिक्षा संबंधी - 2026

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

शैक्षिक संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की भविष्यवाणी आपके लिए सकारात्मक नहीं बन रही है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रयास कर रहे छात्रों को कठिनाईयों को पार करते हुए प्रयास करने होंगे। नवीन अवसरों की खोज भी इस वर्ग के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है। तकनीकी छात्रों को अपनी रैंकिंग बनाए रखने के लिए सामान्य से अधिक कार्य करना होगा। प्रयोगात्मक विषयों में सफल होने के लिए आपको ओर अधिक मेहनत करनी होगी। कानून के छात्रों के लिए भी ग्रह स्थिति सुखद नहीं बन रही है। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं के उम्मीदवारों को नतीजों को अपने पक्ष में करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी चाहिए। अतिरिक्त कोचिंग का निर्णय इस अवधि में आपके लिए निर्णायक साबित हो सकता है।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की भविष्यवाणी आपकी शैक्षिक संभावनाओं के लिए बहुत सुखद नहीं बन रही है। अतः यह समय आपके शिक्षा विषयों के लिए कुछ कष्टकारी हो सकता है। माह अवधि में आपको शैक्षिक कार्यो में प्रेरणा की कमी महसूस हो सकती है। सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि आप प्रेरित रहें। आप अपने प्रयासों से शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी रह सकते है। स्वाध्ययन करने और विषयों का नियोजन बनाकर अध्ययन करना आपको उत्तम सफलता प्रदान कर सकता है। इसके अलावा प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्र वर्ग के लिए इस समय की परिस्थितियों में अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। कोचिंग का फैसला इस अवधि में सुखद परिणाम दे सकता है। तकनीकी छात्रों के लिए यह समय कठिन हो सकता है। फिर भी यदि आप सफलता प्राप्ति के लिए दृढ़ रहते है तो परिणाम आपके पक्ष में हो सकते है।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की संभावनाएं आपके शैक्षिक कार्यो के लिए उज्जवल बन रही हैं। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, और अन्य कला के छात्रों को अपनी रचनात्मक गतिविधियों से सराहना की प्राप्ति होगी। यह माह आपको महत्वपूर्ण उपलब्धियां दिला सकता है। तकनीकी छात्रों की इस माह की उपलबधियों का संबंध इनके कौशल और योग्यता से आ रहा है। इस प्रकार पढ़ाई करने से यह वर्ग इस माह को उत्कृष्ट बना सकता है। ब्यूटीशियन और सौंदर्य विषयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की पढ़ाई के लिए माहौल सुखद बना हुआ है।

अधिकतर विषयों में सफलता प्राप्ति के लिए यह माह मददगार बना हुआ है।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

जहां तक आपकी शैक्षिक संभावनाओं का सवाल है यह माह आपकी शैक्षिक संभावनाओं के लिए काफी फायदेमंद बना हुआ है, क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए अनुकूल बन रही है। भाषाओं, पत्रकारिता और लेखा विषयों में अध्ययन कर रहे छात्रों को सफल होने में ग्रहों की शुभता का लाभ मिल रहा है। तकनीकी छात्रों की पढ़ाई का स्तर काफी अच्छा रहेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को सामान्य प्रयास से ही सफलता की प्राप्ति हो सकती है। परन्तु आपको यह ध्यान रखना है कि आपको अपने प्रयासों में ईमानदारी बनाए रखनी होगी।

## मई 2026 के लिए फलादेश

आपकी शैक्षिक गतिविधियों के लिए यह माह उपयोगी बना हुआ है, क्योंकि इस माह के सितारें आपको शुभता प्रदान कर रहे हैं। तकनीकी छात्रों के लिए यह बहुत ही उत्पादक अवधि साबित हो सकती है। फिर भी इस वर्ग को अपने पाठ्यक्रम का गहराई से अध्ययन करना होगा। मेहनत और लगन के साथ अध्ययन करने से आप वर्ग में अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे। कलात्मक विषयों में पढ़ाई कर रहे छात्रों को भी समय की शुभता का लाभ मिल रहा है। इसके अतिरिक्त ब्यूटिशियन बनने के इच्छुक छात्रों के लिए यह समय अत्यंत लाभकारी बना हुआ है। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को सामान्य प्रयास करने से ही सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

## जून 2026 के लिए फलादेश

यह माह आपके शिक्षा कार्यों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा, क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं बनी हुई है। माह अवधि में अधिकांश उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आपको काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। फिर भी सफलता बहुत छोटी प्राप्त होने की संभावना बन रही है। विशेष रुप से तकनीकी छात्रों को अपनी कक्षाओं में अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए सामान्य से अधिक कड़ी मेहनत करनी होगी। इस वर्ग के लिए सैद्धान्तिक विषयों में सफलता की उम्मीद बहुत कम बन रही है। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले उम्मीदवारों को अपनी सफलता को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग का सहारा लेना चाहिए।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

शैक्षिक संभावनाओं के लिए इस माह की ग्रह स्थिति विशेष रुप से उपयोगी नहीं बन रही हैं। अतः आप इस माह में अपनी शिक्षा प्रगति के लिए चिंतित हो सकते है। समय की प्रतिकूलता में आपको अधिकांश विषयों में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए काफी अधिक मेहनत

करनी होगी। इस पर भी सफलता की संभावनाएं बहुत कम बन रही है। तकनीकी छात्रों को अपनी रैकिंग बनाए रखने के लिए सामान्य से अधिक मेहनत और संघर्ष करना पड़ सकता है। फिर भी इस वर्ग के लिए अपनी कक्षा में स्थान बनाए रखना एक कठिन कार्य हो सकता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्र वर्ग को अपनी सफलता सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी चाहिए। कोचिंग लेने से परिस्थितियां आपके लिए अनुकूल हो सकती है। भाषाओं, पत्रकारिता और लेखा विषयों में अध्ययन कर रहे छात्रों को इस माह पढ़ाई में अधिक मेहनत के लिए तैयार रहना चाहिए।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपके लिए काफी अनुकूल बन रहे हैं। आने वाले भविष्य को लेकर इस माह की संभावनाएं लाभकारी परिणामों में बदल सकती है। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और ललित कला से जुड़े छात्रों के लिए यह माह सकारात्मक बना हुआ है। इस माह में इस वर्ग को अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता की प्राप्ति हो सकती है। तकनीकी छात्रों को भी प्रयोगात्मक विषयों में अच्छे अंक, स्कोर सफलता के साथ प्राप्त हो सकते है। हालांकि सिद्धान्तिक विषयों के लिए यह स्थिति नहीं बनी हूई है। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को सफलता प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। इसके बाद ही सफलता की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक संकायों के छात्र भी विषयों को जल्द और आसानी से सीखेंगे।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

शिक्षा क्षेत्र में प्रयास करन के लिए इस माह के सितारों की स्थिति अनुकूल नहीं बन रही है। अतः इस अवधि में आप सफल होने के लिए प्रयासरत रहेंगे। माह अवधि में प्रेरणा की कमी बनी हुई है। विपरीत परिस्थिति में यह आवश्यक है कि सफलता के लिए प्रेरित रहें। प्रयासों से आप प्रतिस्पर्धा में बढ़त ले सकते हैं। खुद के प्रयासों और कार्यों के अनुसार आपको स्वप्रेरित रहना होगा। जो प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठते है, उन छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी चाहिए। अधिकांश उद्देश्यों में संघर्ष की स्थिति बने हुई है। तकनीकी छात्रों को विशेष प्रयास करने होंगे। हमेशा की तुलना में यह समय बहुत कठिन बना हुआ है। अतः इन परिस्थितियों में आपको अपने वर्ग में अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए अत्यधिक मेहनत करनी होगी।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह माह आपकी शैक्षिक प्रयासों के लिए आसान नहीं बना हुआ है, क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति नकारात्मक बनी हुई है। तकनीकी छात्रों को अपनी रैकिंग बनाए रखने के लिए सामान्य से अधिक कठिन कार्य करना पड़ सकता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ग को सही अवसर खोजने होंगे और समस्याओं का सामना कौशल के साथ करना होगा। कानून के छात्रों को भी सफल होने के लिए फिर से प्रयास करने पड़ सकते है। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले

छात्र वर्ग को सफलता प्राप्ति के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। वरना इससे आपकी सफलता और विफलता के बीच अन्तर आ सकता है। प्रतिकूल अवधि में आपको धैर्य के साथ दृढ़ रहकर प्रयास करने होंगे।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह की शैक्षिक संभावनाएं आपके लिए आसान नहीं बन रही है, क्योंकि इस माह के सितारें आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रहे हैं। इस माह की ज्यादतर परीक्षाओं के परिणाम उम्मीद से कम हो सकते हैं। तकनीकी छात्रों को अपनी रैंकिंग बनाए रखने के लिए सामान्य की तुलना में बहुत कठिन कार्य करने पड़ सकते हैं। ज्यादातर उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है। तकनीकी विषयों के छात्रों को अपने विषयों में सफल होने के लिए कौशल और निपुणता को बनाए रखना होगा। शिल्प कला के छात्र वर्ग को भी इस प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने कौशल और योग्यता में किसी प्रकार की कमी नहीं करनी होगी। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाले उम्मीदवारों को अतिरिक्त कोचिंग लेना लाभकारी रहेगा। अतिरिक्त कोचिंग से आप नतीजों को अपने पक्ष में कर सकते है।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियों के लिए इस माह के सितारों की भविष्यवाणी विशेष रुप से अनुकूल नहीं बन रही है। इस माह के अधिकांश परीक्षा परिणाम उम्मीद से नीचे रह सकते है। प्रतियोगी परीक्षाओं या अन्य महत्वपूर्ण परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्र वर्ग को अपनी सफलता सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। इंजीनियरिंग और विशेष रुप से बिजली या मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों को रैकिंग बनाए रखने के लिए अत्यधिक कठोर कार्य करने होंगे। अपने उद्देश्यों को साकार करने के लिए इस अवधि में छात्र वर्ग को संघर्ष करना होगा। इसके बाद भी पूर्ण सफलता की संभावनाएं कम बन रही है।

# शिक्षा संबंधी - 2027

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक प्रयासों के लिए इस माह के सितारों की भविष्यवाणी विशेष रुप से अनुकूल नहीं बन रही हैं। माह अवधि में अच्छ्छ परिणाम प्राप्त करने के लिए काफी कठिन संघर्ष करना पड़ सकता हैं। लेखा या कानून के छात्रों को सफलता प्राप्ति के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। ग्रहों की स्थिति आपके लिए नकारात्मक बनी हुई हैं। माह अवधि में शिक्षकों के प्रति आपका स्वभाव हठी हो सकता हैं। यह आपके शैक्षिक जीवन को प्रभावित कर सकता हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। इसके अलावा, प्रतियोगी परीक्षाओं में ब बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी चाहिए। कोचिंग का निर्णय आपके लिए निर्णायक रहेगा।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक संभावनाओं के लिए यह माह सुखद नहीं बन रहा हैं क्योंकि इस माह के ग्रहों की स्थिति अनुकूल नहीं बनी हुई हैं। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, भाषाओं, पत्रकारिता और जन-संचार के अन्य रूपों के छात्रों को अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं। माह अवधि में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के लिए प्रेरणा की कमी बनी हुई हैं। प्रतिकूल अवधि में आप स्वयं से ही प्रेरित रहेंगे। इसके अलावा किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले व्यक्तियों को अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती हैं।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियों के लिए इस माह के सितारों की स्थिति सकारात्मक नहीं बन रही हैं। माह अवधि में शिक्षा प्राप्त करना आपके लिए सहज नहीं होगा। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, और अन्य ललित कलाओं का अध्ययन कर रहे छात्रों को उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपने प्रयासों को दोगुणा करना पड़ सकता है। फिर भी प्रगति के लिए ग्रह स्थिति संतोषजनक नहीं बनी हुई है। भाषा, पत्रकारिता और जन-संचार के अन्य रूपों में शिक्षा ग्रहण

कर रहे छात्र वर्ग को लगन और मेहनत अधिक करनी होगी। प्रतिकूल परिस्थिति में आपको स्वयं को स्वप्रेरित रहना होगा। शिक्षकों के प्रति आपका स्वभाव हठी हो सकता हैं। इस अवधि में आपको क्षमता और कौशल को विकसित करना होगा।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियदं के पक्ष से यह माह प्रतिकूल बना हुआ है, क्योंकि माह अवधि के सितारें आपके लिए सुखद नहीं बने हुए हैं। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, और अन्य ललित कला के छात्रों को उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आपको अपने प्रयासों को दोगुना करना होगा। इस पर भी परिणाम संतोषजनक न रहने की संभावना बन रही हैं। भाषा, पत्रकारिता और जन संचार क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे छात्र वर्ग के लिए भी परिस्थितियां कुछ इसी प्रकार की बनी हुई हैं। मनोकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए आपको अपने कार्यो से स्वप्रेरित रहना होगा। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के प्रति हठी रवैया भी आपको बदलना होगा। इस प्रतिकूल परिस्थिति में आप अपनी क्षमता और कौशल को विकसित करें।

## मई 2027 के लिए फलादेश

इस माह में शिक्षा क्षेत्र में सफल होने के लिए आपको अत्यधिक संघर्ष करना होगा। इसके बाद ही उद्देश्यों की प्राप्ति संभव नहीं होगी क्योंकि इस माह अवधि में सितारों की स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं बनी हुई है। समय की प्रतिकूलता में आपको आत्मप्रेरित भी होना होगा। तथा स्वयं के हठ स्वभाव को दूर करना होगा। मुश्किल समय में सहयोग लेना और देना दोनों आपके लिए उत्तम रहेगा। विषयों में सफलता का स्कोर प्राप्त करने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। फिर भी प्रयास के अनुरुप प्रगति की संभावनाएं नहीं बन रही हैं। कलात्मक विषयों में पढ़ाई कर रहे छात्रों को अपनी जादू दिखाने के लिए ग्रहों का सहयोग प्राप्त नहीं हो पाएगा। किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को अपनी सफलता को सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी।

## जून 2027 के लिए फलादेश

सितारों की स्थिति शैक्षिक प्रयासों के लिए इस माह अवधि में अनुकूल नहीं बन रही है। तकनीकी छात्रों को सामान्य से अधिक कठिन कार्य मिल सकता है, जिसके परिणामस्वरुप इनका कौशल स्तर औसत से नीचे रहेगा। लेकिन दृढ़ संकल्प के साथ अतिरिक्त प्रयास करने से स्थिति को कुछ हद तक बेहतर किया जा सकता हैं। भाषाओं और पत्रकारिता और किसी भी प्रकार के लेखाकर्म में अध्ययनरत छात्रों के लिए परिस्थितियां प्रतिकूल बनी हुई हैं। किसी प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती हैं। इन परिस्थितियों में कोचिंग का निर्णय आपके लिए निर्णायक साबित हो सकता हैं।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियों के पक्ष से यह माह आपके लिए सकारात्मक नहीं बना हुआ है। इस माह अवधि में परिस्थितियां शिक्षा प्राप्ति में बाधक बन सकती हैं। प्रतिकूल समय में आपको स्वंप्रेरित होना होगा और अपने व्यवहार से हठ को भी दूर करना होगा। कुछ भी सीखने एक लिए समय आपके लिए मुश्किल बना हुआ हैं। आपको अपने व्यवहार से इसे नियंत्रित करना होगा। अन्यथा आपका व्यवहार ही आपकी प्रगति में बाधक बन सकता हैं। प्रतियोगी परिक्षा में बैठने वाले छात्र वर्ग को सफलता प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग की सहायता लेनी पड़ सकती हैं। इसके अलावा भाषा, पत्रकारिता और कला विषयों में अध्ययनशील छात्र वर्ग को अपने उद्देश्यों को पाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक पक्ष से इस माह के सितारों का संयोजन आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बना हुआ हैं। अतः इस अवधि में शिक्षा अध्ययन करना बहुत धीमा और थकाऊ हो सकता हैं। यह संभावित है कि समय की प्रतिकूलता में अधिकांश विषयों में आप अपने उद्देश्यों को पाने में सफल न हो पायें। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य ललित कलाओं के छात्र वर्ग के लिए भी स्थिति सुखद नहीं बनी हुई हैं। भाषा और पत्रकारिता की पढ़ाई कर छात्रों को अनुकूल परिणम प्राप्त करने के लिए स्वप्रेरित होना होगा और अपने को हठी होने से बचाना होगा। वरना आपमें नकारात्मक व्यवहार का विकास हो सकता हैं। अपनी शैक्षिक क्षमता को जानने के लिए आप अपने कौशल को विकसित करें। किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को अतिरिक्त कोचिंग लेनी चाहिए।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

शिक्षा के पक्ष से इस माह के सितारों का संयोजन आपके लिए अनुकूल नहीं बन रहा हैं। ग्रहों का शुभ सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपको इस अवधि में स्वप्रेरित रहना होगा क्योंकि इस अवधि में आपमें प्रेरणा की कमी बनी हुई हैं। माह अवधि के आपके प्रदर्शन में यह प्रतिबिंबित हो सकता हैं। अपने कार्यो से हे आपको प्रेरित होना होगा। इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, चिकित्सा, भाषाओं, पत्रकारिता और जन संचार के अन्य रूपों के छात्र वर्ग को सर्वप्रथम मानसिक रुप से तैयार होकर सफलता प्राप्ति के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं। परिस्थितियों की मांग कुछ इस प्रकार की बन रही हैं।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

शैक्षिक प्रयासों के लिए सितारों का संयोजन विशेष रुप से अनुकूल नहीं बन रहा हैं। समय की प्रतिकूलता आपमें नकारात्मक प्रभाव ला सकती हैं। ऐसे में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अपने व्यवहार को आत्म मुखर और जुझारु बनाना होगा। इस समय में कुछ सीखना आपके लिए काफी मुश्किल साबित हो सकता हैं। आपको लगातार प्रयासों करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करना चाहिए। माह अवधि में अपने लक्ष्यों तक पहुंचना आपके लिए

संघर्ष भरा हो सकता हैं। लेखा या कानून के क्षेत्र के छात्रों का अध्ययन कार्य भी इस अवधि में प्रभावित हो सकता हैं। आपकी प्रगति विभिन्न समस्याओं से बाधित हो सकती हैं। किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को इस अवधि में अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती हैं। इस अवधि में कोचिंग लेना आपकी सफलता को सुनिश्चित कर सकता हैं।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों की स्थिति आपके लिए नकारात्मक बनी हुई हैं। अतः इस अवधि में आपको शिक्षा ग्रहण करते हुए काफी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। अपने अधिकांश उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आपको काफी संघर्ष करना पड़ सकता हैं। उच्चतर शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में भी समस्याओं की स्थिति बनी हुई हैं। इसलिए उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को अध्ययन कार्यो में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता हैं। एकाउंटेंसी, पत्रकारिता और जन संचार के अन्य रुपों में अध्ययन कर रहे छात्र वर्ग के लिए भी कठिनाईयों की स्थिति बनी हूई हैं। किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती हैं। यदि यह वर्ग सफल होना चाहता है तो इसे कड़ी मेहनत करनी होगी। माह अवधि आपके लिए नकारात्मक बनी हुई है इसलिए इस समय में आपको धैर्य के साथ दृढ़ होकर प्रयास करने होंगे।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों की भविष्यवाणी आपके लिए विशेष रुप से लाभप्रद नहीं बन रही हैं। अतः यह अवधि आपकी शैक्षिक संभावनाओं के लिए बहुत अच्छी नहीं बन रही हैं। अपने अधिकांश उद्देश्यों को पाने के लिए संघर्ष की स्थिति बन सकती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत कठिन बना हुआ हैं। सफलता प्राप्ति के मार्ग में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्र वर्ग को अपने उद्देश प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती हैं। कोचिंग का निर्णय आपके लिए निर्णायक रहेगा। लेखा, पत्रकारिता और जन-संचार के अन्य रुपों के छात्र वर्ग के लिए भी ग्रहों की स्थिति सुखद नहीं बन रही हैं।

# शिक्षा संबंधी - 2028

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

## जनवरी 2028 के लिए फलादेश

शैक्षिक संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की भविष्यवाणी आपके लिए विशेष रुप से अनुकूल नहीं बन रही हैं। अधिकांश विषयों को जल्द सीखने के लिए आपके मन में आवश्यक स्पष्टता की कमी रहेगी। प्रयासों के अनुरुप सफलता प्राप्त न हो पाने पर आप कुछ नकारात्मक और उदासीन हो सकते हैं। आपका व्यवहार भी कुछ हठी और आत्म मुखर हो सकता है। समय की शुभता का सहयोग प्राप्त न हो पाने के कारण इस अवधि में सीखना आपके लिए मुश्किल होगा। जहां तक संभव हो आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की कोशिश करनी चाहिए। आपके शैक्षिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि आप शांत मन से अध्ययन कार्य करें। उच्च शिक्षा प्राप्ति में लगे छात्रों के लिए इस अवधि में अनेक समस्याएं बनी हुई हैं। विशेष रुप से प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने आले छात्रों को अपनी सफलता निश्चित करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी पड़ सकती है।

## फरवरी 2028 के लिए फलादेश

इस माह में आपकी शैक्षिक गतिविधियां उतार-चढ़ाव युक्त हो सकती हैं क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बनी हुई हैं। माह अवधि में आपको शैक्षिक कार्यो में प्रेरणा की कमी का अनुभव हो सकता हैं। इस समय में आपको बड़े पैमाने पर प्रगति प्राप्त करने के लिए स्वयं को उदासीन होने से बचाना होगा। प्रेरणा आपके जीवन को प्रतिकूल समय में शुभता प्रदान कर सकती हैं। दृढ़ संकल्प के साथ आप इस उदासीनता को दूर करें। तकनीकी छात्रों, और चिकित्सा के छात्रों को अपनी रैंकिंग को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं। कला विषयों का अध्ययन कर रहे व्यक्तियों के लिए यह समय कठिन बना हुआ हैं। प्रतियोगी परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं।

## मार्च 2028 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियों के संदर्भ से यह माह आपके लिए एक उत्कृष्ट माह बना हुआ हैं क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति आपको शुभफल प्रदान करेंगी। ललित कला के छात्रों

के लिए यह माह एक यादगार माह साबित होगा। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य कला के छात्र माह अवधि की शुभता से प्रेरित हो, रचनात्मक प्रयासों के द्वारा अपने कौशल का जादू दिखाने में सफल रहेंगे। यह वर्ग अच्छे स्कोर के साथ उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता हैं। इस समय में आपका मानसिक दृष्टिकोण सकारात्मक बना हुआ हैं। ऐसे में विषयों को सीखने की गति सरल और तीव्र रहेंगी। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले वर्ग के लिए सफलता की संभावनाएं उत्कृष्ट बनी हुई हैं, बशर्ते कि आप सामान्य प्रयास भी करते रहें।

## अप्रैल 2028 के लिए फलादेश

शैक्षिक गतिविधियों के पक्ष से यह माह आपके लिए प्रतिकूल बना हुआ हैं क्योंकि इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए सुखद नहीं बनी हुई हैं। माह अवधि में अधिकांश लक्ष्यों को प्राप्त करने के बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ सकता हैं। इस समय के ग्रहों की स्थिति आपके लिए नकारात्मक बनी हुई हैं। शिक्षकों के प्रति भी आपका स्वभाव कुछ हठी और आत्ममुखर हो सकता हैं। इस प्रकार का स्वभाव लेकर कुछ सीखना मुश्किल होगा। आपको अपनी इस प्रवृत्ति को बदलने का प्रयास करना चाहिए। कला, लेखा, और पत्रकारिता के क्षेत्र में अध्ययन करने वाले छात्र वर्ग को अपने वर्ग या समूह में रैकिंग बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। प्रतिकूल परिस्थितियों में आपको अपने प्रयासों में दृढ़ता बनाए रखनी होगी।

## मई 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति के अनुसार यह समय आपकी शैक्षिक संभावनाओं के लिए काफी उपयोगी रहेगी। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य कला विषयों में पढ़ाई कर रहे छात्रों को अच्छ्‌ स्कोर के साथ उल्लेखनीय सफलता की प्राप्ति हो सकती हैं। अपने अध्ययन कार्यो के जादू से आप अपनी योग्यता सिद्ध करने में सफल रहेंगे। ब्यूटीशियन और होटल प्रबंधन के छात्रों को समय की शुभता का लाभ प्राप्त होगा। विषयों को जल्द और आसानी से सीखने का मानसिक दृष्टिकोण इस अवधि में इस वर्ग का बना हुआ हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को ईमानदारी के साथ प्रयास करने होंगे। इसके बाद ही यह वर्ग अपने उद्देश्यों में सफल हो सकता है।

## जून 2028 के लिए फलादेश

जहां तक आपकी शैक्षिक गतिविधियों का सवाल है यह माह आपके लिए काफी अनुकूल बना हुआ है। इस अवधि के सितारों की स्थिति सुखद बनी हुई हैं। तकनीकी छात्र अपने प्रदर्शन से संतुष्ट रहेंगे। सामान्य प्रयास और अपने कौशल से कुछ अच्छा स्कोर प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता अर्जित करने में सफल हो सकते हैं। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य ललित के छात्र अपने प्रयास और परिणामों से प्रसन्न रहेंगे। कुछ नये विषयों में उत्तम सफलता प्राप्त हो सकती हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाला छात्र वर्ग सामान्य प्रयास से ही अपने उद्देश्य को पाने में सफल हो सकता है।

## जुलाई 2028 के लिए फलादेश

इस माह अवधि के सितारों का संयोजन आपके लिए शुभ फलदायक बना हुआ है। अतः इस माह में शैक्षिक प्रयासों के द्वारा उद्देश्यों को पाना सहज होगा। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य कला विषयों में अध्ययन कर रहे छात्रों की रचनात्मक गतिविधियों का जादू सराहना और सफलता दोनों दिला सकता है। माह अवधि में आप निश्चित स्कोर प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता अर्जित कर सकते हैं। पत्रकारिता और लेखा के छात्र अपने पाठ्यक्रमों में अच्छा प्रदर्शन करने में सफल रहेंगे। मानसिक संकायों को शीघ्र और आसानी से सीखेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले लोगों को ईमानदारी के साथ प्रयास कर निश्चित सफलता की प्राप्ति हो सकती हैं।

## अगस्त 2028 के लिए फलादेश

अपनी शैक्षिक कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए इस माह के सितारों का संयोजन सकारात्मक नहीं बन रहा है। अधिकतर कार्यो में नकारात्मक स्थिति बनी हुई हैं। माह अवधि में आपका व्यवहार आत्म मुखर और हठी हो सकता हैं। सीखने के लिए यह समय आपके लिए मुश्किल साबित हो सकता हैं। माह अवधि में आपको संयम बरतना होगा और अपनी इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखना होगा। कला विषयों में अध्ययन कर रहे छात्रों के लिए समय कठिन बना हुआ हैं। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। प्रतियोगी परीक्षाद्मं में बैठने वाले छात्रों को सफल होने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। इस समय की परिस्थितियों में यह आपके लिए आवश्यक रहेगा।

## सितम्बर 2028 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों की भविष्यवाणी आपके शैक्षिक कार्यो के लिए विशेष रुप से अनुकूल नहीं बन रही हैं। अतः इस अवधि में आप अपनी शैक्षिक संभावनाओं को लेकर चिंतित रहेंगे। शिक्षा क्षेत्र में शीर्ष पर बने रहने के लिए आपको प्रेरणा की कमी महसूस होगी। शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में बढ़त लेने के लिए आपको प्रयासों को बढ़ाना होगा। वरना आपके परिणाम इसके प्रभाव क्षेत्र में आ सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेना लाभकारी रहेगा। इस अवधि में कोचिंग का निर्णय आपकी सफलता और विफलता के बीच के अंतर को दूर करेगा। तकनीकी छात्रों और चिकित्सा के छात्रों को अपनी रैंकिंग बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ सकते हैं। कला विषयों के छात्र वर्ग को भी अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बहुत अधिक मेहनत करनी होगी।

## अक्तूबर 2028 के लिए फलादेश

यह माह शिक्षा कार्यो के लिए बेहद फायदेमंद बना हुआ हैं। जहां तक आपकी शैक्षिक संभावनाओं का संबंध है, इस माह के सितारें आपको शुभ फल प्रदान कर रहे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को अच्छे स्कोर प्राप्त करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इस वर्ग

के द्वारा चुने गए क्षेत्रों में प्रदर्शन अच्छा रहेगा। कानून के छात्रों का प्रदर्शन इस अवधि में संतोषजनक रहेगा। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य कला के छात्रों का कार्य प्रदर्शन काफी अच्छा हो सकता हैं। यह वर्ग इस अवधि में अच्छे स्कोर के साथ उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकता है। प्रतियोगी परीक्षा के उम्मीदवारों को सामान्य प्रयासों से ही अपने लक्ष्य प्राप्त होने की संभावना बन रही हैं।

## नवम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपकी शैक्षिक गतिविधियों के लिए काफी फायदेमंद बनी हुई हैं। नृत्य, नाटक, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य कलाओं में अध्ययन कर रहे छात्र वर्ग के लिए यह समय उत्तम सिद्ध हो सकता हैं। माह अवधि में यह वर्ग अपने रचनात्मक प्रयासों से अपनी योग्यता का जादू बिखेरने में सफल रहेगा। यह समय आपको कुछ यादगार सफलता दे सकता हैं। शिक्षा प्राप्त करने के लिए यदि आप मानसिक रुप से तैयार रहेंगे तो आप आसानी से और जल्द सीख सकेंगे। मानसिक संकायों के छात्रों के लिए भी समय की शुभता बनी हुई हैं। अपना भविष्य निर्माण करने में यह आपके लिए बड़ी मदद साबित हो सकता हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्र भी सफलता प्राप्ति के लिए तत्पर रहेंगे। फिर भी समय की शुभता को बनाए रखने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी।

## दिसम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह अवधि में शिक्षा क्षेत्र में आपकी गतिविधियों के पक्ष से सितारों की स्थिति सुखद नहीं बनी हुई हैं। अधिकांश विषयों को सीखते समय आपके मन में आवश्यक स्पष्टता की कमी का अनुभव हो सकता हैं। इसके अतिरिक्त आपमें कुछ नकारात्मक प्रभाव भी अधिक रहेगा। जिसके कारण इस समय में आपका व्यवहार कुछ आत्म मुखर और हठी हो सकता हैं। मजबूती के साथ आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना चाहिए। कला के छात्रों के लिए भी परिस्थितियां कुछ इसी प्रकार की बनी हुई हैं। इस वर्ग के छात्रों के लिए यह समय विशेष रुप से कठिन हो सकता हैं तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के उम्मीदवारों को सफलता सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग लेनी होगी। इससे आप सफलता और विफलता के बीच का अंतर दूर कर सकते हैं।

# कार्य क्षेत्र - 2026

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारणआप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमे आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगेउसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

सितारों का संयोजन इस अवधि में आपके पेशेवर जीवन के लिए बहुत उज्जवल नहीं बन रहा हैं। माह अवधि में कड़ी मेहनत करने पर भी आपको पुरस्कार प्राप्ति की संभावनाएं बहुत कम बन रही हैं। यहां तक की अपने सभी प्रयासों के बाद भी आप उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्त नहीं कर पायेंगे। अपने सामाजिक स्तर को बनाए रखने के लिए आपको अपने श्रमिकों का शोषण करने से बचना चाहिए। आपको अपने स्वभाव की इस कमी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद ही आपका विकास हो सकता हैं। तथा इससे आप अप्रिय स्थिति से बच सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस अवधि में उत्तर दिशा में यात्रा करने से कुछ लाभ प्राप्ति की संभावनाएं बन सकती हैं। अन्य दिशाओं में सौदों के लिए की गई यात्राएं विफल हो सकती हैं।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

व्यावसायिक संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बनी हुई हैं। माह अवधि के ग्रहों की भविष्यवाणी आपके लिए सुखद नहीं रहेंगी। इस अवधि में अधीनस्थों का सहयोग प्राप्त करने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। अधीनस्थों के साथ संबंध मधुर बनाए रखने में आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। इस वर्ग के मन में आपके खिलाफ किसी भी प्रकार का असंतोष समय को प्रतिकूल बना सकता हैं। यह माह व्यावसायिक यात्राओं के पक्ष से शुभ नहीं बना हुआ हैं। फिर भी पूर्व दिशा में यात्रा करना अवधि विशेष में आंशिक रुप से शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता हैं।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

पेशेवर संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की भविष्यवाणी काफी निराशाजनक बनी हुई हैं। आपके अधीनस्थ और आपके कार्यकर्ताओं के मध्य आपके खिलाफ रोष प्रकट हो सकता हैं। अधीनस्थों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने से आप विपरीत परिस्थितियों

को अपने नियंत्रण में रखने में सफल हो सकते हैं। ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न न हो इसके लिए आपको इस वर्ग का शोषण करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने का प्रयास करना चाहिए। दक्षिण दिशा में यात्रा करना आपको कुछ प्रतिशत लाभ दे सकता हैं। हालांकि परिस्थितियों को बेहतर करने के लिए आपको स्वयं प्रयास करने होंगे। अन्यथा यह आपमें असुरक्षा और असंतोष की भावना प्रभावित कर सकता हैं।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि की व्यावसायिक संभावनाओं के लिए सितारों की स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं बनी हुई हैं। अपने अधीनस्थों का शोषण करने के स्वभाव पर आपको अंकुश लगाना होगा। अपने नीचे कार्य करने वाले वर्ग के साथ संबंध मधुर रखने से आपकी व्यावसायिक उन्नति को बढ़ावा मिलेगा। अधीनस्थों के अधिकारों का ध्यान रखने से समय की प्रतिकूलता को कम कर सकते हैं। माह अवधि में व्यावसायिक सौदों के लिए यात्रा करना शुभ फलदायक नहीं बन रहा हैं। फिर भी इस माह में पश्चिम दिशा में यात्रा करना आपको कुछ प्रतिशत लाभ दे सकता हैं। संपर्क आपके लिए बहुत मददगार साबित नहीं होंगे। बड़े सौदे तय करने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी।

## मई 2026 के लिए फलादेश

पेशेवर जीवन में उन्नति के पक्ष से इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए सुखद बन रही हैं। अतः इस माह में आपको अपने व्यावसायिक क्षेत्रों से पर्याप्त लाभों की प्राप्ति हो सकती हैं। अपना ध्यान अपने ललक्ष्यों पर केन्द्रित रखने से स्थिति ओर बेहतर हो सकती हैं। अपने अधीनस्थों की सेवाओं से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में आप इस अवधि में समर्थ रहेंगे। समय की शुभता का कुशलता और योग्यता से प्रयोग करना आपके लाभ के अवसरों को बढ़ाएगा। इस अवधि में आपको अपने निम्न वर्ग का शोषण करने से बचना होगा। आपको इसे रोकने के पर्याप्त प्रयास करने होंगे। इसके अलावा इस अवधि की सबसे लाभप्रद दिशा आपके लिए उत्तर दिशा बन रही हैं। समय की शुभता में व्यावसायिक कार्यो को पूर्ण करने के लिए आप इस दिशा को यात्रा के लिए प्रयोग कर सकते हैं। किसी अनुभवी व्यक्ति का सहयोग भी आपके लाभों के लिए अनुकूल साबित हो सकता हैं।

## जून 2026 के लिए फलादेश

आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए इस माह की उत्कृष्टता बनी हुई हैं। इस माह के सितारों की स्थिति आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए शुभ बन रही हैं। ग्रहों की शुभता प्राप्त होने से आपकी नेतृत्व क्षमता का विकास होगा और आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग और अधीनस्थों की सेवाओं से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकता हैं। माह अवधि में आप पर कार्य भार की

अधिकता न रहने की संभावनाएं बन रही हैं। इसके बावजूद आप उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्त करने में सफल हो पायेंगे। किसी बूढ़े व्यक्ति का सहयोग या सेवा आपके लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकती हैं। ऐसे व्यक्ति के माध्यम से कुछ बड़े कार्य पूर्ण होंगे। यात्रा करना भी आपके लिए उपयोगी रहेगा। माह अवधि की सबसे लाभप्रद दिशा पूर्व दिशा हैं। विशेष कार्यो के लिए आप इस दिशा का चयन कर सकते है।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस माह की ग्रह स्थिति के अनुसार यह माह आपके पेशेवर जीवन के लिए सौहार्दपूर्ण बन रही हैं। इस अवधि में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना आपके लिए काफी आसान रहेगा। किसी बूढ़े व्यक्ति या महिला सहयोगी के द्वारा आपकी व्यावसायिक संभावनाओं को बढ़ावा मिल सकता हैं। इनकी सेवाएं आपके लिए बेहद फायदेमंद सिद्ध हो सकती हैं। माह अवधि में आपको कठोर मेहनत करनी पड़ सकती हैं। उम्मीद के अनुरुप आपको इस समय में लाभ प्राप्तियां हो सकती हैं। इस अवधि में यात्राओं का परिणाम आपको लाभों के रुप में प्राप्त हो सकता हैं। दक्षिण दिशा में यात्रा करना आपके लिए विशेष रुप से उपयोगी साबित हो सकता हैं। अपने अधिनस्थों की सेवाओं से आप अधिकतम लाभ प्राप्त कर पायेंगे। यह इस अवधि की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं बन रही हैं। अपने अधीनस्थों या अपने नीचे कार्य करने वाले वर्ग के साथ बिगड़ते संबंध अव्यवस्था का कारण बन सकते हैं। इस वर्ग का आपके द्वारा किसी भी प्रकार का शोषण आपके लिए संकट की स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं। इस प्रकार की अप्रिय स्थिति से बचने के लिए आपको अधीनस्थों के अधिकारों का कठोरता से पालन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस अवधि में पश्चिम दिशा में यात्रा करना आपके लाभों में मामूली बढ़त दे सकता हैं। अन्य दिशाओं में यात्रा करने से लाभ प्राप्ति की संभावनाएं नहीं बन रही हैं। माह अवधि में आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती हैं और आपके प्रयासों का फल आपको पूर्ण रुप से प्राप्त नहीं हो पायेगा। इस समय में संपर्क भी आपके ज्यादा काम नहीं आ पायेंगे।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह में बन रही ग्रहों की स्थिति आपके पेशेवर जीवन के लिए काफी निराशाजनक बन रही हैं। शीघ्र लाभ प्राप्त करने के लिए आप कानून से बाहर जाकर कार्य करने की कोशिश कर सकते हैं। माह अवधि में अनियंत्रित प्रतिकूल स्थितियां बनी हुई हैं। इसलिए आपको इस अवधि में इस प्रकार की गतिविधियों से बचने की कोशिश करनी चाहिए। अधीनस्थों का आपके द्वारा शोषण हो सकता हैं। अपने स्वभाव की इस कमी को समय रहते दूर करने का

प्रयास करना चाहिए। अन्यथा यह वर्ग आपका कड़ा विरोधी हो सकता हैं और आपके लिए अत्यंत अप्रिय स्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। उत्तर दिशा में यात्रा करने से इस अवधि में आपको कुछ लाभ प्राप्त होने की संभावनाएं बन रही हैं। अन्य दिशाओं में यात्रा करने से व्यावसायिक सौदों में सफलता के योग नहीं बन रहे हैं।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों का योग आपके लिए बहुत शुभ फलदायक बन रहा हैं। अतः इस माह में आपको अपने पेशेवर जीवन को बेहतरीन करने के अनेक अवसर प्राप्त हो सकते हैं। शैक्षिक वर्ग के कई प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ जुड़ना आपके लिए विशेष रुप से उपयोगी साबित हो सकता हैं। माह अवधि में किए गए कार्यो से अनुकूल लाभ प्राप्तियां होने से आप संतुष्ट रहेंगे। यह आपको बड़ा सौदा तय करने में सकारात्मक सहयोग करेगा। माह अवधि की यात्राएं आपके लिए काफी उपयोगी साबित हो सकती हैं। माह अवधि की सबसे लाभप्रद दिशा पूर्व दिशा हैं। आपके व्यावसायिक जीवन को आगे बढ़ाने के लिए किसी बूढ़े का सहयोग आपकी लाभ वृद्धि के लिए एक अलग संभावना बन सकती हैं। कुल मिलाकर यह माह एक लाभकारी माह बना हुआ हैं। इस माह में आपको पेशे में उन्नति करने के अनेक अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रहों की स्थिति आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए बहुत अच्छी बन रही हैं। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग और अधीनस्थों की सेवाओं से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में आपको अधिक कठिनाई नहीं होगी। अधीनस्थों से निपटने में आपको अपनी विशेष शैली का प्रयोग करना होगा। यह माह आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करने वाला माह साबित हो सकता हैं। समय की शुभता में आपको पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। अनुकूल लाभ प्राप्तियां होने से कार्य भार की अधिकता आपको बोझ नहीं लगेंगा। किसी बूढ़े व्यक्ति के सहयोग से आपका व्यावसायिक विस्तार होने की संभावना बन रही हैं। इसके अतिरिक्त माह अवधि में दक्षिण दिशा की यात्रा करना भी आपके लिए लाभप्रद साबित हो सकता हैं। यह दिशा आपके लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकती हैं।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों की स्थिति आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए बहुत उत्साहजनक नहीं बनी हुई हैं। इस अवधि में आपके वरिष्ठ अधिकारी और उच्च स्तरीय प्रबन्धन वर्ग भी आपके लिए बहुत मददगार साबित नहीं होगा। काफी कड़ी मेहनत करने के बाद भी पुरस्कार अपेक्षाकृत अल्प ही रहेंगे। आप चाहे व्यवसाय में हो या नौकरी में दोनों ही स्थानों में आपको कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता हैं। अपनी क्षमता का उपयोग करते हुए

आपको ऐसे विरोधों से बचना होगा। आवश्यक हो तो आप इसके लिए उपचारात्मक कार्यवाही भी कर सकते हैं.

# कार्य क्षेत्र - 2027

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस माह में सितारों की स्थिति आपके पेशेवर जीवन की उन्नति को बहुत प्रोत्साहित नहीं कर रही हैं। आपके अपने वरिष्ठ अधिकरियों के साथ गंभीर मतभेद सामने आ सकते हैं। यह स्थिति आपको तनाव देगी। इस प्रकार की स्थिति से बचने के लिए आपको धैर्य और सहनशीलता से काम लेना होगा। साथ ही इस समय में आपको कड़ी मेहनत करने की कोशिश करनी चाहिए। बहुत अधिक कड़ी करने पर आप कोई अच्छा सौदा तय करने में सफल हो सकते हैं। फिर भी इस अवधि में उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्तियों की संभावना बहुत कमजोर बन रही हैं। शैक्षिक वर्ग और प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करना आपको आंशिक रुप से कुछ लाभ और मानसिक संतुष्टि देगा। कुल मिलाकर इस माह में अनुकूलता के योग बहुत कम बन रहे हैं।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का संयोजन आपकी व्यावसायिक संभावनाओं को कोई प्रोत्साहन नहीं दे रहा हैं। अतः यह माह आपके लिए शायद ही अनुकूल रहेगा। माह अवधि में आप के द्वारा किए गए प्रयास विफल हो सकते हैं। यह आपके लिए काफी निराशाजनक रहेगा। उम्मीद के अनुरुप प्राप्तियां न होने से आपमें हताशा भाव प्रभावी हो सकता हैं। माह अवधि में कड़ी मेहनत करने के बावजूद परिणाम आपके पक्ष में बहुत अधिक नहीं रहेंगे। माह अवधि में यात्राएं होने की संभावना बन रही हैं। यात्राओं से भी मामूली लाभ प्राप्तियां होने की उम्मीद बन रही हैं। तथा आपके पेशेवर जीवन में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती हैं। सीखने वाले वर्ग और आध्यात्मिक स्तर के व्यक्तियों के साथ जुड़ना आपको संतुष्टि दे सकता हैं।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

पेशेवर उन्नति के लिए माह अवधि के सितारों की स्थिति बहुत फायदेमंद नहीं बनी हुई हैं। व्यावसायिक पक्ष से यह समय आपके लिए बहुत उत्तम नहीं बना हुआ हैं। अतः इस माह में आपको अपने पेशेवर जीवन को लेकर कुछ चिंताएं रह सकती हैं। इस माह के दौरान कड़ी मेहनत करने के बावजूद उम्मीद के अनुकूल लाभ प्राप्त न होने की संभावनाएं बन रही हैं। यह स्थिति स्वाभाविक रुप से आपको निराश कर सकती हैं। इस माह में आपको आलस्य का त्याग कर परिश्रम से काम लेना होगा। कार्यक्षेत्र का वातावरण आपके लिए बहुत सुखद नहीं बना हुआ हैं। फिर भी आध्यात्मिक स्तर और कुछ सीखने वाले वर्ग का सहयोग आपके लिए अच्छा रहेगा। धैर्य और दृढ़ता से ऐसी परिस्थितियों का सामना करें।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का संयोजन आपकी पेशेवर उन्नति के लिए बहुत अनुकूल नहीं बना हुआ हैं। माह अवधि में आपको कड़ी मेहनत करने के बाद भी उम्मीद के अनुरुप सामान्य से बहुत कम लाभ प्राप्त होने की संभावना बन रही हैं। इसका अर्थ यह है कि आपके पेशेवर जीवन में अत्यधिक उतार-चढ़ाव बने हुए हैं। बचत की स्थिति इस अवधि में सामान्य बनी हुई हैं। कई विद्वान लोगों के साथ बातचीत आपको संतुष्टि प्रदान करेगी। सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में अपने योगदान में सुधार करें।

## मई 2027 के लिए फलादेश

इस माह में पेशेवर उन्नति के लिए आपको काफी उपयोगी अवसर प्राप्त होने की संभावनाएं बन रही हैं। ग्रह एवं नक्षत्रों की स्थिति आपके लिए सुखद बनी हुई हैं। इस शुभ समय का आप कुशलता के साथ प्रयोग करें। माह अवधि में कार्यस्थल का माहौल तनाव और आंतरिक राजनीति विषयों से पूरी तरह से मुक्त रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र को विदेश से जोड़ने और प्रत्याशित लाभ प्राप्ति करने में यह समय आपको सहयोग कर रहा हैं। इसके अतिरिक्त इस अवधि में सामाजिक या धार्मिक कार्यों, लेखकों और इसी प्रकार का कार्य करने वाले व्यक्तियों के साथ जुड़ना आपके लिए विशेष लाभप्रद साबित हो सकता हैं। आध्यात्मिक स्तर के और सीखने वाले वर्ग का सहयोग आपको लाभ और संतोष दोनों देगा। कुल मिलाकर यह माह आपके लिए एक उत्कृष्ट माह रहेगा। इस माह में आप अनेक उपलब्धियां हासिल करने में सफल रहेंगे।

## जून 2027 के लिए फलादेश

इस माह में सितारों की गतिविधियां आपके लिए लाभदायक बनी हुई हैं। अतः अवधि विशेष में आपकी व्यावसायिक उन्नति के भरपूर अवसर बने हुए हैं। कार्यक्षेत्र का माहौल अत्यंत सुखद होने के कारण आपके लिए तनाव मुक्त बना हुआ हैं। इस समय में आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्तियां होने की संभावना बन

रही हैं। समय की अनुकूलता में आप अपने नेतृत्व गुणों से अपने सभी कृत्यों को कुशलता के साथ करने में सफल रहेंगे। यह आपके कार्यो को गति प्रदान करेगा। आध्यात्मिक स्तर के व्यक्तियों और सीखने वाले वर्ग के प्रयास से आपका जीवन बेहतर होकर समृद्ध होगा। इस प्रकार की गतिविधियों के लिए यह समय बहुत सुखद और वांछनीय बना हुआ हैं। उद्देश्यों को प्राप्त करने के पक्ष से यह माह आपके लिए एक उत्कृष्ट माह बना हुआ हैं।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस माह में पेशेवर जीवन में उन्नति करने के पक्ष से सितारों का संयोजन आपके लिए अनुकूल बना हुआ हैं। इस अवधि में आप पर कार्य भार हल्का रहेगा। इस समय में आपके द्वारा यात्रा होने की संभावना बन रही हैं। सफलतापूर्वक अपने व्यवसाय को विदेश से जोड़ना और उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्त करना आपके लिए इस समय में सहज रहेगा। लेखन, चित्रकला और संगीत क्षेत्र और अन्य ललित कला से जुड़े वर्ग को इस समय में सराहना और लाभ दोनों की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र का वातावरण आपके लिए उत्कृष्ट बना हुआ हैं। अतः इस अवधि में आपका कार्यस्थल तनाव या राजनीति से मुक्त होगा। आपको अपना जीवन समृद्ध करने के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे। सीखने और आध्यात्मिक स्तर के व्यक्तियों के साथ जुड़ना आपके लिए लाभदायक साबित हो सकता हैं। सामाजिक या धार्मिक कार्यो में आपका योगदान आपके लिए विशेष रहेगा।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपके पेशेवर जीवन के लिए काफी अनुकूल बनी हुई हैं। कार्यस्थल का माहौल सौहार्दपूर्ण होने के कारण आप स्वयं को तनाव से पूरी तरह से मुक्त महसूस करेंगे। अपने व्यवसाय का विस्तार करने और उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्त करने के लिए समय की शुभता बनी हुई हैं। माह अवधि में कार्य भार आप पर अधिक नहीं होगा। सीखने वाले वर्ग और आध्यात्मिक स्तर के व्यक्तियों के सहयोग से उन्नति विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। लेखकों, पत्रकारों और इस प्रकार के अन्य व्यक्तियों के लिए यह माह विशेष माह रहेगा। जिस माह में आपके सौदे अच्छे तय हो सकते हैं।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

व्यावसायिक संभावनाओं के लिए यह माह आपके लिए बहुत उत्साहजनक नहीं बना हुआ हैं। इस माह के सितारें आपके लिए सुखद नहीं बने हुए हैं। कड़ी मेहनत करने पर आप एक अच्छा सौदा तय करने में सफल हो सकते हैं। इस समय में आप पर कार्यभार बहुत अधिक रहेगा। फिर भी आपको उम्मीद के अनुरुप लाभ की प्राप्ति नहीं हो पायेंगी। बड़े उतार-चड़ाव की स्थिति बनी हुई हैं। आलस्य से मुक्त होकर परिश्रम भाव से कार्यो को पूर्ण करने का प्रयास करें। सीखने वाले वर्ग और प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ संबद्ध होना आपके लिए

सार्थक सिद्ध हो सकता हैं। इस अवधि में कुछ बचत हो सकती हैं। शीघ्र लाभ प्राप्ति के लिए आप कानून के बाहर जाकर कार्य करने का प्रयास करेंगे। यह आगे जाकर आपके लिए खतरे का कारण बन सकता हैं। आपको ऐसी गतिविधियों से बचना चाहिए।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

पेशेवर जीवन के लिए इस माह की ग्रह स्थिति आपके लिए बहुत अनुकूल बनी हुई हैं। यह माह आपके लिए एक उत्कृष्ट माह रहेगा। सीखने वाले वर्ग और आध्यात्मिक स्तर के प्रतिभाशाली व्यक्तियों के सहयोग से आप का जीवन सफलता की नई ऊंचाईयों पर जा सकता हैं। धार्मिक या सामाजिक कार्यो में योगदान आपको सराहना दिलाएगा। लेखकों, सामाजिक वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों को भी समय की शुभता का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र का माहौल आपके लिए तनाव या राजनीति से मुक्त रहेगा। इसलिए यह माह आपके लिए उत्कृष्ट माह साबित हो सकता हैं। समय की शुभता में आपको प्रयासों में कमी नहीं करनी होगी।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

सितारों की स्थिति आपके पेशेवर जीवन की उन्नति के संदर्भ में बहुत सौहार्दपूर्ण नहीं बनी हुई हैं। माह अवधि में रोमांचक या दिलचस्प घटना न घटित होने के कारण आप हताश होकर कुछ समय के लिए अकेले रहना चाहेंगे या कुछ दिनों की छुट्टियों पर जाने का सोच सकते हैं। समय में ग्रहों की शुभता की कमी के कारण कड़ी मेहनत करने के बाद भी उम्मीद के अनुसार लाभ प्राप्ति की संभावना बहुत कम बन रही हैं। इस समय में स्वयं में कुछ बदलाव करना पड़ सकता हैं। शिक्षा क्षेत्र और अन्य कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियों का सहयोग आपको काफी संतोषजनक परिणाम दे सकता हैं। यह आपकी नेतृत्व शक्ति का विकास भी करेगा। आप कुछ धार्मिक या सामाजिक कार्यो में आपका योगदान औसत स्तर का रहेगा। लेखक वर्ग का प्रदर्शन सामान्य से कुछ अधिक हो सकता हैं।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह माह आपके पेशेवर जीवन के लिए बहुत सौहार्दपूर्ण नहीं रहेंगा। इस माह के सितारों का संयोजन आपके लिए विपरीत बना हुआ हैं। इस माह अवधि में आप बहुत अधिक मेहनत करेंगे। कार्य की अधिकता आपको बोझ जैसी प्रतीत हो सकती हैं। ग्रह संयोजन में इस अवधि में विशेष कुछ भी नहीं बन रहा हैं। बहुत अधिक प्रयास करने के बाद उम्मीद के अनुरुप लाभ बहुत कम प्राप्त हो पायेंगे। इस समय में एक साथ अनेक समस्याएं आपको परेशान कर सकती हैं। शैक्षिक क्षेत्र के कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करना आपको कुछ लाभ दे सकता हैं। मानसिक संतुष्टि प्राप्ति की संभावनाएं बहुत कम बन रही हैं। कुछ छोटी यात्राएं इस अवधि में आपके द्वारा तय हो सकती हैं। माह अवधि की सबसे लाभप्रद दिशा पश्चिम दिशा बन रही हैं।

# कार्य क्षेत्र - 2028

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधिक काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

## जनवरी 2028 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों का संयोजन आपके पेशेवर जीवन के लिए अच्छा संकेत नहीं दे रहे हैं। अतः इस अवधि में आपको कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता हैं। लघु अवधि की यात्राओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बहुत कम बन रहे हैं। इस मुश्किल समय में भी आप उत्तर दिशा की यात्रा कर आंशिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उम्मीद के अनुरुप तो नहीं परन्तु कुछ कम लाभ उत्तर दिशा की यात्रा से आपको अवश्य प्राप्त हो सकते हैं। संपर्कों का सहयोग प्राप्त न हो पाने के कारण आपको कुछ निराशा का सामना करना पड़ सकता हैं। समय की कठिनाईयों को हल करने के लिए आपको अपनी क्षमता पर भरोसा रखना होगा। आपकी प्रतिकूल परिस्थितियों में आपके लिए कुछ सहयोगी हो सकती हैं। कार्य क्षेत्र की स्थिति सुखद रहने से कार्य करने में आपको आनंद आएगा। कार्यो का प्रतिफल उम्मीद के अनुरुप प्राप्त न होने के कारण आपको संतुष्टि प्राप्त नहीं हो पाएगी। कुल मिलाकर आपको इस माह के दौरान संवेदनशील मुद्दों पर सावधानी से चलना होगा।

## फरवरी 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का संयोजन आपके पेशेवर जीवन के पक्ष से बहुत अच्छा न रहने की संभावनाएं बन रही हैं। इस समय में बहुत कड़ी मेहनत करने से स्थिति में कुछ सुधार हो सकता हैं। लेकिन कार्यो के बदले पुरस्कार की संभावना बिल्कुल नहीं बन रही हैं। कुछ यात्राओं के भी योग बन रहे हैं। यात्राओं से मनोकूल लाभ प्राप्ति की संभावनाएं नहीं बन रही हैं। कुछ महिला सहयोगियों के सहयोग से आप अपने पेशेवर जीवन की उपलबधियों को बढ़ाने का प्रयास कर सकते हैं। आपके मित्र और संपर्क सूत्र भी इस अवधि में आपके काम नहीं आयेंगे। अपने कौशल और प्रयासों से आप इस स्थिति में सुधार ला सकते हैं। इस माह के कुछ लाभों की स्थिति आपके प्रयासों पर भी निर्भर करेगी। धैर्य के साथ आप अच्छे सौदे तय करने के लिए प्रयासरत रहें।

## मार्च 2028 के लिए फलादेश

इस माह में ग्रहों की स्थिति आपकी पेशेवर उपलब्धियों के लिए उत्तम बनी हुई हैं। माह अवधि की परिस्थितियां आपके लाभों में अनुकूलता के पक्ष से शुभ बनी हुई हैं। फिर भी इस समय में आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। आपके कार्यक्षेत्र का वातावरण तनाव मुक्त होने के कारण आपको प्रसन्नता देगा। आप चाहे व्यापार क्षेत्र में हो या सेवा क्षेत्र में दोनों में ही अपनी पेशेवर गतिविधियों में आपको मजबूत सुरक्षा प्राप्त होगी। आपकी स्थिति दोनों क्षेत्रों में स्थिर बनी हुई हैं। यह समय आपको संतुष्टि देना वाला रहेगा। इसके अलावा कुछ महिला सहयोगियों की मदद आपकी व्यावसायिक संभावनाओं में वृद्धि करने में अत्यंत उपयोगी साबित हो सकती हैं।

## अप्रैल 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपकी पेशेवर संभावनाओं के लिए बहुत उज्जवल नहीं बनी हुई हैं। गंभीर प्रयासों के बावजूद इस अवधि में आप अपने लाभों को साकार करने में सफल नहीं हो पायेंगे। माह अवधि की घटनाएं आपके पक्ष में घटित नहीं हो रही हैं। यात्राएं भी आपको उम्मीद के अनुरुप लाभ देने में असफल रहेंगी। फिर भी पश्चिम दिशा की यात्राएं आपके लिए आंशिक रुप से लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं। संपर्को से आपको बहुत ज्यादा मदद नहीं मिल पायेगी। कौशल पर भरोसा और प्रयास करते रहना इस समय में आपके लिए एक अच्छा उपाय हो सकता हैं। कठिन परिस्थितियों को संभालने के लिए आपको धैर्य से काम लेना होगा।

## मई 2028 के लिए फलादेश

यह माह आपकी पेशेवर उपलब्धियों के लिए काफी संतोषजनक बना हुआ हैं। इस माह के सितारें आपकी व्यावसायिक उन्नति में सहयोग कर रहे हैं। कड़ी मेहनत करने पर आप प्रत्याशित लाभों को प्राप्त कर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस माह की योजनाओं में जोखिम तत्व की अधिकता हो सकती हैं। लेकिन यह एक अनुकूल माह है इसलिए इस अवधि में जोखिमों से आपको नुकसान न होने की स्थिति बन रही हैं। फिर भी आपके लिए बेहतर होगा कि आप जोखिमों से बचने का प्रयास करें। व्यावसायिक यात्राओं से लाभ प्राप्ति की संभावनाएं बन रही हैं। इस अवधि में आपका कार्यक्षेत्र पूरी तरह से संघर्ष और राजनीति से भरा हो सकता हैं। इसके अलावा कुछ महिला सहयोगियों की मदद मिलेंगी यह आपके लिए लाभकारी रहेगा।

## जून 2028 के लिए फलादेश

सितारों का संयोजन इस अवधि में आपके पेशेवर उन्नति के लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रहा हैं। इस माह के दौरान आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। कड़ी मेहनत करने पर भी लाभ प्राप्तियां न होने से आप काफी हतोत्साहित हो सकते हैं। व्यापारिक विषयों या नौकरी

के लिए यात्रा करने की संभावनाएं बन रही हैं। परन्तु फिर भी यात्राओं से धन अर्जन के योग बहुत कम बन रहे हैं। संपर्क सूत्र आपके लिए बहुत मददगार साबित नहीं हो पायेंगे। कौशल और प्रयासों पर विश्वास करना विपरीत समय में लाभदायक साबित हो सकता हैं। कुल मिलाकर यह माह आपके पेशेवर जीवन के लिए बहुत उत्साहजनक नहीं बना हुआ हैं।

## जुलाई 2028 के लिए फलादेश

यह माह आपकी व्यावसायिक संभावनाओं के लिए काफी उज्जवल बना हुआ हैं। माह अवधि में सितारों की शुभता प्राप्त होने के कारण इस अवधि में आपका पेशेवर जीवन उन्नतिशील रहेगा। इस समय में आप पर कार्य भार काफी हद तक बढ़ सकता हैं। परन्तु फिर भी कार्य करने में आप आनंद का अनुभव करेंगे। कार्य क्षेत्र का माहौल तनावमुक्त और सहज बना रहने की संभावनाएं बन रही हैं। कुछ महिला सहयोगी आपके लिए काफी मददगार साबित हो सकती हैं। यह आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। तथा यह आपके पेशेवर जीवन की संभावनाओं को आगे बढ़ाने का कार्य करेगा। इस समय में आपके द्वारा लाभकारी यात्राएं तय हो सकती हैं। माह अवधि की लाभप्रद दिशा दक्षिण दिशा बन रही हैं। कुल मिलाकर यह माह आपके लिए लाभकारी माह साबित हो सकता हैं।

## अगस्त 2028 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह एवं सितारों की स्थिति आपके पेशेवर जीवन में उन्नति के पक्ष से काफी अच्छी बन रही हैं। ग्रहों की अनुकूलता आपकी व्यावसायिक सफलता के लिए उत्तम बनी हुई हैं। माह अवधि में प्रत्याशित लाभ प्राप्ति आपको सामान्य से अधिक हो सकती हैं। छोटी अवधि की यात्राओं से आपको अपनी व्यावसायिक संभावनाओं को बेहतर करने में मदद मिलेगी। कार्य क्षेत्र का वातावरण इस अवधि में हर प्रकार के संघर्ष से मुक्त होने के कारण आपके लिए काफी सुखद बना हुआ हैं। यह आपको लाभ और संतुष्टि दोनों देगा। कार्य करने में आपको आनंद आएगा। कुछ महिला सहयोगियों के सहयोग से आपके पेशेवर जीवन की संभावनाओं को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिलेगा। कुल मिलाकर यह माह आपके लिए सुखद और उपयोगी माह बना हुआ हैं। इस माह के दौरान आपको व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती हैं।

## सितम्बर 2028 के लिए फलादेश

पेशेवर उन्नति के लिए इस माह के सितारों की स्थिति काफी फायदेमंद बनी हुई हैं। व्यावसायिक यात्राओं के द्वारा सौदे तय करना आपके लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकता हैं। विशेष रुप से यह समय दक्षिण दिशा की यात्रा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा। कुछ महिला सहयोगियों का सहयोग आपको लाभ पाने की एक अलग संभावना दे सकता हैं। इस समय में आपको बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ सकती हैं। कार्यक्षेत्र का वातावरण आपके लिए

सुखद बना हुआ हैं। शीघ्र धन प्राप्ति के लिए आप कानून के बाहर जाकर कार्य करने का प्रयास कर सकते हैं। आप इस अवधि में प्रलोभन का शिकार हो सकते हैं। यदि आप ऐसे प्रलोभनों में पड़ते है तो आपके लिए अनेक मुसीबतें आरम्भ हो सकती हैं। आपको ऐसी गतिविधियों से बचना चाहिए। ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई हैं।

## अक्तूबर 2028 के लिए फलादेश

आपके पेशेवर उन्नति के लिए यह माह बहुत उत्साहवर्धक नहीं बना हुआ हैं। कड़ी मेहनत करने के बावजूद इस माह के परिणाम आपके लिए बहुत सुखद नहीं बने हुए है। इस माह की उत्कृष्टता केवल कार्यस्थल का माहौल सौहार्दपूर्ण बने रहने में बनी हुई हैं। कार्यो के माध्यम से आपको उम्मीद के अनुरुप लाभ नहीं मिल पायेंगे। साथ ही इस समय में संपर्क भी आपके लिए बहुत मददगार सिद्ध नहीं होंगे। कठिन परिस्थितियों से बाहर आने के लिए आपको अपनी क्षमताओं पर विशेष रुप से निर्भर रहना होगा। उत्तर दिशा में यात्रा करने से आपको कुछ लाभों की प्राप्ति हो सकती है। इस माह के दौरान आपको सावधानी रखनी होगी। तथा धैर्य से काम लेना होगा।

## नवम्बर 2028 के लिए फलादेश

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह माह आपको बेहतरीन अवसर देगा। इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए विशेष रुप से शुभ बन रही हैं। इस माह में आपके कार्य भार में वृद्धि होगी। उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्ति के लिए ग्रह स्थिति अनुकूल बनी हुई हैं। कार्यस्थल का वातावरण आपके लिए तनाव मुक्त और सुखद बना हुआ हैं। इसके अलावा कुछ महिला सहयोगियों की मदद से आपको व्यावसायिक संभावनाओं को बढ़ाने में मदद मिल सकती हैं। इस समय में आप प्रत्याशित लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त यात्राओं से भी लाभ प्राप्ति के संयोग बन सकते हैं। इस अवधि में विशेष रुप से दक्षिण दिशा में यात्रा करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। कार्यो से संतुष्टि प्राप्ति के योग भी प्रबल बने हुए हैं। कुल मिलाकर यह माह आपके लिए लाभकारी माह रहेगा।

## दिसम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की भविष्यवाणी आपके पेशेवर जीवन की संभावनाओं के लिए बहुत उत्साहवर्धक नहीं बनी हुई हैं। आपके कार्य भार में अत्यधिक वृद्धि हो सकती हैं। कार्यभार का प्रतिफल आपको निश्चित रुप से लाभ के रुप में प्राप्त नहीं हो पाएगा। सुखद और तनाव मुक्त कार्यक्षेत्र का माहौल आपको कुछ राहत देगा। दक्षिण दिशा की यात्रा करना आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता हैं। इस अवधि में आपको नेतृत्व करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो पायेंगे। उम्मीद के अनुरुप लाभ प्राप्त करने में आप विफल रहेंगे। संपर्क सूत्रों का सहयोग प्राप्त न होने से स्थिति ओर कठिन हो सकती हैं। मददगार भी आपके लिए इस समय में आपको

मदद नहीं कर पायेंगे। इसके अलावा माह अवधि में आपको कानूनी नियमों के अंतर्गत रहकर ही कार्य करना चाहिए।

# धन संबंधी - 2026

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव की संभावन बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से इस माह की ग्रह स्थिति शुभ नहीं बन रही हैं। माह अवधि में आपके लिए कार्य करना अधिकांशतः बहुत कठिन हो सकता हैं। अपने उद्देश्यों को साकार करने के लिए आपको अत्यधिक संघर्ष करना पड़ सकता हैं। सट्टा गतिविधियों के लिए इस माह में शुभ संभावनाएं नहीं बन रही हैं। माह अवधि में आपको गलत प्रकृति के लोगों के संपर्क में आने से बचना चाहिए। वरना आपको हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। भाग्य की कमी बनी हुई हैं। इसलिए शीघ्र धन अर्जित करने के प्रयास आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। यह आपके लिए कष्टकारी स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस माह में सितारों की स्थिति आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत अनुकूल नहीं हैं। सट्टा गतिविधियों से गंभीर नुकसान उठाना पड़ सकता हैं। सावधानी रखना आपके लिए इस माह में हितकारी रहेगा। शीघ्र धन प्राप्ति के क्षेत्रों में आपको धन निवेश करने से बचना चाहिए। इस तरह की गतिविधियों से आपको काफी मजबूती के साथ दूरी बनाए रखनी होगी। इस माह के कायी में आपमें आत्मविश्वास और पहल क्षमता की कमी हो सकती हैं। माह अवधि की प्रगति में स्थिरता लाना आपके लिए कठिन हो सकता हैं। अन्यथा माह अवधि में बन रही परिस्थितियों में आपके लिए शुभ अवसरों की कमी हो सकती हैं। नये उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए समय की शुभता नहीं बनी हुई हैं।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय स्थिति के पक्ष से ग्रह योग की शुभता इस माह आपको प्राप्त हो रही हैं। इस माह में आपकी वित्तीय संभावनाएं उत्तम रहने की संभावनाएं बन रही हैं। उम्मीद से अधिक आपको अप्रत्याशित लाभ प्राप्त हो सकते हैं। वित्तीय पक्ष से यह समय आपके लिए वरदान साबित हो सकता हैं। किसी महिला अधिकारी या महिला सद्स्य के द्वारा आपकी वित्तीय स्थिति

में सुधार हो सकता हैं। ललित कला से जुड़े संगीतकारों, चित्रकारों, नाटककारों, फिल्म निर्माताओं और अन्य कलाकारों के लिए यह बेहद संतोषजनक स्थिति बनी हुई हैं। इस समय में वित्तीय लाभ और रचनात्मक उत्पादन दोनों होने के शुभ योग बन रहे हैं। नए उदयमों में निवेश करने के लिए समय की अनुकूलता बनी हुई हैं।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के लिए ग्रह स्थिति लाभदायक बनी हुई हैं। इस माह अवधि में सट्टा गतिविधियों से लाभ प्राप्ति के लिए आप तत्पर रहेंगे। यह क्रियाएं आपको उम्मीद से अधिक अप्रत्याशित लाभ दे सकती हैं। किसी महिला सदस्य या अधिकारी के साथ जुड़ना या सहयोग प्राप्त होना, वित्तीय पक्ष से आपके लिए वरदान साबित हो सकता हैं। ललित कला के संगीतकारों, चित्रकारों, नाटककारों, फिल्म निर्माताओं और अन्य कलाओं के जानकार इस अवधि में अपनी कला का जादू बिखेरने में कामयाब रहेंगे। इस वर्ग के लिए यह समय वित्तीय लाभ और रचनात्मक उत्पादन के लिए अनुकूल बना हुआ हैं। नये उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए समय की अनुकूलता बनी हुई हैं।

## मई 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से समय प्रतिकूल बना हुआ हैं। इस माह में बन रहा सितारों का योग आपके लिए शुभ फलदायक नहीं बन रहा हैं। शीघ्र धन प्राप्ति के साधनों में धन निवेश करना या गलत कार्यो में संलग्न व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करना आपके लिए सही नहीं रहेगा। आपको ऐसे उदयमों के साथ कार्यरत होने से बचना चाहिए। इसके अतिरिक्त सट्टा गतिविधियों के माध्यम से भी आपको गंभीर नुकसान होने की संभावनाएं बन रही हैं। साथ ही आप इस अवधि में जुए से भी दूर रहें। नए उदयमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए समय की प्रतिकूलता बनी हुई हैं। इस प्रकार की योजनाओं को कुछ समय के लिए स्थगित करना ही उत्तम रहेगा। अन्यथा धन हानि के योग बन सकते हैं।

## जून 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय स्थिति के पक्ष से यह माह आपके लिए शुभ फलदायक नहीं बना हुआ हैं। इस माह के सितारों की स्थिति आर्थिक पक्ष से बहुत उज्जवल नहीं बन रही हैं। इस समय में आप किसी विवाद या मुकद्दमेबाजी के कारण हानि की स्थिति से गुजर सकते हैं। ऐसे विवादों का फैसला आपके विरुद्ध जा सकता हैं। इसके अलावा तेजी से धन कमाने के आपके प्रयास आपको हानि दे सकते हैं। माह अवधि में आपको गलत तरीकों से धन अर्जित करने के प्रयासों से बचना चाहिए। भाग्य के पक्ष से यह समय अच्छा नहीं बना हुआ हैं। समय की प्रतिकूलता में आपको ऐसे कार्यो से बचना चाहिए। नए उदयम शुरु करने के लिए और निवेश करने के लिए ग्रहों की स्थिति प्रतिकूल बनी हुई हैं।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रही हैं। शीघ्र धन प्राप्ति करने के प्रयासों में आप गलत कार्य करने वाले व्यक्तियों के संपर्क में आ सकते है। भाग्य की कमी और इस समय बनी हुई परिस्थितियों के कारण इस समय आपको सतर्क रहना होगा । तथा ऐसे प्रयास करने से बचना होगा। इसके अतिरिक्त शीघ्र धन लाभ प्राप्ति के लिए आप सट्टे आदि गतिविधियों में भी धन विनियोजन करने से बचें। यह आपके लिए धन हानि का कारण बन सकता हैं। गंभीर नुकसान से बचने के लिए आप जुए आदि विषयों से दूरी बनाकर रखें। नए उदयमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए अवधि शुभ नहीं बनी हुई हैं। इस अवधि विशेष में आपको ऐसी योजानाओं को स्थगित करना चाहिए और शुभ समय की प्रतिक्षा करनी चाहिए।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के लिए इस माह के सितारों की स्थिति बहुत मंगलमय नहीं बनी हुई हैं। ग्रह स्थिति के प्रबल न होने के कारण इस समय आपकी आर्थिक स्थिति पहले से कमजोर हो सकती हैं। संगीतकारों, नाटककारों, फिल्म निर्माताओं और कला जगत के अन्य कलाकारों के लिए भी यह समय आर्थिक पक्ष से कमजोर रहेगा। संभावित है कि इस समय में अनुकूल रचनात्मक उत्पादन न हों। माह अवधि में आपके पास अनुकूल परिस्थितियों की कमी रहेगी। ऐसे में भी आपको सट्टे गतिविधियों में सम्मिलित होने से बचना चाहिए। वरना इस समय में आपके लिए मुश्किल स्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। जुए आदि क्रियाओं में आपका शामिल होना आपको गंभीर नुकसान दे सकता हैं। हानि से बचना हो तो सावधानियों का पालन करें।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों के अनुसार आपकी वित्तीय स्थिति इस माह बहुत अनुकूल नहीं रहेगी। इस विपरीत समय में आप स्वयं में आत्मविश्वास और पहल करने की क्षमता की कमी महसूस करेंगे। यह परिस्थितियों को ओर जटिल बना देगा। ऐसा न होने दे वरना आपके पास काम के अवसरों की कमी हो सकती हैं। इसके अलावा सट्टा गतिविधियों से भी आपको गंभीर नुकसान का सामना करना पड़ सकता हैं। साथ ही जुए आदि जैसी गतिविधियों से भी आपको बचना चाहिए। नए उदयमों को शुरु करने और निवेश करने संबंधित योजनाओं को आपको वर्तमान में स्थगित करना चाहिए।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

वित्तीय उन्नति के लिए इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए कई लाभदायक अवसर बना रही हैं। माह अवधि में अचानक से अप्रत्याशित लाभ प्राप्ति की उम्मीद रखने के पर्याप्त कारण बन रहे है। इसके अलावा किराया व्यवसाय से लाभ प्राप्त होने के उत्तम अवसर बने हुए हैं। यहां तक की शीघ्र धन प्राप्ति के साधनों से भी अच्छी लाभ संभावनाएं बन रही हैं। इस समय के किसी भी प्रयास का परिणाम आपको शीघ्र लाभ के रुप में प्राप्त हो सकता हैं। हो

सकता है कि यह लाभ बहुत बड़ा न हो परन्तु इनकी गति तीव्र होगी। माह अवधि की शुभता और अवसरों का शीघ्र लाभ उठायें, कहीं देरी न हो जायें।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह की ग्रह स्थिति के अनुसार वित्तीय संभावनाओं को बेहतर करने के आपको कई अवसर प्राप्त होंगे। सट्टा गतिविधियों, जुए या शीघ्र प्राप्ति के क्षेत्रों से सुंदर मुनाफा प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस माह अवधि में आपको कुछ अलग अप्रत्याशित लाभ प्राप्ति की संभावना भी बन रही हैं। आप इस माह में अधिकांश उद्देश्यों को प्राप्त कर सफलता पाने में सक्षम रहेंगे। यह आपको शीघ्र लाभ देगा। साहस और आत्मविश्वास से आप अपने सभी कार्यो को पूर्ण कर पायेंगे।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह की वित्तीय संभावनाओं के लिए ग्रहों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं बन रही हैं। यह संभावित है कि व्यक्तिगत लाभ या सामाजिक स्तर के लिए अधिनस्थों या श्रमिकों का शोषण हो। आपको अपने इस स्वभाव में सुधार करना चाहिए। वरना यह आपके लिए अप्रिय स्थिति उत्पन्न कर सकता हैं। नुकसान से बचने के लिए आपको जुए आदि गविधियों से दूर रहना चाहिए।

# धन संबंधी - 2027

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

सितारों का संयोजन आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बना हुआ है। अतः इस माह में वित्तीय संभावनाएं आपके लिए बहुत अच्छी नहीं बनी हुई हैं। इस माह में बहुत प्रयास करने पर भी आपको कम फल प्राप्त हो सकते हैं। निर्धारित उद्देश्यों में बहुत अधिक संघर्ष करने पर भी अधिकांश उद्देश्यों की प्राप्ति आपको नहीं हो पायेगी। इसके अलावा यह भी संभावना बन रही है कि लेखकों, चित्रकारों और अन्य कलाकारों के लिए यह अवधि कमजोर बनी हुई हैं। इसके अलावा नए उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए ग्रह स्थिति सौहार्दपूर्ण नहीं बनी हुई हैं। इन योजनाओं का कार्य मध्य में अटक सकता हैं। कुल मिलाकर इस माह में स्थिति प्रतिकूल रहेगी। अतः इस समय में आपको कम आय के साथ ही संतोष करना पड़ सकता हैं।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के लिए इस माह के सितारें आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बनी हुई है। लेखकों, चित्रकारों और कला से जुड़े अन्य जानकारों के लिए आर्थिक पक्ष से यह अवधि बहुत कमजोर सिद्ध हो सकती है। किराये से लाभ प्राप्त करने वाले व्यापारियों के लाभ में कमी के योग बन सकते है। माह अवधि में काफी कठिन संघर्ष के बाद भी अपने उद्देश्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पायेगी। इस समय के अधिकांश क्षेत्रों से आपको मनोकूल लाभ प्राप्त नहीं हो पायेंगे। इसके अतिरिक्त नये उद्यम को शुरु करने और निवेश करने के लिए अनुकूलता नहीं बनी हुई है। ऐसी योजनाएं मध्य में रुक सकती है। कोई ऋण आवेदन पत्र किसी बैंक या वित्तीय संस्थानों को दिया गया है तो उसके ठुकराये जाने की अधिक संभावनाएं बन रही है। यह भी संभावित है कि ऐसे प्रस्तावों को नए सिरे से देना पड़ सकता है।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस माह में सितारों की शुभता आपको प्राप्त नहीं हो रही है। अतः वित्तीय संभावनाओं के लिए यह बहुत उत्तम समय नहीं हैं। नये उद्यमों में निवेश करने के लिए समय

सौहार्दपूर्ण नहीं बना हुआ हैं। ऐसी योजनाओं का कार्य अपने लक्ष्य तक न पहुंचकर, आसानी से अटक सकता है। माह अवधि में आपके द्वारा बनाई गई अधिकांश योजनाओं का उद्देश्य पूर्ण होने में काफी संघर्ष की स्थिति बन सकती है। फिर भी यह आपको छोटी सफलता ही देकर जायेंगी। यह समयावधि लेखकों, चित्रकारों और कला क्षेत्र से जुड़े अन्य जानकारों के लिए बेहद खराब अवधि हो सकती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए यह सिखने का समय साबित हो सकता है। इस विपरीत समय से आपको बहुत कुछ सिखने के लिए मिलेगा। किराये के रुप में लाभ प्राप्त करने के लिए ग्रह स्थिति उत्तम नहीं बनी हुई है। यह स्थिति इस प्रकार के सभी व्यापारियों के लिए लागू होगी। इसके अलावा बैंको या वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्ति ले लिए नवीन आवेदन देना पड़ सकता है। इसके भी मंजूर न होने की संभावना बन रही हैं। इससे पूर्व लंबित ऋण आवेदन भी वापस किए जा सकते है।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का योग वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रहा हैं। लेखकों, चित्रकारों, कलाकारों और कला के अन्य जानकारों के लिए यह अवधि बेहद कमजोर बनी हुई है। कठिन समय में इस वर्ग के व्यक्तियों को सतर्कता से रहना होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारियों विशेष कर विदेश स्थानों से व्यापार करने वाले व्यक्तियों के लिए भी ग्रह प्रतिकूलता बनी हुई है। माह में शुभता की कमी के कारण आपको इस समय में सफलता हासिल करने में बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ सकता है। इसके बाद ही आप अपने उद्देश्यों को आंशिक रुप में प्राप्त कर पायेंगे। तथा नये परियोजनाओं को शुरु करने के लिए एवं इनमें निवेश करने के लिए सितारों की अनुकूलता नहीं बनी हुई है। ऐसी योजनाओं का कार्य मध्य में अटक सकता है।

## मई 2027 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह, सितारों के पास आपकी वित्तीय संभावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत शुभ योग नहीं बन रहे हैं। माह अवधि में उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जो योजनाएं बनाई जायेंगी, इसमें आपको छोटी सफलताएं ही प्राप्त होगी। आपको काफी संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। सभी प्रकार के व्यापारियों और विदेश क्षेत्रों से व्यापार करने वाले व्यक्तियों को भी भाग्य की शुभता प्राप्त नहीं हो रही हैं। सभी क्षेत्रों के कलाकारों को इस माह में आर्थिक लाभ बहुत अच्छे प्राप्त नहीं होंगे। नये उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए समय अनुकूल नहीं बना हुआ हैं। वरना ऐसी योजनाओं पर कार्य अटक सकता है। हो सकता है कि आपको इस समय में कम लाभ के साथ ही संतोष करना पड़ सकता है।

## जून 2027 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से सितारों की स्थिति आपके लिए बहुत उत्साहवर्धक नहीं बनी हुई हैं। यदि आप किसी विवाद या मुकद्दमेबाजी में शामिल है तो इस माह में निश्चित रुप से फैसला आपके विपरीत जा सकता है। अतः इस प्रतिकूल समय में आपको ऐसे फैसलों

को स्थगित करने का प्रयास करना चाहिए। चाहे इसके लिए आपको कड़ी मेहनत ही क्यों न करनी पड़े। यह भी संभावना बन रही है कि इस माह में आपके द्वारा ऋण के लिए किसी बैंक में दिया गये आवेदन को नये सिरे से देना पड़े और उसमें देरी हो सकती है या उसे नामंजूर किया जा सकता हैं। नई परियोजनाओं को शुरु करने के लिए या निवेश करने के लिए यह समय सही नहीं रहेगा। इन योजनाओं का कार्य सरलता से बाधित हो सकता हैं। सभी प्रकार के कलाकारों के लिए ग्रह शुभता प्रतिकूल बनी हुई है।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रहों का योग आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत प्रोत्साहित करने वाला नहीं बना हुआ हैं। ग्रहों की स्थिति बहुत सामान्य बनी हुई है। इसलिए इस समय में विशेष प्रयास करने पड़ सकते है। लेखकों, चित्रकारों, कलाकारों, और कला के अन्य जानकारों के लिए भी आर्थिक पक्ष से यह समय बहुत शुभ नहीं बना हुआ हैं। इस समय में आपको नये अनुभवों का सामना करना पड़ सकता हैं। व्यापारी वर्ग, किराये से लाभ प्राप्त करने वाला वर्ग और विदेशी व्यापार करने वाले वर्ग को इस माह में प्रत्याशित रुप से अच्छे लाभ प्राप्त नहीं हो पायेंगे। इनके लिए समय काफी संघर्ष पूर्ण हो सकता हैं। सफलता पाने के लिए खास कोशिशें करनी पड़ सकती हैं। इसके अलावा नये उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं बन रही हैं। इनका कार्य सरलता से अटक सकता है।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का संयोजन अनुकूल नहीं बना हैं इसलिए इस माह में आपकी वित्तीय संभावनाएं आपके लिए बहुत उत्साहजनक न होने के कारण लाभकारी नहीं बनी हुई है। लेखकों, चित्रकारों और ललित कला के जानकारों को इस माह में आर्थिक स्थिति के कमजोर होने का सामाना करना पड़ सकता हैं। इसके अलावा व्यापारी वर्ग को भी उम्मीद के अनुरुप किराया नहीं मिल पायेगा। उम्मीद अनुसार लाभ प्राप्त करने के लिए भी बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ सकता है। इसके बाद भी ज्यादा सफलता प्राप्त करने की उम्मीद कम ही बन रही हैं। नये उद्यमों को शुरु करने के लिए और निवेश करने के लिए समय प्रतिकूल बना हुआ हैं। बैंको या वित्तीय संस्थानों में लंबित ऋण आवेदन पत्र के स्वीकार होने की आंशिक संभावनाएं बन रही हैं।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

ग्रह एवं सितारों के अनुसार इस माह की वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत उत्साहजनक नहीं बनी हुई हैं। सभी प्रकार के व्यापारियों के लिए और किराये से आय प्राप्त करने वाले वर्ग के लिए भी यह समय उम्मीद के अनुसार लाभ अर्जित करने का नहीं हैं। लेखकों, चित्रकारों और कला से जुड़े कलाकारों के लिए यह अवधि प्रतिकूल बनी हुई हैं। इस अवधि में आपके द्वारा बनाई गई अधिकांश योजनाओं को अपना उद्देश्य प्राप्त करने में विशेष संघर्ष का सामना करना पड़ सकता हैं। नये उद्यम शुरु करने के लिए और निवेश करने के लिए

प्रतिकूलता बनी हुई हैं। ऐसी योजनाओं का कार्य मध्य में अटक सकता हैं। इस अवधि में आपको कम लाभ / आय के साथ संतुष्ट रहना पड़ सकता है।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

अपनी वित्तीय संभावनाओं के लिए यह माह उत्कृष्ट माह बना हुआ है। इस माह के अवसरों का लाभ उठाने के लिए आपको अग्रिम रुप से तैयार रहना होगा। लेखकों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और अन्य कला जानकारों के लिए समय बेहद संतोषजनक बना हुआ है। इस प्रकार के क्षेत्रों से जुड़े लोगों को वित्तीय लाभ प्राप्त होंगे और अपने रचनात्मक उत्पादन से आप संतुष्ट रहेंगे। किराया प्राप्त करने वाले व्यापारियों को भी माह अवधि में पूर्ण लाभ प्राप्त होने की संभावना बन रही हैं। इस अवधि में अधिकांश उद्देश्य साकार होंगे। नये उद्यमों में निवेश करने के लिए समय काफी अनुकूल बना हुआ है। आध्यात्मिक स्तर के व्यक्तियों के साथ जुड़ना आपके लिए लाभ में परिवर्तित हो सकता है। ग्रहों की स्थिति आपके लिए यह एक बेहद संतोषजनक स्थिति बना रही हैं।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए काफी अनुकूल बने हुए हैं। समय की शुभता का आपको अधिकतम लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। अपने सहयोगियों और अधिनस्थों की सेवाओं से अधिकतम लाभ उठाने के पक्ष से यह सबसे शुभ समय हो सकता है। प्राप्तियों के पक्ष से यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण एवं लाभकारी समय सिद्ध हो सकता है। किसी बुजुर्ग सज्जन की सेवाओं के माध्यम से भाग्य की शुभता का लाभ आपको प्राप्त हो सकता है। नये उद्यमों में निवेश करने के लिए समय की शुभता बनी हुई है। आपको साहसपूर्वक ऐसे प्रस्तावों की योजनाओं को लागू करना चाहिए।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

वित्तीय उन्नति के लिए सितारों का योग आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं बना हुआ है। आपके कार्यकर्ताओं, अधिनस्थों का आपके द्वारा शोषण हो सकता हैं। आपको अपनी इस प्रवृति पर अंकुश लगाना चाहिए। यह आपके द्वारा अपने व्यक्तिगत लाभ और सामाजिक स्तर को उच्च रखने के लिए किया जा सकता हैं। किसी प्रकार की कोई अप्रिय स्थिति न बनें इसलिए आपको अपने इस प्रकार के स्वभाव में परिवर्तन लाना होगा। कलाकार वर्ग के लिए भी यह समय कष्टकारी हो सकता हैं। नये उद्यम शुरु करने के लिए और निवेश करने के लिए समय अनुकूल नहीं बन रहा हैं। ऐसी योजनाओं का उद्देश्यपूर्ण न होने की संभावना बन रही हैं।

# धन संबंधी - 2028

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

## जनवरी 2028 के लिए फलादेश

आध्यात्मिक स्तर के प्रतिभाशाली लोगों के सहयोग के बावजूद, यह माह आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए अनुकूल नहीं बन रहा हैं। इस समय में अपने अधिकांश लक्ष्यों को प्राप्त करने में आपको संघर्ष करना होगा। अत्यधिक प्रयास करने के बाद भी आपको बहुत अधिक सफलता प्राप्त नहीं होगी। नए उद्यमों को शुरु करने और इनमें निवेश करने के लिए ग्रह योग अनुकूल नहीं बन रहे हैं। बैंकों या वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्ति के लिए नए सिरे से आवेदन पत्र देने पड़ सकते हैं। विदेशी व्यापार में लगे व्यक्तियों के लिए भी समय की प्रतिकूलता बनी हुई हैं।

## फरवरी 2028 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से इस माह के सितारों की स्थिति आपके लिए बहुत लाभप्रद नहीं बन रही हैं। ग्रहों की शुभता प्राप्त न होने के कारण यह समय आपके लिए सतर्क रहने का रहेगा। वर्तमान योजनाओं के संचालन में आप कड़ी मेहनत से कार्य करेंग, फिर भी योजना अनुसार कार्य करने पर भी प्रत्याशित परिणाम नहीं आ पायेंगे। नए उद्यम शुरु करने और उपक्रमों का विस्तार करने के लिए माह अवधि में अनुकूल संकेत नहीं मिल रहे हैं। बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण परियोजनाओं का कार्य बाधित हो सकता हैं। माह अवधि में आपको अपने व्यवहार को विनम्र बनाए रखना होगा। क्योंकि इस समय में हानि के योग बन रहे हैं।

## मार्च 2028 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के लिए इस माह की ग्रह स्थिति बहुत उत्तम नहीं बनी हुई हैं। मौजुदा परियोजनाओं का कुशलता पूर्वक कार्य चलाने के लिए आपको संचालन प्रणाली में सुधार करना होगा। तथा लाभ प्राप्ति के लिए आपको संघर्ष भी करना पड़ सकता हैं। इस माह अवधि में अधिकांश उदेश्यों में शानदार सफलता प्राप्ति के योग नहीं बन रहे हैं। नये उदयमों को शुरु करने और इनका विस्तार करने के लिए समय की अनुकूलता नहीं बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त वित्तीय संस्थानों या बैंकों में आपके लंबित ऋण इस समय में स्वीकार नहीं किए जायेंगे। प्रतिकूल परिस्थितियां बनी हुई हैं। इसलिए इस समय में आप सावधानी बरतें।

## अप्रैल 2028 के लिए फलादेश

इस माह की वित्तीय संभावनाओं के लिए सितारों की स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं बन रही हैं। माह अवधि में आपको निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में संघर्ष का सामना करना पड़ सकता हैं। इससे पूर्व लंबित लक्ष्यों को साकार करने के लिए भी आपको कठिन काम करना होगा, क्योंकि प्रतिकूल परिस्थितियां बनी हुई हैं। इसलिए थोड़ी सफलता से भी आपको संतोष करना पड़ सकता हैं। नये उद्यमों को शुरु करने और इनमें विस्तार के लिए ग्रह स्थिति अच्छी नहीं बनीं हुई हैं। चित्रकारों, लेखकों, मूर्तिकारों के लिए समय की शुभता नहीं बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त कला जगत से जुड़े अन्य कलाकारों के लिए भी समय अनुकूल नहीं बना हुआ है। प्रतिकूल समय के समाप्त होने तक कम लाभ प्राप्त होने पर भी धैर्य से काम लें।

## मई 2028 के लिए फलादेश

इस माह की वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से माह अवधि के ग्रह एवं सितारों की स्थिति आपके लिए विशेष रुप से उपयोगी नहीं बन रही हैं। विदेश स्थानों और अंतराज्यीय संघों के साथ मिलकर कार्य करना आपके लिए हानिकार हो सकता हैं। बहुत प्रयास करने पर भी इससे पूर्व बनाई गई योजनाओं के उद्देश्यों को प्राप्त करने में आपको काफी कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती हैं। नये उदयमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए समय प्रतिकूल बना हुआ हैं। इसलिए ऐसी योजनाओं को स्थगित करना ही बेहतर रहेगा। इसके अलावा नई साझेदारी और व्यावसायिक संगठनों के साथ नये सिरे से कार्य करना अभी लाभकारी नहीं बना हुआ हैं। कम आय पर ही आपको इस माह संतोष करना पड़ सकता हैं।

## जून 2028 के लिए फलादेश

इस माह की वित्तीय संभावनाएं सितारों के पक्ष से बहुत अनुकूल नहीं बन रही हैं। आपका किसी मुकद्दमेबाजी या विवाद में शामिल होने पर इसका फैसला आपके खिलाफ जा सकता हैं। आप कोशिश करें कि अनुकूल अवधि तक आप ऐसे निर्णयों को शुभ समय आने तक टाल दें। सरकार के साथ कार्य करने में आपको लाभ न होने की संभावना बन रही हैं। विदेश स्थानों या अंतराज्यीय क्षेत्रों से वित्त व्यवहार करते हुए आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता हैं। बहुत अच्छे प्रयास करने के बावजूद आपका ऐसे क्षेत्रों से सफलता प्राप्त करना काफी कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं। इसके अलावा नियोजित लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी आपके लिए संघर्ष की स्थिति बन सकती हैं। वित्तीय संस्थानों या बैंकों में ऋण प्राप्त करने के लिए आपको एक बार फिर से आवेदन देना पड़ सकता हैं। इससे पूर्व दिए गए आवेदन के बैंक के द्वारा वापस करने की संभावनाएं बन रही हैं।

## जुलाई 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रही हैं। लेखकों, कलाकारों, मूर्तिकारों और अन्य कला जानकारों के लिए इस अवधि

में संभावनाएं सुखद नहीं बनी हुई हैं। शैक्षिक क्षेत्र के प्रतिभाशाली लोगों के साथ कार्य करने के लिए बनाई गई अधिकांश योजनाओं के लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए आपके लिए संघर्ष की स्थिति बन सकती हैं। बहुत अधिक प्रयास करने के बाद भी आपको इनमें ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं हो पायेगी। बैंकों या वित्तीय संस्थाओं से ऋण के लिए आवेदन के प्रस्ताव इस समय में स्वीकृत न होने की संभावना बन रही हैं। नए उदयमों का विस्तार करने और निवेश करने से संबंधित योजनाओं को समय के शुभ होने तक स्थगित करना ही हितकारी रहेगा।

## अगस्त 2028 के लिए फलादेश

इस माह में बन रही ग्रह एवं सितारों की स्थिति आपकी वित्तीय संभावनाओं के लिए बहुत अनुकूल नहीं बन रही हैं। इस समय में आपका अंतराज्यीय वाणिज्यिक लेन-देन और विदेशी व्यापार संबंध बनाना आपके लिए हानि का कारण बन सकता हैं। माह अवधि में सामान्य लाभ प्राप्त करने के लिए भी बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ सकता हैं। फिर भी आपको इनमें सफलता प्राप्त होने की संभावना कम ही बन रही हैं। नए उद्यमों को शुरु करने और निवेश करने के लिए ग्रह अनुकूल नहीं बने हुए हैं। यदि इन पर कार्य आरम्भ किया जाता है तो इनका कार्य मध्य में बाधित हो सकता हैं। इसके अलावा बैंकों या वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्ति की मंजूरी प्राप्त करना आपके लिए इस समय में सहज नहीं होगा। यह आपके लिए अनुकूल अवधि नहीं हैं। इसलिए अवधि की प्रतिकूलता समाप्त होने तक आपको कम लाभ पर ही संतोष करना होगा।

## सितम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह में बन रहे सितारों की भविष्यवाणी के अनुसार इस समय की वित्तीय संभावनाएं बहुत उत्साहवर्धक नहीं बन रही हैं। विदेशी व्यापार में लगे व्यक्तियों के लिए यह समय प्रतिकूल सिद्ध हो सकता हैं। ऐसे क्षेत्रों में आपको कुछ न कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता हैं। समय के प्रतिकूल होने के कारण इस समय की अधिकांश योजनाओं में सफलता प्राप्त होने की संभावना कम ही बन रही हैं। नियोजित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आपको थोड़ा संघर्ष करना पड़ सकता हैं। नए उद्यमों में निवेश करने से बचें। इसके अतिरिक्त बैंक या वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्ति आपके लिए सहज नहीं होगी। आपके द्वारा बैंकों को भेजे गए ऐसे प्रस्तावों को वापस किया जा सकता है।

## अक्तूबर 2028 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के लिए यह काफी संतोषजनक बना हुआ है। इस माह में आपको बिना कठिनाई के महत्वपूर्ण बढ़त प्राप्त होगी। सीखने और आध्यात्मिक स्तर के प्रतिभाशाली लोगों के साथ जुड़ना आपको मानसिक संतुष्टि देगा। उद्यमों का सफल समापन किया जा सकता हैं। संस्कृति का शोधन करने के लिए यह संतोषजनक समय है। आप अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उद्देश्यों की प्राप्ति के मार्ग में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ देरी की संभावनाएं बन रही है। फिर भी इसमें सफलता सुनिश्चित बन

रही हैं। यह बहुत अच्छी अवधि है। इसमें आपको संतोष जनक स्थिति बनी हुई हैं।

## नवम्बर 2028 के लिए फलादेश

वित्तीय संभावनाओं के पक्ष से सितारों की स्थिति काफी उत्साहजनक बन रही हैं। किसी बुजुर्ग व्यक्ति के द्वारा की गई सेवाओं से आपको लाभ प्राप्ति का एक विशिष्ट मौका मिल सकता है। कुछ महिला सहयोगियों या सदस्यों के माध्यम से आपका साझेदारी या व्यावसायिक संघ के रुप में कार्य करना भाग्यवर्धक सिद्ध हो सकता हैं। उम्मीद के अनुरुप आपको लाभ प्राप्त होंगे। नए उद्यमों में निवेश करने के लिए ग्रह स्थिति काफी अनुकूल बनी हुई हैं। इस समय में ऐसी सभी योजनाओं को क्रियांवित किया जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त इस अवधि में बैंको या वित्तीय संस्थानों में ॠण आवेदन के लिए आपको नये सिरे से प्रस्ताव देने होंगे जो शीघ्र मंजूर भी हो सकते हैं। इस विषय में यह समय उत्कृष्ट बना हुआ है।

## दिसम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपकी वित्तीय संभावनाओं को बेहतरीन करने के लिए अनुकूल बन रहे हैं। आपके कार्यालयों में किसी बुजुर्ग व्यक्ति का सहयोग या माध्यम काफी हद तक आपको लाभ प्राप्ति का एक विशिष्ट मौका देगा। इसके अतिरिक्त इस अवधि में किसी महिला सहयोगी के साथ साझेदारी या व्यावसायिक संघ आपके लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकता हैं। यह आपको अपने लाभ बढ़ाने में सहयोग करेगा। आप अपने अधिनस्थों की सेवाओं से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। अपने कार्यकर्ताओं के सहयोग से भी आपको बड़ा लाभ होगा। नये उद्यम शुरु करने और निवेश करने के लिए यह समय अनुकूल बना हुआ हैं। आपको हिम्मत के साथ ऐसे प्रस्तावों को क्रियांवित करना चाहिए।

# परिवार - 2026

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते है।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

ऐसा ग्रह गोचर चल रहा है जिसमें उन्नति के सभी मामलों की गति अवरुद्ध होगी अथवा धीमी पड़ेगी। आपमें से बहुत से लोगों का परिवार के बुजुर्गों के साथ मतभेद हो सकता है इसलिए धैर्य धारण करना ही उचित रहेगा।

आर्थिक रूप से कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है इसलिए व्यय पर नियंत्रण रखना होगा। इस तनाव के चलते पारिवारिक वातावरण इतना प्रभावित हो सकता है कि आपसी तालमेल की सभी संभावनाएं कमजोर पड़ने लगें। बच्चे बुरी तरह से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए उनका ध्यान रखें।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

ग्रह चाल के अनुसार यह माह आपके पारिवारिक कल्याण के विषयों में अवरोध डाल सकता है तथा आपके खर्च नियंत्रण से बाहर होकर हर प्रकार की कठिनाई उत्पन्न कर सकते हैं। यहां तक कि आपको ऋण लेने की भी आवश्यकता पड़ सकती है इसलिए अपने खर्चो को समय रहते सावधानी पूर्वक योजनावद्ध कर लें।

इसके अतिरिक्त चिंता का एक अन्य कारण परिवार के बुजुर्गों से होने वाला गंभीर बैचारिक मतभेद है इसलिए कठिन परिस्थिति में स्थिति को नियंत्रण में बनाए रखने के लिए शांतिपूर्वक कार्य करें तथा धैर्य बनाए रखें व शांति को भंग न होने दें। परिवार के वातावरण में आपसी तालमेल का अभाव होगा तथा तनाव बना रहेगा।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

अनुकूल ग्रह गोचर के चलते पारिवारिक कल्याण के विषयों में उनकी गति मे तीव्रता आएगी और आप परिवार में किसी मांगलिक व आनन्ददायक उत्सव की अपेक्षा भी रख सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको अनायास ही कुछ आर्थिक लाभ मिलने की भी सम्भावनाएं बनी हुई हैं।

इसके अतिरिक्त आपमें से अधिकतर लोग बेहतर आर्थिक उन्नति की अपेक्षा कर सकते हैं। परिवार की कुल आय में वृद्धि होगी। परिवार का वातावरण श्रेष्ठ तथा परिवार के सभी सदस्यों में आपसी तालमेल बना रहेगा। बच्चे भी दिए गए कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन करके परिवार के सभी सदस्यों को संतुष्ट रखेंगे।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस माह की ग्रह स्थिति आपके लिए पारिवारिक उन्नति की दृष्टि से शुभ संकेत दे रही है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यही होगी कि परिवार के बुजुर्ग आपके व्यवहार से प्रसन्न होकर आपको दिल से आशीर्वाद देंगे तथा आपके घर में एक ऐसे वातावरण की नींव डलेगी जिसकी मुख्य विशेषता आपसी तालमेल तथा दुःख-सुख में एक दूसरे का सहयोग करना होगा।

ऐसे उत्तम वातावरण में आपके बच्चे भी अच्छा रवैया अपनाए रखेंगे तथा अपने अच्छे व्यवहार व स्वभाव का प्रदर्शन करते हुए पढ़ाई व अन्य उपायोगी गतिविधियों में विशेष रुचि लेते हुए परिवार के सभी सदस्यों को संतुष्ट रखेंगे। आर्थिक रूप से आप बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे और ऐसी भी सम्भावनाएं हैं कि जहां पर आपको अप्रत्याशित धन लाभ हो सकता है।

## मई 2026 के लिए फलादेश

इस माह के अनुकूल ग्रह गोचर के अति शुभ प्रभाव से घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहेगा। परिवार के बुजुर्ग आपके व्यवहार से प्रभावित होंगे तथा आपके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करेंगे।

ऐसा होने से एक खुशनुमा घरेलू वातावरण की नींव डलेगी, जिसमें सभी सदस्य एकदूसरे का सहयोग करेंगे। ऐसे बेहतर वातावरण से बच्चों पर भी शुभ प्रभाव पड़ेगा तथा वे न केवल अच्छे व्यवहार तथा स्वभाव का प्रदर्शन करेंगे। अपितु अपने अध्ययन तथा अन्य गतिविधियों में भी पीछे नहीं रहेंगे। आर्थिक रूप से आप बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे और ऐसी भी सम्भावनाएं हैं कि जहां पर आपको अप्रत्याशित धन लाभ हो सकता है।

## जून 2026 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह गोचर से पारिवारिक कल्याण के विषयों की गति कुप्रभावित होगी और आपको परिवार के महिला सदस्यों के साथ टकराव की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। अतः विपरीत व संवेदनशील परिस्थितियों में धैर्य व शांति से काम लें।

पारिवारिक वातावरण में घर जैसा कुछ भी नहीं होगा तथा सदस्यों में तनाव की स्थिति बनी रहेगी। आर्थिक रूप से भी आप कुछ विशेष नहीं कर सकेंगे। स्थिति को नियंत्रण में रखने समय रहते योजना बनाकर अपने खर्चों को नियंत्रण करें।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर अनुकूल है। सितारे आपके पक्ष में उन्नति का संकेत दे रहे हैं। ग्रह चाल के प्रभाव से आपके बुजुर्ग प्रसन्न होकर आपको व आपकी उन्नति के लिए मंगल कामना करेंगे। आपके घर का समूचा वातावरण एक दूसरे का सहयोग करने की भावनाओं से प्रभावित रहेगा।

ऐसे अति मधुर वातावरण में बच्चे दिये गये कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन तो करेंगे ही साथ ही उनका अच्छा व्यवहार व स्वभाव परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न रखेगा। आर्थिक रूप से आप अच्छा करेंगे तथा साथ ही आपको अनायास ही अतिरिक्त धन लाभ भी हो सकता है।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर अनुकूल है। सितारे आपके पक्ष में उन्नति का संकेत दे रहे हैं। ग्रह चाल के प्रभाव से आपके घर में किसी मांगलिक व आनंददायक उत्सव मनाये जाने की भी संभावनाएं हैं।

पारिवारिक वातावरण आनंददायक बना रहेगा तथा ऐसे अति मधुर वातावरण में बच्चे दिये गये कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन तो करेंगे ही साथ ही उनका अच्छा व्यवहार व स्वभाव परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न रखेगा। आर्थिक रूप से आप अच्छा करेंगे तथा साथ ही आपको अनायास ही अतिरिक्त धन लाभ भी हो सकता है।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह गोचर से कुछ विशेष लाभकारी नहीं प्रतीत हो रहा वल्कि पारिवारिक खर्च के बढ़ने की प्रबल संभावनाएं हैं जिसके प्रभाव स्वरूप ऋण लेने की आवश्यकता बढ़ सकती है अतः योजनावद्ध रूप से खर्चों को समय रहते नियंत्रित कर लिया जाये।

परिवार के बुजुर्गों के साथ मतभेद होने से अतिरिक्त चिंता खड़ी हो सकती है इसलिए शांति बनाएं रखें तथा धैर्य न खोएं। पारिवारिक में तनाव होगा तथा आपसी तालमेल का अभाव बना रहेगा तथा ऐसे वातावरण में बच्चे भी चिंताओं को बढ़ायेंगे अतः उनके मामलों में अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता पड़ेगी।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर अनुकूल है। सितारे आपके पक्ष में उन्नति का संकेत दे रहे हैं। ग्रह चाल के प्रभाव से आपके बुजुर्ग प्रसन्न होकर आपको व आपकी उन्नति के लिए मंगल कामना करेंगे।

आपके घर का समूचा वातावरण एक दूसरे का सहयोग करने की भावनाओं से

प्रभावित रहेगा। ऐसे अति मधुर वातावरण में बच्चे दिये गये कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन तो करेंगे ही साथ ही उनका अच्छा व्यवहार व स्वभाव परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न रखेगा। आर्थिक रूप से आप अच्छा करेंगे तथा साथ ही आपको अनायास ही अतिरिक्त धन लाभ भी हो सकता है।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

ग्रह चाल के प्रभाव से आपके बुजुर्ग प्रसन्न होकर आपको व आपकी उन्नति के लिए मंगल कामना करेंगे। आप में से बहुत से लोगों को उनसे आर्थिक लाभ भी होगा।

आर्थिक रूप से आप अच्छा करेंगे तथा साथ ही आपको अनायास ही अतिरिक्त धन लाभ भी हो सकता है। आपके घर का समूचा वातावरण एक दूसरे का सहयोग करने की भावनाओं से प्रभावित रहेगा।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

ग्रह चाल पारिवारिक कल्याण के विषयों के लिए लाभकारी नहीं है। ऐसी संभावना है कि सामाजिक स्तर में आपसे निम्न श्रेणी का कोई व्यक्ति आपके लिए कठिनाई उत्पन्न कर दे इसलिए स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए पूरी शक्ति से संभालने का प्रयास करें।

पारिवारिक वातावरण दुखदायी बना रहेगा जिसका बच्चों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा और वे जिद्दी होकर आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन करते रहेंगे उन्हें संस्कारी बनाने के लिए अपना समय और अतिरिक्त ऊर्जा देकर उनका सही मार्गदर्शन करने का प्रयास करें।

# परिवार - 2027

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

ग्रहचाल परिवार कल्याण की राह के सुगम होने का संकेत नहीं दे रही। बंधु बांधवों से संबंधों में कटुता आ सकती है। जिसके चलते घरेलू वातावरण कलह वाला बना रहेगा। धैर्य बनाए रखें व शांति से काम लें।

मातुल पक्ष के लोगों से संबंध खराब होने की संभावना है। ये पूरे परिवार पर इसका कुछ प्रभाव अवश्य पड़ेगा। अपने बच्चों पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु उनकी क्रिया विधि को सावधानी से जांचें।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर अनुकूल प्रतीत नहीं हो रहा। आप आर्थिक रूप से बेहतर नहीं कर पाएंगे। अनावश्यक खर्च में वृद्धि होगी। जमाधन में वृद्धि के संकेत कम हैं। ऋण चढ़ने के योग हैं इसलिए अपने खर्च की योजना समय रहते बना लें ताकि इसप्रकार की संभावना को नकारा जा सके।

परिवार का वातावरण भी तालमेल के अभाव मे ंकटुता वाला हो जाएगा। मातुल पक्ष के लोगों से गम्भीर वैचारिक मतभेद के योग बन रहे हैं। बच्चों का व्यवहार भी विशेष अनुकूल नहीं होगा और वे पढ़ाई में कुछ खास नहीं करेंगे और अन्य गतिविधियों के प्रति भी उत्साहहीन रवैया अपनाए रखेंगे। इसलिए उनके ऊपर कड़ी नजर रखें तथा उन्हें नियंत्रण में लाने के लिए अपने समय व ऊर्जा का व्यय करें।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस माह आपके लिए ग्रह गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ समस्याएं आपका मार्ग अवरुद्ध करने के लिए कभी भी खड़ी हो सकती हैं। पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। साथ ही मातुल पक्ष से मतभेद उत्पन्न होंगे।

ऐसे वातावरण में आपके बच्चे अपने व्यवहार से आपको निराश करेंगे तथा साथ ही अपने अध्ययन कार्य में भी रुचि नहीं लेंगे। उनका ध्यान रखें तथा अपने खर्च पर नियंत्रण पाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से हर कार्य को सम्पादित करें।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह माह आपके परिवार के लिए विशेष लाभकारी रहेगा, जिसमें आपको न के बराबर समस्याओं का सामना करना होगा, क्योंकि ग्रह गोचर आपके पक्ष में है। परिवार के बुजुर्ग आपके अच्छे आचरण से प्रसन्न होंगे एवं आपको आशीर्वाद देंगे जिसके चलते आपके परिवार में बेहतर वातावरण की नींव डलेगी, जिसमें सभी सदस्यों के बीच आपसी सामंजस्य बना रहेगा।

ऐसे वातावरण में आपके बच्चों के अच्छे व्यवहार तथा अध्ययन व अन्य उपयोगी गतिविधियों से वातावरण और अधिक खुशनुमा हो जाएगा। आपके मामा से आपको आर्थिक लाभ होने की सम्भावना है। अन्यथा भी आप आर्थिक रूप से सुदृढ़ ही रहेगा। कुल मिलाकर यह माह आपके लिए फायदेमन्द रहेगा।

## मई 2027 के लिए फलादेश

कुछ मामूली परेशानियों के साथ यह माह आपके लिए विशेष फायदेमन्द रहेगा। आपमें से बहुत से लोगों का अपने पिता के प्रति भक्ति भाव बढ़ेगा। परिवार के बड़े भी आपको आशीर्वाद देंगे और ऐसे वातावरण में आपके बच्चे आपसे अच्छा व्यवहार रखेंगे और पढ़ाई और अन्य गतिविधियों में भी भाग लेंगे।

परिवार के सभी सदस्य संतुष्ट रहेंगे। मामा के पक्ष से लाभ होगा। आर्थिक पक्ष अनुकूल बना रहेगा। परिवार के आय में वृद्धि होगी। कुल मिलाकर हर प्रकार से यह माह आपके लिए लाभदायक रहेगा।

## जून 2027 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर की दृष्टि से इस माह आपके परिवार की हर संदर्भ में सहज उन्नति इंगित हो रही है। आपमें से बहुतों की अपने पिता के प्रति भक्ति भाव में वृद्धि होगी तथा बदले में आपको परिवार के बुजुर्गों का आशीर्वाद व स्नेह प्राप्त होगा। फलस्वरूप परिवार का वातावरण बेहतर सामंजस्य वाला व खुशनुमा हो जाएगा।

बच्चे भी अच्छा व्यवहार करेंगे तथा अपने अध्ययन कार्य तथा अन्य उपयोगी गतिविधियों में अच्छा करेंगे और आपमें से बहुत से लोगों को अपने मातुल पक्ष से विशेष धन लाभ होगा और अन्यथा भी आपके परिवार में संतोषजनक आर्थिक उन्नति के योग हैं।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस माह आपके पारिवारिक मामलों के लिए समय प्रतिकूल ही बना रहेगा। आपको अपने बच्चों अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है और ऐसा न करने पर उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की सम्भावना है जिसके फलस्वरूप वे अनुशासनहीन हो सकते हैं।

उनके प्रदर्शन में गिरावट आ सकती है। और वे अध्ययन कार्य से विमुख हो सकते हैं। उनके क्रिया कलापों पर नजर रखें तथा परिवार के माहौल में कड़वाहट न आने दें। मातुल पक्ष के साथ सम्बन्ध तेजी खराब हो सकते हैं। जल्दबाजी व लापरवाही संबंधियों से मतभेद की स्थिति उत्पन्न कर सकती है।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर की दृष्टि से आपके परिवार में शुभता के संकेत हैं। बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। आपके आचरण से सब लोग प्रसन्न रहेंगे।

ऐसे उत्तम वातावरण में बच्चे तो अच्छा व्यवहार करेंगे ही साथ ही अध्ययन व अन्य गतिविधियों में उनकी अच्छी पकड़ आपको प्रसन्नता का अनुभव कराएगी।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर का योग पारिवारिक उन्नति के लिए अनुकूल नहीं है। घरेलू वातावरण में तालमेल की कमी कुछ चिन्ता की लकीरें खींच सकती है। आपमें से बहुत से लोगों का मातुल पक्ष से मतभेद हो सकता है।

ऐसे वातावरण में बच्चों का व्यवहार भी मनोनुकूल नहीं होगा और उनके प्रदर्शन में कमी आपकी चिन्ता को बढ़ाने का कारण बनेगी। आपको उन पर कड़ी नजर रखनी होगी। पत्नी के साथ सम्बन्धों में कड़वाहट आएगी। सहिष्णुता व धैर्य धारण करने वाला रवैया अपनाएं। आर्थिक रूप से भी चिन्ता व कर्ज की स्थिति बनने के संकेत हैं। अपने खर्चों को योजनाबद्ध रूप से करें।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह माह आपके लिए लाभदायक रहेगा। मातुल पक्ष से लाभ होगा। परिवार की कुल आय में उत्तम ग्रह गोचर के प्रभावस्वरूप वृद्धि के योग हैं।

घरेलू वातावरण घर के सभी सदस्यों में उत्तम तालमेल के चलते स्नेह व सौहार्दपूर्ण बना रहेगा। आपको बच्चों के बेहतर प्रदर्शन व व्यवहार से अतिरिक्त प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिणामस्वरूप पूरे परिवार में सभी लोग संतुष्ट रहेंगे और पिता के प्रति आपके श्रद्धा भाव में वृद्धि होगी तथा आपको बुजुर्गों का स्नेह व आशीर्वाद प्राप्त होगा।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह गोचर के अनुसार आपके लिए कुछ ऐसा नहीं जान पड़ता जिससे आपके परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहे। बहुत संभावना है कि आपके अपने मातुल पक्ष के लोगों से संबंध खराब हो जाए।

आप और आपके बंधु बांधवों में गंभीर वैचारिक मतभेद रह सकते हैं हर संभव प्रयास करें कि ऐसी स्थिति न आने दी जाय। उत्तेजित न हों तथा अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा का प्रयोग करते हुए शांति बनाए रखें अन्यथा विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। कुल मिलाकर यह आपके लिए परीक्षा की घड़ी होगी।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर के अनुसार यह समय परिवार की तरक्की के लिए शुभ नहीं है। मातुल पक्ष के लोगों से तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त नौकर चाकर लोगों से भी आपके संबंध बिगड़ सकते हैं।

क्रोध का शिकार न हों तथा उत्तेजित होने की स्थिति में पड़ने से बचें। ऐसा करने से ही आप अनायास उत्पन्न होने वाली संमस्याओं का सामना करने के लिए स्वयं को सक्षम बनाए रख सकते हैं। पारिवारिक वातावरण कलह वाला ही रहेगा। बच्चों पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। उनकी सुरक्षा व अच्छे स्वास्थ्य के लिए उनपर समुचित ध्यान देना आवश्यक होगा।

# परिवार - 2028

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

## जनवरी 2028 के लिए फलादेश

घरेलू मामलों में आपको प्रसन्नता प्राप्त होने के संकेत प्रतिकूल ग्रह गोचर के चलते कम ही दिखायी दे रहे हैं। परिवार की महिला सदस्यों से कटु सम्बन्धों के चलते आपके विशेष तनावग्रस्त होने की प्रबल सम्भावनाएं हैं और अपनी पत्नी के साथ सम्बन्धों को सुधारने में अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता पड़ेगी। चतुराई से तनाव वाली स्थिति से निपटने का प्रयास करें।

आर्थिक रूप से भी आपकी स्थिति विशेष अनुकूल नहीं है तथा खर्चों को नियंत्रित करने के लिए खर्च आने से पहले ही अंकुश लगाने की योजना पद्धति निर्मित करनी होगी। बच्चे भी उपद्रव करके आपको कुछ कठिनाई में डाल सकते हैं। अतः अपना समय और शक्ति लगाकर उन्हें संस्कारी बनाने का प्रयास करें।

## फरवरी 2028 के लिए फलादेश

इस माह के अनुकूल ग्रह गोचर के अनुसार बढ़ते हुए खर्चे आपके परिवार को थोड़ी कठिनाई में डाल सकते हैं और कर्ज भी लेना पड़ सकता है जिससे थोड़ा अतिरिक्त भार बढ़ सकता है। अपने खर्चों को समय रहते सावधानीपूर्वक नियोजित कर लें। ताकि कठिनाई वाली स्थिति को टाला जा सके।

परिवार के महिला सदस्यों के साथ गम्भीर मतभेद होने की भी सम्भावनाएं हैं। जीवनसाथी के साथ भी टकराव की स्थिति बन सकती है। व्यर्थ के तर्क-वितर्क में पड़ने से बेहतर है कि विपरीत परिस्थिति को कुशलतापूर्वक संभालते हुए कार्य का सम्पादन करें और बच्चों की ओर से आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए उनकी कार्य प्रणाली को अपना समय देकर संयोजित करें।

## मार्च 2028 के लिए फलादेश

यह माह आपके पारिवारिक मामलों के लिए लाभकारी रहेगा। वैवाहिक सुख में तथा जीवनसाथी के प्रेम में किसी प्रकार की कमी का संकेत नहीं है। घरेलू जीवन में आपको बहुत प्रसन्नता प्राप्त होगी।

पारिवारिक वातावरण सुख सौहार्द व तालमेल वाला होगा तथा बच्चों का आचरण भी अनुकूल रहेगा। आपको उनकी पढ़ाई व अन्य नेतृत्व क्षमताओं इत्यादि के बारे में चिन्ता नहीं रहेगी। इससे परिवारीजनों को ख़ुशी प्राप्त होगी। आर्थिक रूप से यह माह उत्तम रहेगा।

## अप्रैल 2028 के लिए फलादेश

प्रतिकूल ग्रह गोचर से अनावश्यक खर्च बढ़ेगा व आर्थिक तंगी होगी जिससे निपटने के लिए अपने खर्चों को योजनाबद्ध रूप से करें।

महिला सदस्यों के साथ सम्बन्धों में तनाव की समस्या से उबरने के लिए कुशलतापूर्वक व्यवहार करें तथा व्यर्थ के तर्क-वितर्क में पड़ने की भूल न करें। बच्चे भी शत्रुवत् व्यवहार कर सकते हैं इसलिए उनके प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए सावधानीपूर्वक उनका मार्गदर्शन करने के लिए अपना अतिरिक्त समय दें।

## मई 2028 के लिए फलादेश

यह माह आपके लिए हर प्रकार से शुभ, उन्नति कारक व प्रसन्नता दायक रहेगा। वैवाहिक सुख में वृद्धि होगी और जीवनसाथी से अपार स्नेह प्राप्त होगा। कुलमिलाकर आप हर प्रकार से संतुष्ट रहेंगे।

बच्चों का व्यवहार तथा उनके बेहतर परिणाम आपके आनन्द को दोगुना कर देंगे। कुलमिलाकर परिवार में सुख समृद्धि, आनन्द व पारस्परिक समन्वय का वातावरण बना रहेगा।

## जून 2028 के लिए फलादेश

इस माह के प्रतिकूल ग्रह गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों में शुभ परिणामों की अपेक्षा करना व्यर्थ होगा। प्रतिकूल ग्रह गोचर से अनावश्यक खर्च बढ़ेगा व आर्थिक तंगी होगी जिससे निपटने के लिए अपने खर्चों को योजनाबद्ध रूप से करें।

परिवार के महिला सदस्यों के साथ तनाव की स्थिति बन रही है इसलिए जीवनसाथी व अन्य सदस्यों के प्रति व्यवहार में अतिरिक्त कुशलता की आवश्यकता है। जिससे कठिन परिस्थिति को टाला जा सके। बच्चों की तरफ से आने वाली समस्याओं का समाधान करने हेतु अपना समय व ऊर्जा लगाकर उन्हें भी अनुशासित करें।

## जुलाई 2028 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह गोचर के अनुसार पारिवारिक स्थिति में मन को आनन्दित करने

वाली सम्भावनाएं नहीं बन पाएंगी। परिवार के महिला सदस्यों के साथ विशेष रूप से जीवनसाथी के साथ सम्बन्धों में कड़वाहट की स्थिति से बचने के लिए सावधानी पूर्वक व्यवहार करें।

परिवार का वातावरण विशेष सुखदायी नहीं रहेगा तथा खर्च बढ़ने से वित्तीय समस्याएं उत्पन्न होंगी। बच्चे भी शत्रु की भूमिका में रहेंगे और पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे। उन्हें अनुशासित करने की आवश्यकता है।

## अगस्त 2028 के लिए फलादेश

ग्रह गोचर के प्रभाव से इस माह पारिवारिक कल्याण की दृष्टि से आनंदित होने की स्थिति बनने की सम्भावनाएं नहीं हैं। आपमें से बहुत से लोगों को महिला सदस्यों विशेष रूप से पत्नी के साथ सम्बन्धों में कड़वाहट का सामना करना पड़ेगा। इसलिए अनावश्यक तर्क-वितर्क में पड़ने की भूल न करें।

आपको चाहिए कि आप परिस्थितियों का सामना करने के लिए सावधानी तथा चतुराई से हल निकालें। आर्थिक रूप से भी आप कुछ विशेष बेहतर नहीं कर पाएंगे। इसलिए सावधानीपूर्वक व योजनाबद्ध तरीके से समय रहते खर्चों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करें। बच्चे भी आपकी परेशानियों को बढ़ाएंगे। इसलिए उनकी गतिविधियों का सावधानीपूर्वक मुआयना करके अपना समय व सामर्थ्य प्रयोग करके उनका सही मार्गदर्शन करें।

## सितम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के गोचरीय प्रभाव से कुछ विशेष शुभ होने के संकेत नहीं हैं तथा परिवार में कुछ समस्याएं बनी रहेंगी। जिसमें महिला सदस्यों के साथ सम्बन्धों को लेकर आई कड़वाहट कम होने की सम्भावना कुछ कमजोर है। पत्नी के साथ व्यवहार में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

बच्चे भी आपकी चिंता का सबब बनेंगे। उनकी गतिविधियों को सावधानीपूर्वक मुआयना करके अपना समय व सामर्थ्य प्रयोग करके उनका सही मार्गदर्शन करें। परिवार का वातावरण विशेष सुखदायी नहीं रहेगा तथा खर्च बढ़ने से वित्तीय समस्याएं उत्पन्न होंगी।

## अक्तूबर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के गोचरीय प्रभाव से कुछ विशेष शुभ होने के संकेत नहीं हैं तथा परिवार में कुछ समस्याएं बनी रहेंगी। परिवार का वातावरण विशेष सुखदायी नहीं रहेगा तथा खर्च बढ़ने से वित्तीय समस्याएं उत्पन्न होंगी। समस्याओं का कुछ समाधान प्राप्त करने के लिए अपने खर्चों को योजनाबद्ध तरीके से करने का प्रयास करें।

पारिवारिक सम्बन्धों में भी गम्भीर कटुता आने के संकेत प्राप्त हो रहे हैं और इस परिस्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए तथा तनाव को कम करने के लिए चतुराई से समस्या

का परिस्थिति के अनुसार समाधान निकालें। बच्चे अतिरिक्त तनाव उत्पन्न कर सकते हैं इसलिए उनकी गतिविधियों पर भी पैनी नजर रखें।

## नवम्बर 2028 के लिए फलादेश

अनुकूल ग्रह गोचर के चलते यह माह आपके लिए प्रसन्नता व शुभ समाचार की टोकरी लेकर आ रहा है। आपके प्रणय सम्बन्ध बेहतर होंगे तथा जीवनसाथी प्राप्त होने वाले प्रेम में किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। समस्त पारिवारिक वातावरण संतोषजनक रहेगा।

परिवार की कुल आय में वृद्धि के संकेत हैं। बच्चे अपने व्यवहार, स्वभाव, अध्ययन तथा अन्य गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए समस्त परिवार के लिए विशेष प्रसन्नता उत्पन्न करेंगे।

## दिसम्बर 2028 के लिए फलादेश

ग्रह चाल परिवार कल्याण के लिए विशेष शुभ नहीं है तथा वित्तीय परेशानियां परिवार की चिन्ताओं को बढ़ा सकती हैं। सावधानी पूर्वक बनायी गई योजनाओं के प्रभाव से इन समस्याओं के कुप्रभाव से कुछ हद तक बचा जा सकता है।

आपको चाहिए कि आप परिस्थितियों का सामना करने के लिए सावधानी तथा चतुराई से हल निकालें। आर्थिक रूप से भी आप कुछ विशेष बेहतर नहीं कर पाएंगे। इसलिए सावधानीपूर्वक व योजनाबद्ध तरीके से समय रहते खर्चों पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करें। बच्चे भी आपकी परेशानियों को बढ़ाएंगे। इसलिए उनकी गतिविधियों का सावधानीपूर्वक मुआयना करके अपना समय व सामर्थ्य प्रयोग करके उनका सही मार्गदर्शन करें।

# स्वास्थ्य - 2026

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि में ग्रहों एवं सितारों की स्थिति आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत उत्साहजनक नहीं बन रही है। यह मुश्किल समय है सतर्कता बनाए रखें। हाथ और पैर कुछ ठंडे हो आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकते है। इसके अलावा आपमें सामान्य घबराहट की स्थिति बन सकती हैं। रोग सामान्य से अधिक बढ़े इससे बेहतर है कि इनका समय रहते निराकरण किया जाए। ग्रहों की प्रतिकूलता आपसे अतिरिक्त देखभाल और ध्यान की मांग कर रही है। इस अवधि में आपके स्वभाव में उदासी अधिक हो सकती है। इसके अलावा इस समय में अशुद्ध या बासी भोजन करने से परहेज करना होगा। सावधानी बरतें। भोजन में विषाक्तता निश्चित रूप से स्वास्थ्य कमी का कारण बन सकता है। सतर्क बने रहें।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपके स्वास्थ्य कमियों को दूर कर रोगों का निपटारा कर रहे है और अन्य किसी रोग को लेकर गंभीर चिंता का कोई कारण नहीं बन रहा है। स्वयं को सुखमय बनाए रखने के लिए आप जीवन में नकारात्मक विचार धारा से दूर होकर हंसमुख बने रहें। इससे आपकी आरोग्यता दीर्घकाल के लिए सुनिश्चित होगी। साथ ही बुखार, सूजन एवं गंभीर बीमारियों के शांत रहने से आपको रोग कठिनाईयों से बड़ी राहत प्राप्त होगी। इस अवधि काल में आपको सिर से जुड़ी कुछ परेशानियां आ सकती हैं। इस प्रकार के रोग के गंभीर रूप धारण करने से पहले आप इसके निवारक उपाय के रूप में सिर के लिए टॉनिक का प्रयोग कर सकते हैं। यह माह आपके लिए काफी संतोषजनक माह सिद्ध होगा क्योंकि इस माह में आपके किसी भी गंभीर बीमारी से ग्रसित होने की संभावना नहीं हैं।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस माह अवधि के सितारों का संयोजन आपके स्वास्थ्य सुख को सुनिश्चित कर रहा हैं। माह अवधि में सतर्कता और सावधानी बनाए रखना आपके लिए हितकारी रहेगा। पाचन तंत्र, गठिया जैसी अनियमितताओं में गड़बड़ी होने से आपकी स्वास्थ्य परेशानियां बढ़ सकती है। माह अवधि में आपको बहुत अधिक देखभाल और ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी। गले के

रोग आपको स्वास्थ्य परेशानियां दे सकते हैं। यदि आपको ह्द्रय से संबंधित कोई रोग या लक्षण दिखाई देता है तो आपको इनकी जटिलताओं की बारीकी से जांच करानी चाहिए। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना आपको स्वस्थ रहने में मदद करेगा।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

सितारों का संयोजन आपके स्वास्थ्य के लिए इस माह अनुकूल नहीं बन रहा है। इस माह में आपको ज्यादा ध्यान और देखभाल की जरुरत पड़ सकती हैं। साथ ही इस माह में अत्यधिक परिश्रम करना आपको थकावट का कारण बन आपको दुर्बलता की स्थिति दे सकता हैं। यहां तक की आपके तंत्रिका विकार भी पीड़ित होने की संभावना बन रही हैं। यह स्थिति न बने इसके लिए सावधान रहना चाहिए। कार्यो की अधिकता से अनावश्यक रूप से आपके शारीरिक तंत्र पर पड़ने वाले दबाव को कम करना होगा। तथा छाती में किसी भी प्रकार के संक्रमण का आपको तुरंत ईलाज करना होगा।

## मई 2026 के लिए फलादेश

इस माह स्वास्थ्य सुख को लम्बे समय के लिए सुखमय बनाए रखना आपके लिए सहज नहीं होगा। आपके पाचन अंगों में सरलता से परेशानी हो सकती हैं। परहेज करने से आप अपने रोगों को गंभीर होने से बचा सकता है। आपको अधिक से अधिक ध्यान रखना होगा। आहार और ईलाज पर भी आवश्यक नियंत्रण बनाए रखना आपके लिए उत्तम रहेगा। जुकाम, खांसी जैसी छाती की पुरानी शिकायओं पर ध्यान देने से ये रोग अपना प्रभाव नहीं दिखा पायेंगे। रोगों के बढ़ने पर स्वास्थ्य परेशानियां बढ़ सकती हैं। भोजन में विषाक्तता के प्रति सतर्कता बनाए रखें। अशुद्ध खाद्य पद्रार्थ भी आपकी मुसीबतों का एक स्त्रोत बन सकते है। सावधानी रखना हितकारी रहेगा। माह अवधि में ग्रह योग भी आपके अनुकूल नहीं बन रहे हैं। इसलिए स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखनी चाहिए।

## जून 2026 के लिए फलादेश

स्वास्थ्य के लिए यह माह आंशिक रूप से अनुकूल बन रहा है। सितारों का संयोजन आपके लिए बहुत कम शुभ स्थिति बना रहा हैं। बुखार एवं शीघ्र क्रोध में आना जैसी गड़बड़ियां आपको परेशानी दे सकती हैं। अचानक से गंभीर बीमारी आपकी चिंताएं बढ़ा सकती है। अतिरिक्त देखभाल करने और बहुत शीघ्र उपचार जैसे कदम उठाना आपके लिए हितकारी सिद्ध हो सकता है। किसी प्रकार का नेत्र संक्रमण होने की संभावनाएं बन रही हैं। सावधान रहना आपके लिए हितकारी रहेगा। अन्यथा आपके लिए परेशानी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अशुद्ध खाने के प्रति आपको अत्यंत सावधान रहना चाहिए। विषाक्त भोजन के कारण आपके स्वास्थ्य में कमी हो सकती हैं। यह अवधि आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं हैं। इसलिए आपको इस समय में अतिरिक्त सावधान रहना चाहिए।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

सितारें आपके स्वास्थ्य को अनुकूलता प्रदान कर रहे है। अतः इस माह अवधि में आपको कोई भी स्वास्थ्य को लेकर गंभीर चिंता नहीं होगी। स्वभाव में विनम्रता का भाव आपको उत्साह प्रदान करेगा। इसके अलावा गठिया, पाचन तंत्र, पेट फूलना, वायु रोग से संबंधित अनियमितताएं तथा पुरानी बीमारियों में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न होने से आपको राहत मिलेगी। कम से कम सावधानी रखने से भी आपके स्वास्थ्य सुख में बढ़ोतरी होगी। माह अवधि में अशुद्ध भोजन का सेवन न करना आपके लिए सावधानी का कार्य करेगा। यह आपके लिए काफी महत्त्वपूर्ण होगा। अन्यथा यह स्थिति कष्टप्रद हो सकती हैं। साथ ही आपको विषाक्त भोजन से भी बचाव रखना होगा। वरना आपके लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्या का सामना करने की स्थिति बन सकती हैं। सावधानी रखने से स्वास्थ्य सुखद बना रहेगा। इसके अलावा स्वास्थ्य को लेकर चिंता की कोई बात नहीं हैं।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस माह सितारों की अनुकूलता से आपके स्वास्थ्य विकारों का समाधान हो रहा है। ग्रहों की शुभता यह सुनिश्चित कर रही है कि इस अवधि में आपको कोई गंभीर स्वास्थ्य समास्या नहीं होनी चाहिए। आपके स्वभाव में भी गंभीरता कम और उत्साह अधिक होगा। अत्यधिक परिश्रम के खिलाफ आपको सतर्कता बरतनी होगी। अत्यधिक परिश्रम इस समय बनी हुई सुखद स्थिति को खराब कर सकता है। अनावश्यक रूप से अपने शारीरिक तंत्र पर तनाव ड़ालना ठिक नहीं होगा। अपने दैनिक गतिविधियों को इस प्रकार निर्धारित करें कि आपके शरीर पर बहुत अधिक दबाव न पड़े। इससे आपकी स्वास्थ्य समस्याओं के एक बड़े हिस्से का सुधार होगा। इस विषय में आपको थोड़ा सावधान रहने की जरुरत हैं। तनाव से बचना आपके स्वास्थ्य सुख के लिए उत्तम रहेगा। अन्यथा इस माह की अनुकूल परिस्थितियां भी किसी गंभीर समस्याओ को रोकने में असमर्थ हो सकते हैं। समय की शुभता होने से इस माह की स्थिति उत्साहजनक बनी हुई है।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

स्वास्थ्य के पक्ष से यह समय आपके सितारों के अनुसार बहुत अनुकूल समय नहीं है। बवासीर जैसे रोगों में गड़बड़ी होने से आप परेशान हो सकते है। माह अवधि में अतिरिक्त देखभाल और ध्यान का प्रयोग करना होगा। स्वभाव में विनम्रता की कमी तथा स्वभाव में गंभीरता हो सकती है। यह भी आपके स्वास्थ्य के लिए खतरा सिद्ध हो सकती है। काम विषयों में कमी करने से आपके यौन संक्रमणध् में कमी हो सकती है। आपको यह विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि इस विषय में आपको अपनी अधिक से अधिक देखभाल करनी होगी। किसी बासी खाद्य या अशुद्ध भोजन सेवन से भी स्वास्थ्य सुख में कमी होने की आशंका बन रही है। विषाक्त भोजन करने से बचें। इसके लिए आपको बहुत सावधान रहना होगा। आपको अपने स्वास्थ्य को लेकर काफी सतर्कता रखनी होगी। कुल मिलाकर यह अवधि सावधानी रखने पर अनुकूलता लिए हुए है।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस माह में बन रही ग्रहों की स्थिति आपको कोई गंभीर स्वास्थ्य परेशानी या दुर्घटना न होना सुनिश्चित कर रही है। यह माह आपके लिए एक लाभकारी माह रहेगा। इस माह में बुखार, सूजन या अचानक से किसी गंभीर बीमारियों में कोई गड़बड़ी न होने से आपको महत्वपूर्ण राहत मिलेगी। इस प्रकार की समस्याएं आपको परेशान नहीं करेंगी। आपका स्वभाव उत्साहजनक बना रहेगा। पुरानी गठिया, जुकाम जैसे विकारों से ग्रस्त लोगों को भी राहत मिलेगी। फिर भी इस माह दुर्घटना या हिंसक चोट की संभावना बन रही हैं। अपने स्वास्थ्य की कुछ अतिरिक्त देखभाल करने से आपको कोई नुकसान नहीं होगा। कुल मिलाकर यह माह आपके स्वास्थ्य शुभता को प्रोत्साहित कर रहा हैं।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारें आपको कोई गंभीर स्वास्थ्य परेशानी या दुर्घटना न होने का योग सुनिश्चित कर रहें हैं। यह माह आपके लिए एक लाभकारी माह रहेगा। बुखार, सूजन या अचानक से होने वाली गंभीर बीमारियों में कोई गड़बड़ी न होने से आपको अच्छा महसूस होगा। इस प्रकार की समस्याओं के शांत रहने से आपको कोई परेशानी नहीं होगी। इस माह अवधि में आपका स्वभाव अनुकूल और सकारात्मक बना रहेगा। पुरानी गठिया, जुकाम आदि विकारों में किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी। जीर्ण बीमारियों की वापसी न होने से आपको राहत का अनुभव होगा। इस माह में आपको कोई हिंसक चोट लगने की संभावना नहीं बन रही हैं। अतिरिक्त देखभाल करना आपके लिए फायदेंमंद रहेगा। कुल मिलाकर यह माह आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूलता लिए हुए एक सुखद माह सिद्ध हो सकता हैं।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारें आपके लिए बहुत अनुकूल स्थिति नहीं बना रहे है। इससे आपके स्वास्थ्य सुख की स्थिति बहुत उत्साहवर्धक नहीं बनी हुई है। नर्वस तंत्र के विकारों का शीघ्र उपचार न कराना इन जटिलताओं को गंभीर बना सकता हैं। यहां तक की इन दुर्बलताओं के कारण कमजोरी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इस माह में स्वास्थ्य कमी का एकमात्र कारण अधिक परिश्रम और थकावट हो सकता हैं। अपने शारीरिक सामथ्र्य से अधिक कार्य करना आपके शारीरिक तंत्र पर अनुचित दबाव ड़ाल रहा है। इसमें कमी करने के उपाय आपको करने होंगे। कार्यों और गतिविधियों का पूर्वनियोजन करने से आप इस समस्या का समाधान निकाल सकते है। केवल एहतियात रखना ही आपको इन मुसीबतों से बचा सकता है। इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार का अशुद्ध भोजन या बासी भोजन लेते समय आपको सावधानी का प्रयोग करना चाहिए। अन्यथा भोजन में विषाक्तता आ सकती है। यह अवधि प्रतिकूल बनी हुई है इसलिए ख्याल रखना होगा।

# स्वास्थ्य - 2027

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस माह आपके साथ आपके भाग्य का समर्थन नहीं हैं। इसलिए इस माह आपको अपना ध्यान विशेष रूप से रखना होगा। इस माह आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव शीघ्र पड़ सकता हैं। अप्रिय लोगों से आपको इस माह दूरी बनाकर रहनी होगी। स्वास्थ्य की अनुकूलता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि आप सकारात्मक प्रभावयुक्त वातावरण में रहें। आपके स्वास्थ्य पर आपके आसपास के लोगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता हैं। नापसन्द लोगों और स्थानों से दूरी आपके स्वास्थ्य सुख को बढ़ायेगी। यदि आप इस प्रकार से कार्य करते है तो आप अपनी समस्याओं का एक बड़ा हिस्सा हल कर सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह समय काफी हद तक मुश्किल समय हैं। इस समय में आपको अतिरिक्त देखभाल की जरुरत है। सामान्य सावधानियां रखने से आप स्वयं को स्वस्थ बनाए रखने में सफल रहेंगे।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस माह के दौरान बनने वाली ग्रह युति आपके स्वास्थ्य को शुभ आशिर्वाद प्रदान कर रही हैं। आप अचानक से किसी रोग के प्रभाव में आ सकते हैं इस प्रकार की बीमारियों के उपचार के प्रति आपको सावधान रहना होगा। उपचार के बिना यदि स्वास्थ्य शुभता बनी रहे तो आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। उपचार शीघ्रता से कराना उति उत्तम फल प्रदान करेगा। इससे रोगों का शीघ्र समाधान होगा और रोग अपनी आरम्भिक अवस्था में ही शांत हो जायेंगे। इस माह विशेष चिंता का कोई कारण नहीं बन रहा हैं। स्वास्थ्य के पक्ष से भी यह समय शुभफलदायक बना हुआ हैं। ग्रहों की स्थिति आपके पक्ष में बन रही हैं। इसलिए स्वास्थ्य को लेकर आप किसी तरह से चिंतित नहीं रहेंगे।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपको अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुभ आशिर्वाद दे रहे हैं। इसलिए इस माह में आपको अपने स्वास्थ्य के लिए किसी प्रकार की चिंता नहीं करनी होगी। यहां तक कि गठिया, वायु रोग, पेट फूलना, पाचन तंत्र और पुराने रोगों के निष्प्रभावी रहने से आपको काफी राहत का अनुभव होगा। इस माह की ग्रह स्थिति आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगी। लेकिन फिर भी ध्यान न रखने पर अनुकूल स्थिति भी प्रतिकूल सिद्ध हो सकती हैं। स्वास्थ्य के लिए विपरीत माहौल में रहने से आप रोगों के प्रभाव में आ सकते हैं। इसलिए संक्रमित स्थानों से दूर रहना आपके लिए हितकारी रहेगा। किसी भी तरह का संक्रमण होने पर तुरंत ईलाज कराना लाभदायक रहेगा।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

जहां तक आपके स्वास्थ्य का प्रश्न है यह माह आपके स्वास्थ्य के लिए शुभफलदायक रहेगा। अपने स्वास्थ्य को लेकर इस माह आपको अधिक चिंता नहीं करनी होगी। फिर भी इस माह आपको अपने स्वास्थ्य की अनुकूलता का ध्यान रखना होगा। अपने स्वास्थ्य को निरंतर अच्छा रखने के लिए कुछ सावधानियां रखना आपके लिए लाभकारी रहेगा। इस माह सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको इस माह अत्यधिक मेहनत करने से बचना चाहिए। इसके लिए आपको अपने कार्यो के पूर्व में ही एक रूपरेखा या समय सारणी तैयार करनी होगी। इस समय-सारणी का कठोरता से पालन करने से स्वास्थ्य सुख बना रहेगा। किसी भी तरह के संक्रमण के प्रति आपको सावधान रहना होगा। इससे आप स्वास्थ्य दिक्कतों का निवारण कर सकते है। इसमें किसी भी तरह की विफलता आपके स्वास्थ्य रोगों को आमंत्रित कर सकती हैं। इसके अलावा आपको छाती के रोगों के संक्रमण के प्रति भी सावधान रहना होगा।

## मई 2027 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रहों की स्थिति आपके स्वास्थ्य मामलों का समाधान कर रही हैं। इसलिए इस माह में आप स्वस्थ और कम से कम बीमार रहेंगे। फिर भी यदि आपके पाचन अंग काफी आसानी से अव्यवस्थित हो जाते है तो इस माह में आपको इन रोगों से राहत का अनुभव होगा। वायु रोगों के प्रति सावधानी बनाए रखना हितकारी रहेगा। तथा रोग अनियमितताओं के प्रति सावधान रहना होगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आपको उपचार से बचने के लिए सावधानियों का ध्यान रखना होगा। खांसी, जुकाम और छाती से संबंधित किसी भी संक्रमण से बचने के लिए आपको एहतियात से काम लेना होगा। रोग ग्रस्त होने पर शीघ्र दवा लेने से स्थिति गंभीर नहीं होगी।

## जून 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों का सुरक्षा कवच आपके रोगों को दूर रखेगा। इस माह के अधिकतम समय में आप स्वयं को स्वस्थ और चुस्त रखेंगी। शीघ्र प्रभावित होने वाले रोग जैसे

बुखार आदि के प्रति आपको विशेष सावधानी बरतनी होगी। आपको स्वास्थ्य में किसी भी प्रकार की अनियमितता को अनदेखा करने से बचना होगा। ग्रहों की स्थिति आपके स्वास्थ्य को शुभ बनाए रखने के लिए शुभ बनी हुई हैं। अनहोनी होने का कोई संकेत नहीं बन रहा हैं। लेकिन फिर भी आप अप्रिय स्थानों और लोगों से दूर रहें। इस विषय में आपको सावधानी रखनी होगी। अपना ध्यान रखने से आपका स्वास्थ्य उत्तम बना रहेगा।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस माह अवधि के ग्रहों की स्थिति और योग आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छे नहीं बने हुए है। इस माह अपना स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए आपको सावधानी रखनी होगी। कब्ज, पाचन तंत्र, वायु रोग और आंत से जुड़ी पुरानी बीमारियों की गड़बड़ी आपको परेशान कर सकती हैं। उचित दवा और आहार लेते रहन आपको स्वास्थ्य सुख प्रदान करेगा। छोटी छोटी सी अतिरिक्त देखभाल का ध्यान रखने से आप गंभीर परेशानियों से मुक्त रह सकते है। अप्रिय स्थानों और लोगों से दूरी रखने का आपके स्वास्थ्य पर सीधा असर पड़ेगा। आपके पासपास के लोगों के स्वभाव की आपके स्वास्थ्य सुख में महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस माह के सितारों की स्थिति आपको स्वस्थता प्रदान कर रही हैं। कुछ विषयों को छोड़कर अन्य सभी स्वास्थ्य मामलों का इस माह समाधान होगा और आप असंतुष्ट नहीं रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए आपको सावधानी के रूप में अत्यधिक परिश्रम से बचना होगा। स्वयं को स्फूर्ति प्रदान करने के लिए आपको सभी प्रकार की सामान्य गतिविधियों को समय देना चाहिए। खेल और रुचियों को समय देना भी आपके लिए लाभकारी रहेगा। कार्यो में कमी करने के लिए आप एक कार्य सारणी बनाकर इसका प्रयोग कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इससे पूर्व चली आ रही स्वास्थ्य अनियमितताओं का आपको ख्याल रखना होगा। अप्रिय लोगों और अप्रिय स्थानों से दूर रहना होगा। तथा स्वास्थ्य सुख में स्थिरता बनाए रखने के लिए आपको अच्छे वातावरण में रहना होगा।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

जहां तक आपके स्वास्थ्य का सवाल है इस माह की ग्रह स्थिति की शुभता आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल बनी हुई हैं। इसलिए इस माह आपको अतिरिक्त देखभाल की जरुरत पड़ सकती हैं। इस माह में आपकी स्वास्थ्य अनुकूलता बहुत कम रहेगी। इसके अलावा आपको अप्रिय लोगों और स्थानों से दूर रहना होगा। आपके सामान्य परिवेश का आपकी स्वास्थ्य स्थिति पर सीधा असर पड़ेगा। अतः आप नकारात्मक स्वभाव के लोगों से दूरी बनाए रखें। अपनी भलाई को देखते हुए आप एहतियात बरत कर स्वास्थ्य से संबंधित खतरों को रद्द कर सकते हैं। अत्यधिक काम आसक्ति से भी आपको बचना होगा। यह आपके यौन अंगों की बीमारी दे सकता हैं। इस प्रकार के रोगों के प्रति आपको सतर्कता बरतनी होगी। उपचार की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि आप शीघ्र उपचार करें।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रहों एवं सितारों की शुभता आपको उत्तम स्वास्थ्य का आशीर्वाद प्रदान कर आपके स्वास्थ्य विकारों का निराकरण कर रही हैं। आपके स्वास्थ्य की स्थिति का निर्धारण करने और उसे सुखद बनाए रखने में आपके पास-पास के वातावरण के महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इसलिए इस विषय में आपको ध्यान रखना चाहिए। यह आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम बना हुआ है फिर भी इस माह कुछ अनहोनी के संकेत बन रहे हैं। एहतियात के रूप में अप्रिय लोगों, अप्रिय स्थानों से दूर रहना आपके स्वास्थ्य के लिए हितकारी रहेगा। आपके स्वास्थ्य को उत्तम बनाए रखने में यह विशेष भूमिका निभाएगा। किसी भी प्रकार के मामूली बुखार या सूजन के ईलाज के विषय में आपको सतर्कता बनाए रखनी होगी। ऐसे रोगों का शीघ्र उपचार कराने से ये समय पर नियंत्रित रहेंगे।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

स्वास्थ्य को स्थिर रूप में उत्तम बनाए रखने के लिए इस माह की ग्रह, घटनाएं आपको सहयोग कर रही हैं। पाचन तंत्र, पुरानी बीमारियों की गड़बड़ी, पेट फूलना एवं वायु रोग के शांत रहने से आपको इन परेशानियों में काफी राहत का अनुभव होगा। अधिक से अधिक सामान्य सावधानियां रखने से आपको कम से कम परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। यह आपको राहत प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त इस माह आपका सौहार्दपूर्ण वातावरण और सकारात्मक स्वभाव के लोगों के साथ रहना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रखेगा। साथ ही इस अवधि में अप्रिय परिवेश से दूर रखना आपके स्वास्थ्य सुख को बढ़ाएगा। आपके आस पास का सौहार्दपूर्ण वातावरण आपके स्वास्थ्य की स्थिति का निर्धारण करने में प्रमुख भूमिका अदा करेगा। इसलिए अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखना इस माह आपके हाथ रहेगा।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने में इस माह ग्रहों से बहुत कम मदद मिल रही हैं। इसलिए अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आपको स्वयं अपना ध्यान रखना होगा। अत्यधिक परिश्रम की वजह से आप सामान्य दुर्बलता का अनुभव करेंगे। यहां तक की आपका तंत्रिक विकार रोग ग्रस्त हो सकता हैं। अत्यधिक परिश्रम करने से आपको बचना होगा। इससे बचने के लिए आपको अपने कार्यो की सारणी पर प्रकाश ड़ालना होगा। अत्यधिक कार्य करना आपके शारीरिक तंत्र पर अनुचित दबाव डाल आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकती हैं। फिर भी आप सामान्य गतिविधियां के अनुरूप अपना जीवन यापन कर सकते हैं। यदि आप इन सब सावधानियों का पालन करते है तो आपके पास स्वास्थ्य सुख न होने का कोई उपयुक्त कारण नहीं हैं। अप्रिय लोगों और अप्रिय स्थानों के प्रभाव में रहना आपके स्वास्थ्य को प्रभावित करेगा। ऐसे विषयों से दूरी आपके स्वास्थ्य सुख को बढ़ाएगी।

# स्वास्थ्य - 2028

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

## जनवरी 2028 के लिए फलादेश

सितारों की शुभता प्राप्त होने से यह माह आपके स्वास्थ्य के लिए एक उत्कृष्ट माह सिद्ध होगा। माह अवधि में ज्यादा प्रयास किए बिना आप शुभता का आनंद ले सकते हैं। ग्रहों की शुभता आपको अच्छे स्वास्थ्य का आशीर्वाद दे रही है। पाचन तंत्र की अनुकूलता होने से स्वास्थ्य लाभ दिखाई देगा। खाये गये आहार का पूरा लाभ आपको प्राप्त होगा। आपकी कार्य शक्ति पहले से बेहतर होगी। स्वस्थता की भावना प्रबल बनी हुई हैं। अतः आप स्वयं की स्वस्थता के प्रति आप सतर्क रहेंगे। रोगों में कमी और स्वस्थता आपको काफी सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखेगी। मानसिक शांति के लिए आपको ध्यान का सहारा लेना पड़ सकता हैं। आंशिक रूप से आपके शरीर में फोड़े होने की संभावना बन रही हैं। आपको फोड़े के बारे में सावधान रहना चाहिए। ऐसा होने पर शीघ्र दवा लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। इसके अतिरिक्त इस माह में चिंता की कोई अन्य बात नहीं हैं।

## फरवरी 2028 के लिए फलादेश

स्वास्थ्य के पक्ष से यह माह आपके लिए एक अच्छा माह रहेगा। इस माह में आपको पोषक तत्वों की आवश्यकता अधिक रहेगी। जिसके फलस्वस्वरूप अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ाने के लिए आपको खाने में संतुलित आहार का प्रयोग करना होगा। इसके अतिरिक्त आपको शीघ्र होने वाले रोगों के प्रति सावधान रहना होगा। माह अवधि में अचानक दुःख की घटना के बारे में सतर्कता रखनी होगी। ऐसे किसी भी रोग लक्षण के संकेत प्रकट होने पर आप इनका तुरंत ईलाज करते हुए सावधान रहें और रोगों को गंभीर समस्याओं में बदलने से रोकें। माह अवधि में आपकी उत्पादक शक्तियों में वृद्धि होगी। अपनी ऊर्जा शक्ति से आप स्वयं आश्चर्य चकित होंगे। यह एक शुभ माह है जिसमें आपको अपना कम ध्यान रखना होगा।

## मार्च 2028 के लिए फलादेश

इस माह के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र, वायु रोग और पुरानी बीमारियों में गड़बड़ी न होने से आपको काफी राहत का अनुभव होगा। इस माह अवधि में

आपको अपने स्वास्थ्य की सामान्य देखभाल रखनी होगी। रोगों के शांत रखने से आपको राहत का अनुभव होगा। अपनी स्वास्थ्य अनुकूलता को बनाए रखने के लिए आपको पोषक तत्वों का सेवन करना होगा। माह अवधि में आपकी उत्पादक जीवन शक्ति बढ़ रही हैं। माह अवधि में आपका मन भी स्वस्थ रहेगा। गले में सामान्य खराश का ईलाज आपको कराना पड़ सकता हैं। अन्य रोगों के शांत रहने के योग बन रहे है।

## अप्रैल 2028 के लिए फलादेश

इस माह के सितारें आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं बने हुए है। माह अवधि में आपको स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव होगा। इस समय में आपको अतिरिक्त देखभाल और ध्यान की जरुरत रहेगी। आपको सामान्य रूप से अच्छे आहार का लाभ प्राप्त नहीं हो रहा हैं। इससे आप परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य के पक्ष से यह शुभ संकेत नहीं हैं। इसके अतिरिक्त छाती में किसी भी प्रकार के संक्रमण का पहला लक्षण दिखाई देने पर ही जल्द से जल्द गंभीरता से इसका ईलाज कराना होगा। इस संदर्भ में किसी भी प्रकार की समय हानि उचित नहीं होगी। समय की उपेक्षा किए बिना ईलाज करना आपके लिए काफी सकारात्मक होगा। साथ ही इस अवधि में आप अधिक परिश्रम से बचें। अपने शरीर पर अनुचित दबाव ड़ालने से बचें। कायी की अनुसूची तैयार कर आप अतिरिक्त कार्यभार से बचाव कर सकते हैं।

## मई 2028 के लिए फलादेश

इस माह सितारें आपको अपना शुभ आशिर्वाद प्रदान कर रहे हैं इसलिए यह माह आपके लिए एक उत्कृष्ट माह रहेगा। इस माह आप न केवल स्वस्थ रहेंगे बल्कि इस माह आपको अपने आहार का पूरा लाभ प्राप्त होगा। पाचन तंत्र भी आपके लिए शुभ बना हुआ हैं। स्वास्थ्य अनुकूलता होने से आप माह भर सक्रिय और ऊर्जावान बने रहेंगे। आपको अपनी उत्पादक शक्तियों पर गर्व होगा। यह माह आपके लिए शारीरिक सुख का आनंद लेने के लिए बना हुआ हैं। भावनात्मक और मानसिक रूप से भी माह की शुभता बनी हुई है। इस माह में ग्रहों की स्थिति आपके लिए प्रसन्नता लिए हुए रहेगी।

## जून 2028 के लिए फलादेश

यह माह एक ऐसा माह है जिसमें ग्रह योग, सितारों के आशिर्वाद से आप अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेने के लिए तत्पर हो सकते हैं। इस माह आपका स्वास्थ्य अच्छा तो रहेगा ही साथ ही इस माह आपका शारीरिक तंत्र अनुकूल होने से आपको आहार का पूरा लाभ प्राप्त होगा। जिससे आपका स्वास्थ्य सुख पहले से बेहतर होगा। इस माह उत्पादक शक्तियों में बढ़ोतरी होगी। यह बढ़ोतरी आपके लिए सुखद होकर आश्चर्य चकित कर सकती हैं। आप इस समय में काफी सक्रिय और ऊर्जावान बने रहेंगे। साथ ही इस समय में आपका भावनात्मक और मानसिक स्थिति प्रबल बनी रहेंगी। संतुलित आहार और सावधानियों का पालन करने से स्वास्थ्य की सुखद स्थिति बनी रहेगी अन्यथा यह बिगड़ सकती हैं। नेत्र संक्रमण के खिलाफ आपको सतर्कता बरतनी होगीं। यदि इनका समय रहते निराकरण हो जाता है तो संक्रमण शीघ्र

शांत हो जाएगा।

## जुलाई 2028 के लिए फलादेश

इस माह अवधि में आपको अतिरिक्त देखभाल और ध्यान की जरुरत पड़ सकती हैं। क्योंकि इस माह में ग्रह, सितारों का शुभ आशीर्वाद का अभाव बन रहा हैं। इसकी क्षतिपूर्ति करने के लिए आपको अपना खास ख्याल रखना होगा। पाचन अंग, वायु और पुरानी बीमारियों से संबंधित शिकायतें आपके लिए परेशानियां खड़ी कर सकती हैं। आपको इन रोगों से बचाव हेतु सतर्कता बनाए रखनी होगी। समय पर उचित उपचार न कराना आपकी समस्याओं को गंभीर रूप प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त आपके छोटे रोग भी लम्बी अवधि के रोगों में परिवर्तित हो सकते हैं। आपको अपनी उत्पादक शक्तियों के बारे में भी सावधान रहनी की आवश्यकता रहेगी। सावधानियां एक निवारक उपाय के रूप में कार्य करेंगी। माह अवधि के दौरान अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना आपको प्रतिकूल समय में स्वस्थता प्रदान करेगा।

## अगस्त 2028 के लिए फलादेश

इस माह ग्रह योग आपके स्वास्थ्य को अपना शुभ आशीर्वाद देने की स्थिति में नहीं हैं। इसलिए आपको स्वयं अपना ध्यान रखना होगा। आपके स्वास्थ्य के लिए यह बहुत अनुकूल स्थिति नहीं हैं। इसलिए इस समय में आपको कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। माह अवधि में सबसे पहले अधिक परिश्रम करने से बचना होगा। यह कार्य आपके शारीरिक तंत्र पर अधिक दबाव डाल सकता हैं। अपने दैनिक कार्यो और गतिविधियों को पूर्ण करने के लिए आप इन्हें दिन के छोटे छोटे हिस्सों में बांट कर सकते हैं। इसके लिए आप एक अनुसूची भी तैयार कर सकते हैं। अपनी अतिरिक्त देखभाल कर आप अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के बड़े हिस्से का निराकरण कर सकते हैं। स्नायु संबंधी विकार की आंशिक संभावना बन रही हैं। कुछ सरल योग एवं व्यायाम से स्थिति में सुधार किया जा सकता हैं। साथ ही सुबह की लम्बी सैर करना भी लाभकारी रहेगा।

## सितम्बर 2028 के लिए फलादेश

ग्रह स्थिति इस माह के दौरान आपको अच्छे स्वास्थ्य का आशिर्वाद दे रही हैं। माह अवधि में स्वास्थ्य में कमी को लेकर कोई गंभीर चिंता की बात नहीं हैं। आपका शारीरिक तंत्र आपके द्वारा लिए गये आहार का पूरा फायदा उठाने में सक्षम होगा। पोषक पदार्थो का लाभ आपके शरीर को मिलेगा। इसके फलस्वरुप आपको असाधारण सुरक्षा और जीवन शक्ति प्राप्त होगी। यहां तक कि अपने पास उपलब्ध उत्पादक संकायों का आप सबसे बेहतर तरीके से लाभ उठा पायेंगे। वास्तव में आप आनंदमयी जीवन व्यतीत करेंगे और बड़े पैमाने पर, पूरी तरह से इसे जीने के लिए तत्पर रहेंगे। संतुलित आहार का सेवन कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बनाए रख सकते हैं। ऐसी कोई भी गलती न करें कि आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो।

## अक्तूबर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के ग्रह, सितारें आपके स्वास्थ्य को शुभता प्रदान कर रहे हैं। इस माह के दौरान अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहने के बहुत कम कारण बन रहे है। सेवन किये गये आहार से आपका शरीर पुष्ट होकर अधिकतम लाभ प्राप्त करेगा। शारीरिक तंत्र की अनुकूलता आपके शारीरिक सुख को बेहतर करेगी। आप काफी सक्रिय और ऊर्जावान बने रहेंगे। पोषक तत्वों का शरीर में लगना आपकी उत्पादक शक्तियों को बढ़ाएगा, जिसे देख आप को सुखद आश्चर्य होगा। जीवन के सभी विषयों का आनंद लेने में आप समर्थ रहेंगे। सावधानियां न बरतने पर हिंसक दुर्घटना की संभावना बन सकती हैं। इस माह अवधि में आपको चोट आदि से बचना होगा। दुर्घटनाओं से बचाव करें और अपना ख्याल रखें।

## नवम्बर 2028 के लिए फलादेश

माह अवधि में सितारों की स्थिति आपके स्वास्थ्य के लिए उत्कृष्ट बनी हुई है। इसलिए यह माह आपके लिए अतिउत्तम बना हुआ हैं। फिर भी इस माह में आपको स्वास्थ्य को लेकर आंशिक चिंता हो सकती हैं। पुराने गठिया विकार, पाचन तंत्र से संबंधित शिकायतों और पुराने रोगों में गड़बड़ी न होने से आपको राहत का अनुभव होगा। शारीरिक तंत्र की अनुकूलता होने से आपको सेवन किए गये आहार का पूरा लाभ प्राप्त होगा। संतुलित भोजन करने से शरीर पुष्ट और स्वस्थ होगा। आप इस माह में काफी सक्रिय और ऊर्जावान दिखेंगे। परन्तु फिर भी मन आंशकित रहेगा। इस माह में अपनी स्वस्थता बनाए रखने के लिए आपको बहुत कम प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी। अतः यह माह एक सुखद माह रहेगा।

## दिसम्बर 2028 के लिए फलादेश

इस माह के दौरान सितारों की स्थिति आपके स्वास्थ्य विषयों के लिए बहुत अनुकूल सिद्ध हो रही हैं। इसलिए इस माह में आपको अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंता की कोई बात नहीं होगी। माह अवधि में आपके द्वारा लिए गए आहार का पूरा लाभ आपके शरीर को प्राप्त होगा। उत्तम भोजन का असर आपकी स्वास्थ्य चमक पर पड़ेगा। माह अवधि में आपकी उत्पादक शक्तियां चरम पर होंगी। इस माह आप काफी सक्रिय रहेंगे। इस माह में आपको अत्यधिक मेहनत करने से बचना होगा। यह आपके लिए खतरनाक हो सकता हैं। इससे बचने के लिए आप कार्यो की एक अनुसूची तैयार करें और उसके अनुसार कार्य निर्धारित करें। कुल मिलाकर इस माह आप जीवन के सुखों का भरपूर आनंद लेंगे।

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

## व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारणआप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमे आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगेउसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव की संभावन बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

## घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते है।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

## संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

# मासिक फलादेश

## जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

## फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके

अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

## मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

## अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

## मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

## जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

## जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप

दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

## अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

## सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से

भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

## अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

## नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति

आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

## दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

# वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

## व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

## यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे केतवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

# मासिक फलादेश

## जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

## फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

## मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

## अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

## मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से

कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

## जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

## जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी

वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

## अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

## सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका

स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

## अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

## नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय

सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

## दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

# वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

## व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधिक काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

## धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

## घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

## यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

# वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

## व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते है जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त करे लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्म प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

## धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

## घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

## संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक पेरशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

## यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

# वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

## व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

## धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगें। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

## घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

## संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

## स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

## यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

# वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

## व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्ज से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

## संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परिक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

## यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

# वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

## व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

## धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकीआर्थिक मेंवृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मईसे शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्तूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपकेजीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई-बहनोंके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

## संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नही तो उनकी संगत गलत हो सकती है।5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों कीशिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच-बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 23अक्तूबर के बाद आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

## यात्रा-तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं

होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

12 अगस्त से द्वादशपर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्को से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ऊँ गं गणपतये नमः।

# वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

## व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

## धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

## घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातार्वरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

## संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा मे वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

## यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

## व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगा। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होंगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि

क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

## घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद-विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

## संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह क गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रैनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

# वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि सप्तम भाव में और सिंह राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं चर्तुथ भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

## व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण व्यापार में नए साझेदार मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

अष्टम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किए अपना कार्य करते रहें।

## धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। किसी को लंबे समय से दिया हुआ धन वापस मिलने का योग है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात-निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

6 अप्रैल के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। माता पिता की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाए बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बंधित है धोखा दे

सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक-दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास-ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

## संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। परन्तु दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। आपकी दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उनका विवाह हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

## स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करे। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। अप्रैल के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिए समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आप के लिए श्रेष्ठ हैं। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे

निकलना चाहते हैं, तो आपको अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है इस उद्देश्य को मानेंगे और दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको राहु की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर सुबह-सुबह उसका दर्शन करें एवं ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

# वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

## व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अचानक आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

27 अगस्त के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान के गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है। 27 अगस्त के बाद लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 15 अप्रैल से समय और भी अच्छा हो रहा है।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

15 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का बहुत ही शुभ समय चल रहा है। आपके बच्चे अनुकूल कार्य करेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक स्थिति को लेकर ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव से भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

27 अगस्त के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अष्टम स्थान का शनि कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही न करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत अच्छा है। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 27 अगस्त के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 15 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें और सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें (तांबे की लोटे में चावल डालकर)।

# वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

## व्यवसाय

व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ ऐसी परेशानी आ सकती है जिसका समाधान निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में एहतियात बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रुप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

## धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप लेन-देन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। फिर भी जोखिम उठाना कदापि उचित नहीं होगा। शेयर बाजार से दूरी बनाना निश्चित तौर पर आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

26 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो सकती है। सितम्बर के बाद धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

## संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी उम्मीत रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

26 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

## स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे, जिससे अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

26 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक कोई बड़ी बीमारी दे सकती है। इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। गुरु ग्रह का गोचर आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

26 अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। जिन लोगों को अभी तक नौकरी नही मिली है उनको सितम्बर तक इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन नहीं लगेगा। आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढाएं।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

## व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है। इस अवधि में आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से प्रत्यक्ष एवं गुप्त शत्रुओं की वृद्धि होगी। वे आपको किसी षड्यन्त्र में फंसाने का प्रयत्न करेंगे और आप उनके बीच फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। परन्तु 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके विरोधी एवं प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आपकी सफलता का मार्ग खुलेगा।

अक्टूबर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। फिर भी किसी पर अत्यधिक विश्वास करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा क्योंकि अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में रोग होने के कारण भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकते है। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

## घर-परिवार, समाज

मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम

लेना होगा। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। 11 मई से मित्रों व पत्नी के साथ संबंधो में सुधार होगा।

तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे खुशनुमा माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

## संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई से समय उत्तम हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस वक्त बच्चों पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 11 मई से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे।

7 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंता जनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं है। परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा परन्तु आप अपने लक्ष्य के पथ

पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को लेकर आगे बढ़ते रहेंगे। 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप खुश नहीं रहेंगे।

## यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मई के बाद छोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यावसायिक यात्राएं होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अक्टूबर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 11 मई से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह स्थित होने से मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुसी के साथ मनाएंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में मन्द गति से वृद्धि होने की संभावना बन रही है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय काफी शुभ है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 मार्च के बाद किसी के साथ मिलकर कार्य करने का प्रबल योग बन रहा है। लेकिन यह साझेदारी आपके लिए अच्छी नहीं रहेगी। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

5 अप्रैल से अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास अधिक लगन से करें। देर से ही सही आपको इस संबंध में सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थितियों को सरलता से संभालने की आपकी कला का परिणाम, प्रशंसा तथा वित्तीय लाभ हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय अधिक अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा इस समय के अंतराल में अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं। 3 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। पंचमस्थ राहु के कारण पुत्र के रोग-व्याधि में भी आपके पैसे खर्च होंगे। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 4 नवम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परिवारिक विषयों को लेकर चिंताएं बनी रहेंगी। नवमस्थ शनि के कारण पिता जी के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। जीवनसाथी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। परिवार का सहयोग आपके साथ पूरी तरह से बना हुआ है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 4 नवम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

## संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताए बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। 7 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए ज्यादा खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। 4 नवम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। अर्थात वर्षान्त आपके लिए श्रेष्ठ है।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए साल का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। छठे स्थान के राहु अचानक प्रतियोगिता में उन्नति के मार्ग खोलेंगे तथा आपको प्रतियोगिता में इच्छित सफलता मिलेगी। 7 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। वर्ष का उत्तरार्द्ध उनके लिए काफी श्रेष्ठ है। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए यह समय शुभ है।

## यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। 5 अप्रैल के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी आन्दन लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट रहेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्यता व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। 7 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी आस्था एवं विश्वास में कमी कर सकता है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

## व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद व्यावसायिक स्थिति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। काम धंधे में भी रुकावटें आ सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लेकिन 28 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे। आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलेगी तथा 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

## धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योंकि 6 अप्रैल से आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। इस समय के अंतराल में आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले मे सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 दिसम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में धन का व्यय होगा।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके माता पिता जी

के लिए भी समय शुभ नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। दोस्ती में भी दरार आ सकती है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

28 जून से समय अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। संतान संबंधित चिंताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 28 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो वर्षान्त में विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

## स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

28 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 28 जून के बाद नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ आपकी धार्मिक यात्राएं भी खुब होंगी।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह

मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 28 जून से समय फिर से शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुः ख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार को व्रत रखें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

# वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

## व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अनुकूल रहेगा। व्यापारी बंधु अपनी कर्तव्य-निष्ठा व परिश्रम के कारण अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल रहेंगे। लंबे समय से रुके हुए आपके कार्य अब तेज गति पकड़ेंगे। आप नए कार्यों में हाथ डालने के लिए आतुर रहेंगे। लेकिन जल्दबाजी करने से बचें व सोच-समझकर धन निवेश करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्षारम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। स्थानान्तरण का भी योग बन रहा है। भूमि, भवन व वाहन से जुड़े लोगों को 6 मई के बाद नुकसान हो सकता है। अतः खरीद-बेच करते समय कागजी कार्यवाही पर पूर्ण ध्यान दें।

मई से जुलाई तक अपने सहकर्मियों के साथ उचित तालमेल बना कर चलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। कार्यस्थल में व्यर्थ वाद-विवाद से बचें। वर्षान्त आपके लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। अपने उच्च अधिकारियों की तरफ से आपको मान-सम्मान, पुरुस्कार या शाबाशी मिल सकती है। शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको वांछित पद की प्राप्ति होगी।

## धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। आय में निरंत्रता बनी रहेगी परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। 6 मई के बाद जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश करने व किसी को पैसे उधार देने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा।

उत्तरार्द्ध में हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति करा सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। माता की बीमारी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

## घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु घर परिवार के लिए अच्छा नहीं है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती हैं तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर

प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपके सम्बन्धों में खटास आ सकती है। मई से जुलाई तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके संबंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजित पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। 6 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्षान्त बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस अवधि में उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत के लिए अच्छा है। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। 6 मई के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

25 सितम्बर के बाद चोट व दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 मई के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 25 सितम्बर के बाद वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

## यात्रा-तबादला

शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से इस वर्ष छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

सितम्बर के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें तथा किसी के साथ मित्रता न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 25 सितम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

# वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं दशम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

## व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष अति उत्तम होगा। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। हर हाल में आपको लाभ होने वाला है। चतुर्थस्थ राहु के कारण वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यावसायिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे। इसके साथ ही कारोबार में पूंजी लगाने वाले लोग भी मिलेंगे। कुल मिलाकर आपके लिए समय अनुकूल है, उसका लाभ उठाएं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान-सम्मान बढ़ेगा। नई व बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावन है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी ख्वाहिशें पूरी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन 22 जून के बाद तीव्र गति से लाभ प्राप्त होगा।

## धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। आपकी राह की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्वाध रूप से होगा। लेकिन इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में कुछ आधारभूत बदलाव करने होंगे।

22 जून के बाद आपकी जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। कुल मिलाकर आर्थिक रूप से यह वर्ष बेहतर साबित होगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। 22 जून तक परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

22 जून को राहु ग्रह के गोचर के साथ परिवार में आपसी सद्‌भाव का माहौल

बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर होंगे तथा समय आनन्द के साथ व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

## संतान

आपके बच्चे हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने का पूर्ण योग बन रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति करेंगे।

## स्वास्थ्य

इस वर्ष आपकी सेहत अच्छी रहने वाली है। कोई बड़ी समस्या नहीं की उम्मीद नहीं है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारी परेशान कर सकती हैं, परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन-सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता के तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यधिक अनुकूल है। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है।

22 जून को तृतीय स्थान में राहु का गोचर प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं अधिक होंगी। जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको

इच्छित लाभ मिलेगा ।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षा व साक्षातत्कार के लिए यात्रा हो सकती है। आध्यात्म की प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते है। देश विदेश घूमने के अवसर भी मिलेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे। जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी एवं आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

दुर्गा बीसा यंत्र धारण करने से चतुर्थस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

## व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप नई ऊँचाईयों को छूएंगे। विशेषतः भविष्य में आर्थिक उन्नति के लिए अभी धन का निवेश करेंगे जिसका आने वाले भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। दशमस्थ शनि के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे, मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन 30 जुलाई के बाद से समय आपके अनुकूल हो जाएगा। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें तथा अपने शत्रुओं से सावधान रहें।

## धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक खर्च वाला होगा। इस समय धन का आगमन तो होगा परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारो के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय भी होगा। साथ ही जो व्यक्ति मकान, भूमि या वाहन की सोच रहे हैं उनके लिए यह समय ज्यादा खर्च वाला है। घ ार के पुनर्निमाण पर भी खर्च बढ़ेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से उत्तम रहेगा। धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुख सुबिधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ होगा।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार

में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। विवाहित लोगों के लिए संतान प्राप्ति का योग बन रहा है। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रभावित रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं आ सकती हैं। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनके उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। इस समय के अंतराल में उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

## स्वास्थ्य

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण आपको पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी।

आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आप पढाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते

हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा आप किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है।

## यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। अपने कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

आपके पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग हैं। परिवार में किसी यादगार यात्रा एवं सुखमय यात्रा का योग बन रहा है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यशालाओं जो धर्म पर आधारित हों उनमें भाग लेंगे। साथ ही वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निमार्ण हेतु दान भी करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने पूजाघर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

# वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

## व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 16 फरवरी के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

नौकरी करने वाले लोगों की पदोन्नति का पूर्ण योग बन रहा है। समय समय पर आपको बड़े अधिकरियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे।

## धन संपत्ति

शुरु के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आर्थिक स्थिति के लिए अनुकूल बना रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय के मार्ग की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। 16 फरवरी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। लेकिन आंख बंदकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है, क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में इस वर्ष अधिक खर्च होंगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा इत्यादि से जुड़े हैं तो इस वर्ष ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी तरह का जोखिम न लें।

## घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं, टालने की कोशिश करें। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से

परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद करेंगे। आपके भाई-बहन आपको आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल श्रेष्ठ है।

## संतान

वर्ष के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। 16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी शिक्षा के स्तर में सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष विवाह होने का पूर्ण योग बन रहा है।

## स्वास्थ्य

वर्ष के दो माह जनवरी व फरवरी छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में खूब मन लगेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ शारीरिक कष्ट हो सकते हैं तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस वर्ष आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रही है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीक व विज्ञान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष सफलता के योग बने हुए हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

नौकरी व करियर में अधिकारी से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई तकनीक, हुनर व मशीनरी का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा इसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

## यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही नौकरी करने वाले व्यक्तियों का तबादला होगा तथा यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आप विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

16 के बाद धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यापारिक या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

16 फरवरी के बाद आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

- प्रतिदन गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजन घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालिसा का पाठ करें।

# वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

## व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत ही अनुकूल है, अतः आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। लग्नेश एवं धनेश शनि एकादश स्थान में स्थित हैं जो कि उच्चपद की प्राप्ति, मनोवांछित स्थान परिवर्तन आदि का योग बना रहे हैं। साझेदारी में व्यवसाय करने की संभावनाएं बलवती हैं। आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे।

व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। लेकिन साझेदारी में कार्य करने वाले को वांछित सफलता नहीं मिलेगी।

## धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए समय बहुत अनुकूल है। पूरे वर्ष धनागमन का स्रोत बना रहेगा। यदि किसी नये व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों में भी धन प्राप्ति के योग बनेंगे। आपके अंदर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय की राह में सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। आंख बन्दकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ रहने वाला है। आय के साधन बढ़ेंगे तथा धन की बचत होगी। उसके साथ-साथ पैतृक संपत्ति मिलने के योग भी बने हुए हैं। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वास्तुओं की प्राप्ति होगी।

## घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव आएंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। लेकिन अपने तरफ से इसे टालने की पूरी कोशिश करें नहीं तो स्थिति ज्यादा खराब हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें नहीं

तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए शुभ रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण परिवार में सुख शांति एवं मधुरता बनी रहेगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, परन्तु सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद करा सकती है।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी उच्च शिक्षा में सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चे किसी नवीन भवन के निर्माण या वाहन क्रय के बारे में योजना बनाएंगे। आपकी द्वितीय सन्तान के धनार्जन व धन संचय के लिए यह समय विशेष अनुकूल होगा।

## स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप संतुष्ट रहेंगे। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपकी कार्य क्षमताओं का विकास होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

15 जून को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन अचानक आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस अवधि में आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रहा है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मनोबल में वृद्धि होगी। अगर आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो मेहनत के बल पर नई उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

लग्नेश शनि की एकादश भाव में स्थिति के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा।

## यात्रा-तबादला

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यांजन करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा, परन्तु जलीय व सामुद्रिक स्थलों की यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बनी रहेगी। आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में व्यतीत होगा, जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन इत्यादि। सभी धार्मिक कार्यों में आपको परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हनुमानजी की आराधना करें तथा अपनी दिनचर्या को सही रखें तथा आलस्य का त्याग कर समय का सदुपयोग करें।

- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- सूर्य
## ( 19/06/2023 - 19/06/2029 )

सूर्य की महादशा 19/06/2023 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 19/06/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन-शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा :

आपकी शैक्षणिक योग्यता अति उत्तम होगी और आपको खेलों में आपको सफलता तथा ख्याति मिलेगी। शरीर विज्ञान आपके अनुकूल होगा।

## अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
## ( 07/07/2025 - 25/04/2026 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/06/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 07/07/2025 को प्रारंभ होकर 25/04/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धनवान, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। अनुबंधों से लाभ होगा। मुकदमें में विजय मिलेगी। विवाह संभव है। ससुराल से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन-धान्य से युक्त रहेंगे। लघु यात्राएं हो सकती हैं। कला और साहित्य में रुचि हो सकती है। सब प्रकार से धन मिलेगा, पुरस्कृत होंगे, इच्छाओं की पूर्ति होगी।

जीवनसाथी को समृद्धि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; यात्राएं होंगी, सर्जनात्मक कार्यों में रुचि और सट्टेबाजी में लाभ संभावित हैं। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपके पिता को धन की प्राप्ति होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, निवेश से लाभ मिलेगा। माता की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी होगी। भाई-बहनों का समय समृद्ध रहेगा। उन्हें सफलता प्राप्त होगी। आपकी संतान वाक्शक्ति में पटु होगी और शिक्षा में प्रगति करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारीवर्ग को यथास्थिति बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। पेट की शिकायतों, मधुमेह और मोटापे से बचाव करें। दुखों से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

## अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
## ( 25/04/2026 - 07/04/2027 )

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 25/04/2026 को प्रारंभ होगी और 07/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको धन मिलेगा। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। अचल संपत्ति पर्याप्त होगी। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करना होना। निवेश से लाभ होगा। कार्य-व्यवसाय में बाधाएं आ सकती हैं। प्राच्यविद्या में रुचि रहेगी।

जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। पिता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। छोटे भाई-बहन बाधाओं पर विजय प्राप्त करेंगे। बड़े भाई-बहनों को लाभ होगा। आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; उन्हें लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सबका सहयोग प्राप्त होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को गठबंधन और अनुबंधों से लाभ हो सकता है।

बीमार होने से सावधान रहें। शनि यदि जन्मपत्रिका में शुभ है तो हानि कम होगी। नेत्र के और वात से संबंधित रोग हो सकते हैं। अरिष्ट से बचने के लिए शनि की पूजा करें और तिल, काले वस्त्र, काले जूते, लोहे का दान करें।

## अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
## ( 07/04/2027 - 12/02/2028 )

आपकी सूर्य की महादशा 19/06/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 07/04/2027 को प्रारंभ होकर 12/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी, धन प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। आपका मन अध्यात्म में लगेगा। व्यापार, वाक्पटुता, विज्ञान आपके लिए लाभप्रद रहेंगे। आपका कार्य सफल रहेगा और उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता से सुख और संभवतः धन प्राप्त होगा।

आपके मामापक्ष के लोग सौभाग्यशाली होंगे। आपको जीवनसाथी के परिवार से धनलाभ हो सकता है। आपके साझेदार को निवेश से लाभ, सफलता और धन प्राप्त होंगे। आपके पिता भाषण करेंगे और विचार विमर्श में भाग लेंगे।

माता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे, वे आपकी सहायता करेंगी। भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है या शोधकार्य कर सकते हैं। उनको अचानक धन मिल सकता है, यात्राएं होंगी और व्यय बढ़ेंगे।

आपकी संतान को लाभकारी कार्यों में अपनी शक्ति को केंद्रित करना चाहिए। अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे और अधिकारियों से सहयोग प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों के लिए समय खूब धन कमाने का है।

हाथ-पांव की समस्याओं, स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

## अंतर्दशा :- सूर्य - केतु
## ( 12/02/2028 - 18/06/2028 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 19/06/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/02/2028 को आरंभ होकर 18/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और भाग्यशाली होंगे। विवादों में फंसने से मन उत्तेजित हो सकता है मगर अंत में विरोधी परास्त होंगे। धन और सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। संन्यास

और अध्यात्म की ओर झुकाव हो सकता है। विदेशियों से प्रेम और धन की प्राप्ति हो सकती है। उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। कोई आदमी धोखा दे सकता है।

आपके जीवनसाथी को मिश्रित परिणाम मिलेंगे; वे दान धर्म में भाग लेंगे और सब सुखों से युक्त होंगे। पिता की आय बढ़ेगी मगर खर्चे भी अधिक होंगे। माता के निवास में परिवर्तन हो सकता है। उनकी यात्राएं होंगी और अध्यात्म में रुचि रहेगी। भाई-बहनों का भाग्य मिश्रित रहेगा।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। उन्हें सफलता, उच्चाधिकारियों से सहयोग, भूमि प्राप्ति का योग है। अगर वे नौकरी कर रहे हैं तो यात्राएं होंगी। विद्यार्थियों को तकनीकी विषयों में सफलता मिलेगी।

हाथ, पांव; कान, गले के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की आराधना करें; उड़द की दाल, कंबल सतनजा, तेल दान करें।

## अंतर्दशा :- सूर्य - शुक्र
## ( 18/06/2028 - 19/06/2029 )

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। धनार्जन उत्तम होगा। व्यापार में लाभ और प्रगति का संकेत है। माता से बहुत लाभ होगा। तीर्थयात्रा कर सकते हैं। आपको अचल संपत्ति, वाहन और मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी को भूमि, जायदाद, वाहन, आभूषण आदि प्राप्त होंगे। आपके पिता का प्रभाव बढ़ेगा, उत्तम भोजन-वस्त्र नसीब होंगे। माता को घरेलू सुख और साझेदार से लाभ होगा। भाई-बहनों के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी, कार्य में परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धा में सफलता मिलेगी, विरोधियों पर विजय होगी, मामाओं से लाभ मिलेगा, उन्हें नौकरी मिल सकती है या बेहतर नौकरी में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को सफलता और लाभ प्राप्त होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे; प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

## महादशा :- चन्द्र
## ( 19/06/2029 - 19/06/2039 )

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 19/06/2029 को आरम्भ होगी और 19/06/2039 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

तृतीय भाव के स्वामी की अपने ही भाव में स्थिति आपको साहित्य, ज्योतिष और पुराणों के अध्ययन की ओर प्रवृत्त करेगी। आपकी ईष्वर में निष्ठा होगी। पत्नी से समर्थन किसी भी स्थिति में कम नहीं होगा।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
## ( 19/06/2029 - 19/04/2030 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ होकर 19/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ होकर 19/04/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप उपरोक्त क्षेत्रों में विफलता के शिकार हो सकते हैं। स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। दुर्घटना से सावधान रहें। आपके संवेदनशील होने के कारण छोटे भाई-बहनों से संबंध बिगड़ सकते हैं। धनहानि भी संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए दायें हाथ की अनामिका में चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का असली मोती धारण करें। यह कार्य सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि के उपरांत चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए करें। अंगूठी धारण करने से पूर्व उसे दूध से धो लें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
## ( 19/04/2030 - 18/11/2030 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ होकर 19/06/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 19/04/2030 को प्रारंभ होकर 18/11/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होकर 1, 4 और 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे और धनवान बन जाएंगे। आपका दबदबा अच्छा रहेगा और प्रबंधन में सख्त कदम उठाएंगे।

आप दक्ष कारीगर बन सकते हैं, अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप स्वयं उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। संतान की संख्या कम हो सकती है या संतानरहित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रातःकाल हनुमान जी की पूजा कर 6 रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में, कच्चे दूध से धोकर, दायें हाथ की कनिष्ठिका में हनुमान चालीसा 108 बार पढ़ कर धारण करें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
## ( 18/11/2030 - 19/05/2032 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 19/06/2029 को प्रारंभ हुई और 19/06/2039 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 18/11/2030 को प्रारंभ होकर 19/05/2032 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप कंजूस और कटुभाषी हो सकते हैं। पिता के प्रति अपने कर्तव्यों को त्याग सकते हैं। ईश्वर और धर्म में आस्था खत्म हो सकती है। प्रत्येक कदम पर सावधानी आवश्यक है। धन खूब कमाएंगे और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु
## ( 19/05/2032 - 18/09/2033 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 19/05/2032 को प्रारंभ होकर 18/09/2033 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरे का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। सप्तम में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1 और 3 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है और इनके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ और दयालु होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे। तीथयात्राएं संभव हैं। धर्म में रुचि रहेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 ( रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
## ( 18/09/2033 - 19/04/2035 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 19/06/2029 को प्रारंभ हुई और 19/06/2039 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 18/09/2033 को प्रारंभ होकर 19/04/2035 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शनि आयुष्कारक है। इसके अष्टम भाव में स्थित होने से आपकी आयु लंबी रहेगी। अष्टम भाव में

स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 10, 2, 5 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप उत्तरदायित्वों का निर्वाह धैर्य और परिश्रम द्वारा सभी बाधाओं को पार करने के बाद करेंगे। नेत्र और श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। ईमानदारी और दयाभाव बनाए रखें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी की अंगूठी में नौमुखी रुद्राक्ष को शनिवार के दिन शिवजी की पूजा करने के बाद शनि के वैदिक मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
## ( 19/04/2035 - 18/09/2036 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 19/06/2029 को प्रारंभ हुई थी और 19/06/2039 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 19/04/2035 को प्रारंभ होकर 18/09/2036 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा-दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

## अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
## ( 18/09/2036 - 19/04/2037 )

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 19/06/2029 को प्रारंभ हुई ओर 19/06/2039 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 18/09/2036 को प्रारंभ होकर 19/04/2037 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप बली और साहसी होंगे। शत्रुओं का दमन होगा। आपकी कला

और संगीत में रुचि होगी। मस्तिष्क कभी-कभी विचलित हो सकता है। समय लगभग मध्यम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को व्रत करें। व्रत के बाद हनुमानजी की उपासना करें और मीठा भोजन लें, नमक न लें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
## ( 19/04/2037 - 18/12/2038 )

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ होकर 19/06/2039को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 19/04/2037 को प्रारंभ होकर 18/12/2038 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि, धन और समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आपका प्रभाव रहेगा। स्त्रियों से संबंधित उत्पाद में लाभ होगा। व्यापार में आप प्रवीण होंगे। उपचार करने की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। धर्मगुरुओं और संतों का सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
## ( 18/12/2038 - 19/06/2039 )

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 19/06/2029 को प्रारंभ होगी और 19/06/2039 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 18/12/2038 से प्रारंभ होकर 19/06/2039 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य सबसे शक्तिशाली ज्योतिपुंज है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और धर्म में प्रगति होगी। पुत्रों से लाभ होगा और स्वयं के प्रयास से जायदाद का निर्माण करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपकी महत्वाकांक्षा प्रबल होगी जिससे उद्यमशीलता में वृद्धि होगी। सूर्य पिता और

## महादशा :- मंगल
## ( 19/06/2039 - 19/06/2046 )

मंगल की महादशा 19/06/2039 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 19/06/2046 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल  तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद

के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरुप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरुप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

## अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
## ( 19/06/2039 - 15/11/2039 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 19/06/2039 को प्रारंभ होकर 15/11/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरुरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यो में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

## अंतर्दशा :- मंगल - राहु
## ( 15/11/2039 - 03/12/2040 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 15/11/2039 को प्रारंभ होकर 03/12/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी संकल्पशक्ति उत्तम रहेगी। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। कोइ लंबी यात्रा या विदेश यात्रा हो सकती है। आप स्वतंत्रचित्त और अपरंपरावादी हैं। सामाजिक रीतियों का पालन करना श्रेयस्कर होगा। संचार साधनों में सफलता मिल सकती है। छोटे भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। आप अपने

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस का परिचय देंगे।

आपके जीवनसाथी की सक्रियता बढ़ेगी। उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी। आपकी माता शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहन अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, उनका विवाह हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, उत्तम मित्र बनेंगे।

आपकी संतान तकनीकी विषयों का अध्ययन कर सकती है। अगर से कार्यारत हैं तो निवेश से धनार्जन कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; धन का संचय होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

## अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
## ( 03/12/2040 - 09/11/2041 )

आपकी मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/12/2040 को प्रारंभ होकर 09/11/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। चुनाव और अदालत में विजयी होंगे। नौकरी में उच्चाधिकारियों से लाभ और प्रोन्नति का योग है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, मित्र बढ़ेंगे और कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा, लेखन, यात्रा और प्रकाशन के लिए समय शुभ है। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा, सम्मान और धन प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, धन का लाभ होगा। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता चुनाव में विजयी हो सकते हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बदपरहेजी से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की पूजा करें।

## अंतर्दशा :- मंगल - शनि
## ( 09/11/2041 - 18/12/2042 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/11/2041 को प्रारंभ होकर 18/12/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप विवाह द्वारा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार या विरासत से भी धन आ सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। परिवार की जिम्मेदारियों को ठीक प्रकार से निभाएंगे। घर में शांति रहेगी। खानपान में देखभाल ओर नियंत्रण रखें। खुद की कमाई आमदनी भी पर्याप्त होगी। संतान से सुख मिलेगा। प्रसिद्धि और उच्चपद का योग है। प्रोन्नति के साथ तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता अध्यात्म में रुचि रखेंगे। माता को पहले किये गये निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन सब बाधाओं को पार कर लेंगे, उनकी प्रोन्नति हो सकती है।

आपकी संतान को नींव मजबूत करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति से आय हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधी परास्त होंगे, सफलता मिलेगी। व्यापारियों और परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। नेत्ररोग और पित्त के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्र और सरसों का तेल दान में दें।

## अंतर्दशा :- मंगल - बुध
## ( 18/12/2042 - 16/12/2043 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 18/12/2042 को प्रारंभ होकर 16/12/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में बहुत उन्नति करेंगे। विज्ञान, संचार माध्यम और व्यापार में लाभ होगा। उच्चाधिकारी आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति मिल सकती है, निवास सुविधाजनक होगा। पराविद्या में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को सब सुख उपलब्ध रहेंगे। पिता धन कमाएंगे; घर पर

सुविधाएं रहेंगी, साहित्य से जुड़ सकते हैं। माता को भागीदारी में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता खूब उन्नति करेंगे। व्यापारियों को निवेश करना पड़ सकता है।

स्नायुतंत्र और त्वचा के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

## अंतर्दशा :- मंगल - केतु
## ( 16/12/2043 - 13/05/2044 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/12/2043 को प्रारंभ होकर 13/05/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन और समस्त सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। भाइयों से संबंध बिगड़ सकते हैं। आप अध्यात्म में रुचि लेंगे, संसार से मोह कम हो सकता है। लघु यात्राओं से लाभ हो सकता है; लेखन से धन कमा सकते हैं। कंप्यूटर विज्ञान का अध्ययन कर सकते हैं। भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे और धनी बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे; धन, प्रसिद्धि, निवेश से लाभ, शिक्षा में सफलता, संतान से सुख के संकेत हैं।

आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा ; भाग्य और सफलता के संकेत हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की व्यस्तता बढ़ेगी, शत्रुओं पर विजय होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बाहों में दर्द की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार और बृहस्पतिवार को उपवास करें।

## अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
## ( 13/05/2044 - 13/07/2045 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह

13/05/2044 को प्रारंभ होकर 13/07/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। प्रसिद्धि, धन और सम्मान प्राप्त करेंगे। जीवन सुखी रहेगा। तीर्थयात्रा हो सकती है। प्रतियोगिता में सफल होंगे। सुमित्रों से लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। वाहनसुख हो सकता है। घरेलू सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। सुखकारी यात्राएं हो सकती हैं।

आपके जीवनसाथी को धन और घरेलू सुख नसीब होंगे।

आपके पिता का समय सुख से कटेगा। माता का घरेलू जीवन सुखी रहेगा। भाई-बहनों के अप्रत्याशित, सुखकारी परिवर्तन हो सकते हैं; वे धनी बनेंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्राएं होंगी, शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को निवेश से उत्तम लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शरीर के निचले अंगों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

## अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
## ( 13/07/2045 - 18/11/2045 )

आपकी मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 13/07/2045 को प्रारंभ होकर 18/11/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम रहेंगी। आपके पिता को सफलता और उन्नति मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, खुशी मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे और धनलाभ होगा। भाई-बहनों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, वांछित स्थान पर तबादला होगा, विवाह और व्यापार में लाभ संभव है। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण होगी, इच्छाओं की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर आप सेवारत हैं तो उन्नति, उच्चाधिकारियों से लाभ और सम्मान का संकेत है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों से

कर्मचारी सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य की आराधना करें।

## अंतर्दशा :- मंगल - चन्द्र
## ( 18/11/2045 - 19/06/2046 )

आपके लिए मंगल की महादशा 19/06/2039 को प्रांरभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 18/11/2045 को प्रारंभ होकर 19/06/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

आप इस अवधि में बहुत सफल होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी। कला, संगीत, नृत्य, साहित्य आदि में सफल हो सकते हैं। आपका मष्तिष्क सक्रिय है। लघु यात्राएं हो सकती हैं, नये वातावरण में बसने का मन बनेगा। व्यापारिक यात्राओं और कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। घर में मेहमानों का शुभागमन हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। पिता सुख-चैन की ज़िदगी बसर करेंगे ; घरेलू सुख और धनलाभ का संकेत है। माता सफल होंगी, मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। भाई-बहन धनी बनेंगे, सुख -सुविधाओं से युक्त होंगे।

आपकी संतान अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो धनलाभ, सफलता प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो बहुत सफल होंगे और सम्मानित होंगे। परामर्शदाताओं के मातहतों से संबंध अच्छे रहेंगे; प्रतिद्वंद्वियों की संख्या में कमी आएगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को हरे वस्त्र दान दें।

# एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 0-20 | निकृष्ट | 50-65 | श्रेष्ठ |
| 20-35 | नेष्ट | 65-80 | उत्तम |
| 35-50 | सामान्य | 80-100 | अत्युत्तम |

## एस्ट्रोग्राफ - 2026

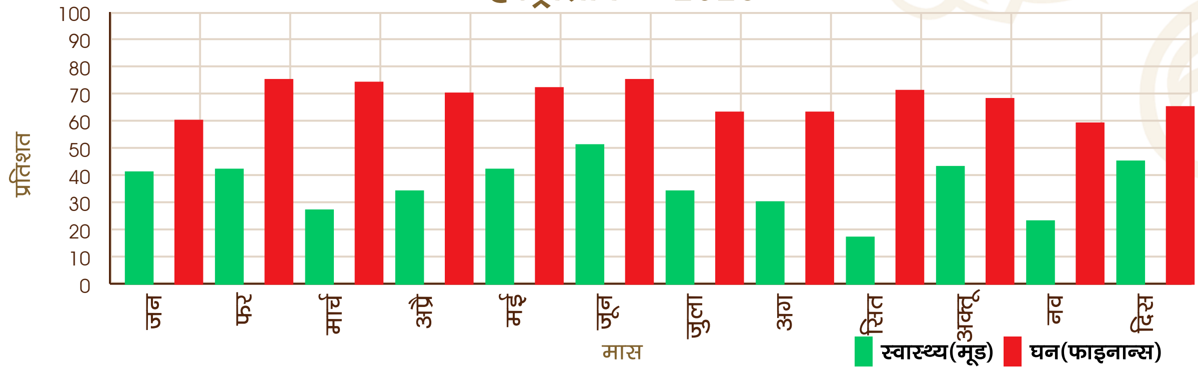


## एस्ट्रोग्राफ - 2027

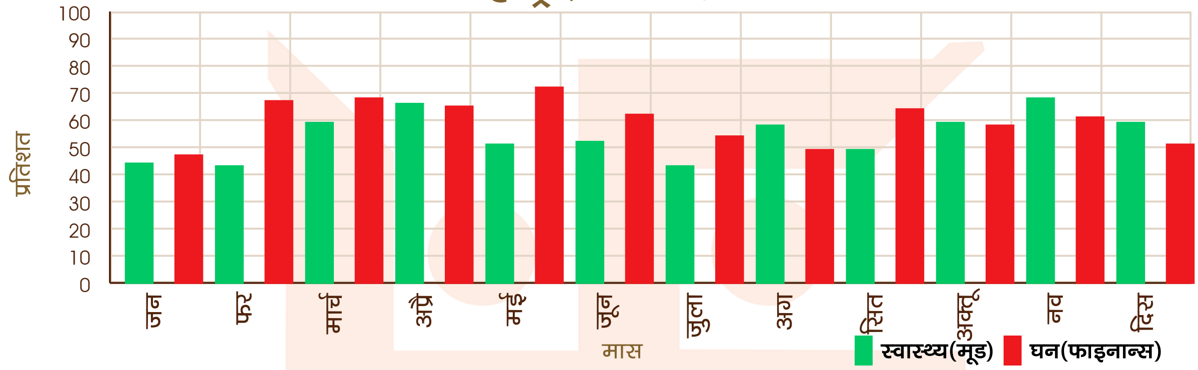


## एस्ट्रोग्राफ - 2028

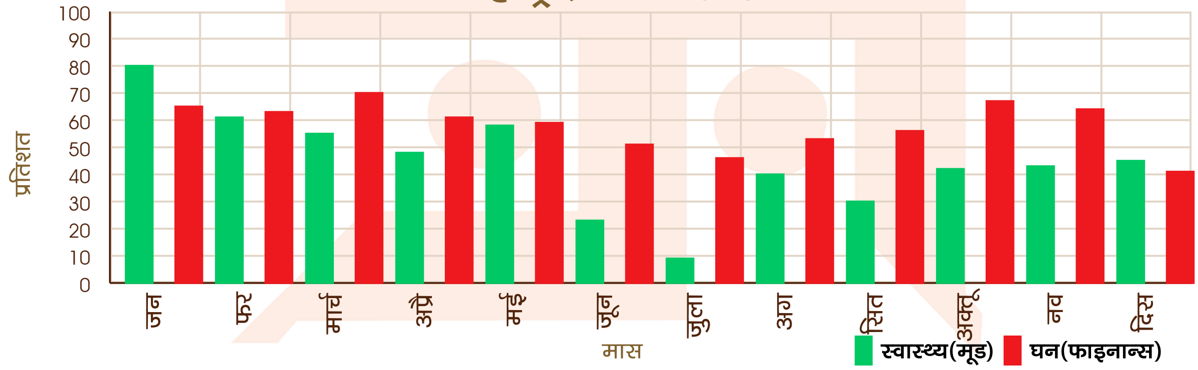


## एस्ट्रोग्राफ - 2029

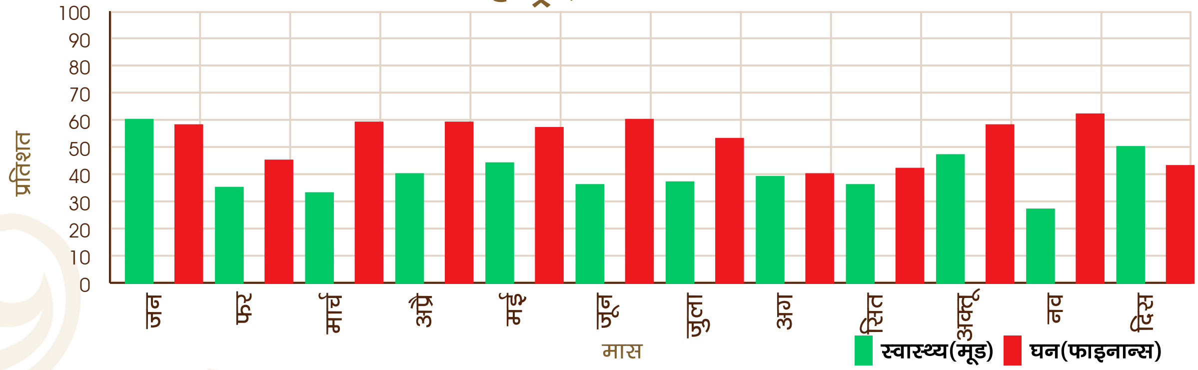

## एस्ट्रोग्राफ - 2030

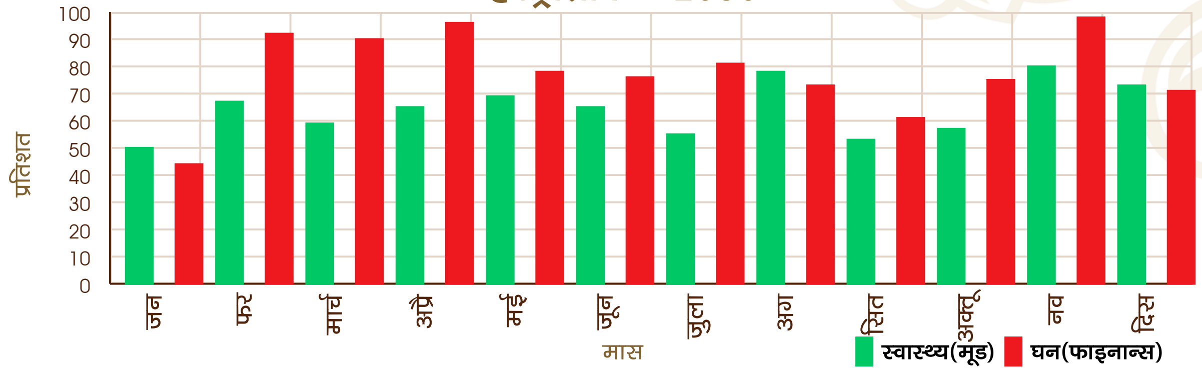


## एस्ट्रोग्राफ - 2031

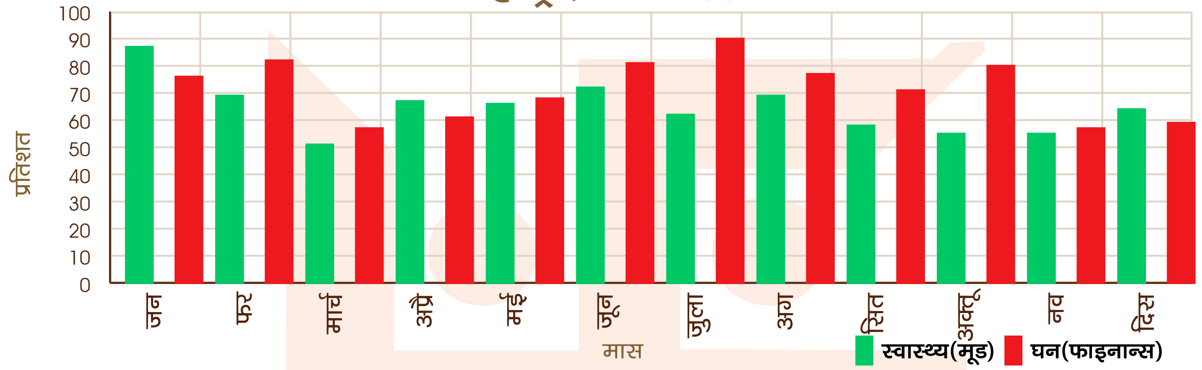


## एस्ट्रोग्राफ - 2032

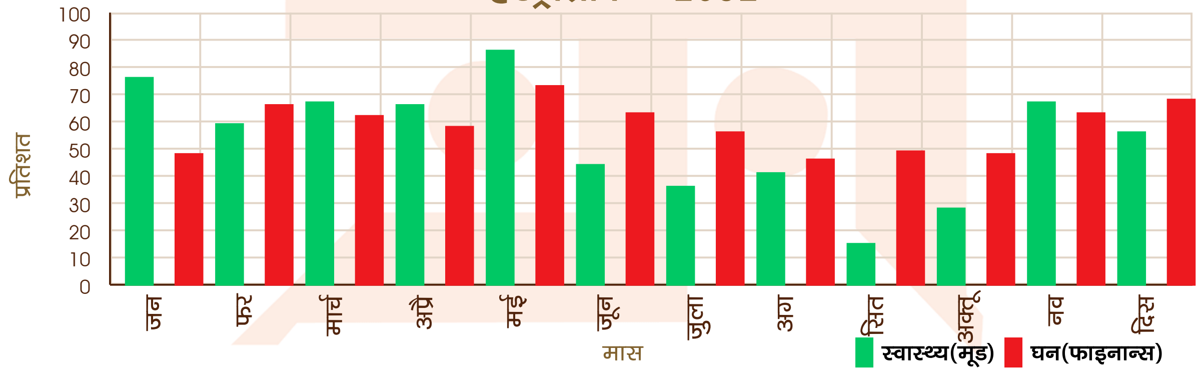


## एस्ट्रोग्राफ - 2033

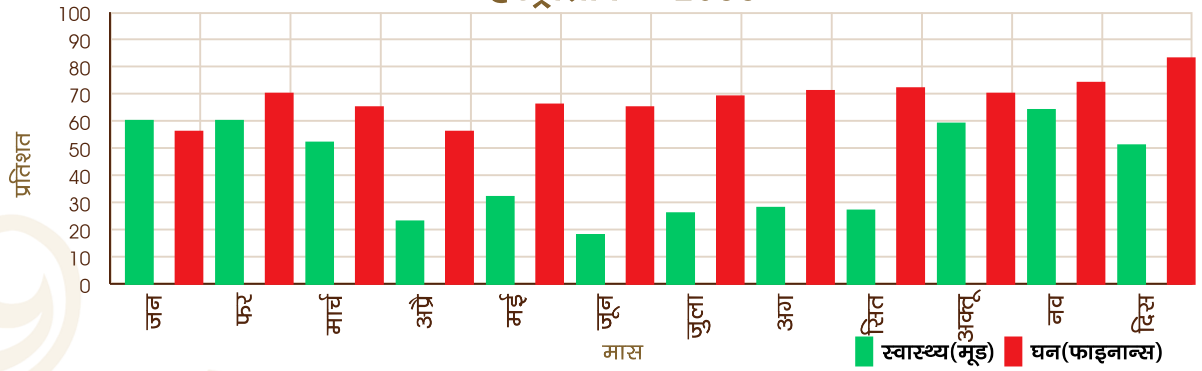

## एस्ट्रोग्राफ - 2034

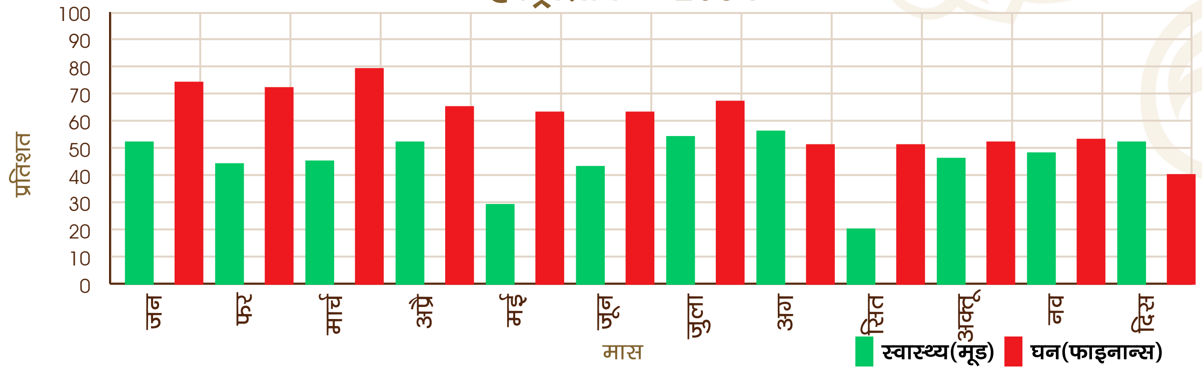


## एस्ट्रोग्राफ - 2035

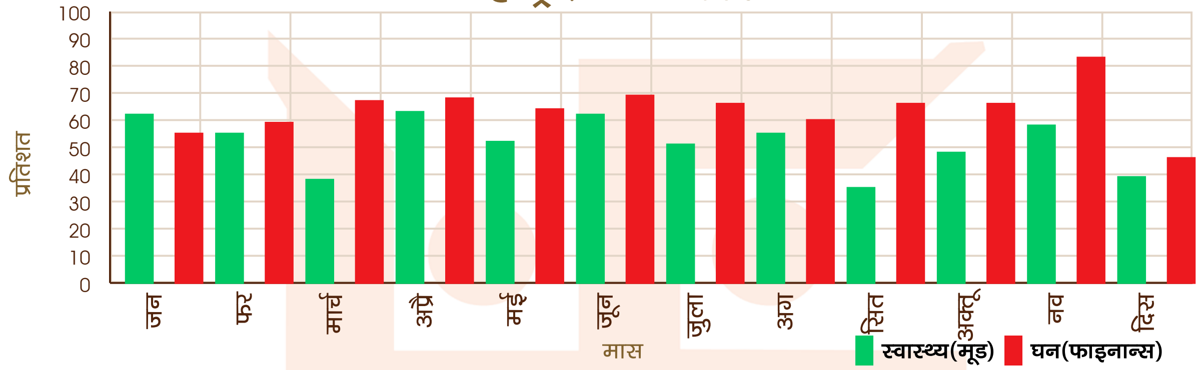


## एस्ट्रोग्राफ - 2036

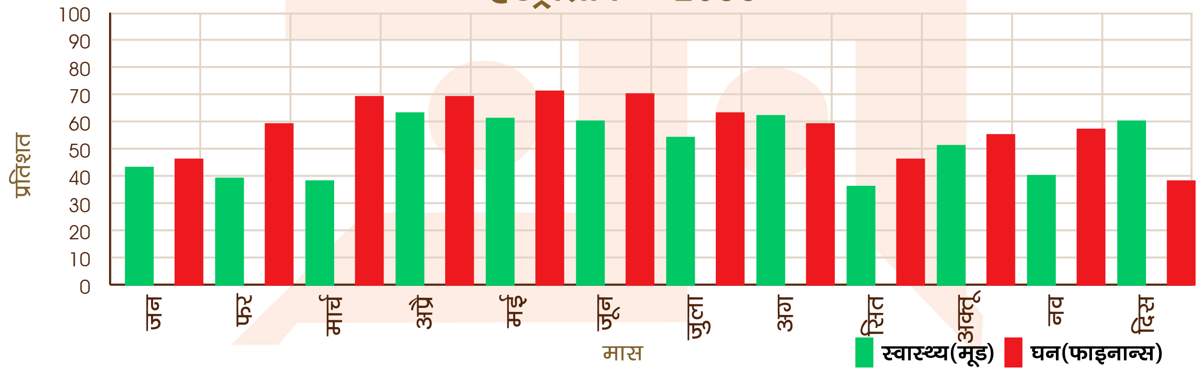


## एस्ट्रोग्राफ - 2037

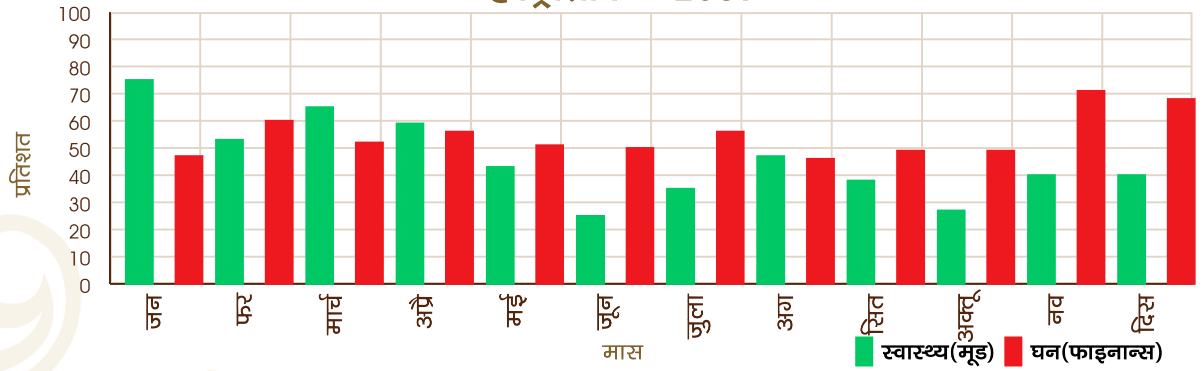

## एस्ट्रोग्राफ - 2038

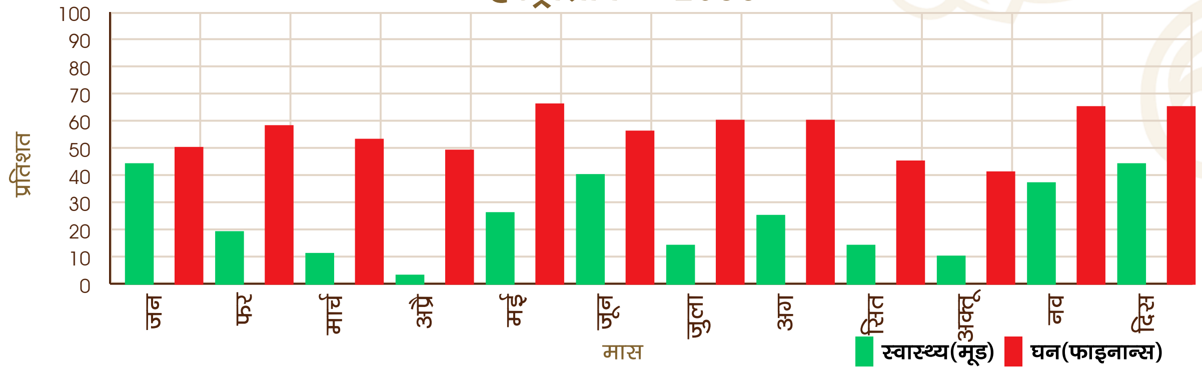


## एस्ट्रोग्राफ - 2039

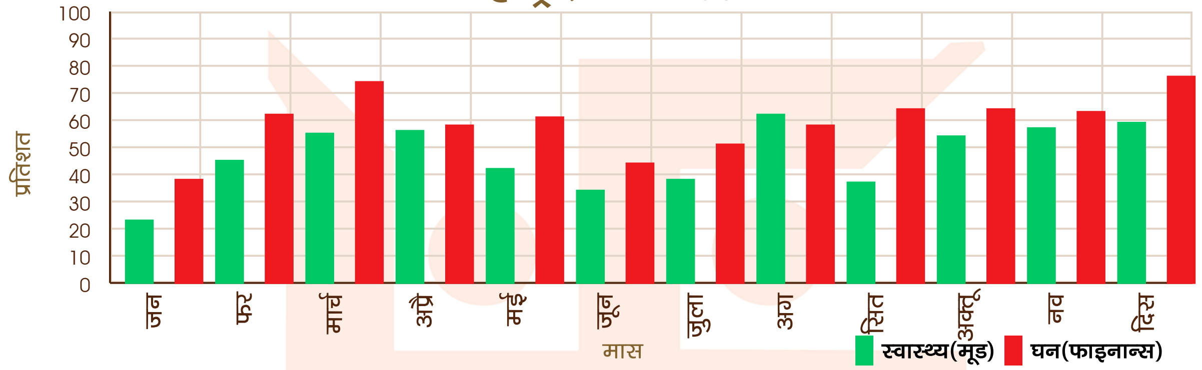


## एस्ट्रोग्राफ - 2040

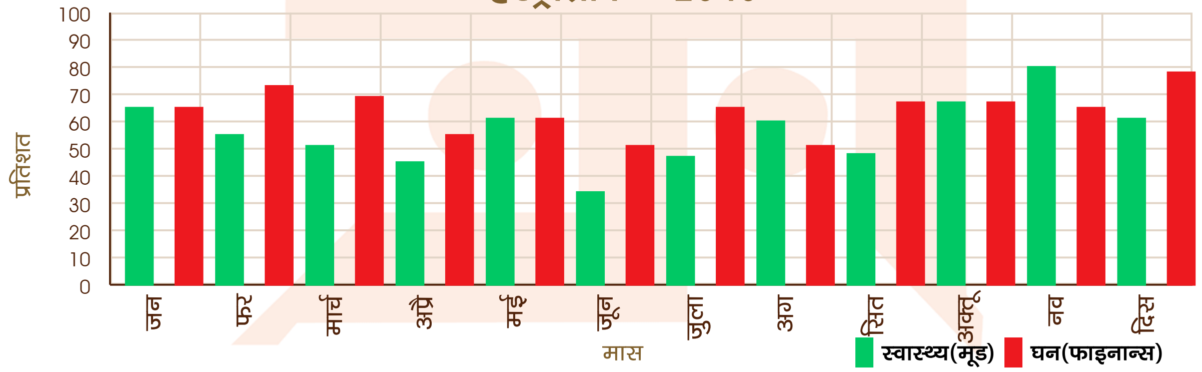


## एस्ट्रोग्राफ - 2041

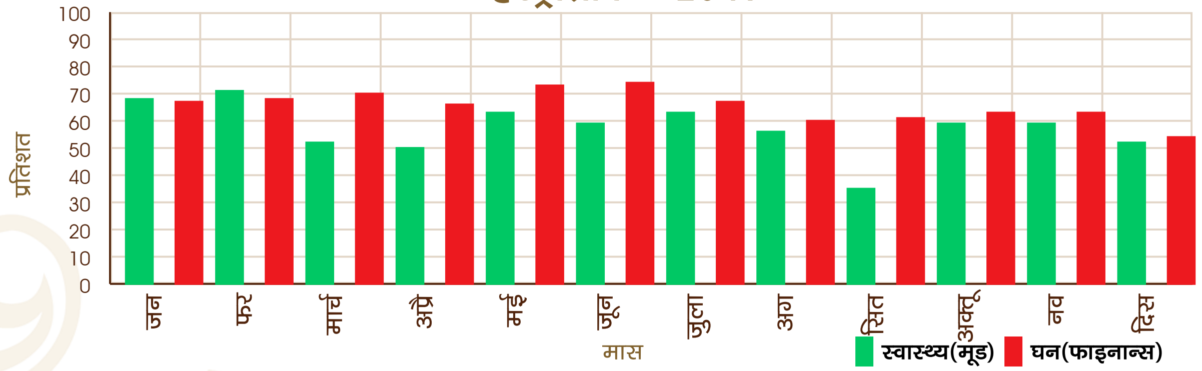

## एस्ट्रोग्राफ - 2042

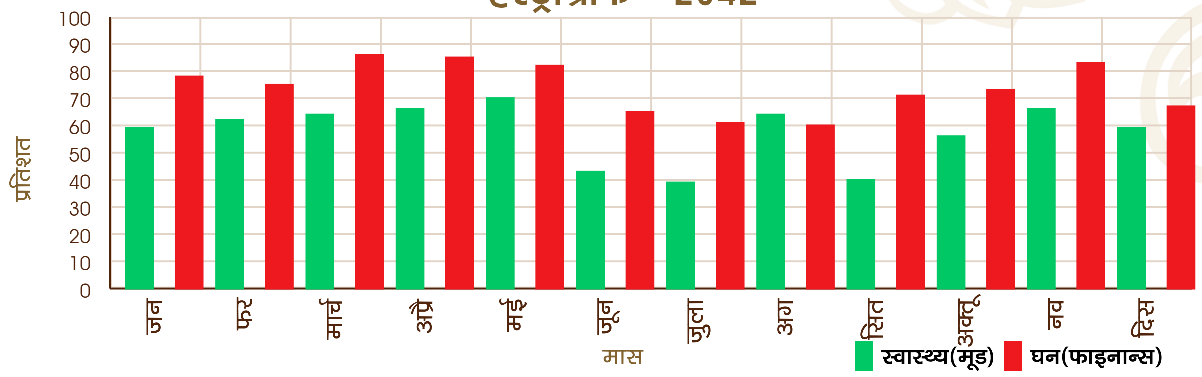


## एस्ट्रोग्राफ - 2043

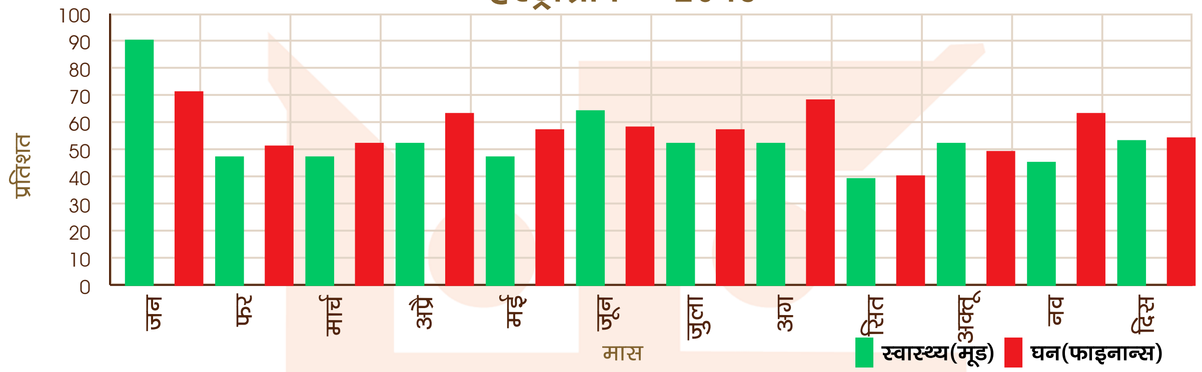


## एस्ट्रोग्राफ - 2044

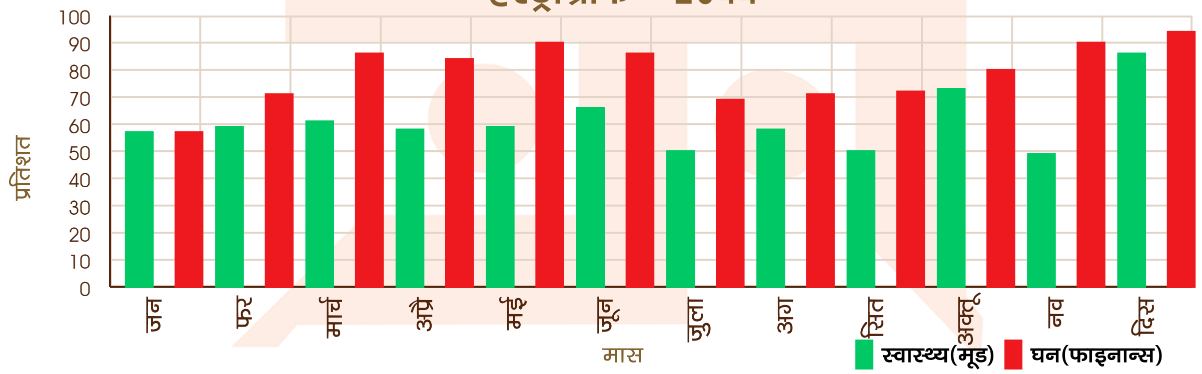


## एस्ट्रोग्राफ - 2045

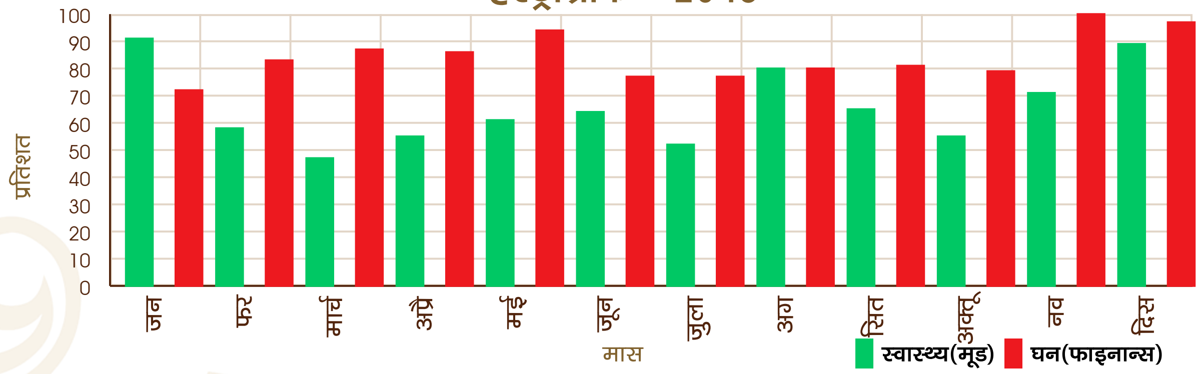

## हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः।।
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनूनम्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः।।
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अङ्ग प्रत्यङ्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अङ्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पांव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में

अपना जीवन व्यतीत करेगें।

## मालव्य योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः।
सद्दीप्ताक्षः समितिविदितो जानुदेशाप्रपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ।।
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति
लाटांश्च मालवससिन्धुसुपारियात्रान्।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9 1-2।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि या उच्चहोकर शुक्र केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है।

मालव्यनामक योग में समुत्पन्न जातक सर्वावयव सम्पन्न शरीरवाला, चन्द्रवत कान्तिवाला, युद्ध में मान रखने वाला, आजान बाहु (घुटनापर्यन्त बांह वाला) और दीर्घायु राजा होता है। मुख की लम्बाई 13 अङ्गुल एवं 10 अङ्गुल दोनों कानों के मध्य वाला होता है। लाट, मालवा, सिन्धु और परियात्र पर्वतीय देशों का प्रधान शासन अपने पुत्रों के साथ करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र    योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उच्चकोटि के कानून विशेषज्ञ, राजनेता, इलेक्ट्रोनिक्स विशेषज्ञ, संगीतज्ञ, अभिनेता, कलाकार, सिनेमा क्षेत्र में प्रसिद्ध, मीडिया में श्रेष्ठ, ज्योतिष के प्रति श्रद्धालु, एक्सपोर्ट अर्थात् निर्यात के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे।

## वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य    योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

## राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,राहु,केतु — योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

## लक्ष्मीयुक्त राजयोग

चन्द्रस्त्रिपुष्करस्थः स्वोच्चे वचसां पतिः सलक्ष्मीकम्।
उत्पादयति स्वामिनमुत्तमपात्रं समग्रभुवः।।
।। सारावली ।। अ.35/श्लोक 78 ।।

यदि कुण्डली में तीसरे या दशवें घर में चंद्रमा हों तथा गुरु उच्च राशि का हो तो जातक लक्ष्मी से युक्त समस्त भूमि का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु — योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उच्चाधिकारी होंगे तथा समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी। धन-धान्य से आप सदैव युक्त रहेंगे।

## चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

## अमलयोग

चन्द्राद्व्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र | योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

## शौर्ययोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
कीर्तिमद्भिरनुजैरभिष्टुतो लालितो महितविक्रमयुक्तः।
शौर्यजो भवति राम इवासौ राजकार्यनिरतोऽतियशस्वी।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 47।।

यदि जन्मपत्रिका में सहजस्थान में शुभ ग्रह हों अथवा तीसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हों तथा तृतीयेश अस्त न हो और अपनी राशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो शौर्ययोग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक बहुत पराक्रमी होता है और उसके छोटे भाई यशस्वी और भ्रातृयुक्त होता है। इसके भाई लोग इसकी प्रशंसा करते हैं। तात्पर्य यह है कि तृतीय स्थान का भाई, वहन, पराक्रम संबंधी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक स्वयं भी अत्यधिक यशस्वी होता है और राज्य कर्म में रत रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समान पराक्रमी होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु | योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्तम राजयोग प्राप्त कर शौर्यशाली व्यक्ति होंगे।

## भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र,गुरु,मंगल — योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

## धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

## कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,गुरु  योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र  योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

## उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र  योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## मातृस्नेह योग

लग्नेश्वरेण संदृष्टे मातृनाथे चतुष्टये ।
शुभग्रहान्विते दृष्टे मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-149 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थेश केंद्र में लग्नेश से दृष्ट शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट हो तो जातक को माता से पूर्ण स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,मंगल,शनि  योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

माता का पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र    योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

## तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध    योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

## बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध    योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

## वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

## शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

## विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध          योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

## मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु          योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

## स्वदारा में आसक्त योग

गुरौ कलत्रे स्वदारसक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-2।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु स्थित हो तो जातक अपनी स्त्री में आसक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु          योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मात्र अपने जीवनसाथी में आसक्त रहेंगे।

## बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,चंद्र     योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

## सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु     योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,बुध     योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

## गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरुप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

## पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

## उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

## पारावतांश योग

''करोति पारावतभागयुक्तो विद्यायशः श्रीविपुलं नराणाम्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 35 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "परावतांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह प्राणी विद्य ा, यश, अचल लक्ष्मी तथा अतुल सम्पत्ति से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "पारावतांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान, यशस्वी, लक्ष्मीवान, अतुल सम्पत्तिवान व्यक्ति होंगे।

## केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र — योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

## वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

## वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,सूर्य — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।